Centre for Distance & Online Education
(CDOE)

Bachelor of Arts
(B.A.) SEM. V

HIST-302

Rise of Modern World
(Option-II)

Guru Jambheshwar University of Science & Technology, HISAR-125001

CONTENTS

Sr. No.	**Title Name**	**Author**	**Page No.**
	Unit -(इकाई) -I		3
1.	सामंतवाद से पूंजीवाद में संक्रमण : यूरोप (Transition from Feudalism Tocapaialism : Europe)	Mr. Mohan Singh Baloda	4
2.	यूरोप में पुनर्जागरण एवं सुधार आंदोलन (Renaissance and Reformation Movements in Europe)	Dr. Sukhvir Singh Mr. Mohan Singh Baloda	27
	Unit -(इकाई) -II		**60**
3.	भूमध्यसागर से अटलांटिक क्षेत्र की ओर आर्थिक संतुलन का स्थानांतरण (Shift of Economics balance from the Mediterranean to Atlantic Region)	Mr. Mohan Singh Baloda	61
4.	प्रारंभिक औपनिवेशिक व्यवस्था, व्यापारिक क्रांति : उत्पत्ति एवं परिणाम (Early Colonial system Moreaintile Revolutions origins and results`)	Mr. Mohan Singh Baloda	78
	Unit -(इकाई) -III		**99**
5.	वैज्ञानिक क्रांति एवं गौरवपूर्ण क्रांति (Scientific Revolution and Glorious Revolution)	Mr. Mohan Singh Baloda	100
6.	कृषि एवं औद्योगिक क्रांति (Agricultural and Industrial Revolution)	Dr. Sukhvir Singh Mr. Mohan Singh Baloda	128
	Unit -(इकाई) -IV		**163**
7.	मानचित्र पुर्नजागरण और धर्म सुधार आंदोलन के महत्त्वपूर्ण केन्द्र (Maps: Important Centres of Renaissance and Reformation)	Ms. Jyoti	164
8.	औद्योगिक क्रांति व यूरोप की वाणिज्यिक शक्तियों से संबंधित महत्त्वपूर्ण केन्द्र (Important Mercantile Centers, Connected with Industrial Revolution power of Europe)	Ms. Jyoti	192

Unit-(इकाई) -I

B.A. PART-IIIrd Year SEMESTER-Vth	
Course Code : HIST 302 **Lesson No. 1**	**Author : Mohan Singh Baloda**
सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण : यूरोप (Transition from feudalism to capatialism in Europe)	

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

1.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

1.2 परिचय (Introduction)

1.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

1.3.1 सामंतवादी अर्थव्यवस्था : उद्भव एवं पतन (Feudal Economy : Origin and Decline)

1.3.2 यूरोपीय सामंतवाद की प्रमुख विशेषताएँ (Sailent Features of European Feudalism)

1.3.3 सामंतवाद के पतन के कारण (Causes of Decline of Feudalism)

1.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

1.4.1 पूँजीवाद का आरम्भ (Beginning of Capitalism)

1.4.2 पूँजीवाद के मुख्य लक्षण/विशेषताएँ (Main Characteristics of Capitalism)

1.4.3 यूरोप में पूँजीवाद के उदय के कारण (Causes of Rising of Capitalism in Europe)

1.4.4 पूँजीवाद का प्रभाव/परिणाम (Effect of Capitalism)

1.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

1.6 सारांश/सक्षिप्तिका (Summary)

1.7 संकेत–सूचक (Key-words)

1.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

1.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

1.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

1.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी योग्य होंगे :–

- यूरोप में सामंतवादी अर्थव्यवस्था के उत्थान एवं पतन के पीछे की महत्पपूर्ण कारकों को समझ सकेंगे।
- यूरोप में सामंतवाद से पूँजीवाद के संक्रमण पर आपस में चर्चा कर सकेंगे।
- यूरोपीय पूँजीवाद के उदय एवं उसके प्रभाव की विवेचना कर सकेंगे।
- पूँजीवाद की प्रमुख विशेषताओं को बता सकेंगे।

1.2 परिचय (Introduction) :-

यूरोप में मध्य युग के अंत से लेकर प्रारंभिक आधुनिक काल तक सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण एवं जटिल व बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में व्याप्त रही। इस परिवर्तन ने यूरोपवासियों के जीवन के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पक्षों को गहराई से प्रभावित किया। इस परिवर्तन के फलस्वरूप यूरोपीय समाज में एक धनी व्यापारियों और पूँजीपतियों के नए वर्ग का उदय हुआ। निजी संपति के प्रभुत्व प्रणाली पर आधारित इन वर्गों ने सामंती व्यवस्था की पारंपारिक शक्ति संरचनाओं को चुनौती दी। इससे यूरोप में राजनीतिक और आर्थिक संगठन के नए रूपों का विकास हुआ। इस नवीन आर्थिक विकास मॉडल ने राष्ट्र राज्य की अवधारणा, केंद्रीकृत नौकराशाही व बाजार अर्थव्यवस्थाओं के विकास को जन्म दिया। पूँजीवाद प्रणाली के उदय ने यूरोप में नवीन प्रौद्योगिकी को जन्म दिया। इसके फलस्वरूप कृषि उद्योग में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों ने लोगों के रहन–सहन व काम करने के तरीकों में बदलाव लाया।

इस पूँजीवाद आर्थिक प्रणाली से पूर्व यूरोप में मुख्यतः सामंतवादी प्रणाली ही थी। यह प्रणाली कृषि आधारित प्रणाली थी। इसके तीन मुख्य लक्षण थे – जागीर, संरक्षण व संप्रभुता।

राजा व उनके अधीन काम करने वाली अधिकारी, विशिष्ट यौद्धा वर्ग सभी किसी–न–किसी रूप में पूर्ण या आंशिक अपने क्षेत्र में भूस्वामी के रूप में भूमि पर अपना अधिकार रखते थे। इसे ही उस काल में संप्रभता के नाम से जानते थे। भूमिदाता अपने अधीनस्थ कृषक वर्ग को जो भूमि देते थे उसे जागीर कहा जाता था। भूमिदाता कृषक वर्ग

भू–स्वामी के साथ जुड़कर निकट संबंध रखबर अपने आपको सुरक्षित मानता था। यह निकट संबंध ही सुरक्षा के आश्वासन के रूप में यूरोपीय समाज में कृषक वर्गों, दासों व मजदूरों के लिए संरक्षण का सूचक था। इस प्रकार सामंतवादी प्रणाली के अंतर्गत समाज में विभिन्न स्तरों पर राजा से लेकर उसके अधिकारी कर्मचारी तक कम या अधिक जागीर पर अपना अधिकार रखते थे। इस कारण उस समय यूरोपीय समाज में हमें सामंतों के भी सामंत देखने को मिलते है। निर्बल और सामानय लोगों ने अपनी सुरक्षा को लेकर शक्तिशाली सामंतों की अधीनता को स्वीकार कर लिया था। अपने–अपने जागीरों में जागीरदार शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने, कर वसूलने एवं न्याय प्रदान करने के लिए उत्तरदायी थे। यूरोपीय समाज में जागरूकता के साथ यह महसूस होने लगा था कि इस सामंतवादी व्यवस्था में कुछ थोड़े से लोगों को समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था, जबकि एक बहुत बड़ा वर्ग उपेक्षित था। सामंत प्रथा असमानता, अत्याचार, शोषण, अमानवीय दृष्टिकोण जैसे सिद्धांतों पर आधारित थी। अतः इसका अंत होना अवश्यम्भावी था। इसके अंत के पीछे कई कारण थे। इसमें किसानों का विद्रोह, सामंतों के पारस्परिक संघर्ष, राजा की शक्ति में वृद्धि, व्यापारिक वर्ग का अभ्युदय, धर्मयुद्धों का प्रभाव, कृषि उत्पादन में वृद्धि, नवीन हथियारों का प्रचलन आदि महत्त्वपूर्ण कारण थे। पश्चिमी यूरोपीय देशों में सामंतवाद का पतन शुरू हुआ और फिर आगे चलकर मध्य तथा पूर्वी यूरोपीय देशों में इसका पतन हो गया। इसके स्थान पर यूरोपीय समाज में पन्द्रहवीं शताब्दी कें अंत में जो नयी व्यवस्था उभर कर सामने आयी उसे पूँजीवाद के नाम से जाना जाता है। यद्यपि पूँजीवाद विकास को तीन भागों में बांटकर देखा जाता है। इनमें 1200 से 1750 ई. तक के काल को प्रारंभिक पूँजीवाद, 1750 से 1914 ई. तक के काल को पूर्ण पूँजीवाद तथा 1914 ई. से अब तक के समय को आधुनिक पूँजीवाद के नाम से जाना जाता है। इस पाठ के अंतर्गत हम प्रारंभिक पूँजीवाद के नाम से जाना जाता है। इस पाठ के अंतर्गत हम प्रारंभिक पूँजीवाद के स्वरूप पर चर्चा करेंगे। यद्यपि सामंतवाद से पूँजीवाद के संक्रमण को लेकर इतिहासकारों में काफी अलग–अलग मत हैं। हेनरी पिरेन जैसे इतिहासकार यह मानते हैं कि इस संक्रमण में व्यापारिक पूँजीपति अथवा मध्ययुगीन स्वशासित नगरों में निर्णायक भूमिका निभाई। लेकिन बहुत से इतिहासकार इस मत से अलग यह मानते हैं कि यूरोप में आंतरिक सामाजिक परिवर्तनों ने व्यापार और औपनिवेशिक विस्तार की भूमिका को अर्थव्यवस्था में स्वीकार करने के लिए पहले ही वातावरण तैयार कर दिया था। अतः आंतरिक सामाजिक परिवर्तन को सामंतवाद से पूँजीवाद के संक्रमण में सबसे महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में देखा जाता है। इसके लिए स्पेन का उदाहरण दिया जाता है। यद्यपि स्पेन में उस समय आर्थिक संपन्नता थी फिर भी आंतरिक सामाजिक परिवर्तनों के अभाव में स्पेन में उस समय पूँजीवाद का विकास नहीं हो सका।

इस प्रकार उद्यम की स्वतंत्रता, उत्पादन में निजी लाभ का उद्देश्य, निजी संपत्ति, प्रतिस्पर्धा, उपभोक्ता की सार्वभौमिकता जैसे लक्षणों से युक्त पूँजीवाद के उदय के कई कारण थे। इनमें मध्ययुगीन व्यापारिक श्रेणियों का

कमजोर होना तथा व्यावसायिक वर्ग का शक्तिशाली होना, बैंकिग प्रणाली का अस्तित्व में आना, उन्नत उपकरणों के निर्माण, धातुओं के अधिकाधिक दोहन, संयुक्त पूँजी कम्पनी के स्वरूप का विकास, बीमा प्रणाली आदि कारकों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। यूरोप में सामंतवाद से पूँजीवाद के संक्रमण का वहाँ के समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इस संक्रमण ने समाज में दो नये वर्ग बुजुआ अर्थात्, पूँजीपति वर्ग तथा प्रोलीटेरियेट (सर्वहारा वर्ग) को जन्म दिया।

इसके फलस्वरूप नवीन प्रौद्योगिकी का विकास हुआ। जिससे कृषि व उद्योग–धंधों के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन आया। इस संक्रमण ने लोगों के जीवन प्रणाली को भी बहुत ज्यादा प्रभावित किया। इस प्रकार यूरोप में इस संक्रमण के फलस्वरूप व्यापक रूप में सांस्कृतिक परिवर्तन आया।

इस प्रकार इसका व्यापक प्रभाव न केवल सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व औद्योगिक बल्कि शासन व्यवस्था पर भी इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है।

1.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

1.3.1 सामंतवादी अर्थव्यवस्था : उद्‌भव एवं पतन (Feudal Economy : Origin and Decline)

दसवीं सदी के अंत तक यूरोपीय समाज में व्यापत उसके सामंतवादी स्वरूप पर विचार करते हैं तो हम पाते है कि उस समय कृषि कार्य में बड़ी संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती थी। कृषि कार्य पूरी तरह से उनके जी–तोड़ मेहनत पर निर्भर थी। इस आवश्यकता ने कृषकों को अन्य कार्यों से परे पूरी तरह से उन्हें भूमि से बांध दिया था। वे कहीं और जाने के लिए स्वतंत्र नहीं थे। इस कार्य के बदले कृषक को और उसके परिवार को सुरक्षा एवं आजीविका का आश्वासन भूस्वामी द्वारा प्राप्त होता था। कृषक कृषिदास के रूप में कार्य करते थे। भूस्वामी बदल जाने की स्थिति में भी कृषि दास नये स्वामी की संपत्ति हो जाता था। इस प्रकार कृषिदास को भूमि जोतने का अधिकार वंशानुगत रूप से प्राप्त था किंतु उसे भू–स्वामित्व प्राप्त नहीं था। इस कृषि आधारित प्रणाली ने यूरोपीय समाज में सांमतवादी व्यवस्था को जन्म दिया। इस व्यवस्था में सामंतों के भी सांमत होते थे। इसमें वस्तु–विनिमय प्रणाली आधारित व्यवस्था थी। अपने–अपने क्षेत्रों में भूमि पर स्वामित्व रखने वालों के कई वर्ग होते थे। खेती पंरपरागत से की जाती थी। कृषि तकनीक का अभाव था। इन सब कारणों से कृषि अत्यधिक श्रम पर निर्भर हो गयी थी। इस अत्यधिक श्रम के बाद भी समाज के निम्न वर्गों की भोजन संबंधी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती थी और प्रायः भूखमरी की समस्या आती रहती थी जबकि सामंत भूस्वामी विलासित पूर्ण जीवन जी रहे होते थे। ऐसे तनावपूर्ण समाज में परिवर्तन अवश्यम्भावी था। कृषि के तौर–तरीकों में बदलाव से यह परिवर्तन अधिक स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है, जो उस समय के यूरोपीय समाज में हो रहे थे।

हमें ग्यारहवीं शताब्दी में पश्चिमी यूरोप में कुछ महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिक परिवर्तन के फलस्वरूप एक नये युग का आरंभ दिखाई पड़ता है। फिर भी सांमतवादी समाज अपने स्थान पर बरकरार रहा। लेकिन अब विभिन्न परिवर्तनों के कारण कृषि कार्य में श्रम की निर्भरता कम हो गयी थी। इसने सामंतवाद से पूँजीवाद के संक्रमण को संभव बनाना आरंभ कर दिया था।

ग्यारहवीं एवं बारहवीं शताब्दी का काल विशेष रूप से पश्चिमी यूरोप के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण रहा, क्योंकि इस समय विभिन्न परिवर्तनों के कारण कृषि उत्पादन में व्यावसायिक दृष्टिकोण का प्रवेश हो चुका था। अब कृषि उतपादन व्यापार व नाम की दृष्टि से किया जाने लगा था। इस दौरान यूरोपीय व्यापार के पुनरूत्थान व अर्थव्यवस्था में अधिकाधिक मुद्रा के प्रवेश से सामंती बंधनों के टूटने की प्रक्रिया तेज हो गयी।

1.3.2 यूरापीय सामंतवाद की प्रमुख विशेषताएँ (Sailent Features of European Feudalism)

मध्ययुगीन यूरोपीय सभ्यता के निर्माण व विकास में कई कारकों का योगदान रहा है। उनमें एक विशेष कारके के रूप में सामंतवाद का भी योगदान रहा है। यूरोपवासियों के जीवन के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पक्षों को सामंतवाद ने गहराई से प्रभावित किया। इतना ही नहीं यूरोपीय समाज किसी–न–किसी रूप में उत्तरोत्तर विकास के लिए इस पर आधारित भी थे। ऐसा माना जाता है कि यूरोप में सामंतवाद का जन्म मध्ययुगीन अराजकता एवं बर्बर आक्रमणों के प्रतिफल के रूप में हुआ था।

मध्ययुगीन यूरोप में शांति, व्यवस्था, सुरक्षा एवं सहायता प्रापत करने की भावना ने सामंतवाद को विकसित किया। उस काल की परिस्थितयों के अनुरूप सुरक्षा एवं आजीविका के आश्वासन के रूप में कृषक भूमि से कृषक दास के रूप में बंधते गये और यह वंशानुगत रूप से चलता रहा। जिसके फलस्वरूप सामंतों के भी सामंत के रूप में यह सामंती प्रथा पनपती गयी।

इतिहासकार मार्क ब्लांक के शब्दों में "यूरोपीय सामंतवाद की आधारभूत विशेषताएँ हैं – अधीन कृषक वर्ग, चूँकि तनख्वाह देना असंभव था, अतः इसके स्थान पर बड़े पैमाने पर जागीर दिए जाने की प्रथा, विशिष्ट योद्धा वर्ग की प्रभुसत्ता, आज्ञापालन तथा संरक्षण रूपी बंधन, जो इंसान को इंसान से बांधते हैं और योद्धा वर्ग में जो एक खास तरह की ताबेदारी का रूप ग्रहण कर लेते है, सत्ता का विखण्डन, जो निश्चय की अव्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करता है।"

इस प्रकार इतिहासकार कार्क ब्लांक के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सामाजिक संगठन की वह व्यवस्था जिसके अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों एवं कर्त्तव्यों का निर्धारण उसके भूमि पर अधिकारों के आधार पर होता था। प्रथम तो भूमि पर अधिकार राजा का होता था उसके बाद अपने–अपने क्षेत्र में राजा द्वारा नियुक्त अधिकारी, योद्धा

वर्ग, कर्मचारी भी भूमि पर अधिकार रखते थे। इससे स्पष्ट है कि वैधानिक रूप से समस्त भूमि पर राजा का अधिकार होता था। अन्य सभी एक के बाद एक अलग–अलग क्षेत्रों में व्यवस्था बनाने को लेकर भूमि पर स्वामितव रखते थे। इस प्रकार यूरोपीय समाज में उस समय सामंतवाद के तीन मुख्य विशेषताएँ दिखाई देते हैं – जागीर, संरक्षण व संप्रभुता।

इनमें जागीर भूमि का वह अंश होता था जो भूदाता द्वारा अधीनस्थ को प्राप्त होता था। भूस्वामी का भूमि पर स्वामीत्व को संप्रभुता कहते थे। भूमि पाने वालों का भूस्वामी के साथ निकट का संबंध होता था। उनको आजीविका व सुरक्षा का आश्वासन प्राप्त होता था, जिसे संरक्षण के नाम से जानते थे।

अतः उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली के पूर्व यूरोप में मुख्यतः सामंतवादी प्रणाली ही थी, जिसकी मुख्य विशेषताएँ थीं –

निजी संपत्ति का केन्द्रीकरण, कृषि शासन प्रणाली, वस्तु विनिमय प्रणाली, उत्पादन जीवन निर्वाह के लिए ही होना, अर्थव्यवस्था का संचालन सामंती प्रथा से होना आदि।

1.3.3 सामंतवाद के पतन के कारण (Causes of Decline of Feudalism)

यूरोपीय समाज में थोड़े से लोगों की विलासित पूर्ण जीवन व बहुत बड़े वर्ग की उपेक्षा पर फलती–फूलती सामंत प्रथा असमानता, अत्याचार, शोषण जैसी अमानवीय दृष्टिकोण पर आधारित थी। इसलिए इसका पतन तो होना निश्चित था। तेरहवीं शताब्दी के शुरू में सामंतवाद का पतन शुरू हुआ। इसके पतन का आरंभ पश्चिमी यूरोपीय देशों से होते हुए मध्य तथा पूर्वी यूरोपीय देशों में भी समय के साथ होते गया और अंततः इसका पूरी तरह से समाप्ति हो गया। इसके पतन के पीछे कई कारण विद्यमान थे।

सामंतवाद के पतन के कारणों को हम निम्न बिंदुओं द्वारा समझ सकते हैं –

(i) कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी – यूरोपीय समाज में नवीन प्रौद्योगिकी विकास के फलस्वरूप कृषि के क्षेत्र में नवीन तकनीक के प्रयोग आरंभ हो गये थे। इस कारण कृषि उत्पादन में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। जिससे अधिक लोगों का भरण–पोषण संभव हुआ। परिणामस्वरूप यूरोप की जनसंख्या 1000 से 1300 ई. के बीच लगभग दुगनी हो गई। शहरों के विकास और जनसंख्या के घनत्व में वृद्धि हुई। अब खेती करने वालों को सामंत पर निर्भरता कम हो गयी, जिससे सामंतवादी प्रणाली का पतन शुरू हो गया।

(ii) धर्मयुद्धों का प्रभाव – 1095–1291 ई. के बीच हुए धर्मयुद्ध ने भी सामंतवाद के पतन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। धर्मयुद्धों में भाग लेने वाले बहुत से सामंतों द्वारा बेचे गए या गिरवी रखे गये भूमि राजाओं अथवा व्यापारियों के हाथ में चले गये। युद्ध में मारे गये सामंतों की भूमि राजाओं द्वारा जब्त कर लिये गये।

(iii) व्यापारिक वर्ग का उदय – धर्मयुद्धों के समय यूरोपीय समाज के लोगों को नये–नये देशों के बारे में जानने का अवसर मिला। इसने व्यापार वाणिज्य को बढ़ावा दिया। व्यापारी वर्ग धन तथा बुद्धि दोनों में सामंतों से आगे निकल गये थे। इन्होंने समाज में प्रतिष्ठा पाने के लिए राजा को आर्थिक सहयोग देने लगे। व्यापार के विकास के लिए नित्य–नियमित व्यावारिक मेलों के आयोजन की व्यवस्था की गयी थी। वस्तुओं के माँग बढ़ने लगे। इसके फलस्वरूप हस्तकला उद्योग, शिल्पकला आदि बढ़ने लगे। व्यापार, वाणिज्य तथा उद्योग–धन्धों के विकास के परिणामस्वरूप यूरोप में अनेक नये–नये कस्बों तथा नगरों का विकास हुआ। कस्बों और नगरों को सस्ते मजदूरों की आवश्यकता हेतु गाँवों के किसानों तथा कृषिदासों को नगरों में कार्य करने व बसने का अवसर मिला। इस कारण धीरे–धीरे सामंतवादी प्रथा कमजोर पड़ने लगी और पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली का जन्म हुआ।

(iv) राजा की प्रभुता व शक्ति में वृद्धि – इस समय विभिन्न वर्गों के सहयोग से राजा की शक्ति में वृद्धि हुई। व्यापारिक वर्गों ने राजाओं को सहयोग देकर उनकी शक्ति में वृद्धि की तो दूसरी ओर सामंतों की शक्ति में कमी आई। मुद्रा के प्रचलन ने राजा को अधिकार कायम करने में आसानी कर दी। वह प्रत्यक्ष रूप से अपने राज्य में कर लगाने लगा। प्रभुता में वृद्धि के साथ राजा ने एक स्वतंत्र नौकरशाही का सृजन करके प्रशासन में सामंतों के प्रभाव को कम कर दिया।

(v) सामंतों के शोषण के विरूद्ध किसान का विद्रोह – सामंतों के अमानवीय प्रवृत्ति ने किसानों के उत्पीड़न को बढ़ावा दिया। सामंतवादी प्रथा किसानों के शोषण पर आधारित थी। किसानों पर घोर अत्याचार हो रहा था। किसान व कृषि दास को अक्सर पेट भर भोजन भी नहीं मिल रहा था। वे भीषण महामारी व भूखमरी को शिकार हो रहे थे। यूरोप की लगभग आधी जनसंख्या का सफाया इसके चपेट में आकर हो गया। खेतों में काम करने वाले किसानों एवं मजदूरों की भारी कमी हो गयी। यूरोप में कई स्थानों पर कृषिदासों ने अपने काम के लिए उचित पारिश्रमिक जैसे अधिकार की माँग करने लगे। किसानों इस प्रथा के खिलाफ विद्रोह करने लगे थे। किसानों के इस विद्रोह में शिल्पियों, कारीगरों तथा निम्न श्रेणियों के पादरियों ने भी भाग लिया। इस प्रकार कृषक–विद्रोहों ने सामंतवाद की नींव हिला दी।

(vi) नवीन हथियारों व बारूद के प्रचलन ने राजा की सैन्य शक्ति में वृद्धि हुई। राजा अपनी इस शक्ति के बल पर सामंतों के किलों पर आसानी से कब्जा जमा लेते थे। इस प्रकार नवीन हथियारों खासकर बारूद के प्रचलन व इसके बढ़ते प्रयोग के कारण सामंतवाद का शीघ्रता से पतन हुआ।

(vii) इसके अलावा अपनी शक्ति व प्रभाव को बढ़ाने को लेकर सामंतों के पारस्परिक संघर्ष भी सामंतवाद के पतन का एक बड़ा कारण था।

इस प्रकार उपर्युक्त कारणों व उस समय की यूरोपीय समाज की बदलती परिस्थितियों के कारण सामंती प्रथा पतन की ओर अग्रसर हुई।

1.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

1.4.1 पूँजीवाद का आरम्भ (Beginning of Capitalism)

यूरोपीय समाज में 13वीं शताब्दी से आरम्भ होकर विभिन्न चरणों में सामंतवाद से पूँजीवाद का संक्रमण होता रहा है। परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप पूँजीवाद का प्रारंभ यूरोप के अलग–अलग देशों में अलग–अलग समय पर होता रहा है। सामान्यतः पन्द्रहवीं शताब्दी के अंत में यूरोप में सामंती प्रथा के अंत होने पर जो नयी अर्थव्यवस्था जन्म ले रही थी उसे पूँजीवाद कहा जाता है। बड़े पैमाने पर अधिकाधिक लाभ कमाने के लिए उत्पादन और उत्पादन के साधनों यथा पूँजी एवं उपकरण पर व्यक्तिगत स्वामित्व की भावना को लेकर पूँजीवाद का आरम्भ हुआ। पूँजीवाद अर्थव्यवस्था में पूँजीपति द्वारा उत्पादक अर्थात् श्रमिक से नकद मूल्य के बदले उसका श्रम खरीद लिया जाता है। इस प्रक्रिया में पूँजीपति उद्यमकर्त्ता कारीगरों को उत्पादन में उनके द्वारा लगाये गये श्रम के केवल कुछ भाग के लिए पारिश्रमिक देकर शेष अपने लिए रख लेते हैं। इसी शेष श्रम के अतिरिक्त मूल्य अर्थात् मुनाफा या लाभ द्वारा व्यक्तिगत धन बनाते रहे जिससे पूँजीवाद की प्रक्रिया का आरंभ हुआ।

अलग–अलग चिंतकों, विचारकों ने अपने–अपने तरह से पूँजीवाद को व्यक्त करने का प्रयास किया। लॉक्स ने पूँजीवाद को आर्थिक संगठन की ऐसी प्रणाली बताया है, जिसमें मानव निर्मित तथा प्रकृति दत्त पूँजी पर निजी स्वामितव होता है तथा जिसका निजी लाभ के लिए उपयोग होता है।

एम गोल्डमेन के अनुसार, "किसी भी समुदाय को पूँजीवाद कहा जा सकता है, यदि वह परंपरागत कृषि शिकार एवं मछली–पालन की अवस्था से ऊपर निकल गया हो तथा उत्पादन वृद्धि के लिए पूँजीगत उपकरणों का प्रयाग कर रहा हो।"

जे. ए. होब्सन ने "पूँजीवाद को एक ऐसी व्यवस्था कहा है, जिसमें नियोजक या नियोजकों की कम्पनी द्वारा बड़े पैमाने पर व्यवसाय का संगठन किया जाता है और वे अपनी संचित संपत्ति का उपयोग लाभ कमाने के उद्देश्य से परिवर्धित परिणाम में उत्पादन करने के लिए कच्चा माल, उपकरण और श्रम खरीदने के लिए करते हैं।"

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह द्वारा पूँजीवादी व्यवस्था में बड़े पैमाने पर व्यवसाय का गठन किया जाता है।

सामंती समाज मूलतः कृषि पर आधारित था तथा वहाँ कृषक वर्ग से उसके अतिरिक्त उत्पादन का अंश जबरदस्ती लिए जाने पर जोर था। इस समय मुद्रा का प्रचलन कम था। इस काल में शहरों, कस्बों व नगरों में श्रेणी आधारित उत्पादन प्रणाली द्वारा जमीदारों एवं संपन्न वर्ग के लोगों की आवश्यकताओं की आपूर्ति की जाती थी। इस समय दक्ष कारीगरों या शिल्पियों के संगठन को ही श्रेणी कहते थे। परंतु बाद के समय में मुद्रा का प्रचलन बढ़ा। भौगोलिक खोजों ने यूरोपीय समाज में व्यापारिक स्वरूप को बदल दिया। अब धन का निवेश लाभ कमाने के लिए किया जाने लगा। जिससे श्रेणी आधारित उत्पादन प्रणाली एवं सामंतवाद जकड़ी कृषि व्यवस्था में परिवर्तन आने लगे। लगातार चलने वाले धार्मिक युद्ध, वाणिज्य का प्रसार और नगरों के स्थान पर राष्ट्र–राज्यों के उदय के फलस्वरूप बढ़ती माँग के अनुरूप मौजूदा प्रणाली आवश्यकताओं की पूर्ति में समर्थ नहीं रही। अतः पुरानी व्यवस्था के स्थान पर व्यक्तिगत लाभ की भावना पर आधारित व्यवस्था पनपी जो पूँजीवाद कहलायी।

आगे चलकर व्यापार–वाणिज्य के विकास के साथ नवीन प्रौद्योगिकी का विकास हुआ। जिससे कृषि के तौर तरीके व नये उद्योग धंधो का विकास आरंभ होने लगा। इस प्रकार की पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का विकास उन देशों से पहले शुरू हुआ, जो शासन की दृष्टि से अपेक्षाकृत उदार थे। परिवर्तित परिस्थितियों में पन्द्रहवीं–सोलहवीं शताब्दी में नीदरलैण्ड व इंग्लैण्ड में पूँजीवादी कृषि व्यवस्था की ओर अग्रसर हुई।

ट्यूडर काल में इंग्लैंड में तेजी से विकसित होते जा रहे विदेशी व्यापार ने धन तथा धनार्जन की आवश्यकता को जन्म दिया। इस समय इंग्लैंड में पूँजीवाद के उदय से शहर में मण्डियों के विकास, अंतः क्षेत्रीय और विदेशी व्यापार, मौद्रिक अर्थव्यवस्था का उदय, ऊन उद्योग में विस्तार, विस्तृत घरेलू बाजार का विकास आदि के साथ–साथ विकसित एवं गतिशील समाज ने पूँजीवादी व्यवस्था को पनपने में अहम् भूमिका निभाई।

1.4.2 पूँजीवाद के मुख्य लक्षण/विशेषताएँ (Main Characteristics of Capitalism)

13वीं शताब्दी से यूरोपीय समाज में परिवर्तित परिस्थितियों के अंतर्गत सामंती व्यवस्था कमजोर होती गयी और लगभग 15वीं शताब्दी के अंत में एक नयी व्यवस्था जन्म ले रही थी उसे पूँजीवाद के नाम से जाना जाता है।

अधिकाधिक लाभ या मुनाफा कमाने की प्रवृति पर आधारित पूँजीवादी व्यवस्था रूढ़िबद्ध एवं जड़वत् सामंती उत्पादन व्यवस्था की अपेक्षा अधिक गतिशील एवं प्राणवान रही। इसकी मुख्य लक्षण या विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं –

(i) निजी स्वामित्व पर आधारित – यह पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की सर्वप्रमुख विशेषताएँ है। इसमें उत्पादन के साधन, जैसे–भूमि, पूँजी आदि पर व्यक्तिगत अधिकार होता है। इस अर्थव्यवस्था में उद्योग, कारखाना या कृषि फार्म को संचालन करने वाला व्यक्ति या व्यक्ति का समूह होता है। राज्य के द्वारा निजी संपत्ति की रक्षा करने की व्यवस्था होती है। अवैध तरीकों पर सरकार रोक लगाती है। इस प्रकार पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में राज्य की सुरक्षा में बचत को बढ़ावा मिलता है।

ii) निजी स्वामित्व को स्थायी रूप देने वाला उत्तराधिकार या विरासत जैसी व्यवस्था से युक्त होना पूँजीवाद का एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। अर्थात् इसमें निजी संपत्ति का स्वामी अपनी मृत्यु के बाद अपनी संपत्ति किसी भी उत्तराधिकारी को देने का अधिकार रखता है।

iii) स्वतंत्र उद्यम पर आधारित व्यवस्था – पूँजीवाद अर्थव्यवस्था में व्यक्ति को व्यवसाय चुनने की व्यापार करने की हर प्रकार की स्वतंत्रता होती है। वह अवसर की उपलब्धता के अनुसार अकेले या समूह में उद्योग लगाने या चलाने की स्वतंत्रता होती है। साधनों की उपलब्धता व व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा इसमें स्वतंत्रता को सीमित करती है।

iv) निजी लाभ को बढ़ावा देने पर आधारित – प्रत्येक उद्यमकर्त्ता अधिकाधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से ही अपना उद्यम या कारोबार लगाते हैं। अतः स्पष्ट है कि लाभ के उद्देश्य के बिना निजी व्यापार शुरू ही नहीं हो सकेगा और निजी व्यापार के बिना पूँजीवाद का अस्तित्व नहीं रह सकता।

v) उपभोक्ता का महत्त्वपूर्ण स्थान – उपभोक्ता के पसंद व नापसंद पर पूँजीवाद का अस्तित्व टिका होता है। अतः उद्यमकर्ता को सदैव बाजार में टिके रहने के लिए उपभोक्ता वर्ग का ध्यान रखना होता है। उनका मुनाफा इसी पर निर्भर करता है।

vi) प्रतिस्पर्धा – पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा की गुणवत्ता को बढ़ावा देती है। इसमें क्रेता व विक्रेता दोनों की भूमिका साधनों एवं वस्तुओं के भाव निर्धारित करते हैं। अतः प्रतिस्पर्धा जहाँ एक ओर उत्पादन की गुणवत्ता बनाये रखने में सहायक होती है, वहीं दूसरी ओर असीमित निजी लाभ के तत्त्व पर भी अंकुश लगाती है।

1.4.3 यूरोप में पूँजीवाद के उदय के कारण (Causes of rising of Capitalism in Europe)

बड़े पैमाने पर व्यवसाय के गठन के लिए यूरोपीय समाज में पूँजीवाद व्यवस्था अस्तित्व में आयी। इसमें व्यवसाय चलाने वाले व्यक्ति या व्यक्ति के समूह होते है। इनका उद्देश्य अधिकाधिक लाभ कमाना होता है।

यूरोपीय देशों में अलग–अलग स्थानों पर कई चरणों में पूँजीवाद का उदय व विकास हुआ। इसके पीछे कई कारण थे। यूरोप में पूँजीवाद के उदय के कारण निम्न प्रकार थे –

i) बड़े पैमाने पर धातुओं का दोहन – पूँजीवाद प्रक्रिया को जन्म देने व इसे आगे बढ़ाने में लौह धातु का अधिकाधिक दोहन एक महत्त्वपूर्ण कारक रहा। यह इस समय की अनिवार्यता भी थी। क्योंकि लोहा कृषि तथा उद्योग दोनों के लिए आधारभूत साधन के रूप में था। नवीन प्रोद्यौगिकी ने सोना, चाँदी, तांबा, टिन व सीसा जैसे मूल्यवान धातुओं के उत्पादन को सुलभ बनाया। यूरोप में अमेरिकी खानों से प्रचुर मात्रा में धातुओं की उपलब्धता होने आरंभ हुए। इससे विनिमय की प्रक्रिया में वस्तु के स्थान पर सिक्कों के प्रयोग को बढ़ावा मिला। इससे कृषि आधारित सामंतवादी अर्थव्यवस्था कमजोर होने लगी और पूँजीवाद अर्थव्यवस्था का उदय होने लगा।

ii) सुदृढ़ जल–परिवहन की व्यवस्था के फलस्वरूप नवीन देशों की खोज संभव हुआ। 15 वीं से 17वीं शताबदी के बीच यूरोपियों ने साहसपूर्ण जल परिवहन यात्रा द्वारा अनेक नये देशों को खोज निकाला तथा अज्ञात मार्ग प्रकाश में आये। इसने उपनिवेशों की स्थापना द्वारा व्यापार का विस्तार हुआ। इसके फलस्वरूप यूरोपीय समाज कृषि आधारित सामंतवादी अर्थव्यवस्था से पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हुआ।

iii) परंपरागत श्रेणी व्यवस्था का कमजोर होना तथा उन्नत व्यावसायिक वर्ग के शक्तिशाली होने से भी यूरोपीय समाज में पूँजीवादी व्यवस्था पनपी तथा आगे बढ़ती गयी। यूरोपीय समाज में मध्ययुगीन श्रेणियाँ (शिल्प–संघ या गिल्ड) एक दूसरे से ईर्ष्या रखते थे। वे इस डर से तकनीक प्रविधि या श्रम संगठन के सुधार की प्रक्रिया में बाधाएं खड़ी करती थीं कि कहीं उनके कारण कोई श्रेणी सदस्य दूसरों से अधिक न हो जाये। लेकिन समय के साथ श्रेणी–प्रणाली में परिवर्तन आना शुरू हुआ। जिसके फलस्वरूप उत्पादन प्रक्रिया के नवीन प्रवधियों का प्रसार हुआ। उद्योगों व व्यापार के विस्तार की श्रम–विभाजन प्रक्रिया अस्तित्व में आया। इस प्रक्रिया ने व्यापार करने के ढ़ग को बदल दिया। यूरोपीय समाज में आवश्यकता की अनिवार्यता ने विनिर्माणशाला (मैन्यूफेक्टरी) को जन्म दिया। यह विनिर्माणशाला पूँजीवादी उत्पादन की एक प्रारंभिक संस्था थी, जो पन्द्रहवीं शताब्दी के अंत में यूरोप में काफी व्यापक हो गयी। इन सब कारकों ने व्यापारी वर्ग को अधिक शक्तिशाली बनाकर पूँजीवाद की आधारशिला रखी।

iv) उन्नत उपकरण – उन्नत उपकरणों के निर्माण से उत्पादन को बढ़ावा मिला। इसके प्रयोग ने यूरोपीय समाज में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को जन्म देने वाला महत्त्वपूर्ण कारक प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया।

v) बैंकिग प्रणाली का अस्तित्व में आना – अब यूरोपीय समाज में परिवर्तित परिस्थितियों में बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए अधिक पूँजीगत साधनों की आवश्यकता महसूस हुई। इस आवश्यकता की पूर्ति उस समय अधिक

सम्पन्न व्यक्तियों ने बयाज पर धन उधार देकर करने लगे थे। इस प्रकार यह महाजनी व्यवस्था को उस समय व्यापार व उद्योग के लिए पूँजी उपलब्ध कराती थी, वह धीरे–धीरे विस्तारित होकर बैंकिंग व्यवस्था को जन्म दिया। इसके फलस्वरूप अधिक संख्या में अच्छे बैंकों की स्थापना हुई। पन्द्रहवीं शताब्दी में फ्लोरेंस के मेडिसी परिवार ने पहली महान् बैंकिंग प्रणाली की स्थापना की। शीघ्र ही यूरोप के सभी मुख्य केंद्रों कें मेडिसी बैंकों की स्थापना होने लगी। सोलहवीं शताब्दी में इंग्लैंड, स्पेन, हॉलैण्ड, आस्ट्रिया व स्वीडन में भी बैंकिंग संस्थाएँ स्थापित हो गई। बैंक अपने यहाँ जमा धन को दूसरे व्यवसायियों को, जिन्हें धन की आवश्यकता हुई, उधार देकर पूँजीतंत्र को बढ़ाने में सहायक हुए। इसके अतिरिक्त उस समय बैंकिंग व्यवस्था ने विदेशी व्यापार को और भी सुलभ बनाने में सहायता की। इस प्रकार विकसित बैंकिंग प्रणाली ने पूँजीवाद के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

vi) संयुक्त पूँजी कम्पनी की व्यवस्था – बड़े उद्योग व कारोबार के लिए यूरोपीय समाज में समुद्री व्यापार करके लाभ कमाने का स्वप्न देखने वालों की संख्या काफी थी। लेकिन इस प्रकार व्यापार व्यक्तिगत करने में जोखिम अधिक था। असुरक्षा की भावना भी थी। अतः सुरक्षित व्यापार व उद्योग की आवश्यकता ने संयुक्त पूँजी व्यवस्था को जन्म दिया। इससे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था यूरोप में आगे बढ़ने लगी। व्यक्ति अपने अंश या शेयर लगाकर बड़ी पूँजी के माध्यम से व्यापार व उद्योग के लिए संयुक्त पूँजी कम्पनी बनाने लगे। इंग्लैण्ड में 1600 ई0 में स्थापित 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' इसी तरह की कम्पनी थी। इस समय इंग्लैंड में 12 संयुक्त पूँजी कम्पनियाँ अस्तित्व में आ चुकी थी। इस प्रकार संयुक्त पूँजीइ कम्पनी का उदय पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

vii) बीमा प्रणाली का विकास – यूरोपीय समाज में और आगे चलकर बीमा प्रणाली का विचार ने जोखिम को कम करके पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का अत्यधिक पोषण किया। अब बीमा योजना के बाद व्यापारी के नुकसान की भरपाई बीमा कम्पनी करने लगी। बीमादार, बीमा योजना के अंतर्गत एक निश्चित राशि बीमा कंपनी को देते थे, जो प्रीमियम कहलाती है। इस प्रकार बीमा प्रणाली के उदय ने पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अब व्यापारी नुकसान होने की भावना से ऊपर उठकर खुलकर व्यापार करने लगे।

1.4.4 पूँजीवाद का प्रभाव/परिणाम (Effect of Capitalism)

सामंतवादी अर्थव्यवस्था से पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में संक्रमण का यूरोपीय समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इसने समाज के हर क्षेत्र पर अपना प्रभाव डाला। इसके प्रभाव या परिणाम को निम्न प्रकार से वर्णन कर सकते हैं –

i) सामाजिक परिवर्तन – पूँजीवाद के उदय व इसके फैलाव के साथ यूरोपीय समाज में दो नये वर्ग पैदा हुए। इनमें एक बुर्जुआ अर्थात् पूँजीपती वर्ग था। इस वर्ग का उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व होता था। इसका दृष्टिकोण हमेशा मुनाफे या लाभ पर होता था। जबकि दूसरा वर्ग सर्वहारा (प्रालीटेरियेट) वर्ग था। यह वर्ग साधनहीन वर्ग था। इसलिए सर्वहारा वर्ग को अपनी श्रम–शक्ति को बेचना पड़ता था। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के विकास के साथ यूरोपीय समाज में जबरदस्ती दास बनाने की प्रवृत्ति बढ़ने लगा।

इंग्लैंड में एडवर्ड षष्ठ ने 1547 ई. में एक कानून के द्वारा किसानों के स्वत्व का हरण करके उन्हें दास बनने के लिए मजबूर कर दिया था।

ii) कृषि के क्षेत्र में परिवर्तन – पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के विकास के फलस्वरूप पूँजी की अधिकाधिक आवश्यकता व मुनाफे या लाभ की प्रवृत्ति ने भूमिपतियों को अब लगान कृषि–उपज के स्थान पर नकद के रूप में लेने के लिए विवश कर दिया। उस समय अधिकांश भूमिधारी या पट्टेदार (टेनैन्ट) नकद के रूप में ऊँचे लगान चुकाने में समर्थ नहीं थे। इस कारण खेती करने वालों से उनकी जमीनें छिन गयीं। वे कृषक या तो भाड़े के खेतिहर मजदूर बन गये या बेकार हो गये। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के प्रभाव के फलस्वरूप जमीनें प्रभावशली जमींदारों के हाथों में पहुँच गयी थी। इस प्रकार कृषि के क्षेत्र में पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में इंग्लैंड में अंग्रेज भेड़ों के पालन और ऊन के निर्यात से सदियों से चली आ रही खूब धन कमाने की प्रवृत्ति को और अधिक बढ़ाने के लिए प्रेरित हुए। पन्द्रहवीं शताब्दी के अंत तक अंग्रेज व्यापारियों ने ऊनी कपड़े के उत्पादन के लिए स्वयं की विनिर्माणशालाएँ बनाना शुरू कर दिया। इसके लिए व्यापारियों ने भेड़ों के पालन को बढ़ाने के लिए किसानों को जमीन से बेदखल कर दिया। किसान बेरोजगार हो गये और बदहाल स्थिति में आये किसान रोजगार के लिए शहरों की ओर जाने लगे। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था से उत्पन्न परिस्थितियों का वर्णन करते हुए सोलहवीं शताबदी के प्रसिद्ध विद्वान टामस मोर ने लिखा था, "इंग्लैंउ में भेड़ें लोगों को खा रही हैं।"

iii) उद्योग पर पड़ने वाले प्रभाव – सामंतवादी व्यवस्था कृषि आधारित प्रणाली थी। इस प्रणाली के अंतर्गत मध्ययुगीन श्रेणियाँ (शिल्प संघ या गिल्ड) परंपरागत तरीके से व्यापार करते थे। स्थानीय स्तर पर छोटे–मोटे ही दस्तकारी जैसे उद्योग अस्तित्व थे। परंतु सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण ने लाभ की प्रवृत्ति को बढ़ाया। जिसके फलस्वरूप नवीन तकनीक का विकास हुआ। व्यापार के ढ़ंग में परिवर्तन आ गया। उन्नत उपकरणों के आविष्कार से घरेलु उद्योग–धंधे विस्तृत होते गये। अब पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में व्यवसायी अधिकाधिक लाभ कमाने के लिए कच्चे माल को बड़ी मात्रा में खरीद कर उसे कारीगरों के घरों में बाँट देते थे। कारीगर से पक्का माल तैयार करवा

कर पूँजीपति उसे उपभोक्ताओं को बेचते थे। इसके बदले में कारीगरों को उसका पारिश्रमिक मजदूरी प्राप्त होता था।

इस प्रकार घरेलु पद्धति से उत्पादन बढ़ाकर व्यापार चलाया जा रहा था। समय के साथ धीरे–धीरे संसार की माँग बढ़ती गयी। इनमें जो श्रेणियाँ खरी नहीं उतर पायी वे बाजार व व्यापार की प्रक्रिया से बाहर हो गयीं। आगे चलकर लाभ कमाने की बढ़ती प्रवृत्ति पर आधारित पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने घरेलु पद्धति को भी कारखाना पद्धति के माध्यम से बाहर निकाल दिया। इस प्रकार पूँजीवाद अर्थव्यवस्था के साथ उद्योग का स्वरूप कारखाना युग के एक नवीन युग में प्रवेश किया।

iv) शासन–प्रशासन की प्रणाली पर प्रभाव – पूँजीवादी अर्थव्यवस्था निजी स्वामित्व पर आधारित थी। पूँजीपति व व्यापारी वर्ग को अपनी सुरक्षा व सुरक्षित व्यापार की चिंता रहती थी। व्यापारी वर्ग को ऐसा राजा या शासक वर्ग की आवश्यकता थी जिसके पास सशक्त सेना और नौ सेना हो ताकि वे संसार के व्यापार में भागीदार बन सकें। उस समय राजा और पूँजीपति दोनों वर्गों में यह विश्वास था कि केवल सोना और चाँदी कें संचित भण्डार देश को धनी बना सकते हैं। इसलिए प्रत्येक शासन अपने यहाँ ऐसी नीति बनाने लगे ताकि दूसरे देशों से सोना व चाँदी को अपने देश में अधिकाधिक लाया जा सके और अपने यहाँ के भण्डार को बाहर जाने से रोका जा सके। इस प्रकार शासन–प्रशासन नीति बनाकर व्यापार और उद्योग को नियमित करने लगे।

व्यापार व उद्योग को नियमित करने की इस प्रक्रिया को वाणिज्यवाद (मर्केन्टाइल्जिम) के नाम से जानते हैं। इसमें पूँजीपतियों ने सामंत–तंत्र व विदेशी प्रतिद्वन्द्विता को कुचलने में राजाओं का समर्थन करना भी शुरू कर दिया। लेकिन जब अतिशय कर लगाकर राजा ने अपनी शक्ति द्वारा व्यापार तंत्र पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया तो इसके खिलाफ तब क्रांतियाँ भड़क गई। इस प्रकार पूँजीपतियों द्वारा शासन–प्रशासन पर लोकतांत्रिक तरीके से विरोध व सहमति दोनों रास्ता अपनाये गये। इससे शासन में लोकतंत्र के पक्ष को बल मिला।

1.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress):

भाग (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks.)

(i) पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली के पूर्व यूरोप में .... प्रणाल थी।

(ii) सामंतवादी प्रणाली .... प्रणाली थी।

(iii) सामंतवादी प्रणाली में कानूनी रूप से समस्त भूमि पर अधिकार .... का होता था।

(iv) यूरोपीय सांमतवाद की आधारभूत विशेषताएँ .... थी।

(v) सांमतवाद यूरोपीय समाज में सामाजिक संगठन की ऐसी व्यवस्था थी, जिसमें व्यक्ति के अधिकारों एवं कर्त्तव्यों का निर्धारण उसके .... पर अधिकारों के द्वारा होता था।

(vi) व्यापार के विकास में 1200 ई. से 1400 ई. के मध्य यूरोप में प्रतिवर्ष .... का आयोजन किया जाता था।

(vii) 1381 ई. में सांमतवादी प्रणाली के अंतर्गत अत्याचार से तंग आकर किसानों ने .... के नेतृत्व में इंग्लैंड में विद्रोह किया था।

(viii) 1381 ई. में ही इंग्लैंड के किसानों की तरह .... देश में किसानों के व्यापक विद्रोह हुए जिसे जैकरी वर्ग का विद्रोह के नाम से जानते हैं।

(ix) पन्द्रहवीं शताब्दी के अंत में यूरोप में जो नयी अर्थव्यवस्था अस्तित्व में आयी उसे .... के नाम से जाना जाता है।

(x) नीदरलैण्ड्स एवं जर्मनी में पूँजीवाद का विकास .... शताब्दी से ही शुरू हो गया था।

भाग (ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False Statements bases questions)

(i) सामंतवादी अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान प्रणाली थी। ( )

(ii) सामंतवादी अर्थव्यवस्था में कृषि दास को भूमि जोतने का अधिकार वंशानुगत रूप से प्राप्त था किंतु उसे भू–स्वामित्व प्राप्त नहीं था। ( )

(iii) सामंतवादी अर्थव्यवस्था से पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में संक्रमण के फलस्वरूप सर्वप्रथम फ्रांस में बैंकिंग प्रणाली की स्थापना की गयी थी। ( )

(iv) सामंतवादी व्यवस्था असमानता पर आधारित थी। ( )

(v) पूँजीवाद उस सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था का नाम है, जिसके अंतर्गत भूमि, कारखानों, औजारों आदि पर थोड़े से लोगों का स्वामित्व होता है, जबकि बहुसंख्यक जनता के पास कोई सम्पत्ति नहीं होती या बहुत थोड़ी संपत्ति होती है और उसे भाड़े के मजदूर के रूप में काम करने को मजबूर होना पड़ता है। ( )

(vi) उत्पादन जीवन–निर्वाह के लिए ही होना सामंतवादी व पूँजीवादी दोनों की विशेषता थी। ( )

(vii) मध्ययुगीन यूरोप में शांति, व्यवस्था, सुरक्षा, संरक्षण एवं सहायता प्राप्त करने की भावना ने सामंत प्रथा को विकसित किया। ( )

(viii) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत अधिकार होता था। (   )

(ix) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के उदय के कारण मध्ययुगीन श्रेणियाँ (शिल्प संघ या गिल्ड) कमजोर होने लगी। (   )

(x) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के उदय के कारण यूरोप में सर्वप्रथम पंद्रहवीं शताब्दी में संयुक्त पूँजी कंपनी की स्थापना फ्रांस में हुई थी। (   )

1.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary):-

- मध्युगीन यूरोप में शांति, व्यवस्था, सुरक्षा, संरक्षण एवं सहायता प्राप्त करने की भावना ने सामंती अर्थव्यवस्था को विकसित किया।
- सामंती प्रथा ने यूरोपीय सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न पक्षों को लगभग 900 ई. से 1350 ई. तक प्रभावित किया।
- सामंती समाज मुख्यतः कृषि पर आधारित था तथा वहाँ कृषक वर्ग से उसके अधिशेष उत्पादन का अंश जबरदस्ती लिए जाने पर जोर था।
- अधीन कृषक वर्ग, विशिष्ट योद्धा वर्ग की प्रभुसत्ता, आज्ञापालन तथा संरक्षण रूपी बंधन ये तीन आधारभूत विशेषताएँ मार्क ब्लांक द्वारा यूरोपीय सामंतवाद के बताये गये हैं।
- सामंतवाद के तीन प्रमुख लक्षण – जागीर, संरक्षण तथा सम्प्रभुता बताये जाते हैं।
- जागीर साधारण भूमि थी।
- संरक्षण का अर्थ था – भूमिदाता तथा भूमि पाने वाले के मध्य निकट संबंध।
- संप्रभुता का अर्थ था – अपने क्षेत्र में भू–स्वामी का पूर्ण या आंशिक स्वामित्व।
- इस सामंती संगठन व्यवस्था में सबसे ऊपर राजा होता था और सबसे नीचे कृषि दास थे। इनके बीच में स्वामी और सेवक दोनों ही होते थे।
- सामंती व्यवस्था में कानूनी रूप से समस्त भूमि राजा की थी।

- यूरोप में तेरहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में ही नवीन प्रगतिशील व्यक्तियों के उदय के फलस्वरूप मध्यकालीन व्यवस्था के पतन के संकेत मिलने आरंभ हो गये थे।
- वस्तुतः 15वीं सदी से यूरोप में जो नई व्यवस्था उभर रही थी, उसे पूँजीवाद कहा जाता है।
- पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली के पूर्व यूरोप में मुख्यतः सामंतवादी प्रणाली थी, जिसकी मुख्य विशेषताएँ थी –

  (i) निजी संपति का केन्द्रीकरण (ii) कृषि प्रधान प्रणाली (iii) उत्पादन जीवन निर्वाह के लिए ही होना (iv) वस्तु विनिमय प्रणाली (v) अर्थव्यवस्था का संचालक सामंती रिवाजों द्वारा होना।
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था व्यक्तिगत स्वामित्व पर आधारित अर्थव्यवस्था थी।
- पूँजीवाद के अंतर्गत जिन उपकरणों और साधनों से वस्तुओं का उत्पादन होता है उन पर व्यक्तिगत स्वामित्व होता है और उत्पादक लाभ कमाने के लिए होता है।
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में मजदूर सिर्फ मजदूरी के लिए काम करते हैं। वास्तव में उनके पास अपना कुछ नहीं होता।
- पूँजीवाद के अंतर्गत संपत्ति व साधनों के स्वामियों को पूँजीपति के नाम से जानते हैं।
- पूँजीपति अपनी संपत्ति व साधनों को केवल संग्रह या केवल उपभोग में नहीं लाते, बल्कि लाभ कमाने के लिए उसका निवेश करते हैं।
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था अधिकाधिक लाभ कमाने पर आधारित थी।
- सामंती व्यवस्था असमानता, अत्याचार, शोषण, जैसी अमानवीय दृष्टिकोण पर आधारित थी। अतः इसका पतन अवश्यम्भावी था। इसके पतन के कारण थे –

  (i) नवीन हथियारों एवं बारूद का प्रयोग (ii) कृषि–उत्पादन में बढ़ोतरी (iii) 1095 से 1291 के बीच यूरोप में होने वाले धर्मयुद्धों का प्रभाव (iv) उभरते व्यापारिक वर्ग (v) राजा की शक्ति में वृद्धि (vi) अत्याचार के खिलाफ किसानों का विद्रोह (vii) सामंतों के आपसी संघर्ष आदि।
- 1381 ई. में 'वाट टाइलर' के नेतृत्व में इंग्लैंउ के हजारों किसानों ने सामंती अत्याचारों के विरूद्ध विद्रोह किया। किसानों के इस विद्रोह में शिल्पियों, कारीगरों तथा निम्न श्रेणियों के पादरियों ने भी भाग लिया।

- लगभग इसी समय फ्रांस में भी किसानों ने सामंती अत्याचारों के खिलाफ व्यापक विद्रोह हुआ जिसे जैकरी वर्ग का विद्रोह के नाम से जानते हैं।

- सामंती उत्पादन व्यवस्था जहाँ रूढ़िबद्ध एवं जड़वत् थी वहीं पूँजीवादी व्यवस्था अधिक गतिशील एवं प्राणवान है। सामंत अपनी धन–सम्पदा का व्यय विलासमय वैभव के प्रदर्शन पर करता है, जबकि पूँजीवादी व्यवस्था के अंतर्गत पूँजीपति अपनी पूँजी का निवेश अधिकाधिक लाभार्जन के लिए करता है।

- पूँजीवाद के मुख्य लक्षण निम्न प्रकार थे –

  (i) व्यक्तिगत स्वामित्व अर्थात् निजी सम्पत्ति को प्रोत्साहन

  (ii) स्वतंत्र रूप से उद्यम या कारोबार को प्रोत्साहन

  (iii) संपत्ति के उत्तराधिकार या विरासत की व्यवस्था

  (iv) निजी लाभ प्राप्ति को महत्त्व

  (v) उत्पादन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्धा

  (vi) उपभोक्ता की प्रधानता अर्थात् उसके पंसद/नापसंद को महत्त्व

  (vii) अधिकाधिक मुद्रा का प्रयोग आदि।

- यूरोप में पूँजीवाद के उदय के कारण निम्न प्रकार थे –

  (i) अधिकाधिक धातुओं का उत्पादन

  (ii) उत्कृष्ट जल–परिवहन व्यवस्था एवं नये देशों की खोज

  (iii) मध्ययुगीन श्रेणियों का कमजोर होना तथा शक्तिशाली व्यापारिक वर्गों का बढ़ना

  (iv) बैंकिंग प्रणाली का अस्तित्व में आना

  (v) संयुक्त पूँजी कम्पनी व्यवस्था का आरंभ होना

  (vi) बीमा प्रणाली की व्यवस्था

- पूँजीवादी व्यवस्था को बढ़ावा देने वाली संयुक्त पूजा कम्पनियों की स्थापना पंद्रहवीं शताब्दी में पहले जर्मनी और इटली में हुई और फिर अगली शताब्दी में नीदरलैण्ड्स और इंग्लैंड में बहुत प्रचलित हो गई।

- इंग्लैंड में 1600 ई. में लगभग 12 संयुक्त पूँजी कम्पनियाँ अस्तित्व में आ चुकी थीं।
- बीमा प्रणाली की व्यवस्था में पूँजीवादी प्रणाली को विस्तारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- पूँजीवादी प्रणाली के विकास के फलस्वरूप यूरोपियन समाज में दो नये वर्ग – बुर्जुआ अर्थात् पूँजीपति वर्ग तथा प्रोलीटेरियेट अर्थात् सर्वहारा वर्ग पैदा हुए।
- पूँजीपति वर्ग उत्पादन–साधनों पर अपना स्वामित्व रखने वाला वर्ग था।
- साधनों से हीन सर्वहारा वर्ग अपनी श्रम शक्ति को बेचने को मजबूर था।
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के उदय व विकास के फलस्वरूप जमीनें प्रभावशाली जमींदारों के हाथों में पहुँच गयी थीं, जो मजदूरों की सहायता से काश्त करने के लिए पूँजीपति भू–स्वामियों को लगान पर दे देते थे।
- कृषि में पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली का प्रभुत्व स्थापित हो जाने से किसान बेरोजगार होकर शहरों का रास्ता पकड़ने लगे।
- पूँजीपति अधिकाधिक लाभ कमाने के दृष्टिकोण से भूमि का उपयोग करने लगे।
- इंग्लैंड में किसानों से छीनी जमीन की बाड़बन्दी करके पूँजीपति ऊन के निर्यात से अधिकाधिक मुनाफा कमाने के लिए उसमें भेड़ों के बड़े–बड़े रेवड़ों को रखना शुरू कर दिया।

1.7 संकेत–सूचक (Key-words)

- अध्ययनोपरांत – अध्ययन के बाद
- इंग्लैंड में किसानों की इन बर्बाद हालत को प्रसिद्ध विद्वान ने इन शब्दों में व्यक्त किया – "इंग्लैंड में भेड़ें लोगों को खा रही हैं।"
- इस प्रकार सामंतवाद से पूँजीवाद के संक्रमण के फलस्वरूप यूरोपीय समाज में कृषि, उद्योग–धंधों, जीवन शैली, शासन–प्रशासन की व्यवस्था आदि प्रत्येक स्तर पर व्यापक परिवर्तन हुए।
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में माँग एवं आपूर्ति की स्थानीयता की समाप्ति की, प्रतियोगिता प्रधान बाजारों की नींव रखी, अचल सम्पत्ति की जगह चल सम्पत्ति को समृद्धि का आधार बनाया, व्यक्तिगत पूँजी तथा व्यक्तिगत लाभ की प्रवृत्ति स्थापित की तथा नये वर्गीय सम्बन्धों की नींव रखी और वर्गभेद की खाई को और गहरा किया।

- पूँजीवादी व्यवस्था के अंतर्गत भूमि, कारखानों, औजारों आदि पर थोड़े से लोगों का स्वामित्व होता है, जबकि लोगों का एक बहुत बड़ा वर्ग सम्पत्ति व साधनों से हीन होते हैं या बहुत ही कम संपत्ति व साधन होते हैं।
- इस प्रकार स्पष्ट है कि पूँजीवाद में तीन महत्त्वपूर्ण बातें शामिल हैं –
  (i) समाज की बहुसंख्यक आबादी अपने स्वयं के उत्पादन के साधन या औजार से हीन होते थे।
  (ii) वंचित वर्गों के पास अपने श्रम को बेचने के सिवा कोई चारा नहीं था।
  (iii) उत्पादन के साधनों, उत्पादन व उसके वितरण पर समाज के कुछ मुट्ठी भर लोगों के हाथों में सिमट गया था।
- एक उत्पादन प्रणाली के रूप में पूँजीवाद का उदय 16वीं शताब्दी में हुआ यद्यपि उसके कुछ आरम्भिक चिन्ह।
- अध्ययनोपरांत – अध्ययन के बाद
- संक्रमण – एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाना।
- केंद्रीकृत नौकरशाही – समस्त शक्तियाँ एक जगह/एक व्यक्ति में केंद्रित होना/निहित होना।
- जागीर – भूमि का टुकड़ा।
- अभ्युदय – उदय, तरक्की।
- उद्यम – उद्योग, कारोबार।
- स्वामित्व – अधिकार
- तनख्वाह – वेतन
- ताबेदारी – नौकर, सेवक
- गिरवी – बंधक, किसी से ऋण लेने के लिए किसी वस्तु को ऋणदाता के पास रखना।
- रूढ़िबद्ध – पुराने रीति–रिवाज या परंपरा से बंधे होने की प्रवृत्ति।
- श्रेणी – शिल्पियों के संघ जो मध्ययुगीन यूरोप में स्थानीय स्तर पर व्यापार की व्यवस्था करते थे। इसे गिल्ड भी कहते थे।

1.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT):-

भाग (क) (Part-A) बहुविकल्पी प्रश्न (Multiple Choice Questions MCQS)

(i) पूँजीवादी व्यवस्था में उत्पादन का मुख्य लक्ष्य .... था ।

(क) स्थानीय उपभोग की पूर्ति करना (ख) अधिकाधिक लाभ कमाना

(ग) कृषि उत्पादन को बढ़ावा देना (घ) मुद्रा के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देना।

(ii) सामंतों के अत्याचार के खिलाफ 1382 ई॰ में वाट टाइलर के नेतृत्व में किसानों का विद्रोह किस देश में हुआ था ?

(क) फ्रांस (ख) इंग्लैंड (ग) जर्मनी (घ) स्पेन

(iii) सामंतवादी अर्थव्यवस्था में कानूनी रूप से समस्त भूमि पर .... का अधिकार होता था।

(क) राजा (ख) जागीरदार

(ग) श्रेणी वर्ग (घ) व्यापारी वर्ग

(iv) सामंतवादी व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों एवं कर्त्तव्यों का निर्धारण उसके .... पर अधिकारों के आधार पर होता था।

(क) पूँजी (ख) भूमि (ग) श्रम (घ) मुद्रा

(v) निजी संपत्ति का केन्द्रीकरण .... प्रणाली की अर्थ–विषयक विशेषताएँ थी।

(क) पूँजीवादी (ख) समाजवादी (ग) सामंतवादी (घ) जागीर

(vi) सामंतवादी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत कृषि दासों को भूमि जोतने का अधिकार .... रूप से प्राप्त था।

(क) वंशानुगत (ख) तात्कालिक (ग) व्यक्तिगत (घ) सामूहिक

(vii) संयुक्त पूँजी कम्पनियों की स्थापना पंद्रहवीं शताब्दी में पहले .... और .... देश में हुई थी।

(क) इंग्लैंड और नीदरलैण्ड्स (ख) स्पेन और फ्रांस

(ग) जर्मनी और इटली (घ) इनमें से कोई नहीं

(viii) पूँजीवादी प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए बैंकिंग प्रणाली की शुरूआत .... शताब्दी में हुई थी।

(क) 15 वीं शताब्दी (ख) 16 वीं शताब्दी (ग) 17 वीं शताब्दी (घ) 18 वीं शताब्दी

(ix) यूरोपीय समाज में पूँजीवाद के प्रादुर्भाव के फलस्वरूप दो नये वर्ग .... और .... अस्तित्व में आए।

(क) श्रेणी और व्यापारी (ख) कृषक और व्यापारी

(ग) बुर्जुआ (पूँजीपति) और सर्वहारा (प्रोलीटेरियेट) (घ) महाजन और सामंत

(x) पूँजीवादी प्रणाली के फलस्वरूप इंग्लैंड में किसानों की दुर्दशा पर यह कथन कि "इंग्लैंड में भेड़ें लोगों को खा रही है।" किस प्रसिद्ध विद्वान का है ?

(क) टामस मोर (ख) एम. गोल्डमेन (ग) होब्सन (घ) वाट टाइलर

भाग (ख) (Part-B) निबंधात्मक / दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer Type Question)

(i) यूरोपीय समाज में सामंतवादी अर्थव्यवस्था के उद्‌भव व पतन को विस्तार से समझाएँ।

(Explain in details about origin and Decline of Feudal Economy in European Society.)

(ii) यूरोपीय सामंतवाद की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख करें।

(Discuss about the Sailent Features of European Feudalism.)

(iii) यूरोप में पूँजीवाद के उदय के कारणों एवं इनके प्रभावों की विवेचना करें।

(Discuss about the causes of Rising of Capitalism and its effects in European Society.)

(iv) पूँजीवाद के मुख्य लक्षण / विशेषताओं को लिखें।

(Write down the Main Characteristics of Capitalism).

भाग (ग) (Part-C) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Question)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें (Write down short notes on the followings) :-

(i) सामंतवादी अर्थव्यवस्था (Feudal Economy)

(ii) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था (Capitalism Economy)

(iii) यूरोपीय सामंतवाद की विशेषताएँ (Characteristics of European Feudalism)

(iv) पूँजीवाद की मुख्य विशेषताएँ (Characterisitics of Capitalism)

(v) सामंतवाद का पतन (Decline of Feudalism)

(vi) पूँजीवाद का आरम्भ (Beginning of Capitalism)

(vii) जैकरी वर्ग का विद्रोह

(viii) पूँजीवाद का प्रभाव (Effect of Capitalism)

(ix) विनिर्माणशाला (मैन्यूफेक्टरी)

(x) मध्ययुगीन श्रेणियाँ (शिल्प –संघ या गिल्ड)

1.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to Check your progress):-

1.5 भाग (क) उत्तर :– (i) सामंतवादी (ii) कृषि आधारित (iii) राजा (iv) अधीन कृषक वर्ग (v) भूमि (vi) व्यापारिक मेलों (vii) वाट टाइलर (viii) फ्रांस (ix) पूँजीवादी (x) सोलहवीं (16वीं)

1.5 भाग (ख) का उत्तरः–(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य (v) सत्य (vi) असत्य (vii) सत्य (viii) सत्य (ix) सत्य (x) असत्य

1.8 भाग (क) उत्तर :– (i) ख (ii) ख (iii) क (iv) ख (v) ख (vi) क (vii) ग (viii) क (ix) ग (x) क

1.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References):-

- जैन एवं माथुर (1500 – 1950), विश्व इतिहास, जैन प्रकाशन मंदिर, जयपुर
- वर्णवाल महेश कुमार, विश्व इतिहास NCERT सार – Cosmos Publication, Delhi

B.A. PART-IIIrd Year SEMESTER-Vth	
Course Code : HIST 302	**Author : डॉक्टर सुखवीर सिंह**
अध्याय–2	**Updated: Mohan Singh Baloda**

पुनर्जागरण एवं सुधार

Renissance and Reformation

अध्याय संरचना

2.1 अधिगम उद्दे"य (Learning Objectives)

2.2 परिचय (Introduction)

2.3 विषय वस्तु के मुख्य बिन्दु (Main Body of the Text)

- 2.3.2 पुनर्जागरण की परिभाषा (Definition of Renissance)
- 2.3.2 इटली में पुनर्जागरण का उदय (The Rise of the Renissance in Italy)
- 2.3.3 पुनर्जागरण का विकास (Development of the Renissance)
- 2.3.4 सुधार आंदोलन (Reform Movement)

2 .4 **पाठ का आगे का मुख्य भाग** (Further Main Body of the Text)

- 2.4.1 पुनर्जागरण के उत्थान के कारण (Reasons of the Rise of the Renissance)
- 2.4.2 पुनर्जागरण का प्रभाव (Effects of the Renissance)
- 2.4.3 सुधार आंदोलन का विकास (Development of the Reform Movement)
- 2.4.4 सुधार आंदोलन के उदय के कारण (Reasons for the Rise of the reform Movement)
- 2.4.5 सुधार आंदोलन के प्रभाव (Effects of the Reform Movement)

2.5 प्रगति –समीक्षा (Check Your Progress)

2.6 सारां”ा (Summary)

2.7 संकेतक –शब्द (Keywords)

2.8 स्वंय – मूल्यांकन परीक्षा (Self Assessement Test)

2.9 प्रगति –समीक्षा हेतू प्र”नोत्तर (Answer to Check Your Progress)

2.10 संदर्भ /सहायक अध्ययन साम्रगी (References/ Suggested Readings)

2.1 अधिगम उद्दे”य (Learning Objectives)

अध्याय 'यूरोप मे पुनर्जागरण एवं धार्मिक सुधार आंदोलन' के अध्ययन के प”चात् हम इन उद्दे”यों को प्राप्त करने का प्रयास करेंगें।

- यूरोप में पुनर्जागरण के उदय से पूर्व की स्थिति कैसी थी?
- पुनर्जागरण का उदय किन परिस्थितियों में हुआ?
- पुनर्जागरण ने यूरोप में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया?
- धार्मिक सुधार आंदोलन के विभिन्न पक्षों का अध्ययन ?
- सुधार आंदोलन ने यूरोप के धार्मिक जीवन में क्या नए परिवर्तन किए?
- सुधार आंदोलन के विरूद्व हुई प्रतिक्रिया का दृष्टिकोण जानना?
- यूरोप मे परिवर्तन की इस लहर का वि”व पर प्रभाव का अध्ययन?
- यूरोप के विभिन्न दे”ाो में पुनर्जागरण की प्रगति की समीक्षा से अवगत होना?

2.1 परिचय (Introduction)

यूरोप में पुनर्जागरण और धार्मिक सुधार आंदोलन मध्य युग के अंत और आधुनिक युग के प्रारंभ के सूचक बनकर सामने आए। यूरोप में मध्य युग में सामतवाद और चर्च का बोलबाला था। यह युग यूरोप में कुलीन व्यक्तियों और पादरियों के मध्य गठबंधन का युग था। कृषक वर्ग दोनों प्रभाव”ााली वर्गो के मध्य पीसता रहा था। सामंतवादी युग शक्ति पर आधारित व्यवस्था थी। यूरोप में 16वीं सदी में भौगोलिक खोजें भी

प्रारंभ हो गई। इन खाजों के फलस्वरूप यूरोपीय लोगों के लिए व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में नई संभावनाएं सामने आईं। यूरोप में पुनर्जागरण और धार्मिक सुधारवादी आंदोलन के फलस्वरूप एक नए युग का सूत्रपात हुआ। इस लहर के परिणामस्वरूप मध्य युग की स्थापित रूढिवादी मान्यताओं को प्रत्येक क्षेत्र में चुनौती दी गई। यह चुनौती ही नए विचारों के उदय का प्रतीक बनी और एक नए वर्ग 'मध्य वर्ग' की शक्ति का उदय हुआ। जीवन के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन की शुरूआत हो गई। यह परिवर्तन ही 'पुनर्जागरण' कहलायां । पुनर्जागरण का उदय इटली से हुआ और धीरे–धीरे परिर्वतन की यह लहर पूरे यूरोप में फैल गई। यद्यपि नए विचारों और परिवर्तनों का रूढिवादी शक्तियों ने सख्ती से विरोध किया परंतु यह लहर निरन्तर आगे बढती गई। पुनर्जागरण की शुरूआत 15वीं सदी से मानी जाती है। इस प्रकार पुनर्जागरण का युग युरोप के इतिहास में संक्रमण का युग है। सामाजिक और राजनैतिक जीवन मे स्थापित रूढिया धार्मिक जीवन में इसी प्रकार लोगों को बेड़ियो में बांधे हुए थी। पुनर्जागरण के फलस्वरूप धार्मिक जीवन में नए विचारों को बल मिला और कैथालिक धर्म में आई हुई बुराईयों को चुनौती दी गई। इससे धार्मिक सुधारवादी आंदोलन का प्रांरभ हुआ और प्रोटेस्टेंट मत का उदय हुआ। इस प्रकार पुनर्जागरण का आंदोलन बहुआयामी सि़द्ध हुआ। पुनर्जागरण की इस लहर का प्रेरणस्त्रोत महान् प्राचीन यूनानी और रोमन सभ्यता थी। पुनर्जागरण यूरोप के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित कर रहा था। इस आंदोलन ने निरकुं"ा राजतंत्रो को नए विचारों के समर्थन के लिए बाध्य कर दिया। इस प्रकार पुनर्जागरण और धार्मिक सुधारवादी आंदोलन मध्यकालीन यूरोपीय सांस्कृतिक जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सि़द्ध हुए और इन्होंनें परिवर्तनों को अव"यम्भावी की लहर आई, उसने यूरोप में आधुनिक युग का सूत्रपात किया।

2.1 विषय वस्तु के मुख्य बिंदु (Main Body of the Text)

2.3.1 पुनर्जागरण की परिभाषा

'पुनर्जागरण' (Renaissance) रेनेसांस मूल रूप से फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। 'Renaissance' का अर्थ है ' पुन : जन्म' अथवा 'पुनरूत्थान'। 15वी शताब्दी के मध्य में यूरोप की सभ्यता और संस्कृति के प्राचीन केन्द्र इटली में साहित्य और कला के क्षेत्र में नए विचारों का उदय हुआ। यह विचार महान् यूनानी और रोमन सभ्यता के आद"ों और मूल्यों से प्रेरित थे। इन विचारों से पूरे यूरोप में परिवर्तनो की लहर सी आ गई। परिवर्तन की इसी लहर को 'पुनर्जागरण' अथवा 'रेनेसांस' कहा गया। प्रसिद्ध इतिहासकार जे.ई. स्वेन के शब्दों में, " पुनर्जागरण एक सामूहिक शब्द है जो मध्ययुग के अंत तथा आधुनिक युग के शुरू में परिलक्षित सभी बौद्धिक परिवर्तनो के लिए किया जाता है।"

एक अन्य प्रसिद्ध इतिहासकार एच.ए. डेवीज के शब्दों में, 'पुनर्जागरण से अभिप्राय मनुष्य के साहसी तथा स्वतंत्रता प्रेमी विचारों का नया जन्म है तो मध्यकाल में धार्मिक शक्ति की केन्द्र की जंजीरों में जकडे हुए थे।' इस प्रकार पुनर्जागरण एक सामूहिक शब्द है और इसका उपयोग उन सभी परिवर्तनों को इंगित करने के लिए किया जाता है जो जिनका उदय रूढिवादी और प्रतिक्रियावादी विचारों को चुनौती देने के लिए हुआ था। अब आस्था और वि"वास के स्थान पर तर्क को महत्व दिया जाने लगा। अब उदार और मानवतावादी विचारों का आगाज हुआ और जड़ता पर प्रहार किया जाने लगा। सामाजिक और धार्मिक जागृति बढने लगी। साहित्य, कला, संस्कृति और वैज्ञानिक सोच को बढावा दिया जाने लगा और साथ ही नए विचारों और दृष्टिकोणों की स्वीकार्यता बढनी प्रारंभ हो गई।

2.3.2 इटली में पुनर्जागरण का उदय

यूरोप में पुनर्जागरण का उदय सबसे पहले इटली में हुआ। इटली से यह लहर फ्रांस, इग्लैंड, स्विट्जरलैंड, जर्मनी और नीदरलैंड आदि दे"ाों में फैल गई। इस बात पर चर्चा किया जाना आव"यक होगा कि पुनर्जागरण का उदय इटली में ही क्यों हुआ?

- इटली यूरोपीय सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र रह चुका था। रोम प्राचीन रोमन साम्रज्य की राजधानी था। महान रोमन साम्राज्य के वेभव के अनेक स्मारक अभी भी इटली में विद्यमान थे। प्राचीन यूरोपीय भाषा लैटिन की अनके रचनाए इटली के बडे चर्चो मे मौजूद थी। इन्ही प्राचीन स्मारकों और रचनाओं ने साहित्यकारों, कलाकारों, विद्वनों और तर्क"ाास्त्रियों को प्रेरित किया।
- इटली का पूर्व के दे"ाो के साथ अच्छा संपर्क था और इसी सम्पर्क के बल पर इटली के विभिन्न राज्यों ने व्यापार और वाण्ज्यि में काफी प्रगति कर ली थी। इटली में कई बडे नगरों का उदय और विकास हुआ और प्राचीन नगर भी फिर से समृद्ध होने लगे। इन समृद्ध नगरों ने बोद्धिक विकास को बल प्रदान किया।
- 1453 ई. में रोमन साम्राज्य के बडे नगर रहे कुस्तुनतुनिया पर तुर्को ने अधिकार कर लिया था। इसके परिणामस्वरूप बहुत से यूनानी और यूरोपीय विद्धान कुस्तुनतुनिया से विस्थापित होने के बाध्य हो गए और वे इटली के शहरों फलोरेंस, वेनि"ा और रोम आदि शहरों में बस गए । इन विद्वानों का पुनर्जागरण में वि"ोष योगदान रहा।
- प्राचीन रोमन साम्राज्य की राजधानी रोम शहर इटली में ही था और कैथोलिक धर्म को मुख्यालय भी यही था। कई पोप लैटिन ग्रंथों और रचनाओं के संरक्षक साबित हुए। उन्होनें इन ग्रंथो और रचनाओं का अनुवाद कराया और रोम को साहित्य की दुनिया का स्वर्ग कहा जाने लगा। इस

अनुवाद के फलस्वरूप दुर्लभ ग्रंथों और रचनाओं के विचारों का प्रसार तत्कालीन साहित्यकारों तक हो गया और इसने पुनर्जागरण को गति प्रदान की। प्राचीन यूनानी और रोमन रचनाओं ने महान् यूनानी सभ्यता और वि"ााल रोमन साम्राज्य के समृद्ध दिनों की याद ताजा कर दी और लोग अपने अतीत से प्रेरणा लेकर अपने वर्तमान को समृद्ध बनाने की और अग्रसर हुए।

- इटली का भूमध्यसागर से संपर्क ज्यादा होने के कारण इटली के नगर वि"व के अन्य दे"ाों से ज्यादा संपर्क रखते थै। इटली तीन और से भूमध्यसागर से घिरा हुआ था और इस प्रकार इटली के लोग वि"व में हो रहे परिवर्तनों से परिचित थे और नए विचारों से प्रेरित होकर सबसे पहले इटली में ही पुनर्जागरण की लहर उत्पन्न हुई और धीरे–धीरे इसने समस्त यूरोप को प्रभावित करना प्रारंभ कर दिया।

2.3.3 पुनर्जागरण का विकास (Development of Renaissance)

पुनर्जागरण एक बहुआयामी बोद्धिक आंदोलन था। इस आंदोलन ने साहित्य, कला, विज्ञान और भूगोल सहित कई क्षेत्रों को प्रभावित किया। आइए हम विस्तार से पुनर्जागरण के प्रसार पर क्षेत्रवार विचार करते हैः–

- **साहित्यः**– पुनर्जागरण आंदोलन ने साहित्य के क्षेत्र में बडे और क्रांतिकारी परिवर्तनों को जन्म दिया। इस युग मे प्राचीन यूरोप की लैटिन भाषा और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य का भी विकास हुआ। क्षेत्रीय भाषाओं में इटालियन, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी, स्पेनि"ा, पुर्तगाली और डच भाषाओं का विकास हुआ। साहित्य में अब धर्म के अतिरिक्त मानवीय संवेदनाओं और नए विचारों को भी पर्याप्त स्थान दिया जाने लगा। अब इतिहास, भूगोल, राजनीति–"ाास्त्र और द"ान आदि विषयों का स्वतन्त्र विषयों के रूप में अध्ययन प्रांरभ हो गया।

  (1) इटालियन साहित्य का विकासः– पुनर्जागरण आंदोलन का प्रारंभ साहित्यिक विकास के साथ हुआ। इटालियन साधारण लोगों की भाषा थी और साहित्यकारों ने लोगों की आम भाषा में कृतियों की रचना की और इटली में नए विचारों के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन विचारों ने इटली के लोगों में राष्ट्रीयता के विचार को जन्म दिया क्योंकि इटली इस समय कई रियासतो में बंटा हुआ था। इटली के इटालियन भाषा को समृद्ध रूप देने वाले साहित्यकारों में दांते, पैट्राक और बोकासियों का मुख्य योगदान था। इटालियन भाषा में एक अन्य विद्वान मैक्यावली ने भी द प्रिंस (The Prince) नामक प्रसिद्ध रचना लिखि जो राजनीतिक क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध हुई। दांते

फलोरेंस का रहने वाला था। उसने पादरियों के आडम्बरपूर्ण और भष्ट्र आचरण की आलोचना की। यद्यपि व्यक्तिगत रूप से वह धार्मिक विचारों वाला व्यक्ति था परंतु पोप के वैभवपूर्ण और अय्यास जीवन के प्रति दांते की धृणा उसकी रचनाओं से स्पष्ट थी। दांते की प्रसिद्ध रचना (डिवाईन कोमेडी) (Divine Comedy) है। (डिवाईन कोमेडी) में काल्पनिक कथा का चित्रण किया गया है। पेट्राक भी फलोरेंस नगर का रहने वाला था। उसने अपना अधिकतर समय प्राचीन लैटिन ग्रंथों के अध्ययन में व्यतीत किया था। वह एक बहुत अच्छा कवि था। उसे पेरिस के वि"वविद्यालय और रोम नगर द्वारा कई बार सम्मानित किया गया। उसने अपने दे"ावासियों से आह्वान किया कि वे प्राचीन रोम का गौरव पुनः स्थापित करने के लिए कार्य करें। बोकासियों पेट्राक का "िाष्य था। उसे महान् मानवतावादी माना जाता है। उसने इटालियन भाषा में गद्य में एक नई शैली का विकास किया जिसके कारण उसे इटालियन भाषा के 'गद्य का पिता' कहा जाता है। उसकी प्रसिद्ध रचना 'दी कैमरोन' (Decameron) है जो 100 कहानियों का संग्रह है। इसी रचना की लोकप्रियता की वजह से बोकासियों इटली में कहानिकार के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इन चार विद्वानों के अतिरिक्त कोल्सियों सलुताती, मेतियो, मेरियों बोर्दो, एंजेलो पोलिजियानो और लुदोविको आरियोस्तो आदि विद्वान साहित्यकारों ने भी पुनर्जागरण आंदोलन में अपनी रचनाओं के माध्यम से विचारों का प्रसार किया और इटालियन भाषा और साहित्य के विकास में योगदान दिया।

(2) फ्रेंच साहित्य का विकास :— पुनर्जागरण के विकास में फ्रेंच साहित्य का भी वि"ोष योगदान था। फ्रांसिस् रैबेलायस तथा माईकल दि मोंटेन की रचनाएं फ्रांस में पुनर्जागरण के विकास में बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। रैबेलायस ने अपनी रचना 'गरगंतुआ' में व्यंग्यपूर्ण अंदाज में अंधवि"वासों और आंडम्बरों पर प्रहार किया। उसने मानवतावादी सोच को सम्मान दिए जाने की बात कही। माईकल दि मांटेन ने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और भाईचारे पर बल दिया। उसने समाज में "िाष्टतापूर्ण आचरण प्रत्येक व्यकित के लिए सम्मानपूर्ण स्थान की बात पर जोर दिया।

(3) अंग्रेजी साहित्य का विकास :— इस युग में अंग्रेजी साहित्य की श्रेष्ठ कृतिया सामने आई। अंग्रेजी साहित्य 16वीं सदी में साहित्यिक प्रगति के शीर्ष पर पहुॅच गया था। अंग्रेजी साहित्यकारों में सर्वप्रसिद्ध जियोफरे चौसर था। उसकी रचना 'कैंटरबरी टेल्स' 'Canterbury Tales' इग्लैंड में बहुत लोकप्रिय हुई। इग्लैंड का अन्य प्रसिद्ध रचनाकार थॉमस मूर था। उसने अपनी प्रसिद्ध रचना 'यूटोपिया' 'Utopia' में तत्कालीन इंगलि"ा समाज में फैली बुरोईयों की सख्त आलोचना की और एक आद"ा समाज की कल्पना प्रस्तुत की। एडमंड स्पैन्सर ने अपनी रचना 'फेयरी क्वीन' 'Faerie

Queen' के द्वारा लोगो को जागृत करने का कार्य किया। फ्रांसिस बेकन ने अपनी सर्वश्रेष्ठ निबंधों मे 'आद"ों राज्य' की कल्पना को प्रस्तुत किया। परन्तु अंग्रेजी साहित्य का सबसे चमकता सितारा इस युग में शेक्सपियर था। विलियम् शेक्सपियर ने 38 नाटकों की रचना की। उसकी रचनाओं ने इग्लैंड में मानवतावाद और राष्ट्रीयता के विचारों को मजबूती प्रदान की। इस प्रकार शेक्सपियर की रचनाओं से इग्लैंड में पुनर्जागरण युग में साहित्यिक विकास अपने शीर्ष स्तर पर पहुॅच गया।

(4) अन्य यूरोपीय भाषाओं **का साहित्यिक विकास** :– इटालियन, फ्रैन्च और अंग्रेजी भाषाओं के साथ–साथ अन्य यूरोपीय भाषाओं मे भी इस युग में श्रेष्ठ साहित्यिक रचना लिखी गई। इनमें जर्मन, स्पेनि"ा, पुर्तगाली और डच भाषाएं शामिल हैं। हालैंड के प्रसिद्ध साहित्यकार 'बेसीरीयस एरासमस' 'Besierius Erasmus' ने व्यंग्य शैली में लिखी गई अपनी रचनाओं के माध्यम से धार्मिक आडम्बरें पर चोट की। जर्मनी के प्रसिद्ध धर्म–सुधारक मार्टिन लुथर ने जर्मन भाषा में बाईबल का अनुवाद किया जो जर्मनी में बहुत लोकप्रिय हुआ। लुथर के अतिरिक्त रूडोल्फस एग्रीकोला (RudolPhus Agricola)और उल्रिच वॉन ह्द्धन आदि साहित्यकारों का जर्मन साहित्य के विकास में वि"ोष योगदान रहा। स्पेनि"ा साहित्यकारों में मिंगुल सर्वाटेज (Miguelde Cervantes) डोन क्यूक्सिोटे व्गंग्यात्मक शैली मे लिखी गई। पुर्तगाली साहित्यकारों लुई डि कैमोइज ने प्रसिद्ध ग्रंथ 'लूसीआड़स' 'The Lusiads' की रचना की। इस प्रकार विभिन्न यूरापीय भाषाओं के साहित्यकारों में पुनर्जागरण युग में अपनी कृतियों के माध्यम से धार्मिक आडम्बरों और चर्च की निरकुं"ाता के खिलाफ आवाज उठाई और मानवीय मूल्यों को महत्व दिया। यूरोप में पुनर्जागरण युग में जागृति पैदा करने में साहित्य की प्रमुख भूमिका थी। इस युग में यूरोप की विभिन्न दे"ाो में नए विचारों के प्रसार में साहित्यिक रचनाओं की वि"ोष भूमिका थी

- **कला**:– मध्य युग में कला सामन्तवाद और चर्च तक सिमटी हुई थी। मध्ययुगीन कला में मौलिकता, लौकिकता और मानवीय संवेदनाओं की कमी थी। पुनर्जागरण की लहर ने यूरोपीय कला के प्रत्येंक पक्ष को पभावित किया।

(i) **चित्रकला** (Drawing) :– मध्यकालीन यूरोप में चित्रकला का मुख्य विषय धर्म होता था। पुनर्जागरण ने चित्रकला के क्षेत्र को व्यापक दृष्टि से प्रभावित किया। अब धार्मिक पक्ष के अतिरिक्त अन्य मानवीय पक्षों को भी चित्रकला में पर्याप्त स्थान दिया जाने लगा। अब चित्रकारी में मानवीय शरीर, पकृति और धर्म–निरपेक्ष विषयों को स्थान दिया जाने लगा। इटली मे पूनर्जागरण के दौर में

लियोनार्डोडि माईकल विन्सी, एंजेलों सांजियों, राफेल और तीतियन जैसे महान् चित्रकार उत्पन्न हुए और चित्रकला को नया आयाम दिया। चित्रकला की नई शैली भी इटली में उत्पन्न हुई और शीघ्र ही यह यूरोप के विभिन्न दे"ाों में फैल गई। जर्मनी में एलब्रेक्ट दुरेर तथा हॉल्बेन, स्पेन में मुरिलों और हालैंड में वॉन डॉयक जैसे प्रसिद्ध चित्रकारों ने पुनर्जागरण में चित्रकला के क्षेत्र में नए प्रयोग किए और लोगों के विचारों को नव–युग की और प्रेरित किया।

(ii) **मूर्तिकला** (Sculpture) :– पुनर्जागरण काल में मूर्तिकला के नए आयाम विकसीत हुए। मूर्तिकारों ने प्राचीन यूनानी और महान् रोमन साम्राज्य की कृतियों से प्रेरणा लेकर मानवीय मूल्यों और पकृति से संबंधित विषयों पर सुन्दर मूर्तिया बनाईं। इस काल के सर्वश्रेष्ठ मूर्तिकारों में लोरेंजो गिबर्टो, दोनातेलो, लूका देला, रोबियों और माईकल एंजेलो प्रमुख थें। पुनर्जागरण युग में इटली के फ्लोरेंस और वेनि"ा शहर मूर्तिकला के दो बडे केन्द्रो के रूप में उभरे।

(iii) **स्थापत्य कला** (Architecture) :– पुनर्जागरण के युग में स्थापत्य कला के क्षेत्र में भी नई शैली विकसीत हुई। इस नई स्थापत्य शैली में डिजाईन और सजावट को वि"ोष महत्व दिया जाता था। इस युग में यूरोप के बडे नगरों मे कई सुन्दर राजमहलों, चर्चो और अन्य सार्वजनिक भवनों का निर्माण हुआ जो स्थापत्य कला का प्रद"ान करते हैं। इस युग की सबसे शानदार प्रतीक नि"ाानियों में रोम का सेंटपीट्र चर्च है जो एक नायाब ईमारत है। यूरोप के अन्य बडे नगरों में भी इस युग में शानदार चर्चो का निर्माण हुआ जो आज भी इन शहरों की शान हैं।

(iv) **संगीत कला** (Musical Art) :– पुनर्जागरण काल मे संगीत के क्षेत्र में भी विकास हुआ और संगीत भी धर्म की बंदि"ाों से मुक्त हो गया। अब संगीत में भी नई प्रवृति देखने को मिली। मध्ययुग में संगीत पर चर्च की ओर से कई प्रतिबंध लगे हुए थे। बंधनों से अब संगीत का.क्षेत्र मुक्त हो गया और उदार की नई प्रवृति संगीत में दिखाई देने लगी। इस युग में साज संगीत (Instrumental Music) और कंठ संगीत (Vocal Music) अलग–अलग विधा के रूप में विकसीत हुए। पुनर्जागरण युग में सुर एवं ताल की नई किस्मों की खोज हुई और परम्परागत किस्मों का विकास हुआ। इस युग में संगीत का साधारण मनुष्य के मनोरंजन के साधन के रूप में विकास और प्रयोग हुआ। इस युग के कुछ संगीजज्ञ पेलेस्ट्राइना, जार्ज फ्रेडरिक हांडेल, जॉन सेबोस्टियन बैक, फ्रेज जोसेफ हैडन और वॉल्फगैंग मोजार्ट आदि थे।

(v) **विज्ञान** (Science) :– ग्रीक और लैटिनी साहित्य में पुनर्जागरण युग में लोगों की रूचि बढने के कारण अब लोगों का दृष्टिकोण भी बदल रहा था। लोग अब स्थापित विचारों और मान्यताओं की बजाय तर्क और विज्ञान की दृष्टि से चीजो को देखने लगे थे। अतः तर्क और विज्ञानिक सोच के विकास के फलस्वरूप

पुनर्जागरण यूग में अनके नए आविष्कार इए जिनसे राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में कई बडे परिवर्तन दिखाई दिए।

- **खगोल विज्ञान** (Artronomy) :– पुनर्जागरण युग में खगोल विज्ञान के क्षेत्र मे कई बडें मत सामने आए और स्थापित मतों को चुनौती दी गई। इस युग में कई बडे–बडे खगोल विज्ञानी हुए जिन्होनें नए सिद्धान्तों को जन्म दिया। इनमें सबसे महान् खगोल वैज्ञानिक निकोलस कोपरनिक्स थे जो पौलेंड के नागरीक थे। कोपरनिक्स ने इस सिद्धांत को खारिज कर दिया कि पृथ्वी सभी ग्रहों का केन्द्र है। इसके विपरीत उन्होनें बताया पृथ्वी अन्य ग्रहों की तरह सूर्य की परिक्रमा करती है। कोपरनिक्स के इस सिंद्धांत से मध्यकालीन विचारधारा को बडी चुनौती मिली। परिणामस्वरूप कोपरनिक्स की पुस्तक 'दि रिवोल्यु"ांस आफ दि हैवन्ली ओरब्स' उसकी मृत्यु के प"चात् ही प्रका"ात हो सकी। 'The Revolutions of the Heavenly Orbs' मे प्रका"ात इस सिद्धांत का जॉन कैपलर और गैलेलियो ने भी समर्थन किया। जॉन कैपलर जर्मन खगोल वैज्ञानिक था। वह एक गणितज्ञ भी था और उसने ग्रहों की गति का नियम प्रतिपादित किया। गैलेलियो इटली का खगोल विज्ञानी और उसने दूरबीन का आविष्कार किया जो आगे चल बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। ईग्लैड के महान् खगोल विज्ञानी ईसाक न्यूटन ने गुरूत्वाकषर्ण के सिंद्धांत को प्रतिपादित कर एक बडी खोज की।
- **भौतिकी विज्ञान** (Physics):– इस युग में भौतिक–विज्ञान के क्षेत्र में भी कई नए आविष्कार हुए जिससे आधुनिक युग का मार्ग प्र"ास्त हो गया। ईसाक न्यूटन और गैलेलियो के बडे आविष्कारों के बाद इस युग में गिलबर्ट, स्टेविन आदि बडे भौतिक वैज्ञानिक हुए। गिलबर्ट ने चुम्बकीय प्रदार्थों संबंधी आविष्कार कर बिजली के आविष्कार के लिए मार्ग तैयार कर दिया।
- **रसायन विज्ञान** (Chemistry) :– पेरासेल्सस तथा कॉर्डस ने प्राचीन इस विद्या को रसायन विज्ञान का रूप दे दिया। पेरासेल्सस ने प्रतिपादित किया की मानव शरीर में प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप रासायनिक परिवर्तन होते है। उसने रसायनों का दवाईयों के रूप मे सफल प्रयोग किया। उसने कार्बन गैस की भी खोज की।
- **चिकित्सा–विज्ञान** (Medical Science) :– चिकित्सा के क्षेत्र में इस युग में कई बडे आविष्कार हुए। इग्लैंड के वैज्ञानिक विलियम हार्वे का इस.क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। हार्वे ने सिद्ध किया कि रक्त हदय से धमनियों और नाडियों से होता हुआ वापस हदय में पहुॅचता है।

- गणित :– पुनर्जागरण युग मे यूरोप में गणित के नए सिद्धांतो का प्रतिपादन हुआ। इस युग में फेर्राय, कैपलर, देसारगो इस स्टेविन और ने पियर जैसे बडे गणितज्ञ हुए।

(a) **अन्य क्षेत्र** :– साहित्य, कला और विज्ञान के अतिरिक्त इस युग में कई अन्य क्षेत्रों में बडे आविष्कार हुए जिन्होनें यूरोप को मध्य युग से निकालकर आधुनिक युग में प्रवे"ा का मार्ग तैयार किया। इनमें अन्य मुख्य क्षेत्र इस प्रकार है:–

(i) **छापाखाना**:– जर्मनी के जॉन गुटनवर्ग ने 1454 ई0में0 छापेखाने का महत्वपूर्ण आविष्कार किया। इग्लैंड के वेज्ञानिक विलियम कैकस्टन के प्रयास से 1477 ई0 में0 इग्लैंड में प्रथम छापाखाना स्थापित हो गया। यह एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था और इसने बडे स्तर पर पुस्तकों के छपाई का रास्ता तैयार कर दिया। इससे पूर्व दस्तावेज एवं पुस्तकें हस्तरचित होते थे। इससे "िाक्षा और ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में विस्तार का मार्ग खुल गया।

(ii) **गोला–बारूद और बंदूक** :– यद्यपि गोला–बारूद का आविष्कार चीन में हुआ था परंतु यूरोप में 14वी –15वीं सदी से बडी मात्रा में गोला–बारूद को बडे स्तर पर प्रयोग होने लगा। आगे चलकर यूरोप में बंदूकों का भी निर्माण होने लगा और युद्ध–पद्धति में बडा बदलाव आ गया।

(iii) **कम्पास**:– कम्पास का आविष्कार भी चीन में हुआ था। 15वी सदी से यूरोप के नाविकों ने कम्पास का बडी समुंद्री यात्राओं में प्रयोग करना प्रारंभ कर दिया जिससे नई भौगोलिक खोजों का मार्ग प्र"ास्त हो गया। पुनर्जागरण के युग में कम्पास का प्रयोग बडा क्रांतिकारी सिद्ध हुआ।

(iv) **यूरोपीय साहसिक यात्रियों द्वारा नई खोजें** :– तुर्को द्वारा 1453 ई0 में कुस्तुनतुनिया पर आविष्कार कर लिए जाने के बाद पूर्व के दे"ाों के लिए वैकल्पिक मार्ग की खोज तेज हो गई। इसके परिणामस्वरूप पुतर्गाल का साहसिक यात्री ड़ियाज 1486 ई0 में दक्षिणी अफ्रीका के अंतिम छोर आ"ाा अंतरीव तक पहॅुचने में सफल रहा। यह अन्य यात्रियों के लिए प्ररेणादायक यात्रा थी। 1498 ई0 में पुर्तगाल का ही साहसिक यात्री वास्को–डी–गामा आ"ाा अंतरीप होते हुए भारत की कालीकट बंदरगाह तक पहॅुच गया। इसी प्रकार क्रिस्टोफर कोलम्बस और फर्डीनैंड मैग्लन ने समुंद्री यात्राओं के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए। इन खोजों और यात्राओं के फलस्वरूप यूरोपीय व्यापार और वाणिज्य का तेजी से विकास हुआ।

2.3.4 सुधारवादी आंदोलन

सुधारवादी आंदोलन ईसाई मत मे आंतरिक सुधार की प्रक्रिया थी जिसका उद्धे"य चर्च और पादरियों के जीवन में घर कर चुकी बुराईयों को समाप्त कर पवित्रता की स्थापना करना था। यह आंदोलन 16 वी सदी का बहुत बडा आंदोलन बन कर सामने आया और इसके फलस्वरूप इसाई धर्म दो शाखाओं में बंट गया।

परम्परावादी कैथोलिक कहलाया और सुधारवादी प्रोटेस्टैंट कहलाए। यह आंदोलन चर्च की असीम शक्तियों के विरूद्ध था। इसने ईसाई धर्म के मुखिया पोप को चुनौती दी और आंतरिक सुधार का मौका दिया। सुधारवादी आंदोलन धीरे–धीरे एक बडा जन–आंदोलन बन गया और पूरे यूरोप मे फैल गया। चर्च में सुधार की मांग 14वी सदी मे ही प्रांरभ हो गई थी। परंतु 15वी सदी में यह एक बडा आंदोलन बन गया और इसने लोगों के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धाार्मिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। 14वी और 15वी सदी में वाईक्लिफ, जॉन हस्स तथा दूरासमस जैसे सुधारकों ने चर्च की आंतरिक व्यवस्था मे सुधार के लिए आवाज उठाई परंतु इन महान् सुधारकों को पर्याप्त सफलता नही मिल पाई परंतु वे चर्च के खिलाफ जनमत खडा करने में कामयाब हुए। उनके प्रयासों को सफल बनाने का कार्य मार्टिन लूथर, कॉल्विन और ज्विंगली जैसे महान् व्यक्तियों ने किया।

➢ **ऐतिहासिक पृश्ठभूमि** :– 15वी सदी में यूरोप में मुख्यत रोमन कैथोलिक चर्च का बोलवाला था। कैथोलिक चर्च का व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे हस्तक्षेप था। व्यक्ति का जीवन हर समय चर्च की बेडियों में बंधा हुआ था। व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक वह चर्च पर पूरी तरह निर्भर था और बिना चर्च के व्यक्ति के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। आज का मनुष्य जीवन में उस युग के धार्मिक हस्तक्षेप की कल्पना भी नही कर सकता है। मध्य युग में चर्च और इसके मुखिया पोप की शक्तियों की कल्पना भी नही की जा सकी। यूरोप में कई बडे दे"ाों के शासक पोप की शक्तियों और प्रतिष्ठा से ईर्ष्या करते थे। चर्च की अपनी सरकार कानून अदालते और पुलिस होती थी। चर्च लोगों से कई प्रकार के कर वसूलता था जिनसे किसी को भी कोई छूट नही मिलती थी। राष्ट्रों के कानून चर्च तथा उसके अधिकारियों पर लागू नही होते थे। यदि कोई शासक चर्च के नियमों में हस्तक्षेप की कोि"ा"ा करता तो चर्च इसे ईसाई धर्म से निष्कासित कर सकता था। यूरोप के कई बडे शासकों के पोप के साथ संबंध खराब रहते थे क्योंकि पोप ने धार्मिक क्षेत्र के अतिरिक्त राजनैतिक शक्तियों का प्रयोग करना भी प्रारंभ कर दिया था। चर्च के पादरी, अधिकारी और चर्च का मुखिया पोप वैभवपूर्ण और विलासी जीवन व्यतीत करते थे। धीरे–धीरे बोद्धिक वर्ग और मध्यम वर्ग से चर्च की निरकुं"ा शक्तियों के विरूद्ध आवाज उठनी शुरू हो गई। इस आंदोलन के मुख्य उद्धे"य ये थे :–

(i) चर्च की निरकुं"ा शक्तियों और वि"ोषाधिकारों को समाप्त करना

(ii) पादरियों और चर्च के अधिकारियो में प्रचलित भ्रष्ट आचरण के खिलाफ आवाज उठाना।

(iii) चर्च में नैतिकता और पवित्रता की पुनः स्थापना करना।

(iv) चर्च द्वारा व्यक्ति के व्यक्तिगंत जीवन में हस्तक्षेप को समाप्त करना।

(v) चर्च में आई हुई सभी बुराईयों को समाप्त कर लोगों की चर्च के प्रति आस्था को पुनः बहाल करना।

2.4 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further Main Body of the Text)

इस शीर्षक में हम अध्याय के मुख्य विषय 'पुनर्जागरण एवं सुधार आंदोलन' को पुनः समग्र रूप में प्रस्तुत करेंगें ताकि अध्याय से संबंधित सभी पक्षो का सम्पूर्ण दृष्टि से अध्ययन हो पाएं।

2.4.1 **पुनर्जागरण के उत्थान के कारण** :– इटली मे पुनर्जागरण के प्रांरभ और इस आंदोलन के पूरे यूरोप में फैलने के कई कारण थे।

(i) सामंतवादी व्यवस्था में संकट :– सामंतवादी व्यवस्था मध्यकालीन यूरोप की सबसे बडी राजनैतिक–सामाजिक व्यवस्था थी। यह व्यवस्था कृषि पर आधारित व्यवस्था थी। 14वीं सदी से सामंतवादी व्यवस्था का पतन प्रारंभ हो गया। कई कमियां की वजह़ यह राजनैतिक–सामाजिक व्यवस्था टुटने लगी। 14वीं सदी से सामंतवादी व्यवस्था का पतन प्रारंभ हो गया। कई कमियों की बजह यह राजनैतिक–सामाजिक व्यवस्था टूटने लगी। 14वीं सदी से मध्य वर्ग की शक्ति का उदय होने लगा। मध्य वर्ग मे कई श्रेणियों के लोग शामिल थे। इस युग मे व्यापार एवं वाणिज्य में वृद्धि के फलस्वरूप राज्यों की शक्ति में वृद्धि होने लगी और अब वे सेना की आव"यकता के लिए सामंतो पर निर्भर नहीं रहे। सामंतवादी व्यवस्था के टूटने से नई विचारों का उदय हुआ और पुनर्जागरण के लिए मार्ग प्र"ास्त हुआ।

(ii) धर्म–युद्धों में सामंतो का विना"ा :– मध्य–पूर्व में यरू"ालम के पवित्र शहर पर अधिकार के प्र"न को लेकर 1096 ई0 से 1291 ई0 के मध्य आठ बडे धर्म–युद्ध लडे गए। लगभग 200 वर्षो तक चले इन धर्म–युद्धों में यूरोप के बडे सामंत मारे गए। इन धर्म–युद्धों ने सामंतवादी व्यवस्था को बडी चोट पहुचाई और नए विचारों के लिए मार्गप्र"ास्त हुआ।

(iii) पूर्व से सम्पर्क :– धर्म –युद्धों के युग में यूरोप के लोगों का पूर्व के दे"ाो के साथ बडा सम्पर्क हुआ। धर्म–युद्धों के लगभग 200 वर्षो के दौरान लगातार युद्ध नही हुए और यूरोप के लोगों को इन धर्म–युद्धो के दौरान अरब और चीन में हुई प्रगति से रूबरू होने का मौका मिला। इस युग में अरब और मध्य–पूर्व के अन्य दे"ाो की सभ्यता यूरोप की सभ्यता से ज्यादा विकसीत थी। यूरोप से बहुत से लोग मिस्र और अन्य दे"ाों मे अध्ययन के लिए आए और इन संपर्को के कारण नए विचार और जानकारियां यूरोप पंहुची।

(iv) चर्च के प्रभाव और शक्तियों में कमी :– यूरोप मे कई कारणो से 13–14 वी शताब्दियों में चर्च के प्रभुत्व और अधिकारों में कमी आई। यूरोप में शक्ति"ााली राजतंत्रीय राज्यों का उदय भी इसका एक बडा कारण था। इन शक्ति"ााली राज्यो के शासकों ने पोप और स्थानीय पादरियों के अधिकारों में कटौती कर दी। पोप और चर्च के प्रति पुनर्जागरण के सुधारकों ने कडी आलोचना की नीति अपनाई क्योंकि पोप और चर्च के अधिकारी और पादरी पथ–भ्रष्ट हो चुके थे। इस बोद्धिक आंदोलन के नए विचारों का प्रसार हुआ जा पुनर्जागरण आंदोलन कहलाया।

(v) व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि :– 13 वी सदी के प"चात् यूरोप ने लोगों ने पूर्वी दे"ाों के व्यापारिक संपर्क स्थापित कर लिए और इटली के व्यापारियों ने इस व्यापार से काफी मुनाफा कमाया। इसके प"चात् पुर्तगाल, स्पेन और फ्रांस के व्यापारी भी इस ओर आकर्षित हुए। इन दे"ाों में समृद्ध व्यापारिक श्रेणियों का उदय हुआ। और इन्होनें साहित्यकारों और कलाकारों का पर्याप्त संरक्षण दिया जिससे पुनर्जागरण के उदय में सहायक परिस्थितियां बनी।

(vi) कुस्तुनतुनिया पर तुर्को का अधिकार :– कुस्तुनतुनिया का वि"ााल और समृद्ध नगर पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी था। यह नगर तुर्की में स्थिति था और ईसाई सभ्यता और संस्कृति का एक बडा केन्द्र था। इस नगर पर 1453 ई0 मे उस्मान तुर्को ने अधिकार कर लिया। यहॉ बडी संख्या मे यूनानी और रोमन विद्वान् निवास करते थे। यहॉ बहुत वि"ााल पुस्तकालय था जिसमें यूनानी और लैटिन भाषा की रचनाओं का संग्रह था। तुर्को के आक्रमण के कारण बडे स्तर पर विस्थापन हुआ और विद्वान इन रचनाओं को लेकर इटली के फलोरेंस, वेनि"ा और रोम के शहरों में चले गए। इन विद्वानों का पुनर्जागरण आंदोलन में वि"ोष योगदान रहा ।

(vii) छापेखाने का आविष्कार :–जर्मनी के जॉन गुटनवर्ग ने 1454 ई0 में पुस्तक छापने की म"ाीन का आविष्कार किया। अगले 20 वर्षो में इटली और यूरोप के अन्य दे"ाों में कई छापेखाने लग गए। इग्लैंड में 1477 ई0 में कैकस्टन ने पहला छापाखाना स्थापित कर लिया। इस समय तक पर्याप्त मात्रा में कागज की आपूर्ति भी उपलब्ध थी। इस प्रकार 14वीं सदी के उतरार्ध में पुस्तक छपने की शुरूआत हो गई और पुनर्जागरण आंदोलन में साहित्य के विकास में यह मील का पत्थर साबित हुआ।

(viii) प्रगति"ाील शासकों और कुलीनों की भूमिका :– इस युग में यूरोप में कई प्रबुद्ध शासक हुए जिन्होनें नए विचारों का स्वागत किया और मध्यकालीन पुरातन परम्पराओं का विरोध किया। फ्रांस के फ्रांसिस प्रथम, इग्लैंड के हेनरी अष्टम, स्पेन के चार्ल्स पंचम और डेनमार्क के क्रि"चयन सप्तम्

उदार शासक हुए जिन्होनें कलाकारो और विद्वानों को भरपूर संरक्षण दिया। कैथोलिक चर्च के कुछ पोप भी इस कार्य में आगे आए और इन्होनें यूनानी, रोमन और फ्रेंच साहित्य, कला और विचारों को अपना समर्थन दिया। इनमें पोप निकोलस पंचम ओर लियो द"ाम प्रमुख है।

(ix) मानवीयता की भावना का उदय :— मध्यकालीन शोषणवादी सांमत व्यवस्था से त्रस्त कृषकों के लिए पुनर्जागरण आंदोलन अत्यंत उपयोगी सिंद्व हुआ। इस आंदोलन के विचारकों ने धार्मिक कट्रता का परित्याग कर मानवीयता की भावना पर बल दिया। राज्य के स्थान पर व्यक्ति का महत्व दिए जाने की बात होने लगी। इन विद्वानों ने मानवीय संवेदनाओं और कल्याण पर जोर दिया जिससे पुनर्जागरण आंदोलन को एक नई पहचान मिली।

(x) वैज्ञानिक प्रगति :— पुनर्जागरण के उत्थान के लिए इस युग मे पनपी वैज्ञानिक शोध से बहुत मदद मिली। तर्क और नए विचारों के प्रसार के फलस्वरूप चीन और पूर्व के अन्य आविष्कारों को यूरोप ने अपनाया गया और यूरोप में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पनपने लगा। वैज्ञानिक पवृति के उदय से यूरोप मे ंमध्यकालीन धारणाओं को तोडने मे मदद मिली और पुनर्जागरण का क्षेत्र व्यापक हो गया। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण ही नई भौगोलिक खोजों में मदद मिली और यूरोपीय लोगों का दृष्टिकोण वैं"वक हो गया।

(xi) यूरोप में नए नगरों का उदय :— पुनर्जागरण लहर नगरों से प्रारंभ हुई थी। नगरों और पुनर्जागरण का आपस मे गहरा संबंध था। 13वीं सदी के प्रारंभ से यूरोप के कई दे"ाों में नए नगरों का उदय प्रारंभ हो गया था। इन मुख्य नगरों में मिलान, वेनि"ा फलोरेंस, पेरिस, लंदन, लिस्बन, मैड्रिड, मेज, जेनेआ और बर्लिन मुख्य है। नगरों मे स्वतंत्र वातावरण था और सामंतीय प्रभाव कम था। व्यापार और वाणिज्य में हुई वृद्धि के फलस्वरूप इन नगरों में मध्यवर्ग का उदय हुआ। इस प्रकार युरोप में नए नगरों के उदय ने पुनर्जागरण में एक सहायक तत्व का कार्य किया।

(xii) तर्क"ाीलता को प्राथमिकता :— पुनर्जागरण की लहर नए विचारों से उत्पन्न हुई थी। नए विचारों के प्रसार के फलस्वरूप मध्ययुगीन विचारों को चुनौती दी जाने लगी थी और अब तर्क की शक्ति को महत्व दिया जाने लगा। यद्यपि तर्क की बात करने वालों को सर्कीण मध्यकालीन विचारधारा के विरोध का सामना करना पडा। तथापि तर्क के आधार ज्ञान को स्वीकार करनें की नई विचारधारा ने पुनर्जागरण आंदोलन के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2.4.2 पुनर्जागरण का प्रभाव

पुनर्जागरण एक बहुआयामी आंदोलन था। इस आंदोलन ने यूरोप के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में लोगों के जनजीवन को प्रभावीत किया। इस आंदोलन ने लोगों की सोच एवं दृष्टिकोण को उदार एवं व्यापक बनाया । इस आंदोलन को सबसे बडा प्रभाव सामाजिक क्षेत्र को मध्ययुगीन परम्परा सामंतवाद पर पडा और धार्मिक क्षेत्र में इसने चर्च की असीम शक्तियों पर अंकु"ा लगाने का कार्य किया। आइए हम विस्तारपूर्वक पुनर्जागरण आंदोलन के प्रभावों का अध्ययन करते हैः–

➢ **सामाजिक क्षेत्र में प्रभाव**

(i) निरीक्षण की भावना का विकास :– पुनर्जागरण आंदोलन की सबसे बडी उपलिब्ध समाज में तर्क और निरीक्षण की भावना का उदय थी। अब सामंतवादी ढांचे और चर्च द्वारा स्थापित परम्पराओं को विवके और तर्क के आधार पर चुनौती दी जाने लगी। साहित्य, कला, संगीत और ि"ाक्षा के प्रसार के कारण लोगों के ज्ञान और आत्मवि"वास में वृद्धि हुई और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विचार को बल मिलने लगा।

(ii) मानववाद की भावना का विकासः–इस युग के अधिकां"ा बुद्धिजीवियों ने मनुष्य के वर्तमान को महत्व देते हुए मनुष्य के जीवन के कल्याण की बात की। अधिकतर विचारकों ने अनुचित धार्मिक बंधनों की खुलकर आलोचना की और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का समर्थन किया। पैट्राक, बोकासियो और दांते जैसे विचारकों की बात कही और मानववाद को महत्व दिया गया।

(iii) महिलाओं की स्थिति में सुधार :– सामंतवादी सामाजिक ढांचे मे महिलाओं को ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता था। महिलाओं को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं था। पुरूषों के मुकाबले उनकी स्थिति अत्यत कमजोर थी। ि"ाक्षा का प्रसार होने के कारण महिलाओं की स्थिति में इस आंदोलन के कारण तुलनात्मक दृष्टि से काफी सुधार हुआ। वे प्रत्येक क्षेत्र में रूचि लेने लगी। उनके परिधान, रूप–सज्जा और ि"ाष्टाचार में परिवर्तन हुए। इस युग मे नारी श्रृंगार की महत्व दिया जाने लगा। उनके सम्मान में वृद्धि हुई।

(iv) ि"ाष्टाचार एवं आचरण के नियमों का विकासः– पुनर्जागरण आंदोलन के फलस्वरू ि"ाष्टाचार एवं आचरण के नियमों में व्यापक बदलाव हुए। इस आंदोलन के दौरान भोजन करने के लिए मेज–कुर्सियों, धुरी, कांटों और चम्म्चों का प्रयोग होने लगा। भोजन का स्वाद बढाने के लिए विदे"ाी गर्म मसालों का प्रयोग बढ गया। प्राचीन यूनानी सभ्यता और महान् रोम साम्राज्य से प्रेरणा लेकर बातचीत और ि"ाष्ट आचरण के तौर–तरीकों में सुधार

हुआ। अब नम्रता ि"ाष्टाचार और बुद्धि–कौ"ाल का व्यापक प्रयोग होने लगा। यह तरीका एक सभ्य समाज के निर्माण का परिचायक बन रहा था।

(v) नैतिकता का पतन :– पुनर्जागरण के समाजिक जीवन में सकारात्मक प्रभावों के साथ–साथ कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिल। मध्य काल में धर्म का व्यापक प्रभाव होने के कारण लोग नैतिक दृष्टि से उच्च मूल्यों का पालन करते थे। पुनर्जागरण आंदोलन के फलस्वरूप व्यक्तिगत जीवन और मानववाद पर ज्यादा जौर दिया जा रहा था। इसके फलस्वरूप लोगों के जीवन में नैतिक गिरावट दिखाई देने लगी। अब लोग भोतिक जीवन पर ज्यादा ध्यान देने लगे। लोगों का ध्यान व्यक्तिगत सुख– सुविधाओं में वृद्धि पर ज्यादा रहने लगा। इससे सामाजिक कल्याण की भावना कमजोर हुई। इस युग में भ्रष्ट तौर–तरीके बढने लगे। मिलावट, माप–तौल में गडबडी और रि"वतखोरी जैसी बुराईयां समाज में बढने लगी। इस काल में चोरी, डकेती और सामाजिक अपराधों में वृद्धि होने लगी। इस प्रकार पुनर्जागरण के आंदोलन के कुछ बरे प्रभाव भी दृष्टिगोचर होने लगे।

- **आर्थिक क्षेत्र में प्रभाव**

पुनर्जागरण आंदोलन के उदय के फलस्वरूप यूरोपीय आर्थिक जीवन में भी कई प्रभाव दृष्टिगोचर हुए। पुनर्जागरण के फलस्वरूप उत्पादन के क्षेत्र में नए प्रयोग हुए। यूरोप के व्यापार और वाणिज्य में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। आगे चलकर यही प्रयोग आर्थिक क्षेत्र में समृद्धि का कारण बने और यूरोप की जनसंख्या में भी वृद्धि हुई। इस युग में जिस विचारधारा का प्रसार हुआ वह आगे चलकर वाणिज्यवाद और पूँजीवादी विचारधारा के उदय मे सहायक बनी। नई भौगोलिक खोजों ने भी उपनिवे"ावाद के उदय मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार पुनर्जागरण आंदोलन में यूरोपीय आर्थिक जीवन का भी व्यापक दृष्टि से प्रभावित किया। व्यापार और वाणिज्य में हुई प्रगति के फलस्वरूप यूरोप के दे"ाों में आर्थिक समृद्धि आई और प्र"ाा और इंग्लैंड जैसे दे"ाों में आर्थिक सुधार लागू किए गए। इन सुधारों का साधारण लागों को भी लाभ पहुॅचा और प्रजा के जीवन–स्तर में सुधार आया। पुनर्जागरण आंदोलन की उदार और मानवतावादी विचारधारा के फलस्वरूप कृषकों की द"ाा में सुधार हुआ और भूमि कर की दर कृषक अनुकूल रखी गई। इस आंदोलन की विचारधारा का अनुसरण करते हुए आस्ट्रिया से दास–प्रथा को समाप्त करने की धोषण कर दी और सभी दासों को मुक्त कर दिया गया। परंतु कुछ दे"ाों में अभी भी मध्यकालीन विचारों को

जारी रखा गया। फ्रांस जैसे बडे दे"ा में अभी भी मध्यकालीन सामंतवादी ढांचा जारी रहा और सामंतवादी प्रतीक अपनी पहचान बनाएं रखने में कामयाब रहे। अभिजात्य वर्ग अभी भी अपने वि"ोषाधिकारों का परित्याग करने के लिए तैयार नही था। जिसके फलस्वरूप ऐसे दे"ाों मे निरकुं"ा शासकों के खिलाफ जनभावनाएं प्रबल होने लगी। आगे चलकर इन शासकों को प्रजा के प्रतिरोधों का सामना करना पडा और सुधार प्रक्रिया को अपनाने के लिए बाध्य होना पडा।

- **राजनैतिक क्षेत्र मे प्रभाव** :– पुनर्जागरण आंदोलन के यूरोप के राजनीतिक जीवन में व्यापक प्रभाव देखने को मिलें । पुनर्जागरण आंदोलन के यूरोप के राजनैतिक क्षेत्र में ये प्रभाव दिखाई दिए :–

(i) निरकुं"ा राजतंत्रो का उदय :– पुनर्जागरण आंदोलन प्राचीन यूनानी सभ्यता और महान् रोम साम्राज्य के आद"ोंं से प्रेरित था । इस आंदोलन ने युरोप में शक्ति"ाली प्रबुद्ध राजतंत्रों के उत्थान में अहम भूमिका निभाई। इटली के महान् राजनैतिक विचारक मैक्यावली की रचना 'द प्रिंस' से प्रेरित होकर यूरोपीय राज्यों ने स्वयं को शक्ति"ाली बनाना प्रारंभ कर दिया। उन्होनें पोप और चर्च के राजनैतिक क्षेत्र में हस्तक्षेप को स्वीकार करने में आनाकानी शुरू कर दी और इस प्रकार धर्म और राजनीति का क्षेत्र अलग होने लगा। यूरोपीय शासकों की इस विचारधारा के फलस्वरूप ईंग्लैंड, फ्रांस, एि"ाया, स्पेन, आस्ट्रिया और रूस में निरकुं"ा राजतंत्रीय दे"ाों का उदय हुआ।

(ii) सामंतवाद पर चोट :– पुनर्जागरण आंदोलन के फलस्वरूप निरकुं"ा राजतंत्रों का उदय हुआ। इन शक्ति"ाली राज्यों ने सामंतों के अधिकारों में कटोती कर दी क्योंकि ये राज्य अब सामंतों पर निर्भर नही रह गए थे। उच्च पदों पर प्रतिभा के अनुसार राजनीतिक नियुक्तियां होती थी।

(iii) सामाजिक कल्याण पर जोर :– पुनर्जागरण आंदोलन के प्रभाव के फलस्वरूप यूरोप मे मानववाद, व्यक्तिवाद तर्क और धर्म–निरपेक्षता आदि विषयों पर चर्चा प्रारंभ हुई। व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि के परिणामस्वरूप राज्यों की आर्थिक व्यवस्था मजबूत हो गई। इसका लाभ राज्यों ने अपने नागरिकों को दिया और अब राज्य सामाजिक कल्याण के कार्यो पर ध्यान देने लगे।

(iv) उपनिवे"ावाद का उदय :– निरकुं"ा राजतंत्रों क उदय और नई भौगोलिक खोजों के उदय के कारण यूरोपीय लोग नए क्षेत्रों से संपर्क में आए। इन दे"ाो से संपर्क में लगातार वृद्धि होती गई। प्रारंभिक संपर्क व्यापार और वाणिज्य तक सीमित था। परंतु आगे आने

वाले समय में यही संपर्क उपनिवे"ावाद के उदय का कारण बना और यूरोपीय दे"ाों ने एि"ाया, अफ्रीका और अमरीका आदि महाद्वीपों में अपने उपनिव"ा स्थापित करने प्रारंभ कर दिए।

- **धार्मिक क्षेत्र में प्रभाव** :– पुनर्जागरण आंदोलन का सर्वाधिक व्यापक प्रभाव धार्मिक क्षेत्र में दिखाई दिया। इस आंदोलन की विचारधारा ने यूरोपीय दे"ाों के लोगों के धार्मिक जीवन पर गहरी छाप छोडीः–

सुधारवादी आंदोलन की प्रेरणाः– पुनर्जागरण आंदोलन एक बहुआयामी एवं वैचारिक आंदोलन था। पुनर्जागरण के प्रभाव के परिणामस्वरूप यूरोप मे सुधारवादी आंदोलन की शुरूआत हुई। यह सुधारवादी आंदोलन रोमन कैथोलिक चर्च की असीम शक्तियां और चर्च में व्याप्त बुराईयों के खिलाफ प्रतिक्रिया थी। चर्च यूरोप मे उन दिनों व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे अनाव"ायक हस्तक्षेप कर रहा था और लोग चर्च के अत्यचारों से त्रस्त थे। चर्च के मुखिया पोप और पादरी वेभवपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे और वि"ोषाधिकारों के कारण कुलीन वर्ग की भांति भौतिक जीवन की सुख –सुविधाओं के उपभोग में व्यस्त रहते थे। आध्यात्मिक जीवन और सदाचरण से वे कोसों दूर थे। चर्च राज्य के भीतर एक राज्य था और चर्च के खिलाफ आवाज उठाने की किसी की भी हिम्मत नही थी। ऐसे वातावरण में बुद्धिजीवियों चर्च की निरकुं"ाता के खिलाफ आवाज बुलंद की और धार्मिक सुधारवादी आंदोलन की शुरूआत हुई और इस आंदोलन को धर्म की बेडियों मे जकडे लोगो से व्यापक जनसमर्थन मिला।

चर्च के अधिकारों मे कमी :–पुनर्जागरण आंदोलन के परिणामस्वरूप चर्च के अधिकारों में कमी आई। चारों ओर से चर्च की निरकुं"ाता के खिलाफ आवाज उठने से चर्च को अपनी साख बनाए रखने के लिए आंतरिक सुधारों के लिए बाध्य होना पडां। चर्च के पादरियों को अपने वि"ोषाधिकारों का परित्याग करने के लिए बाध्य होना पडा।

प्रतिक्रियावादी सुधार आंदोलनः– धार्मिक सुधार आंदोलन का यूरोप के धार्मिक जीवन पर व्यापक प्रभाव पडा। पोप को सुधारवादी आंदोलन की आलोचना से बाध्य होकर चर्च में सुधारों के लिए बाध्य होना पडा। कैथोलिक चर्च के प्रति सच्ची श्रद्धा रखने वाले बहुत से सदाचारी अनुयायी भी कैथोलिक जीवन पद्धति में सुधार के लिए आगे आए और एक व्यापक प्रतिक्रियावादी सुधार आंदोलन की शुरूआत हुई क्योंकि इस सुधार प्रक्रिया का प्रारंभ सुधारवादी आंदोलन के खिलाफ प्रतिक्रिया के रूप में हुआ था। इसलिए इसे प्रतिक्रियावादी सुधार आंदोलन का नाम दिया गया।

- **सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रभाव** :– पुनर्जागरण आंदोलन की शुरूआत इटली से हुई थी। पुनर्जागरण की लहर सांस्कृतिक क्षेत्र से ही उत्पन्न हुई थी। साहित्य, कला और सांस्कृति के अन्य क्षेत्रों में नए प्रयोग हुए। नए विचारों और कृतियों का आगमन हुआ। बुद्धिजीवियों ने अपने विचारों से इस आंदोलन की लहर को पूरे यूरोप में पहुॅचा दिया थां अतः संस्कृति के क्षेत्र में पुनर्जागरण आंदोलन के व्यापक रूप से परिलक्षित हुए।

(i) साहित्यिक प्रगति :–पुनर्जागरण का प्रारंभ इटली के फलोरेंस और वेनि"ा जैसे शहरों से हुआ था। इन प्राचीन नगरों में ग्रीक और लैटिन की अनके प्राचीन कृतिया विद्यमान थी। जिनके अध्ययन से साहित्य के क्षेत्र में नई लहर की शुरूआत हुई। इटली को राजधानी रोम में भी नवीन साहित्यिक सृजन हुआ। कुस्तुनतुनिया के प्राचीन नगर से विस्थापित होकर आए विद्वानों का भी पुनर्जागरण आंदोलन में वि"ोष योगदान था। इटालियन के साथ ही फ्रेंच, अंग्रेजी, स्पेनि"ा, जर्मन, डच और रूसी भाषओं में पुनर्जागरण के प्रभाव के फलस्वरूप सर्वश्रेष्ट कृतिया सामने आई। इस युग में दांते ,पैट्राक, बोकासियों, मैक्यावली, मांटेन, चौसर, थॉमसमूर, शैक्सपीयर, एरास्मस, उल्रिच और सर्वान्तेज जैसे बडे साहित्यकार यूरोप के विभिन्न दे"ाों में हुए और पुनर्जागरण आंदोलन में वैचारिक क्रांति लाने का कार्य किया।

(ii) ि"ाक्षा का प्रसार :– मध्यकालीन यूरोप में चर्च ही ि"ाक्षा क केन्द्र थें। पुनर्जागरण आंदोलन के फलस्वरूप ि"ाक्षा के क्षेत्र में नए परिर्वतन हुए। इस युग में यूरोप के विभिन्न दे"ाों में बडे–बडे वि"वविद्यालयों के अतिरिक्त यूरोप के विभिन्न नगरों में ि"ाक्षा के अन्य बडे–बडे केन्द्र स्थापित हो गए। इस युग में गणित, भूगोल, भौतिक, रसायन शास्त्र, राजनीति शास्त्र, इतिहास, चित्रकला और संगीत जैसे विषयों का स्वतंत्र विषयों के रूप में विकास हुआ।

(iii) ललित कलाओं का विकास :– पुनर्जागरण आंदोलन के प्रभाव के फलस्वरूप कला के क्षेत्र में नए प्रयोग हुए। चित्रकला और मूर्तिकला के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई। स्थापत्य कला और संगीत का भी बहुत विकास हुआ। इस युग में लोरेंजों गिबर्टी, रोबिया और माईकल एंजेलों जैसे बडे मूर्तिकार हुए। इन कलाकारों के अलावा मांटने , पैलेस्ट्राइना, हांडेल आदि महान् संगीतकार हुए जिन्होंने संगीत कला का विकास किया।

(iv) विज्ञान के क्षेत्र में नए आविष्कार :– पुनर्जागरण के प्रभाव स्वरूप अब स्थापित मान्यताओं के स्थान पर नए विचार विकसीत हुए। खगोल विज्ञान के क्षेत्र में कोपरनिक्स कैपलर और गैलिलियों जैसे विज्ञानी हुए। जिन्होनें नए विचारों और धारणाओं को जम्न दिया और मध्यकालीन परम्पराओं को चुनौती दीं। रसायन शास्त्र का भी एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में विकास हुआ। इसी युग में गणित के क्षेत्र में भी विकास हुआ। छापेखाने क आविष्कार ने यूरोप मे नई जान फूँक दी और "ाक्षा के क्षेत्र में यह क्रांतिकारी परिवर्तन माना गया। इस युग मे गोला–बारूद और कम्पास का प्रयोग भी बडे स्तर पर प्रारंभ हो गया। जिनसे यूरोप में युद्ध–पद्धति और भौगोलिक यात्राओं के क्षेत्र में क्रातिकारी परिवर्तन हुए।

2.4.3 सुधार आंदोलन का विकास

इस आंदोलन का प्रारंभ 1517 ई0 में जर्मनी से हुआ। जर्मनी से यह आंदोलन स्विटजरलैंड, फ्रांस, इग्लैंड और दूसरे यूरोपीय दे"ाों मे फैल गया। इस आंदोलन के मुख्य प्रणेता मार्टिन लूथर, ज्विगंली, कॉल्विन और सम्राट हेनरी अष्टम थे।

(i) जर्मनी :– जर्मनी इस समय पवित्र रोमन साम्राज्य नामक एक ढीले–ढाले संघ के अधीन था। इस पवित्र रोमन साम्राज्य नामक संघ के सभी हिस्से व्यावहारिक रूप मे स्वतंत्र थे। जर्मनी में सुधारवादी आंदोलन के लिए इस समय अनुकूल परिस्थितियां थीं। जर्मनी में सुधारवादी आंदोलन का नेतृत्व मार्टिन लूॅथर ने किया उसका जन्म 10 नवंबर ,1583 ई0 को सैक्सनी राज्य के आईजैलबैन नामक स्थान पर हुआ था। वह उच्च "ाक्षा प्राप्त व्यक्ति था। उसने कुछ समय तक पादरी के रूप में कार्य किया और बाद में 1507 ई0 में विट्टनबर्ग वि"वविद्यालय में धर्म"ाास्त्र के प्रोफेसर बन गए। धीरे–धीरे वह एक प्रसिंद्ध धर्म"ाास्त्री के रूप में विख्यात हो गए। रोमन कैथोलिक चर्च में आई हुई बुराईयों को देखकर लूथर का मन बडा व्यथीत रहता था उसने कैथोलिक धर्म को बुराईयों को समाप्त करने के लिए खुद बिडा उठाने का नि"चय किया। जल्दी ही उसे मौका मिल गया जब विट्टनबर्ग में टेट्लेस नामक पादरी ने क्षमा पत्र बेचकर पापों से मुक्त करने का अभियान शुरू किया। ये क्षमा पत्र पोप द्वारा जारी किए जाते थे। इनको जो व्यक्ति खरीदता था, वह पापों से मुक्त हो सकता था। लूथर को यह प्रथा लोगों की आंखो में धूल झोंकने के समान लगी और उसने इसका सार्वजनिक विरोध करने का नि"चय कर लिया।

मार्टिन लूथर ने क्षमा – पत्रों की बिक्री के विरोध में 95 शोध– लेख तैयार किए और इन्हें विट्टनबर्ग चर्च के मुख्य द्वारा पर लगा दियां उसने धर्म – शास्त्रियों को इन शोध लेखो पर बहस की चुनौती दी।

मार्टिन लूथर का यह कदम सीधे कैथोलिक धर्म के मुखिया पोप लियोद"ाम् को सीधी चुनौती थी। इन शोध–लेखों में लूथर ने क्षमा–पत्रों को एक ढकोसला करार दिया और कहा कि एक सच्चे इसाई को इनकी कोई आव"यकता नहीं है। पोप के प्रतिनिधियों ने लूथर को पराजित नहीं कर पाए। अंततः पोप ने लूथर को कैथोलिक धर्म से निष्कासित कर दिया। लूथर ने पोप के इस आदे"ा को सार्वजनिक रूप से जला दिया। अब लूथर ने चर्च के खिलाफ अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रचार शुरू कर दिया और लोगों को सही मार्ग द"र्ााया। पवित्र रोमन साम्रज्य का शासक चार्ल्स पंचम पोप का समर्थक था। पोप के आदे"ा पर चार्ल्स पंचम ने लूथर को वर्मज कांगेस के समक्ष उपस्थित होने का आदे"ा दिया और अपने 95 शोध लेखो का परित्याग करने के लिए कहा परंतु लूथर ने यह मानने से इंकार कर दिया। इस पर लूथर को अवांछित घोषित कर दिया गया। ऐसे समय में सैक्सनी राज्य के शासक ने लूथर को अपने राज्य मे शरण दी। मार्टिन लूथर द्वारा पोप का चुनौती और उसके 95 शोध–लेखों के कारण काफी ख्याति मिली क्योंकि लोग पहले ही चर्च की मनमानी और भ्रष्ट आचरण के कारण तंग आ चुके थे। पोप को भी लूथर को भी इस लोकप्रियता का अहसास हो चुका था। इसलिए लूथर के खिलाफ आगे कोई कार्यवाही नहीं की। मार्टिन लूथर ने अथक महनत कर जर्मन भाषा में बाईबल का संस्करण लिखा जो बहुत लोकप्रिय हुआ। लूथर की "िाक्षाओं से प्रभावित होकर दक्षिणी जर्मनी में कृषकों ने विद्रोह कर दिया। कृषको की हिसंक कार्यवाही का लूथर ने विरोध किया और शासको और कुलीनों से कृषकों के खिलाफ कडी कार्यवाही करने का आह्वान किया परंतु इस बडे विद्रोह में लगभग एक लाख कृषक मारे गए। इस कारण दक्षिणी जर्मनी में कृषक लूथर के विरूद्ध हो गए क्योंकि लूथर ने दास्ता के मुद्धे पर कृषको का साथ नहीं दिया। इस मुद्धे पर दक्षिणी जर्मन राज्य क शासक भी लूथर के विरूद्ध हो गए। आगे चलकर इसी मुद्धे पर 1546 ई0 की ऑग्सबर्ग संधि के द्वारा हुआ। इस संधि में लूथरवाद को ईसाई धर्म की शाखा स्वीकार कर लिया गया जो आगे चलकर प्रोटेस्टैंट मत के रूप में विख्यात हुआ और इसका प्रभाव स्वीडन, नार्वे और डेनमार्क के साथ–साथ अन्य दे"ाों में भी कायम हो गया।

(ii) स्विटजरलैंड :– स्विटजरलैंड मे सुधारवादी आंदोलन का नेतृत्व ज्विंगली ने किया। उसे 'पुनर्जागरण का पुत्र' कहा जाता है। उच्च अध्ययन के प"चात् वह 1518 ई0 में ज्यूरिख का पादरी बन गया था। वह लूथर के सिद्धांतों से बहुत प्रभावीत हुआ। उसने कैथोलिक चर्च की बुराईयों के खिलाफ आवाज उठाना प्रारंभ कर दिया। ज्विगली ने 1519ई0 में पोप द्वारा अधिकृत क्षमा–पत्र बेचने वाले सभी प्रतिनिधियों को ज्यूरिख से निकाल दिया। ज्विंगली ने पोप द्वारा स्विस युवकों को अपनी सेना में भर्ती

करने का खुला विरोध किया। जल्दी ही ज्विगली की लोकप्रियता बढती चली गई और ज्यरिख के लोग उसके धार्मिक उपदे"ाों से बहुत प्रभावीत हुए। ज्विगली ने 1523 ई0 में पोप के विरूद्ध 67 शोध–लेख प्रका"ात किए। उसने रोमन कैथोलिक चर्च की समाप्ति को आहवान् किया। उसके आह्वाहन पर स्विटजरलैंड के आधे कैंटनों और ज्विंगली समर्थक कैंटंनों के मध्य स्विटजरलैंड मे गृहयुद्ध प्रारंभ हो गया। इस गृहयुद्ध में प्रोटस्टैंट समर्थकों की पराजय हुई और ज्विंगली भी इसमें मारा गया। उसकी मृत्यु के प"चात् भी फ्रांस के कॉल्विन ने इस क्षेत्र में प्रोटस्टैंट मत का प्रचार जारी रखा गया। कॉल्विन ने जेनेवा को अपना मुख्य कार्य क्षेत्र बनाया।

(iii) फ्रांस :– जॉन काल्विन फ्रांस का एक महान् धर्म–सुधारक था। वहा पेरिस वि"वविद्यालय से उच्च ि"ाक्षा प्राप्त था। वह ई"वर की सर्वोच्चता पर वि"वास रखता था। वह मार्टिन लूथर की ि"ाक्षाओं और विचारों से प्रेरित हुआ। वह चर्च तथा पादरियों के जीवन में फैले भ्रष्टाचार का बडा आलोचक था। कॉल्विन ने 1533 ई0 मे कैथोलिक मत का त्याग कर दिया और स्विटरजरलैंड के बेसेल नगर चला गया जो प्रोटेस्टैंट मत का बडा केन्द्र था। उसने लैटिन भाषा में 1536 ई0 में "The institute of the Christian Religion" नामक पुस्तक लिखी जो धर्म शास्त्र पर उनके विचार प्रकट करती है। कॉल्विनवाट का प्रसार स्विट्जरलैंड, फ्रांस, नीदरलैंड, पोलैंड, हगंरी और इग्लैंड आदि दे"ाो में हुआ। इग्लैंड में कॉल्विन के समर्थक 'प्यूरीटन' कहलाए।

(iv) इग्लैंड :–इग्लैंड में धर्म–सुधार प्रारंभ करने वाला जॉन वाईक्लिफ था। उसका विचार था कि पोप पृथ्वी पर ई"वर का प्रतिनिधि नहीं है। वह पोप द्वारा प्रचलीत व्यवस्था को धर्म के सिद्धांतों के खिलाफ मानता था। उसने बाईबल का अंग्रेजी में अनुवाद किया। उसने आह्वान किया कि लोग सिर्फ बाईबल के सिंद्धातों का पालन करें। वाईक्लिफ के बाद इग्लैंड में हेनरी अष्टम (1509 – 1547 ई0) के शासनकाल मे धार्मिक सुधार आंदोलन प्रारंभ हुआ। हेनरी के शासनकाल में ही इग्लैंड की संसद् ने पोप के खिलाफ 'सर्वोच्चता अधिनियम' पारित किया। इस अधिनियम के बाद इग्लैड में चर्च पर सीधे सम्राट का नियंत्रण हो गया और रोमन कैथोलिक चर्च से इग्लैंड ने सभी संबंध तोड लिए। इंगलि"ा चर्च को 'एंग्लिकन चर्च' का नाम दिया गया। हेनरी अष्टम के प"चात् सम्राट बने एडवर्ड 'ाष्ट के कार्यकाल में इंग्लि"ा चर्च ने प्रोटेस्टैंट मत को अपना लिया। एडवर्ड की मृत्यु के प"चात् महारानी मैरी (1558 – 1603 ई0) के शासनकाल में कैथोलिक चर्च को पुनः स्थापित करने का मैरी ने प्रयास किया परंतु सफल नही हो पाई। महारानी एलिजाबेथ (1558 –1603 ई0) के शासनकाल में एंग्लिकन चर्च को इग्लैंड का अधिकारिक धर्म घोषित कर दिया गया।

(v) अन्य यूरोपीय दे"ाो में सुधारवादी आंदोलन :– सुधारवादी आंदोलन जर्मनी, फ्रांस, इग्लैंड के अतिरिक्त यूरोप के अन्य दे"ाो में भी फैल गया। जर्मनी के उतरी राज्यों से नीदरलैंड में फैल गया। आगे चलकर इस दे"ा में कॉल्विनवाद भी पहुॅच गया। यहॉ अब काल्विनवाद लूथरवाद से भी अधिक लोकप्रिय हो गया और नीदरलैंड मे काल्विनवाद राष्ट्रीय चर्च बन गया। लूथरवाद का सबसे अधिक प्रभाव नार्वे, स्वीडन और फिनलैंड में हुआ। इन तीनों दे"ाों में प्रोटेस्टैंट मत राष्ट्रीय मत घोषित कर दिया। स्कॉटलैंड में सुधारवादी आंदोलन का नेतृत्व जॉन नॉक्स ने किया। वह कॉल्विन का ि"ाष्य था। उसने स्कॉटलैंड में काल्विनवाद की ि"ाक्षाओं का प्रचार किया। स्कॉटलैंड में यह राष्ट्रीय चर्च बन गया।

2.4.4 सुधार आंदोलन के उदय के कारण

यूरोप में 16वीं शताब्दी एक युग परिवर्तनकारी शताब्दी थी। इस शताब्दी में जीवन से संबंधित सभी क्षेत्र में बडे परिवर्तन हुए। धर्म का भी मनुष्य के जीवन मे अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इस शताब्दी में यूरोप में केथोलिक धर्म में आई हुई बुराईयों को समाप्त करने के लिए कई धर्म–सुधारक सामने आंए। कैथोलिक धर्म के खिलाफ चले आंदोलन को 'प्रोटेस्टैंट आंदोलन' का नाम दिया गया। इस सुधारवादी आंदोलन के लिए उतरदायी कारण काफी समय से एकत्रित हो रहे थे। पुनर्जागरण आंदोलन के फलस्वरूप लोगों की सोच–विचार और दृष्टिकोण में काफी बदलाव आ गया था। पुनर्जागरण ने ही वास्तव में सुधारवादी आंदोलन के लिए जमीन तैयार करने का कार्य किया था। इस आंदोलन के उदय के मुख्य कारण इस प्रकार थे :–

(i) चर्च की कमियॉ :–सुधारवादी आंदोलन का मूल कारण चर्च में व्यापत कमियां थी। चर्च निरकुं"ाता और भ्रष्टाचार के अड्े बन चुके थे। पादरियों का जीवन वैभवपूर्ण और लालच से भरा हुआ था। वे लोगों को लूटने का कार्य कर रहे थे। वे पूरी तरह पथभ्रष्ट हो चुके थे। स्पेन एल्वारी पेलायों के शब्दों में , ''चर्च पर भेडियों का नियंत्रण है और वे लोगों का खून चूसते हैं।''

(ii) पोप की निरकुं"ाता :– कैथोलिक चर्च का मुखिया पोप जो रोम मे निवास करता था, पूरी तरह एक सम्राट की तरह जीवन व्यतीत करता था। वह असीम शक्तियों का स्वामी था। पूरो यूरोप में कोई शासक उसे चुनौती देने का साहस नहीं कर सकता था। वह किसी भी राज्य के शासक को अपनी अंगुलियों पर नचा सकता था। वह धार्मिक शक्त्यिों के साथ–साथ राजनैतिक शक्तियों का भी स्वामी बन बैठा था।

(iii) कैथोलिक चर्च की धन–सम्पदा :– चर्च के पास अथाह धन–सम्पति थी। इटली, जर्मनी, फ्रांस और अन्य यूरोपीय दे"ाों में चर्च और पादरियों के पास वि"ााल धन–सम्पदा एकत्रित हो गई थी। उन्होनें

लोगों के लिए धार्मिक कार्य करने की बजाय स्वंय के लिए विलसिता की वस्तुएं इक्कठी करने पर ध्यान केन्द्रित किया हुआ था। पोप और पादरी शासक और कुलीनों की तरह जीवन व्यतीत कर रहे थे। कृषकों को अपनी आय का 10वां भाग चर्च को कर के रूप में देना पडता थां। चर्च की सम्पति और आय पर कोई राजा कर नहीं लगा सकता था। इस प्रकार चर्च धन–सम्पदा के केन्द्र बन कर रह गए थे और इनके खिलाफ आवाज उठना स्वाभाविक था।

(iv) पोप का यूरोपीय शासकों से विवाद :– पोप ईसाई धर्म पर पृथ्वी पर ई"वर का प्रतिनिधि स्वीकार किया जाता था। पोप के प्रतिनिधि यूरोप के सभी राष्ट्रों और राज्यों में फैले हुए थे और इस बात का खास ख्याल रखते थे कि वहां पोप के आदे"ाों का पालन हो। वहा पोप के आदे"ाों के उल्लंघन पर किसी भी शासक को दंड देने की शक्ति और सामर्थ्य रखता था। पोप बोनिफेस अष्टम का ईग्लैंड और फ्रांस के शासको से चर्च की सम्पति पर कर को लेकर विवाद हो गया था। परंतु अब राष्ट्रों के शक्ति"ााली होने के कारण वे पोप की परवाह नहीं करते थे परंतु पोप फिर भी यूरोपीय शासकों से विवादों में उलझा रहता था। इन विवादों ने सुधारवादी आंदोलन की प्रेरणा दी।

(v) कैथोलिक अदालतो से निरा"ाा :– विभिन्न यूरोपीय दे"ाों में रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा धार्मिक अदालते स्थापित की गई थी। इन अदालतो मे पोप के प्रतिनिधि न्याय के सिद्धांतों की अपेक्षा भ्रष्टाचार के आधार पर फैसले देते थें। यहा केवल समृद्ध व्यक्ति ही न्याय की उम्मीद कर सकता था । साधारण लोग इन अदालतों से निरा"ा होकर इनको समाप्त करने की मांग करने लगे।

(vi) यूरोप में शक्ति"ााली निरकुं"ा राज्यों का उदय :– यूरोप में 15वीं शताब्दी में उदार निरकुं"ा राष्ट्रों का उदय हो चुका था। यें राष्ट्रीय–राज्य सामंतो पर निर्भर न होकर खुद की नियमित सेनाओं पर निर्भर थे। उन्होनें पोप की निरकुं"ा शक्तियों को मानने से इंकार कर दिया और चर्च की सम्पति पर कर लगाया। आगे चलकर हालैंड, स्पेन, पुर्तगाल, स्वीडन आदि दे"ाों में भी शक्ति"ााली राष्ट्रीय–राज्यों का उत्थान हुआ और पोप और चर्च की शक्ति पर अंकु"ा लगने लगा।

(vii) मध्यम वर्ग का उत्थान :– सुधारवादी आंदोलन के उदय में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका नवोदित मध्यम वर्ग की थीं इस वर्ग के लोग आत्मनिर्भर, f"ाक्षित, बुद्धिमान और तर्क की शक्ति से कार्य करने वाले थे। वे चर्च द्वारा स्थापित व्यवस्था से संतुष्ट नहीं थे। वे चर्च के भोतिकता के प्रति विचार से सहमत नहीं थे और निर्धनता को एक सच्चे ईसाई का गुण मानने के लिए तैयार नही थे जबकि स्वंय पोप, पादरी और उसके प्रतिनिधि विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। इस वर्ग के लोग रोमन कैथोलिक चर्च को बुराईयों के खिलाफ आगे आए और सुधारवादी आंदोलन के लिए मार्ग तैयार हुआ।

(viii) प्रारंभिक सुधारवादियों का योगदान :– यूरोपीय दे"ाों मे कई धर्म–सुधारक उत्पन्न हुए जिन्होनें चर्च को बुराईयों के खिलाफ सबसे पहले आवाज उठाई। इनमें इग्लैंड का जॉन वाईक्लिफ (1320–1384 ई0) सबसे प्रमुख था। उसे सुधारवादी आंदोलन का अग्रदूत कहा जाता है। वह ऑक्सफोर्ड वि"वविद्यालय मे प्रोफेसर था। उसके प्रमुख f"ाष्यों जॉन हस्स बहुत प्रसिद्ध हुआ। उसने वाईक्लिफ के विचारो का प्रसार किया। इसके प"चात् इरासमस (1466 –1536 ई) ने अपनी रचना 'The Praise of Fall' में केथोलिक चर्च की आडम्बरपूर्ण बातों का खंडन किया। इस रचना के कारण चर्च की पोल खुल गई। प्रसिद्ध इतिहासकार विल डियोरेंट ने उसे सुधारवादी आंदोलन का 'पथ–पद"ाक' कहा। इस प्रकार हम देखेते है कि कैथोलिक चर्च की बुराईयां है। सुधारवादी आंदोलन का मुख्य कारण बनी। आगे चलकर यूरोप में चर्च के खिलाफ वातावरण तैयार हो गया। इस कार्य को अंजाम तक पहॅुचाने का कार्य मार्टिन लूथर ने किया जो सुधारवादी आंदोलन का सबसे चमकता हुआ सितारा था।

2.4.5 सुधार आंदोलन के प्रभाव

सुधार आंदोलन के फलस्वरूप कैथोलिक चर्च की प्रतिष्ठा को आघात पहॅुचा और ये दो शाखाओं रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टैंट में बंट गया। इस आंदोलन के फलस्वरूप कैथालिक धर्म को भी आंतरिक सुधार प्रक्रिया से गुजरना पडा। यूरोप में दोनों मतो के मध्य हिंसक टकराव भी हुआ। यूरोपीय धर्म, सभ्यता और सांस्कृतिक जीवन पर पडने वाले मुख्य प्रभाव इस प्रकार है:–

(क) धार्मिक एवं सामाजिक प्रभाव

(i) सुधारवादी आंदोलन के फलस्वरूप कैथोलिक चर्च की प्रतिष्ठा को भारी आघात लगा। कैथोलिक चर्च को विरोध करने वाले सिर्फ विरोध करने तक सीमित नहीं रहें। जॉन वाइक्फि के समय से शुरू हुआ विरोध अंततः मार्टिन लूथर के नेतृत्व मे ंप्रोटस्टैंट मत की स्थापना पर जाकर रूका। इस प्रकार यूरोप में अब कैथोलिक एवं प्रोटस्टैंट ईसाई धर्म की दो मुख्य शाखाए बन गई।

(ii) धार्मिक उत्पीडन :– सुधारवादी आंदोलन ने यूरोप को दो खेमों में बांटकर रख दिया। एक खेमा पोप का समर्थक था जो रूढिवादी रोमन कैथोलिक चर्च के अनुयायी थे तो सुधारवदियों ने प्रोटस्टैंट मत की स्थापना कर अपना अलग खेमा बना लिया। यूरोप के दे"ा भी इसी प्रकार दो गुटों मे बंट गए। दोनों पक्ष एक–दूसने का खुलकर विरोध करने लगे। यह विरोध हिसंक हो गया और धार्मिक उत्पीड़न की शुरूआत हो गई। इस उत्पीड़न के फलस्वरूप यूरोप में बडे स्तर पर पलायन हुआ।

(iii) गृह–युद्ध और विद्रोह :– सुधारवादी आंदोलन ने कैथोलिको और प्रोटेस्टैंट मत के अुनयायियों में कट्र शत्रुता की भावना उत्पन्न कर दी जिसके कारण यूरोप में गृह–युद्ध और विद्रोहों का दौर प्रारंभ हो गया। इन गृह–युद्धो और विद्रोहों में लाखो लोग मारे गए। बहुत से सुधारवादियों और उनके समर्थकों को रोमन कैथोलिक अनुयायियों द्वारा जिंदा जला दिया गया। प्रसिद्ध इतिहासकार मैक्स सैविलेके शब्दों में, ''मार्टिन लूथर के 95 शोध–लेखों के प्रका"ान के प"चात् के 150 वर्ष लगातार युद्धो का समय था'' इन गृह–युद्धों में बेकसूर कृषक भी काफी संख्या में मारे गए।

(iv) मानवतावादियों और प्रोटेस्टैंट में मतभेद :– यद्यपि मानवतावादी और प्रोटस्टैंट दोनों ही कैथोलिक चर्च की बुराईयां का विरोध कर रहे थे। परंतु कुछ मुद्धों पर दोनों समूहों में मतभेद उत्पन्न हो गए। मानवतावादी मनुष्य के कल्याण को सर्वोपरि मानते थे जबकि प्रोटेस्टैंट ई"वर को सर्वोच्चता और ई"वरीय कृपा और ई"वरीय न्याय को ही सब कुछ मानते थे। सुधारवादी इरास्मस ने स्वंय कहा, 'मैनें तो मुर्गी का अंडा तैयार किया था परंतु मार्टिन लूथर ने इसमें से कोई और ही पक्षी तैयार कर दिया।'

(v) नेतिकता पर बल :– सुधारवादी आंदोलन की शुरूआत कैथोलिक चर्च की नैतिक गिरावट के खिलाफ हुई थी। प्रोटेस्टैंट मत के अनुयायियों ने खुलकर पोप और पादरियों के अनैतिक और भ्रष्ट आचरण की निंदा की। देखते–देखों प्रोटेस्टैंट मत व्यापक जनसमर्थन मिला और यह उतरी और पि"चमी यूरोप का एक बडा लोकप्रिय मत बन गया। इससे कैथोलिक चर्च में भी आंतरिक सुधार की प्रकिया आरंभ की और नैतिकता और सदाचार धार्मिक जीवन के आधार स्वीकार कर लिए गए।

(vi) धार्मिक सहन"ीलता की भावना का उदय :– यूरोप में सुधारवादी आंदोलन के प्रभाव के फलस्वरूप लम्बे समय तक गृह–युद्ध और विद्रोह होते रहे। इनमें जन और धन की भारी क्षति हुई । अंततः दोनो गुटो ने यह महसूस किया की धार्मिक सहन"ीलता ही धर्म का सार है।

(vii) प्रतिक्रियावादी सुधार आंदोलन उदय :– पोप और चर्च की व्यवस्था के खिलाफ फैले असंतोष के कारण कैथोलिक मत की प्रतिष्ठा धूमिल हो गई। सुधारवादी आंदोलन के मुकाबले के लिए कैथोलिक चर्च के मुखिया पोप और पादरियों ने अब स्वंय मूल्यांकन की और ध्यान दिया और कैथोलिक चर्च में सुधारों के लिए आंतरिक सुधार प्रकिया शुरू हो गई जिसे प्रतिक्रियावादी सुधार आंदोलन कहा जाता है।

(ख) राजनैतिक प्रभाव :– सुधारवादी आंदोलन के यूरोप की राजनीति पर भी गहरे प्रभाव पडे। इसे आंदोलन के फलस्वरूप राजनीतिक प्रभावों की हम बिन्दुवार समीक्षा करेंगें।

(i) यूरोपीय राष्ट्रो का दो गुटो में विभाजन :– धर्म के क्षेत्र हुए व्यापक सुधार आंदोलन के परिणामस्वरूप यूरोपीय राजनीति दो परस्पर विरोधी गुटों मे बंट गई। ये दोनो गुट एक दूसरे के शत्रु हो गए। एक गुट में कैथोलिक मत के अनुयायी दे"ा थे तो दूसरे गुट में उतरी–पि"चमी यूरोप के प्रोटेस्टैंट मत के अनुयायी दे"ा शामिल थे। कैथोलिक गुट में दक्षिणी यूरोप के राष्ट्र शामिल थे।

(ii) शक्ति"ााली राष्ट्रीय–राज्यों का उत्थानः– यद्यपि यूरोप में इग्लैंड, स्पेन, फ्रांस आदि राष्ट्रीय राज्यों का उत्थान सुधारवादी आंदोलन से पूर्व ही हो चुका था। इन नव स्थापित राष्ट्रीय राज्यों ने पुनर्जागरण और सुधारवादी आंदोलन के फलस्वरूप स्वयं को शक्ति"ााली बनाया और चर्च के प्रभुत्व को मानने से इंकार कर धर्म और राजनीति के क्षेत्र को अलग कर दिया।

(iii) सांमतवाद और कुलीनतंत्र को आधात :– पुनर्जागरण और धर्म–सुधार आंदोलन के परिणामस्वरूप सामंतवाद और कलीनतंत्र को आधात पहुॅचा और नागरिक अधिकार और मानववाद को बल मिला। मध्यकाल के प्रतीक चिन्ह और संस्थाओं को सुधारवादी आंदोलन ने आधात पहुॅचाया और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व दिया जाने लगा।

(iv) कल्याणकारी राज्य का उदय :– पुनर्जागरण और सुधारवादी आंदोलन की भावना चर्च की निरकु"ाता का अंत और सामाजिक कल्याण था। व्यंक्तिगत स्वतंत्रता और जनकल्याण की भावना को बल मिला।

(v) धर्म–निरपेक्ष राज्य की अवधारण का उदय :– यूरोप में कैथोलिक एवं प्रोटेस्टैंट गुटों के मध्य लम्बे समय तक युद्ध हुए । ये युद्ध धर्म के मद्धेनजर हुए थे। इनमें यूरोप के दे"ाों को भारी जन–धन की क्षति हुई। अंततः दोनों गुटों ने धार्मिक संहन"ाीलता की नीति को अपना लिया और कडवाहट को दूर करने का प्रयास किया। राष्ट्रो ने अपनी नीति में धर्म को महत्व देने की बजाए अन्य राष्ट्रीय मुद्धो को प्रमुखता देनी शुरू कर दी। इससे आगे चलकर धर्म–निरपेक्ष राज्य की अवधारणा का उदय हुआ।

(vi) उपनिवे"ावाद को बल :– धार्मिक सुधारवादी आंदोलन के कारण यूरोप में कैथोलिक एवं प्रोटेस्टैंट मतों के मध्य प्रतिद्धन्द्विता बढ गई थी। आगे चलकर शक्ति"ााली राष्ट्रीय राज्यों ने अन्य महाद्वीपों में अपने उपनिवे"ा स्थापित करने शुरू कर दियां। यूरोप में दोनों मतों के मध्य चल रही प्रतिद्वन्द्विता अब उपनिवे"ाों तक जा पहुॅची और इसने नए उपनिवे"ा स्थापित करने के लिए प्रेरित किया।

(vii) नई राजनीतिक अवधारणाओं का विकास :– पुनर्जागरण एवं सुधारवादी वैचारिक आंदोलन सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया। पुनर्जागरण्र तो एक बहुआयामी आंदोलन था हि सुधारवादी आंदोलन पृवृति में धार्मिक था परंतु धर्म सुधारकों ने राजनीति को भी प्रभावित किया और उनके चिंतन से नई राजनीतिक अवधारणाओं के उदय और विकास में मदद मिली। इनमें व्यक्तिवाद, समाजवाद, साम्यवाद, अराजकता, नाजीवाद, फासीवाद आदि अवधारणाएं एवं विचार शामिल थे।

(ग) आर्थिक प्रभाव

(i) कृषक दासता का अंत :– मार्टिन लूथर से प्रभावित होकर जर्मनी के दक्षिणी राज्यों में कृषक दासों ने कुलीनों के विरूद्ध कें विद्रोह कर दिया। यद्यपि लूथर ने कृषक दासों की हिंसा को गलत बताया परंतु कुलीन इस विद्रोह कर पूरी तरह दमन नही कर पाए और आगे जाकर कृषक दास अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने में सफल रहे।

(ii) व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में प्रभाव :– कैथोलिक मत मे भौतिकवाद एवं ब्याज वसूल करना धर्म विरूद्ध माना जाता था। धर्म–सुधारकों ने इस विचार का खंडन किया और व्यापार के विकास के लिए ब्याज वसूलने के धंधे को उचित बताया। उन्होनें भौतिकता के विचार को भी मनुष्य के लिए गलत ठहराने से मना कर दियां । इन उदार विचारों का व्यापारी वर्ग ने स्वागत किया और उन्होनें व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में उत्साह के साथ कार्य प्रारंभ किया। इसे व्यापार एवं वाणिज्य के विकास में मदद मिली।

(iii) पूंजीवाद का उदय :– सुधारवादियों के व्यापार और वाणिज्य से संबंधित विचारों से प्रभावीत होकर अब स्वतंत्र रूप से पूंजी का प्रभाव होने लगा। व्यापार प्रगति के साथ–साथ इससे नए अधोग–धंधों में विकास शुरू हो गया। प्रोटेस्टैंट दें"ाों द्वारा बडी मात्रा में चर्च की सम्पति का अधिग्रहण कर लेने से कृषि और रोजगार सजृन मे मदद मिली। इस प्रकार व्यापार एवं वाणिज्य में हुई प्रगति अंततः पूंजीवाद के उदय में बदल गई।

(iv) सामंतवादी अर्थव्यवस्था का कमजोर होना:– सुधारवादी आंदोलन से पूर्व ही पुनर्जागरण की लहर ने सामंतवादी अर्थव्यवस्था को काफी चौट पहुॅचाई थी। सुधारवादी आंदोलन ने भी सांमतवादी अर्थव्यवस्था को आघात पहुॅचाया और आधुनिक अर्थव्यवस्था के उदय में सहायक सिद्ध हुआ।

(घ) सांस्कृतिक प्रभाव :–सुधारवादी आंदोलन ने सांस्कृतिक क्षेत्र को प्रभावित किया जिसके मुख्य बिन्दु इस प्रकार है:–

(i) कला एवं साहित्यिक क्षेत्र मे प्रगति :– कैथोलिक युग में कला धार्मिक विषयों तक सीमित थी। सुधारवादी आंदोलन के प्रसार के फलस्वरूप लौकिक और धर्म–निरपेक्ष क्षेत्र में भी कला का विकास शुरू हो गया। अब चित्रकारों और मूर्तिकारों ने ईसा मसीह और संतों की कलाकृतियों के साथ–साथ प्रकृति और साधारण मनुष्य और स्त्रियों को भी कला कृतियों का विषय बनाना शुरू कर दिया। साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। धार्मिक कृतियों के साथ–साथ अन्य रचनाओं का भी यूरोप की कई भाषाओं में अनुवाद हुआ। धर्म निरपेक्ष कृतियों की रचना को भी प्रोत्साहन दिया गया।

(ii) ि"ाक्षा का विकास :– धर्म–सुधार आंदोलन के प्रभाव के फलस्वरूप ि"ाक्षा के क्षेत्र में उन्नति हुई। लगभग सभी सुधारवादी उच्च ि"ाक्षा प्राप्त विद्वान थे। कैथोलिक और प्रोटेस्टैंट दोनों मतो के अनुयायियों के बीच ि"ाक्षा के प्रसार के लिए सुधारकों और कैथोलिक चर्च के पादरियों ने बेंहतर प्रयास किए। मार्टिन लूथर ने जर्मनी में स्कूलों की स्थापना पर बल दिया। उसने जर्मनी के शासकों से अपनी–अपनी रियासतों में ि"ाक्षा को अनिवार्य करने की प्रार्थना की । कॉल्विन और जॉन नॉक्स का भी ि"ाक्षा के क्षेत्र में वि"ोष योगदान रहा।

(iii) यूरोप में राष्ट्रीय भाषओं का विकास :– सुधारवादी प्रवर्तकों का मुख्य उद्दे"य बाईबल की ि"ाक्षाओं को साधारण लोगो तक पहुँचाना था ताकि लोग चर्च की सच्चाई को पहचान सकें। सुधारवादी ने खुद जर्मन, अंग्रेजी और अन्य यूरोपीय भाषाओं में बाईबल का अनुवाद किया ताकि साधारण लोग बाईबल पढ सके।

2.1 प्रगति–समीक्षा (Check your Progress)

(अ) रिक्त स्थान भरें

(i) पुनर्जागरण का उदय ………………….. से प्रारंभ हुआ।

(ii) पुनर्जागरण'रेनेसा' ……………………. भाषा का शब्द है।

(iii) कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों ने …………………….ई0 में अधिकार कर लिया।

(iv) दांते की प्रसिद्ध रचना ……………………. है।

(v) मैक्यावली की पसिद्ध रचना ……………………….. है।

(vi) …………………. को पुनर्जागरण का पिता कहा जाता है।

(vii) ……………….. को इटालियन गद्य का पिता कहा जाता है।

(viii) 'कैन्टरीबरी टैल्स' ………………… की रचना है।

(ix) वि"व–प्रसिद्ध कृति मोनालिय .... की चित्रकारी है।

(x) इटली में .... मूर्तिकला के दो प्रसिद्ध केन्द्र थे।

(ब) वस्तुनिष्ठ प्र"न

(i) छापेखाने का आविष्कार हुआ।

(क) 1504 ई0 (ख)1450 ई0 (ग) 1475 ई0 (घ) 1454 ई0

(ii) इग्लैंड में प्रथम छापाखाना स्थापित हुआ।

(क) 1450 ई0 (ख) 1475 ई0 (ग) 1480 ई0 (घ) 1477 ई0

(iii) निकोलस कोपरनिक्स खगोल –विज्ञानी किस दे"ा से संबंध रखता था?

(क) इटली। (ख) इग्लैंड। (ग) जर्मनी (घ) पोलैंड

(iv) कुतुबनुमा (Compass) और गोला–बारूद्ध (Gun powder) का आविष्कार कहां हुआ।

(क) जर्मनी। (ख) इटली। (ग) चीन। (घ) इग्लैंड।

(v) जॉन वाईक्लिफ कहॉ का रहने वाला था?

(क) फ्रांस। (ख) इग्लैंड। (ग) जर्मनी। (घ) स्वीटजरलैंड।

(vi) मार्टिन लूथर किस वि"वविद्यालय मे प्रोफेसर थे?

(क) हावर्ड। (ख) ऑक्सफोर्ड। (ग) विट्टनवर्ग। (घ) पेरिस।

(vii) ऑग्सबर्ग की संधि हुई।

(क) 1550ई0। (ख) 1555 ई0। (ग) 1575 इ्र्0। (घ) 1580 ई0।

(viii) ज्विगली किस दे"ा का धर्म–सुधारक था?

(क) इग्लैंड। (ख) स्वीटजरलैंड। (ग) जर्मनी। (घ) फ्रांस।

(ix) कॉल्विन किस दे"ा का धर्म–सुधारक था ?

(क) फ्रांस। (ख) इग्लैंड। (ग) स्वीटजरलैंड। (घ) जर्मनी।

(x) हेनरी अष्टम किस दे"ा का सम्राट था?

(क) इग्लैंड। (ख) फ्रांस। (ग) जर्मनी। (घ) इटली।

(स) उचित मिलान करें।

(i) ईसाक न्यूटन ग्रहों की गति का नियम

(ii)	जॉन कैपलर	दूरबीन का आविष्कार
(iii)	जॉन गुटनबर्ग	गुरूत्वकर्षण का सिद्धांत
(iv)	गेलीलियो	बाईबल का जर्मन अनुवाद
(v)	मार्टिन लूथर	छापेखाने का आविष्कार

2.1 सारांश (Summary)

इटली से प्रारंभ हुए पुनर्जागरण आंदोलन को आधुनिक युग की शुरूआत का प्रतीक माना जाता है। इस बोद्धिक आंदोलन ने मध्यकालीन सांमतवादी संस्थाओं और चर्च की निरकु"ंता के विरूद्ध आवाज उठाई। इस आंदोलन के प्रारंभ के साथ ही साहित्य, कला, संस्कृति और विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति हुई। पुनर्जागरण आंदोलन एक बहुआयामी बोद्धिक आंदोलन था। जिसने यूरोप में जनजागृति का कार्य किया। पुनर्जागरण आंदोलन नई ने भौगोलिक खोजों के लिए भी वातावरण तैयार किया। इस आंदोलन ने सामंतवादी मध्यकालीन अर्थव्यवस्था से यूरोप को बाहर निकलने में मदद की। इस युग में ऐसा जीवन का कोई क्षेत्र नहीं था। जिसको पुनर्जागरण ने प्रभावित ना किया हो। मध्ययुग में समाज सामंतवाद की बेडियों में जकडा हुआ था। कुलीन, पादरी और शासक वर्ग वि"ोषाधिकारों से मुक्त थे जबकि समाज के अन्य टुबके सांमतों और चर्च की दमनकारी व्यवस्था में पिस रहे थे। इस आंदोलन की लहर से धार्मिक क्षेत्र में सुधारवादी आंदोलन प्रारंभ हुआ और यूरोप में कैथोलिक चर्च को व्यापक स्तर पर चुनौती का सामना करना पडा। पुनर्जागरण के मुख्य तत्व प्रकृतिवाद, मानववाद और तर्क–"ाक्ति थे। पुनर्जागरण आंदोलन ने समाज मे वेज्ञानिक सोच को भी प्रेरित किया और यूरोप में यूनानी सभ्यता और प्राचीन रोमन साम्रज्य के आद"ोंं और मूल्यों की पुन– स्थापना के लिए जोर दिया गया। इग्लैंड से प्रारंभ हुए इस बोद्धिक जागरण की लहर फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल, स्विटजरलैंड, जर्मनी, इग्लैडं, हालैंड, डेनमार्क, आस्ट्रिया आदि सभी दे"ों में फेल गई। इस लहर के प्रभाव के फलस्वरूप यूरोप में शक्ति"ाली राष्ट्रीय राज्यों का उत्थान हुआ और प्रबुद्ध राजतंत्र का विकास और उदय हुआ। मार्टिन लूथर के प्रेरणा से कैथोलिक मत को बडी चुनौती मिली। और प्राटेस्टैंट मत का उदय हुआ। इस प्रकार पुनर्जागरण एक बहुत बडी बोद्धिक लहर थी। जिसने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जागृति उत्पन्न कर दी और आधुनिक युग के लिए मार्ग प्र"ास्त हुआ।

2.7 संकेतक –"ाब्द (Keywords)

(i) पुनर्जागरण (Renaissance)

(ii) सुधार आंदोलन (Reformation Movement)

(iii) क्षमा –पत्र (Indulgences)

(iv) लूथर के 95 शोध –लेख (The Ninety Five Thesis of Luther)

(v) वर्मज की सभा (The Diet of Worms – 1521 A.D.)

2.8 स्वंय–मूल्यांकन परीक्षा (Self Assessment Test)

1. पुनर्जागरण युग मे कला, साहित्य तथा विज्ञान के विकास का विस्तृत विवरण दीजिए?
2. ईटली मे पुनर्जागरण के उदय के क्या कारण थे? पुनर्जागरण आंदोलन के उदय के कारणों और प्रभावों का विस्तृत वर्णन कीजिए?
3. सुधार आंदोलन से क्या अभिप्राय है? यूरोप मे सुधार आंदोलन के उदय, विकास और प्रभावों की समीक्षा कीजिए?
4. धर्म–सुधार आंदोलन के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों का वर्णन कीजिए।
5. जर्मनी में सुधार–आंदोलन के उत्थान और प्रगति में मार्टिन लूथर के योगदान का वर्णन कीजिए?
6. पुनर्जागरण के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों का उल्लेख कीजिए।
7. यूरोप में सुधार –आंदोलन के उदय के कारणो की विस्तृत समीक्षा कीजिए?

2.9 प्रगति–समीक्षा हेतु प्र"नोतर (Answers to check your Progress)

उतर :–

(अ) (i) इटली। (ii) फ्रेन्च। (iii) 1453 (iv) डिवाईन कॉमेडी।
(v)दि प्रिंस (vi) पैट्राक (vii) बोकासियों (viii) जियोफरे चौसर
(ix) लियोनार्डो दि विंसी (x) वेनि"ा और फलोरेंस।

(ब) (i) घ (ii) घ (iii) घ (iv) ग (v) ख
(vi) ग (vii) ख (viii) ख (ix) क (x) क

(स)

(i)	ईसाक न्यूटन	गुरूत्वकर्षण का सिद्धांत
(ii)	जॉन कैपलर	ग्रहों की गति का नियम
(iii)	गुटनबर्ग	छापेखाने का आविष्कार
(iv)	गेलीलियो	दूरबीन का आविष्कार

(V) मार्टिन लूथर बाईबल का जर्मन अनुवाद

2.10 संदर्भ / सहायक अध्ययन सामग्री

1. वि"व का इतिहास, भाग – 1 (1500–1870), अविना"ाचन्द्र अरोडा, आर0 एस0 अरोडा, प्रदीप पब्लिकै"ांस, 1995।
2. आधुनिक वि"व – एक आयाम, राय और शेखर, सैट्रल पब्लि"ांग हाउस, इलाहाबाद,2006।
3. वि"व इतिहास (1500 –1950), जैन और माथुर, जैन प्रका"ान मंदिर, जयपुर, 1999।
4. आधुनिक वि"व का इतिहास, लाल बहादुर वर्मा, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदे"ालय, दिल्ली वि"वविद्यालय, प्रथम संस्करण, 2013।
5. यूरोप का आधुनिक इतिहास (1789.–1974), सत्यकेतु विघालकार, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 2016।

Unit -(इकाई) -II

B.A HISTORY PART- IIIrd YEAR SEMESTER-V	
COURSE CODE: HIST 302 LESSON NO. 03	AUTHOR – MOHAN SINGH BALODA
भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन (Shift of Economic Balance from the Mediterranean to the Atlantic)	

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

3.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

3.2 परिचय (Introduction)

3.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

3.3.1 भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन : पृष्ठभूमि (Shift of Economic balance from the Mediterranean to the Atlantic Background)

3.3.2 भूमध्यसागर व अटलांटिक सागरीय क्षेत्रों का भौगोलिक परिचय (Geographical Introduction of Mediterranean and Atlantic States)

3.3.3 भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन के कारक (Factors Leading to Shift of Economic balance from the Mediterranean to the Atlantic)

3.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

3.4.1 भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक बदलाव के कारण (Causes of Economic shift from Mediterranean to Atlantic)

3.4.2 भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलनः प्रभाव/परिणाम (Shift of Economic balance from Mediterranean to Atlantic: Impact/Results)

3.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

3.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary)

3.7 संकेत–सूचक (Key-words)

3.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

3.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

3.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

3.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के पढ़नोपरांत विद्यार्थी योग्य होंगे :–

- भूमध्यसागर व अटलांटिक सागरीय क्षेत्रों के भौगोलिक परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- भूमध्य सागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन के जिम्मेदार कारकों को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी इस आर्थिक बदलाव की पृष्ठभूमि पर चर्चा कर सकेंगे।
- इस दौरे के कालखण्ड व इस बदलाव के पीछे कारणों को बतलाने में पाठक सक्षम होंगे।
- भूमध्य सागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन के प्रभावों / परिणामों की व्याख्या कर सकेंगे।

3.2 परिचय (Introduction) :-

यूरोपीय समाज में विभिन्न कारणों से 12 वीं–13वीं सदी में सामंतवादी उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन आने शुरू हो गए थे। समय के साथ ये परिवर्तन 14वीं और 15 वीं शताब्दी में और अधिक मजबूत होते गए। इसके बाद 16 वीं सदी का यूरोप आर्थिक सामाजिक व राजनीतिक दृष्टि से मूल परिवर्तनवाद की दिशा में बढ़ रहा था। एक तरफ जहाँ पुनर्जागरण के फलस्वरूप नवीन चेतना का संचार हुआ वहीं दूसरी ओर धर्म–सुधार आंदोलन ने मानव को चर्च के जाल से मुक्त किया। यूरोपीय लोगों में मुक्त चिंतन की प्रवृत्ति बढ़ी। इसने साहसी लोगों को भौगोलिक खोजों के लिए प्रेरित किया। राष्ट्रीय राजनीति का उदय भी 16 वीं सदी का महत्त्वपूर्ण परिवर्तन रहा। अब भौगोलिक खोजों के कारण सामुद्रिक व्यापार में वृद्धि हुई तथा व्यापार और वाणिज्य में तीव्रता आयी। यूरोप में बुलियन का आगमन होने लगा जिससे यूरोपीय व्यापारियों में अधिकतम बुलियन के संग्रह की प्रवृत्ति बढ़ी। व्यापार के तौर–तरीकों में परितर्वन आया। सामंतवाद से पूँजीवाद की ओर संक्रमण ने अधिक–से–अधिक लाभ कमाने की प्रवृत्ति को जन्म दिया। वैज्ञानिक क्रांति के फलस्वरूप कृषि व उद्योग में क्रांति आई। नवीन उपकरणों के प्रयोग

आरंभ हो गये। इससे यूरोप में अतिरिक्त पूँजी के निवेश के लिए नये–नये स्थानों को खोजने की प्रक्रिया में तीव्रता आयी। इस दौरान नगरीकरण की प्रक्रिया आरंभ हुई, जिससे यूरोप में कई नगर अस्तित्व में आये। भूमध्यसागरीय व्यापार पर इटली के नगर–राज्यों का कब्जा था। अब 16 वीं सदी में विभिन्न कारणों से परिवर्तन के फलस्वरूप इटली के नगर–राज्यों के व्यापारिक एकाधिकारों को समाप्त करने के लिए यूरोप के अनेक देश आगे आये और इससे स्वाभाविक रूप से भौगोलिक खोजें हुई। इन भौगोलिक खोजों के कारण यूरोपवासी अटलांटिक महासागर के महत्त्व से परिचित हुए। दूरस्थ व्यापार के दृष्टिकोण से अटलांटिक महासागर एक अच्छा माध्यम बन सकता है इसका पता उन्हें लगा। इस प्रकार दूरस्थ व्यापार इस महासागर के माध्यम से आरंभ हुआ। दूरस्थ व्यापार के कारण यूरोपीय देशों ने एशिया, अफ्रीका और अमेरिका जैसे महादेशों से जो व्यापारिक संबंध स्थापित किए उससे उन्हें भारी मुनाफा हुआ और इस मुनाफे ने व्यापारियों को और अधिक व्यापार करने के लिए प्रोत्साहित किया। यूरोपीय देशों में वैज्ञानिक खोजों के फलस्वरूप जो औद्योगिक क्रांति आयी थी इसने भी इन देशों को दूरस्थ व्यापार के लिए प्रेरित किया। इनको उद्योगों के लिए एक तरफ जहाँ कच्चा माल प्राप्त करना था तो वहीं दूसरी ओर कारखानों में निर्मित वस्तुओं को बेचने के लिए बाजार की आवश्यकता थी। इन सब आवश्यकताओं की पूर्ति ने इन यूरोपीय देशों को दूरस्थ व्यापार के लिए प्रेरित किया।

इस दौरान वास्कोडिगामा और कोलंबस ने जिस नवीन प्रवृत्ति का विकास किया वह आगे भी जारी रही और इसके कारण यूरोपीय देश वैसे समृद्ध देशों के संपर्क में आये जहाँ से व्यापार कर वे अधिक मुनाफा कमा सकते थे। ऐसे देशों में भारत, चीन, जापान, इंडोनेशिया व अमेरिका देशों को रखा जा सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इन तमाम कारकों के फलस्वरूप यूरोपीय देश भूमध्यसागर से अटलांटिक सागर की ओर दूर–दूर तक व्यापार करने के लिए प्रेरित हुए। जिससे आर्थिक संतुलन का केंद्र भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर बदल गया। इसके अलावा धर्मयुद्ध भी एक महत्त्वपूर्ण कारक था जिसने आर्थिक संतुलन के केंद्र को परिवर्तित करने के लिए मजबूर कर दिया था। इस धर्म युद्ध ने ईसाईयों को विश्व स्तर पर ईसाई धर्म को प्रचारित व प्रसारित करने की प्रेरणा दी।

अतः उपरोक्त कारकों का मिलाजुला परिणाम यह हुआ कि यूरोप में एक नवीन क्रांति आयी। इस नवीन वाणिज्यिक क्रांति ने यूरोपीय अर्थव्यवस्था में मात्रात्मक एवं गुणात्मक परिवर्तन किए तथा साथ ही इसने उत्पादन प्रणाली को भी बदल डाला। अब यूरोपीय अर्थव्यवस्था में पूँजीवादी प्रवृत्ति का उदय हुआ इसने अधिक–से–अधिक लाभ कमाने के लिए प्रेरित किया। इस अनिवार्यता ने नवीन व्यापारिक मार्ग को खोजने के लिए प्रेरित किया। जिसके फलस्वरूप आर्थिक संतुलन भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर खिसक गया।

3.3. अध्याय के मुख्य बिंदु (Main body of the Text)

3.3.1 भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन : पृष्ठभूमि (Shift of Economic balance from the Mediterranena to the Atlantic: Background)

यूरोपीय समाज में 12 वीं– 13 वीं सदी से ही सामंतवादी उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन आने शुरू हो गये थे। ये परिवर्तन 14 वीं और 15 वीं शताब्दी में और अधिक मजबूत होते गये। पुनर्जागरण, धर्मसुधार आंदोलन, सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमा जैसे परिवर्तनों के कारण 16 वीं सदी का यूरोप आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक दृष्टि से पूरी तरह परिवर्तन की ओर बढ़ रहा था। इन परिवर्तनों के कारण यूरोपीय समाज में चिंतन व साहस की भावना को प्रोत्साहन मिला। यहाँ राष्ट्रीय राजनीति का उदय हुआ। यहाँ के लोग साहसपूर्ण कदम उठाते हुए भौगोलिक खोजों की ओर प्रेरित हुए। इस दौरान भौगोलिक खोजों के प्रभाव बहुत सशक्त रहे। नये देशों की खोज और शेष विश्व के साथ यूरोप जुड़ने के लिए लालायित हो गया। अतः उपरोक्त विभिन्न परिवर्तनों के फलस्वरूप व्यापार–वाणिज्य में जो क्रांतिकारी परिवर्तन आया उसे इतिहास में वाणिज्यिक क्रांति के नाम से जानते है। इन परिवर्तनों से 16 वीं शताब्दी और बाद की शताब्दियों में यूरोपीय व्यापार का स्वरूप निर्धारित हुआ। अतः क्षेत्रीय व्यापार में वृद्धि, स्थानीयतावाद की समाप्ति, समुद्रपारीय व्यपार का विकास, बाजार का व्यापक एवं बढ़ता हुआ प्रभाव और नए प्रकार के व्यापारिक संगठनों का उदय जैसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन व्यापार–वाणिज्य के दृष्टिकोण से परिलक्षित हुये। राष्ट्रीय राजनीति का उदय तथा मौद्रिक अर्थव्यवस्था के विकास ने वाणिज्यिक अर्थव्यवस्था में तीव्रता ला दी।

नये देशों की खोज से पूर्व यूरोप का व्यापार मुख्य रूप से भूमध्यसागर एवं बाल्टिक सागरों तक ही सीमित था। भूमध्यसागरीय व्यापार पर इटली के नगर राज्यों का कब्जा था। अब वाणिज्यिक क्रांति के फलस्वरूप इनका स्थान भूमध्यसागर से खिसक कर आटलांटिक महासागर का क्षेत्र ने ले लिया। अब व्यापार–वाणिज्य में अटलांटिक प्रशान्त व हिन्द महासागरों का महत्त्व बढ़ गया। यूरोपीय व्यापार पर इटली के नग राज्यों का एकाधिकार अब बीते दिनों की बात रह गयी। बेनिस और जेनोआ के व्यापारियों की स्थिति सोचनीय हो गयी। वाणिज्यिक क्राति के फलस्वरूप यूरोप के कई शहर व्यापारिक गतिविधियों के केंद्र बन गये, जहाँ व्यापार लगातार ही चलता रहता था। पेरिस, लन्दन, एम्सटरडम, एन्टवर्प आदि शहर व्यापार के केन्द्र बन गये। एन्टवर्प तो 16 वीं शताब्दी के प्रारंभ में विश्वव्यापी व्यापार का प्रमुख केंद्र बन गया था।

इस प्रकार उपरोक्त परिवर्तनों का मिलाजुला असर यह हुआ कि अब यूरोप में आर्थिक संतुलन का केंद्र भूमध्यसागरीय क्षेत्रों से खिसक कर अटलांटिक क्षेत्र की ओर बदल गया था।

3.3.2 भूमध्यसागर व अटलांटिक सागरीय क्षेत्रों का भौगोलिक परिचय (Geographical Introduction of Mediterreanean and Atlantic States)

भूमध्यसागर अटलांटिक महासागर का एक भाग है जो यूरेशिया और अफ्रीका महाद्वीपों के मध्य लगभग पूरी तरह भूमि से घिरा है। भूमध्यसागर की सीमा 21 देशों से लगती है। ये देश है – अल्बानिया, अल्जीरिया, बोस्निया और हर्जेगोबिना, क्रोएशिया, साइप्रस, मिस्र, फ्रांस, ग्रीस (यूनान), इजरायल, इटली, लेबनान, लीबिया, माल्टा, मोनाको, मॉटेनेग्रो, मोरक्को, स्लोवनिया, स्पेन, सीरिया, ट्यूनीशिया और तुर्की।

क्षेत्रफल व विस्तार में दुनिया का दूसरे स्थान का महासागर अटलांटिक महासागर पृथ्वी के 1/5 भाग क्षेत्र को घेर रखा है। इस महासागर का आकार अंग्रेजी के अक्षर 8 के समान हैं। लंबाई की अपेक्षा इसकी चौडाई बहुत कम है। यह महासागर 5 महाद्वीपों की सीमा बनाती है। ये महाद्वीप हैं – एशिया, यूरोप, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका व दक्षिणी अमेरिका।

16 वीं सदी के वाणिज्यिक क्रांति से पूर्व यूरोप में व्यापार का केंद्र–बिंदु भूमध्यसागरीय क्षेत्र के आस–पास केंद्रित था। इसमें मुख्य भूमिका इटली के नगर राज्यों का था। लेकिन अब भौगोलिक खोजों के कारण सामुद्रिक व्यापार में वृद्धि हुई तथा व्यापार और वाणिज्य में तीव्रता आयी। नवीन समुद्री मार्ग की खोज हुई। यूरोपवासी अटलांटिक महासागर के महत्त्व से अवगत हुए। इसके साथ ही अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों के कारण यूरोप में नगरीकरण की प्रक्रिया आरंभ हुई। जिससे यूरोप में कई नगर अस्तित्व में आये। फलतः इटली के नगर–राज्यों के व्यापारिक एकाधिकारों को तोड़ने के लिए यूरोप के अनेक देश आगे आये। इससे स्वाभाविक रूप से भौगोलिक खोजें हुई।

इस प्रक्रिया ने आगे चलकर आर्थिक गतिविधियों को भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर स्थानांतरित कर दिया। अतः अब यूरोपीय व्यापार अटलांटिक क्षेत्रों में स्थिति देशों का प्रभाव एवं महत्त्व बढ़ गया। इसमें स्पेन, पुर्तगाल और फिर हॉलैण्ड, इंग्लैंड तथा फ्रांस की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। बाद में स्पेन तथा पुर्तगाल का महत्त्व घट गया और इसका फायदा अन्य देशों ने उठाया। इसका पूरा फायदा उठाते हुए इन देशों ने एशिया, अफ्रीका व अमेरिका में उपनिवेश बनाये और वहाँ की सम्पदा का प्रयोग अपने देश की तरक्की में किया।

3.3.3 भूमध्यसागर व अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन के कारक (Factors Leading to shift of economic balance from the Mediterranean to the Atlantic)

विभिन्न कारणों से 16 वीं सदी में यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति आयी। यूरोपवासी भौगोलिक खोजों की ओर आगे बढ़े। इससे सामुद्रिक व्यापार में और आर्थिक तीव्रता आयी। इस वाणिज्यिक क्रांति से पूर्व व्यापार व वाणिज्य का केंद्र बिन्दु भूमध्यसागरीय क्षेत्रों तक सीमित था। किंतु अब आर्थिक गतिविधियाँ भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर स्थानांतरित हो गयी। इस आर्थिक संतुलन के बदलाव के महत्त्वपूर्ण कारक निम्न हैं –

(1) भौगोलिक खोजों के कारण यूरोपवासी अटलांटिक महासागर के महत्त्व से अवगत हुए। फलतः वे अब दूरस्थ व्यापार के लिए इस महासागर का उपयोग करना आरंभ कर दिये। अतः अटलांटिक क्षेत्रों में स्थित यूरोपीय देशों की भूमिका बढ़ गयी।

(2) 12 वीं – 13 वीं सदी से लेकर 14 वीं और 15 वीं शताब्दी और 16 वीं सदी तक अनेक कारणों से यूरोप में परिवर्तन की धारा बही जिसने नागरीकरण की प्रक्रिया को जन्म दिया। यूरोप में कई नगर अस्तित्व में आये। अटलांटिक क्षेत्र में स्थित यूरोपीय क्षेत्रों के ये नगर व्यापारिक केंद्र के रूप में उभर कर सामने आये। इन नगरों ने इटली के नगर राज्यों के व्यापारिक एकाधिकार को तोड़ दिया और इस प्रकार आर्थिक गतिविधियों का केंद्र भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर बदल गया।

(3) यूरोपीय देशों में औद्योगिक क्रांति के कारण उन्हें कच्चे मालों की प्राप्ति के लिए उन्हें दूरस्थ व्यापार की आवश्यकता थी। इस आवश्यकता के कारण यूरोपीय देशों ने एशिया, अफ्रीका और अमेरिका जैसे महादेशों से जो व्यापारिक संबंध स्थापित किए। यह व्यापार भारी मुनाफा वाला व्यापार साबित हुआ। यह व्यापार अटलांटिक महासागर से होकर गुजरने वाले मार्ग से ही हो रहा था। अतः आर्थिक संतुलन का केंद्र बिंदु स्वाभाविक रूप से अब भूमध्यसागर के स्थान पर अटलांटिक महासागर का क्षेत्र हो गया।

(4) अटलांटिक महासागर से होने वाले व्यापार के कारण यूरोप में बुलियन अर्थात् सोने, चाँदी जैसे बहुमूल्य धातुओं का आगमन आरंभ हो गया। इस कारण संबंधित देश के शासकों या सरकारों के द्वारा इसे और अधिक प्रोत्साहित किया। अतः यह भी एक महत्त्वपूर्ण कारक रहा आर्थिक संतुलन के बदलाव के लिए।

(5) वास्कोडिगामा ने अटलांटिक महासागर से होते हुए भारत आने का मार्ग खोज निकाला था। वह दूरस्थ व्यापार बड़ा लाभकारी होने के कारण भी इस आर्थिक संतुलन के बदलाव को बल मिला।

(6) कोलंबस ने भी इसी मार्ग से चलकर नई दुनिया अर्थात् अमेरिका को खोज निकाला और यह बुलियन के आगमन का अच्छा स्रोत साबित हुआ। अतः इस मुनाफे ने भू–मध्यसागर के व्यापार के केंद्र को अटलांटिक महासागर की ओर स्थानांतरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(7) इस आर्थिक बदलाव का एक कारण धार्मिक पक्ष भी था – धर्मयुद्ध।

यूरोप में धर्मयुद्ध ने ईसाईयों को विश्व स्तर पर ईसाई धर्म को प्रचारित व प्रसारित करने की प्रेरणा दी। अतः एशिया, अफ्रीका व अमेरिका में जाने के लिए इन्होंने भी अटलांटिक महासागरीय क्षेत्र के व्यापार को प्रोत्साहित किया। अतः इस बदलाव के पीछे धर्मयुद्ध भी एक महत्त्वपूर्ण कारक साबित हुआ।

3.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

3.4.1 भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक बदलाव के कारण (Causes of Economic Shift from Mediterranean to Atlantic)

भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक बदलाव के पीछे कई कारण थे। इन कारणों का विवरण निम्न प्रकार है :–

(1) आर्थिक कारण

यूरोपवासियों की निरंतर बढ़ती हुई आर्थिक आवश्यकताओं एवं व्यापार के फैलाव ने यहाँ के साहसी लोगों को भौगोलिक खोजों के लिए प्रेरित किया। उधर रोमन साम्राज्य के पतन के बाद अरबी व्यापारियों का यूरोप के व्यापारिक केन्द्रों के प्रति आकर्षण लगभग समाप्त हो गया था, परंतु मध्य युग में अनुकूल परिस्थितियाँ होने पर एक बार फिर से कीमती एवं विलास की वस्तुओं की माँग बढ़ने के कारण इटली के साथ अरबी व्यापारियों का संपर्क बढ़ा। यूरोप में धर्मयुद्धों व उस्मान तुर्कों द्वारा कुस्तुनतुनिया पर कर लिये जाने के बाद यूरोप वालों के लिए पूर्व के साथ व्यापार करना मुश्किल हो गया। अतः यूरोप में नये व्यापारिक नगरों के उदय के कारण नये रास्तों के खोज की आवश्यकता महसूस हुई। उस समय जो थोड़ा बहुत व्यापार भूमध्यसागर से होता था उस पर इटली के नगर राज्यों ने कब्जा जमा रखा था। अतः पश्चिमी यूरोप के देश विशेष रूप से पुर्तगाल, स्पेन, नीदरलैण्ड्स, फ्रांस तथा इंग्लैंड ऐसे मार्गों की खोज के लिए अत्यधिक व्यग्र थे, जिसके द्वारा वे इटली के व्यापारियों एवं अरबों पर निर्भर रहे बिना अपनी आवश्यकताओं की सभी वस्तुएँ प्राप्त कर सकें। अतः व्यापार से उन्नति और इनसे होने वाला आर्थिक लाभ वह महत्वपूर्ण कारण था जिससे आर्थिक संतुलन वाणिज्यिक क्रांति के बाद भूमध्यसागरीय क्षेत्रों से स्थानांतरित होकर अटलांटिक खेत्र की ओर हो गया था।

(2) सामंतवाद से पूँजीवाद का संक्रमण भी एक महत्त्वपूर्ण कारण था, जिसने यूरोपवासियों अतिरिक्त पूँजी के निवेश द्वारा लाभ अर्जन करने की प्रवृत्ति को जन्म दिया। जिससे वे नये व्यापारिक मार्गों के खोज की ओर प्रेरित हुए।

12 वीं – 13 वीं सदी से इस सामंतवादी उत्पादन प्रणाली में कई कारणों से परिवर्तन आने शुरू हो गये थे। ये परिवर्तन 14 वीं और 15 वीं शताब्दी में और अधिक मजबूत होते गए। पूँजीवादी परिवर्तन ने एक स्थिर क्षेत्रीय और निर्वाह अर्थव्यवस्था को गतिशील, विश्वव्यापी और अधिशेष पर आधारित अर्थव्यवस्था में बदल दिया। इस बदली हुई परिस्थिति में भौगोलिक खोजों ने अटलांटिक महासागर के महत्त्व को उजागर किया, जिसके कारण अब दूरस्थ व्यापार इस महासागर के माध्यम से आरंभ हुआ।

(3) ईसाई धर्म प्रचारकों का योगदान भी एक महत्त्वपूर्ण कारक आर्थिक गतिविधियों के भूमध्यसागर से अटलांटिक क्षेत्र में परिवर्तित होने का रहा। एशिया और अफ्रीका की पिछड़ी जातियों ईसाई धर्म फैलाने के लिए यूरोप के ईसाई पादरियों से भी साम्राज्यवाद को भरपूर समर्थन मिला। पादरी लोग नए उपनिवेशों की स्थापना से बहुत प्रसन्न होते थे क्योंकि उन्हें ईसाई धर्म फैलाने का एक नया क्षेत्र मिल जाता था। ईसाई मिश नरियों के लिए साम्राज्य विस्तार धर्म प्रसार का एक अच्छा साधन बन जाता थ।

(4) भौगोलिक खोजों के फलस्वरूप कोलम्बस द्वारा अमेरिका की खोज ने यूरोपीय देशों में स्वर्ण जैसी बहुमूल्य धातु के संग्रह की प्रतिस्पर्धा आरंभ की। स्वर्ण–संग्रह की प्रतिस्पर्धा की स्थिति यह थी कि समस्त यूरोप में 'आर्थिक स्वर्ण, अधिक समृद्धि, अधिक कीर्ति का नारा बुलंद हुआ। अब समस्त यूरोपीय राष्ट्रों का प्रमुख ध्यान सोना, कीर्ति एवं ऐश्वर्य पर केन्द्रित हो गया। इस प्रतिस्पर्धा ने उपनिवेश की स्थापना की हौड़ बढ़ा दी। यह सब दूरस्थ व्यापार व वैश्विक अर्थव्यवस्था से संभव हो सकता था। अतः इसकी अनिवार्यता के कारण यूरोपीय देश भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर आकर्षित हुए।

(5) कच्चे माल की प्राप्ति की अनिवार्यता ने भी यूरोपीय देशों की अफ्रीका एवं एशियाई देशों में उपनिवेशों की स्थापना के लिए प्रेरित किया। इसके लिए उनको दूरस्थ व्यापार करना आवश्यक था। अतः यूरोपीय देशों ने भूमध्यसागरीय क्षेत्रों के सीमित व्यापार क्षेत्र को छोड़कर विस्तृत व वैश्विक व्यापार क्षेत्र वाला मार्ग अटलांटिक महासागर को महत्त्व दिया।

(6) निर्मित माल की खपत के लिए भी यूरोपीय देशों को बाजार की आवश्यकता ने आर्थिक संतुलन के केंद्र को बदलने के लिए मजबूर किया।

एशिया एक ऐसा महाद्वीप था जहाँ से अनेक प्रकार का कच्चा माल जैसे कपास, चाय, नील, कॉफी, तंबाकू, चीनी, लोहा, टिन, तांबा इत्यादि प्रचुर मात्रा में प्राप्त किया जा सकता था।

यूरोपीय देश यहाँ अपना उपनिवेश स्थापित करके निर्मित माल को उनके बाजारों में अधिक लाभ में बेच सकते थे। इसके अलावा एशिया एवं अफ्रीका में अनूकूल परिस्थितियाँ भी यूरोपीय साम्राज्य के विस्तार में सहायक सिद्ध हुई। अतः इन सभी कारणों से वाणिज्यिक क्राति के बाद आर्थिक गतिविधियों का केंद्र भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर स्थानांतरित हो गया।

3.4.2 भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन : प्रभाव/परिणाम (Shift of Economic balance from Mediterranean to Atlantic : Impacts/Results)

16 वी सदी की वाणिज्यिक क्रांति यूरोपीय इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण क्रांति थी, जिसका पूरी विश्व की अर्थव्यवस्था पर काफी गहरा व व्यापक प्रभाव पड़ा। इस क्रांति के कारण यूरोप में उत्पादन प्रणाली सहित इसके संगठन में भी व्यापक परिवर्तन आया। इस क्रांति ने ऐसे नवीन यूरोप की आधारशिला रखी जिसकी बदौलत यूरोप में मानव चेतना को श्रेष्ठ रूप देने वाले पुनर्जागरण, धर्मसुधार आंदोलन, भौगोलिक खोजों, राष्ट्रीय राज्यों का उदय व वाणिज्यवाद जैसी प्रक्रिया का उदय संभव हो पाया। इन सब कारणों से यूरोपवासी सीमित क्षेत्र वाले भूमध्यसागरीय व्यापार से विश्वव्यापी व्यापार से जुड़ने के लिए अटलांटिक महासागर की ओर आकर्षित हुए। इसका आर्थिक संतुलन के प्रभाव/परिणाम का विवरण निम्न प्रकार है :–

(1) भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन के परिणामस्वरूप इटली के नगर राज्यों का व्यापारिक एकाधिकार टूट गया। आर्थिक गतिविधियाँ भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर स्थानांतरित हो गई जिससे पश्चिमी यूरोपीय देशों का महत्त्व बढ़ने लगा।

(2) भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर आर्थिक गतिविधियों के स्थानांतरण ने व्यापार के परंपरागत केंद्रों की जगह नये केन्द्र को जन्म दिया। अब इटली के कई प्रमुख नगर जैसे – वेनिस, पीसा आदि पतन की ओर अग्रसर हो गये वहीं दूसरी ओर लिस्बन, लिवरपूल, एमस्टर्डम आदि नगर वाणिज्यिक गतिविधियों के बड़े केन्द्रों के रूप में उभरे।

(3) अटलांटिक महासागरीय क्षेत्रों के व्यापारिक गतिविधि के केंद्र बनने पर यूरोपीय अर्थव्यवस्था विश्वव्यापी बन गई। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में व्यापारिक सामग्रियों की मात्रा और उसकी विविधता में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। नये व्यापारिक संबंधों के कारण उनकी नयी वस्तुएँ व्यापार से जुड़ गई। उदाहरणार्थ अमेरिका से आलू, तंबाकू और मक्का, वेस्टइंडीज से शराब, दक्षिणी अमेरिका से नारियल, कुनैन व चॉकलेट, अफ्रीका से हाथी दाँत, शुतुरमुर्ग के पंख और दास तथा एशिया से गरम मसाले व कपड़े यूरोपीय व्यापार में अहम भूमिका निभाने लगे।

(4) भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर आर्थिक संतुलन का एक महत्त्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि यूरोप में बुलियन का संग्रह होने लगा। अमेरिका से बड़ी मात्रा में सोना तथा मैक्सिको, बोंलीबिया से बड़ी मात्रा में चाँदी यूरोप में आने लगी। इसी प्रकार एशिया व अफ्रीका से भी सोना–चाँदी यूरोप आने लगे। समय के साथ यूरोप में बुलियन का अत्यधिक संग्रह हो गया, जिसके कारण यूरोपीय मुद्रा स्वर्ण आधारित हो गयी।

(5) भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक गतिविधि के स्थानांतरण ने यूरोप में पूँजीवाद के उद्भव में विशिष्ट योग दिया।

(6) आर्थिक गतिविधि के इस स्थानांतरण के फलस्वरूप यूरोप की अर्थव्यवस्था विश्वव्यापी हो गयी। इसके फलस्वरूप यूरोप में बैंकिंग प्रणाली का विकास हुआ।

(7) भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर आर्थिक गतिविधि का केंद्र बनने पर यूरोप का व्यापार दूर–दूर तक फैल गया। इस प्रकार के विस्तृत व्यापार को चलाने के लिए आपसी सहयोग की भावना पर आधारित संयुक्त पूँजी उद्यम आधारित कंपनियों का विकास हुआ। अर्थात् इसके परिणामस्वरूप यूरोप में चार्टर कंपनियों का उदय हुआ।

3.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress)

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)

(i) वाणिज्यिक क्रांति से पूर्व यूरोपीय व्यापार का केंद्र बिंदु .... था।

(ii) वाणिज्यिक क्रांति के दौरान भौगोलिक खोजों ने .... व्यापारिक क्षेत्र के महत्त्व को उजागर किया।

(iii) भूमध्यसागरीय व्यापार पर .... का कब्जा था।

(iv) वाणिज्यिक क्रांति के कारण आर्थिक गतिविधियाँ भूमध्यसागर से .... की ओर स्थानांतरित हो गयीं।

(v) ....महासागर से व्यापार के कारण यूरोप का व्यापार विश्वव्यापी हो गया।

(vi) .... युद्ध ने ईसाईयों को विश्व स्तर पर ईसाई धर्म को प्रचारित व प्रसारित करने की प्रेरणा दी।

(vii) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में व्यापारिक सामग्रियों की मात्रा और उसकी विविधता में अप्रत्याशित वृद्धि .... महासागर से व्यापार के कारण संभव हो सका।

(viii) यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति .... सदी में आयी थी।

(ix) यूरोप से भारत आने के लिए अटलांटिक महासागर होते हुए नए समुद्री मार्ग का पता .... ने लगाया था।

(x) भौगोलिक खोजों के परिणामस्वरूप प्रारंभिक उपनिवेश .... ने स्थपित किये।

(ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False based Questions)

(i) आर्थिक गतिविधियों का भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर स्थानांतरण के फलस्वरूप व्यापार के परंपरागत केन्द्रों की जगह नये केन्द्र का विकास हुआ। (   )

(ii) अटलांटिक महासागरीय क्षेत्रों से व्यापार के फलस्वरूप यूरोप में बुलियन का संग्रह होने लगा। (   )

(iii) वाणिज्यिक क्रांति से पूर्व ही यूरोप में एक सुदृढ़ बैंकिंग प्रणाली का विकास हो चुका था। (   )

(iv) अटलांटिक महासागर के महत्त्व का पता लगने से पूर्व आर्थिक गतिविधि का केंद्र प्रशांत महासागरीय क्षेत्र रहा। (   )

(v) भूमध्यसागरीय व्यापार पर इटली के नगर राज्यों का एकाधिकार था। (   )

(vi) 16 वीं सदी के परिवर्तन के दौर में भौगोलिक खोजों के कारण सामुद्रिक व्यापार में वृद्धि हुई तथा व्यापार और वाणिज्य में तीव्रता आयी। (   )

(vii) अटलांटिक महासागर होते हुए दूरस्थ व्यापार के लिए मार्ग की खोज इंग्लैंड के कोलंबस ने किया था। (   )

(viii) भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर आर्थिक संतुलन के फलस्वरूप यूरोप में संयुक्त पूँजी उ़द्यम का विकास व्यापारिक संगठनों में बदलाव का महत्त्वपूर्ण सूचक रहा। (   )

(ix) भौगोलिक खोजों के कारण अटलांटिक महासागर के महत्त्व का पता चला और दुनिया का यूरोपीयकरण हुआ तथा पूँजीवाद, वाणिज्यवाद व साम्राज्यवाद का उदय हुआ। (   )

(x) अटलांटिक महासागर से होते हुए दूरस्थ व्यापार आरंभ होने के बाद भूमध्यसागर का महत्त्व जाता रहा और इटली के नगरों की श्रीसम्पन्नता की बात अब अतीत का विषय हो गयी। (   )

3.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary)

- 12 वीं – 13 वीं सदी से यूरोपीय सामंतवादी उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन आने शुरू हो गए थे।
- परिवर्तन की यह धारा 14 वीं और 15 वीं शताब्दी में और अधिक मजबूत होते गए।
- 16 वीं सदी का यूरोप मूल परिवर्तनवाद की दिशा में बढ़ रहा था।
- पुनर्जागरण, धर्म सुधार आंदोलन, भौगोलिक खोजों और राष्ट्रीय राज्यों के उदय ने एक नई क्रांति वाणिज्यिक क्रांति का मार्ग प्रशस्त कर दिया।
- भौगोलिक खोजों के कारण सामुद्रिक व्यापार में वृद्धि हुई तथा व्यापार और वाणिज्य में तीव्रता आयी।

- पुर्तगाली वास्कोडिगामा और स्पेनवासी कोलबंस के साहसिक भौगोलिक खोजों के कारण यूरोपवासी अटलांटिक महासागर के महत्त्व से अवगत हुए।
- अब अटलांटिक महासागर होते हुए दूरस्थ व्यापार आरंभ हुआ।
- फलतः आर्थिक गतिविधियाँ भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर स्थानांतरित हो गयीं।
- आर्थिक गतिविधियों के इस स्थानांतरण से नगरीकरण की प्रक्रिया आरंभ हुई, जिससे यूरोप में कई नगर अस्तित्व में आये।
- भूमध्यसागरीय व्यापार पर इटली के नगर राज्यों का एकाधिकार था।
- अटलांटिक महासागरीय क्षेत्रों का पता चलने पर इटली का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त हो गया।
- आर्थिक गतिविधियाँ भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर स्थानांतरित हो गई, जिससे पश्चिमी यूरोपीय देशों का महत्त्व बढ़ने लगा।
- इस स्थानांतरण के फलस्वरूप इटली के प्रमुख नगर – वेनिस, पीसा आदि पतन की ओर अग्रसर हो गये तो वहीं दूसरी ओर लिस्बन, लिवरपुल, एमस्टर्डम आदि नगर बड़े–बड़े व्यापारिक केंद्र के रूप में उभर कर सामने आयें।
- इस स्थानांतरण का एक महत्त्वपूर्ण परिणाम था – यूरोप में बुलियन का संग्रह होना। जिसके कारण यूरोपीय मुद्रा स्वर्ण आधारित हो गयी।
- अटलांटिक महासागर से दूर देश से व्यापार बढ़ने पर औपनिवेशिक साम्राज्य की स्थापना को लेकर यूरोपीय राष्ट्रों में तीव्र प्रतिस्पर्द्धा बढ़ी। अमेरिका, अफ्रीका के कुछ क्षेत्रों, एशिया के कुछ देशों और आस्ट्रेलिया तथा अन्य द्वीप समूहों में यूरोपीय उपनिवेश एवं बस्तियाँ बसाई गईं।
- पुर्तगाल और स्पेन उपनिवेश स्थापित करने में अग्रणी रहे। इसके बाद 16 वीं सदी के अंत और 17 वीं सदी के पूर्वार्द्ध में फ्रांस, इंग्लैंड, इटली आदि राज्य भी उपनिवेश स्थापना की दौड़ में शामिल हो गए।
- अटलांटिक महासागर के मार्ग से खुलने पर वाणिज्यवाद का और अधिक विकास हुआ। नए देशों की खोज तथा व्यापार वृद्धि के परिणामस्वरूप आधुनिक पूँजीवाद का विकास हुआ।
- इस स्थानांतरण के फलस्वरूप ईसाई धर्म एवं पश्चिमी सभ्यता का प्रसार भी बड़ी तेजी से यूरोप के बाहर के देशों में फैला। ईसाई प्रचारकों ने अपने धर्म को फैलाने में अपूर्व उत्साह का परिचय दिया। धर्मयुद्धों की असफलता के कारण ईसाई धर्म का प्रचार धीमा पड़ गया था। किंतु नए देशों की खोज के साथ ही ईसाई

प्रचारक अधिक उत्साह के साथ धर्म प्रचार के लिए निकल पड़े। ईसाई धर्म प्रचारकों के कारण दूरस्थ व्यापार के विकास को और अधिक प्रोत्साहन मिला।

- भौगोलिक खोजों के कारण अटलांटिक महासागर का मार्ग दूरस्थ व्यापार के लिए अस्तित्व में आया। इससे दुनिया का यूरोपीयकरण हुआ और इन्हीं के कारण पूँजीवाद, वाणिज्यवाद और साम्राज्यवाद का उदय हुआ।
- इसने नौ–विद्या के विकास को बढ़ावा दिया। आर्थिक गतिविधियों का केंद्र भूमध्यसागर के स्थान पर अटलांटिक महासागर क्षेत्र में स्थानांतरित हो गया। अब अटलांटिक तट पर अवस्थित देश भूस्वामी बन गये।
- अटलांटिक महासागर से व्यापार ने यूरोपीय वाणिज्यिक क्रांति में और तीव्रता ला दी। इसका न केवल यूरोप बल्कि पूरी विश्व अर्थव्यवस्था पर काफी गहरा व व्यापक प्रभाव पड़ा। इसके फलस्वरूप यूरोप में बैंकिंग प्रणाली का विकास हुआ। यूरोप में चार्टर कंपनियों का उदय हुआ।
- दूरस्थ व्यापार के फलस्वरूप सुरक्षा की भावना से व्यापारियों ने आपसी सहयोग पर आधारित संयुक्त पूँजी उद्यम की प्रक्रिया का विकास किया। यह एक प्रकार की विनियमित कम्पनी होती थी। इन कंपनियों ने किसी क्षेत्र विशेष और एक निश्चित अवधि के लिए व्यापारिक एकाधिकार प्राप्त किया। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी (1600 ई.), डच ईस्ट इंडिया कंपनी (1602 ई.) और फ्रासीसी ईस्ट इंडिया कंपनी (1664 ई.) इसी प्रकार की चार्टर कंपनियाँ थी।

3.7 संकेत–सूचक (Key Words)

- अध्ययनोपरांत – अध्ययन के बाद
- भूमध्यसागर – यूरोप को अफ्रीका से अलग करने वाला सागर
- बुलियन – सोने, चाँदी आदि बहुमूल्य धातुओं से संबंधित
- वास्कोडिगामा – पुर्तगाली यात्री जिसने भारत जाने के लिए मार्ग की खोज की थी।
- कोलंबस – स्पेन का यात्री जिसने 1492 ई. में नई दुनिया अर्थात् अमेरिका की खोज की थी।
- स्थानांतरण – स्थान परिवर्तन।
- कुस्तुनतुनिया – तुर्की का एक प्रसिद्ध नगर है। प्राचीन काल में यह रोमन, बाइजेंटाइन और उस्मानी साम्राज्य की राजधानी थी।

3.8 स्वं–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test (SAT)

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Based Questions)

(i) भूमध्यसागरीय व्यापार पर .... का कब्जा था।

(क) इटली (ख) फ्रांस (ग) पुर्तगाल (घ) स्पेन

(ii) वाणिज्यिक क्रांति के फलस्वरूप आर्थिक गतिविधियाँ भूमध्यसागर से .... की ओर स्थानांतरित हो गयीं।

(क) प्रशांत महासागर (ख) लाल सागर

(ग) अटलांटिक महासागर (घ) जिब्राल्टर

(iii) भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन के फलस्वरूप.......... नगर पतन की ओर उन्मुख हो गये।

(क) वेनिस, पीसा (ख) लंदन, लिस्बन

(ग) लिवरपुल, एमस्टर्डम (घ) उपर्युक्त सभी

(iv) यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति .... सदी में आयी थी।

(क) 16 वीं (ख) 17 वीं (ग) 18 वीं (घ) 19 वीं

(v) भौगोलिक खोजों के परिणामस्वरूप प्रारंभिक उपनिवेश .... ने स्थापित किये।

(क) पुर्तगाल (ख) इंग्लैंड

(ग) फ्रांस (घ) जर्मनी

(vi) .... सागर यूरोप को अफ्रीका से अलग करता है।

(क) अटलांटिक (ख) लाल

(ग) भूमध्यसागर (घ) प्रशांत

(vii) यूरोप व अफ्रीका महाद्वीपों को नई दुनिया अर्थात् अमेरिका व कैटिलाई सागर के द्वीप से ....पृथक करती है।

(क) अटलांटिक महासागर (ख) भूमध्यसागर

(ग) प्रशांतमहासागर (घ) लाल सागर

(viii) भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर आर्थिक गतिविधियों के स्थानांतरण के परिणाम के संबंध में सत्य कथन है।

(क) यूरोप में बुलियन का संग्रह होने लगा।

(ख) यूरोप में चार्टर कंपनियों का उदय हुआ।

(ग) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से व्यापारिक सामग्रियों की मात्रा और उसकी विविधता में अप्रत्याशित वृद्धि हुई।

(घ) उपर्युक्त सभी

(ix) भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर आर्थिक गतिविधियों के स्थानांतरण के फलस्वरूप .... देश के नगरों की संपन्नता अब अतीत का विषय हो गयी।

(क) इंग्लैंड (ख) इटली

(ग) पुर्तगाल (घ) स्पेन

(x) भौगोलिक खोजों के फलस्वरूप व्यापारिक प्रगति के कारण यूरोप में .... वर्ग का उत्थान हुआ।

(क) सामंतवादी (ख) पूँजीपति एवं मध्यम

(ग) समाजवादी (घ) श्रमिक

(ख) निबंधात्मक / दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer based Questions)

(i) भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन की पृष्ठभूमि का वर्णन करे।

(Describe the background of shift of Economic balance from the Mediterranean to the Atlantic.)

(ii) भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन के क्या कारण थे।

(What were the causes of shift of economic balance from the Mediterranean to the Atlantic.)

(iii) भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन के परिणामों की व्याख्या करें।

(Explain the consequences of Shift of Economic Balance from Mediterranean to Atlantic.)

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer based Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (Write Short Notes on the following)

(i) भूमध्यसागर (Mediterranean Sea)

(ii) अटलांटिक महासागर (Atlantic Ocean)

(iii) भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक बदलाव (Economic Shift from Mediterranean to Atlantic)

(iv) भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन के कारक (Factors Leading to shift of economic balance from the Mediterranean to the Atlantic)

(v) भूमध्यसागर से अटलांटिक की ओर आर्थिक संतुलन के परिणाम (Consequences of shift of economic balance from the Mediterranean to the Atlantic)

(vi) वास्कोडिगामा (Vascodigama)

(vii) कोलबंस (Colombus)

(viii) भौगोलिक खोज (Geographical Exploration)

(ix) वाणिज्यिक क्रांति (Mercantile Revolution)

(x) यूरोप में बुलियन का संग्रह (Collection of Bullien in Europe)

3.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check Your Progress)

3.5 (क) उत्तर :–

(i) भूमध्यसागर (ii) अटलांटिक महासागर (iii) इटली (iv) अटलांटिक महासागर

(v) अटलांटिक (vi) धर्मयुद्ध (vii) अटलांटिक (viii) 16 वीं सदी (ix) वास्कोडिगामा (x) पुर्तगाल

3.5 (ख) उत्तर :–

(i) सत्य	(ii) सत्य	(iii) असत्य	(iv) असत्य
(v) सत्य	(vi) सत्य	(vii) असत्य	(viii) सत्य
(ix) सत्य	(x) सत्य		

3.8 (क) उत्तर :–

(i) क	(ii) ख	(iii) क	(iv) क
(v) क	(vi) ग	(vii) क	(viii) घ

(ix) घ (x) ख

3.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

- विश्व का इतिहास : 1500 – 1950

  Jain & Mathur

  जैन प्रकाशन मन्दिर

  चौड़ा रास्ता, जयपुर – 302003

  अष्टम संस्करण – 2000

  पुनर्मुदण – 2001

- विश्व का इतिहास :’ डॉ कुमार नलिन

  द्वितीय संस्करण

  MC Graw Hill प्रकाशन

B.A HISTORY PART- IIIrd YEAR SEMESTER-V	
COURSE CODE: HIST 302 LESSON NO. 04	AUTHOR – MOHAN SINGH BALODA
वाणिज्यिक क्रांति (Mercantile Revolution) प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली (Early Colonial System)	

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

4.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

4.2 परिचय (Introduction)

4.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

4.3.1 वाणिज्यिक क्रांति : पृष्ठभूमि (Mercantile Revolution : Background)

4.3.2 वाणिज्यिक क्रांति : उद्भव (Mercantile Revolution : Origin)

4.3.3 वाणिज्यिक क्रांति : प्रभाव/परिणाम (Mercantile Revolution : Impacts/Results)

4.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

4.4.1 प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली : पृष्ठभूमि (Early Colonial System : Background)

4.4.2 प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली : उद्देश्य व प्रक्रिया (Early Colonial System : Motives & Process)

4.4.3 प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली : प्रभाव/परिणाम (Early Colonial System : Consequences)

4.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

4.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

4.7 संकेत–सूचक (Key-words)

4.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

4.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

4.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

4.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के पढ़नोपरांत विद्यार्थी योग्य होंगे :–

- वाणिज्यिक क्रांति की पृष्ठभूमि को जान सकेंगे।
- वाणिज्यिक क्रांति की उत्पति से संबंधित महत्त्वपूर्ण कारकों की विवेचना कर सकेंगे।
- वाणिज्यिक क्रांति के परिणामों को समझ कर इसका निष्कर्ष निकाल सकेंगे।
- प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली के उद्देश्य व प्रक्रिया को समझते हुए इस पर आपस में चर्चा कर सकेंग।
- प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली के प्रभावों की व्याख्या कर सकेंगे।

4.2 परिचय (Introduction)

16 वीं सदी का यूरोप पुनर्जागरण व धर्म–सुधार आंदोलन के कारण एक नवीन व स्वतंत्र चेतना की ओर बढ़ रहा था। इस समय का यूरोप आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक दृष्टि से सर्वथा एक भिन्न परिवर्तन की दिशा में बढ़ रहा था। पुनर्जागरणकालीन नवीन चेतना का संचार व धर्म–सुधार आंदोलन द्वारा चर्च के चंगुल से मानव–मुक्ति जैसे कदमों ने यूरोपीय लोगों को साहसपूर्ण कदम उठाने के लिए प्रेरित किया। इसके फलस्वरूप एक ओर जहाँ भौगोलिक खोजों की प्रक्रिया में तीव्रता आयी वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय राजनीति का उदय हुआ। यूरोपीय लोगों में नए देशों को खोजने उनके साथ व्यापार करके मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति बढ़ने लगी। इन प्रवृत्तियों के फलस्वरूप भौगोलिक खोजों के कारण सामुद्रिक व्यापार तेजी से बढ़ने लगा और व्यापार व वाणिज्य में तीव्रता आयी। फलतः' 12 वीं – 13 वीं सदी से यूरोपीय सामंतवादी उत्पादन प्रणाली में अब परिवर्तित होनी शुरू हो गई। ये परिवर्तन 14 वीं व 15 वीं शताब्दी में और अधिक मजबूत होते गए। वाणिज्य के कारण होने वाले इन परिवर्तनों को आंदोलनों को वाणिज्यिक क्रांति का नाम दिया गया। इस क्रांति ने यूरोप की मध्यकालीन सामंतीय प्रणाली को पूरी तरह से बदल दिया। नये महादेशों और नये व्यापारिक मार्गों की खोज ने यूरोपीय व्यापार को विश्वव्यापी व्यापार में परिवर्तित कर दिया। इस प्रक्रिया से न केवल बुलियनवाद को बढ़ावा मिला बल्कि नवीन नगरीय केन्द्र भी अस्तित्व में आने लगे। इस प्रकार इस क्रांति ने यूरोप में एक नवीन वर्ग को जन्म दिया जो परंपरागत मान्यताओं, विचारों व मूल्यों से परे नवीन विचारों, मूल्यों तथा मान्यताओं को महत्त्व देता था। अतः विश्व के आर्थिक इतिहास में

उस अवधि को वाणिज्यिक क्रांति की संज्ञा दी जाती है जिसमें आर्थिक प्रसार, उपनिवेशवाद व वाणिज्यवाद का जोर रहा। यह अवधि लगभग 16 वीं सदी से आरंभ होकर 18 वीं सदी के आरंभ तक मानी जाती है। इसके कारण व्यापार के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। इसने आर्थिक परिवर्तन के साथ–साथ मानव–जीवन के अन्य क्षेत्रों यथा – सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, राजनीतिक आदि को भी प्रभावित किया।

किसी देश द्वारा दूसरे देश के आर्थिक संसाधनों का अपने देश के हित में दोहन करने की प्रक्रिया को उपनिवेशवाद (Colonialism) की संज्ञा दी जाती है। यह प्रक्रिया वाणिज्यिक क्रांति के साथ ही यूरोपीय देशों में आयी। वाणिज्यिक क्रांति के साथ–साथ इस प्रक्रिया का आरंभ 16 वीं सदी से ही माना जाता है। यूरोपीय देशों का दुनिया के अन्य देशों के साथ व्यापार करके मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति ने उपनिवेशवाद को बढ़ावा दिया।

इस प्रकार प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली की परिघटना वाणिज्यिक क्रांति के दौर में यूरोपीय देशों द्वारा अपनाई गई वाणिज्यवादी नीति का प्रतिफल था। इस क्रम में सर्वप्रथम अमेरिकी महादेश का और फिर एशिया और अफ्रीका का भी उपनिवेशीकरण हुआ। यूरोपीय देशों में साम्राज्यवादी प्रवृत्ति ने उपनिवेश की स्थापना को लेकर होड़ मच गई। इस आपाधापी में 16 वीं शताब्दी में एशिया, अफ्रीका तथा अमेरिकी महाद्वीप में साम्राज्यवादी शक्तियों ने उपनिवेश स्थापित करने आरंभ किए। विश्व–इतिहास का सम्यक् अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि उपनिवेशवाद का काल पन्द्रहवीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी तक रहा। परंतु यह सच है कि 15 वीं – 16 वीं सदी में वाणिज्यिक क्रांति को सफल बनाने में भौगोलिक खोजों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन भौगोलिक खोजों के फलस्वरूप उपनिवेशवाद का आरंभ हुआ। जिसके केंद्र में ट्रिपल 'जी' (G) की नीति अर्थात् Gold – Glory- God कार्य कर रहा था। समस्त यूरोप में इस दौरान अधिक स्वर्ण, अधिक समृद्धि, अधिक कीर्ति का नारा बुलंद हुआ। इस प्रकार राजनीतिक प्रभुत्व की स्थापना करके अन्य देशों से धन का निष्कासन करके अपने मातृदेश में औद्योगिक क्रांति लाना व समृद्धि लाना यूरोपीय देशों का ध्येय बन गया।

4.3. अध्याय के मुख्य बिंदु (Main body of the Text)

4.3.1 वाणिज्यिक क्रांति : पृष्ठभूमि (Mercantile Revolution : Background)

पुनर्जागरण एवं धर्म–सुधार आंदोलन ने यूरोप में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक जागरण का युग ला दिया था। इस चेतना के फलस्वरूप न केवल यूरोप बल्कि विश्व भर में मानवीय चेतना व गरिमा का महत्त्व बढ़ा और आधुनिक युग की शुरूआत हुई। यह सब कुछ यूरोप के नेतृत्व में हुआ था। इस जागरण ने यूरोप विशेषतः इंग्लैंड में कृषि के तौर तरीकों एवं उत्पादन के क्षेत्र में महान परिवर्तन को जन्म दिया। इसके फलस्वरूप बड़ी मात्रा में अतिरिक्त उत्पादन होने लगा। यूरोप का सामंतवाद से पूँजीवाद की ओर संक्रमण होना आरंभ हो

गया। पूँजीवादी व्यवस्था ने व्यक्तिगत लाभ अर्जित करने की प्रवृत्ति को जन्म दिया। इसके फलस्वरूप यूरोपीय देश अपने तैयार माल को बेचने एवं अपने उद्योगों के लिए कच्चा माल प्राप्त करने के लिए अमेरिका, एशिया एवं अफ्रीका के विशाल भू–भागों की ओर आकर्षित हुए। इससे भौगोलिक खोजों की प्रक्रिया में तीव्रता आयी। अब यूरोपीय लोग छोटी–छोटी यात्राओं की जगह लंबी दूरी के सामुद्रिक यात्राओं की ओर प्रेरित हुए। इन यात्राओं ने लाभकारी व्यापार व वाणिज्य को व्यवस्थित रूप देकर लाभ कमाने के लिए राष्ट्रीय राजनीति का उदय हुआ। इस प्रकार पुनर्जागरण, धर्म सुधार आंदोलन, भौगोलिक खोजों व राष्ट्रीय राज्यों के उदय ने यूरोपीय व्यापार वाणिज्य को विश्वव्यापी बनाकर एक नवीन क्रांति को जन्म दिया जो इतिहास में वाणिज्यिक क्रांति के नाम से प्रसिद्ध है। अतः वाणिज्यिक क्रांति से हमारा अभिप्राय उस आमूल–चूल परिवर्तन से है जिसने यूरोपीय अर्थव्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। यूरोपीय समाज में 11 वीं – 13 वीं सदी से सामंतवादी उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन का दौर शुरू हो गया। ये परिवर्तन 14वीं और 15वीं शताब्दी में और अधिक मजबूत होते गए। इन सदियों में होने वाले परिवर्तनों ने यूरोप के जन–जीवन को पूरी तरह से बदल कर रख दिया। भौगोलिक खोजों के कारण सामुद्रिक व्यापार में वृद्धि हुई तथा व्यापार और वाणिज्य में तीव्रता आयी। यूरोपीय देशों में स्वर्ण जैसी बहुमूल्य धातुओं अर्थात् बुलियन के संग्रह की प्रवृत्ति बढ़ी। अब विनिमय के रूप में मुद्रा का प्रयोग बढ़ने लगा। आर्थिक गतिविधियाँ भू–मध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर स्थानांतरित हो गयीं। इस दौरान संयुक्त पूँजी उद्यम के विकास के फलस्वरूप व्यापारिक संगठनों का सर्वथा परिवर्तित रूप सामने आया। नगरीकरण की प्रक्रिया का दौर आरंभ हुई, जिससे यूरोप में कई नगर अस्तित्व में आये। इन परिवर्तनों का प्रभाव आर्थिक क्षेत्र के साथ–साथ बौद्धिक, राजनीतिक और सामाजिक विचारधारा में भी देखने को मिलता है। इस प्रकार ये सभी परिवर्तन वाणिज्यिक क्रांति के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। इस क्रांति ने सामंतवादी उत्पादन प्रणाली को पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली में परिवर्तित कर दिया।

4.3.2 वाणिज्यिक क्रांति : उद्भव (Mercantile Revolution : Origin)

यूरोप में 16 वीं सदी में जो वाणिज्यिक क्रांति आयी इसके पीछे किसी एक कारक का नहीं बल्कि इसमें सम्मिलित रूप से अनेक कारकों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इस क्रांति के उद्भव के पीछे रहे महत्त्वपूर्ण कारकों का विवरण निम्न प्रकार हैं –

(1) 15 वीं – 16 वीं सदी के दौरान भूमध्यसागरीय व्यापार पर इटली के नगर राज्यों का बोलबाला था। इस पर उन्होंने अपना कब्जा जमा रखा था। यूरोप के अनेक देश इस व्यापारिक एकाधिकार को तोड़ने के लिए उत्सुक थे। इसके लिए अनेक देश आगे आये। उनकी इस प्रवृत्ति ने स्वाभाविक रूप से उन्हें भौगोलिक खोजों की ओर प्रेरित

किया जिससे सामुद्रिक व्यापार का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस प्रकार यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति लाने में इस कारक की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

(2) भौगोलिक खोजों ने यूरोपीय देशों को अटलांटिक महासागर के महत्त्व से अवगत कराया। उन्हें लाभकारी दूरस्थ व्यापार का पता चला। अतः अब इस महासागर के माध्यम से यूरोपीय देश लंबी लंबी दूरी के व्यापार को फिर से आरंभ किया।

(3) दूरस्थ व्यापार के फलस्वरूप यूरोपीय देशों ने एशिया, अफ्रीका और अमेरीका जैसे महादेशों से उनका व्यापारिक संबंधित स्थापित हो गया। यह व्यापार अत्यधिक लाभकारी व्यापार था। इस कारण यूरोप के देश और अधिक बढ़–चढ़ कर व्यापार करने के लिए प्रेरित हुए। इसके वाणिज्यिक क्रांति को और अधिक बल मिला।

(4) अत्यधिक लाभकारी व्यापार के कारण यूरोप में बहुमूल्य धातुओं अर्थात् बुलियन का आगमन आरंभ हो गया। यूरोपीय देशों में उसे अधिक–से–अधिक प्राप्त करने की होड़ मच गई। अधिक स्वर्ण, आर्थिक समृद्धि, अधिक कीर्ति से प्रभावित होकर संभावित देश के शासकों/सरकारों ने इस व्यापार को खूब प्रोत्साहित किया जिससे वाणिज्यिक क्रांति को और बढ़ावा मिला।

(5) व्यापारिक समृद्धि के फलस्वरूप यूरोपीय देशों में कई उद्योग की स्थापना हुई। इन उद्योगों के लिए आवश्यक कच्चे माल जिनकी यूरोप में कमी थी उसकी प्राप्ति ने भी यूरोपीय देशों को एशिया व अफ्रीका देशों के साथ दूरस्थ व्यापार के लिए प्रेरित किया। इस प्रेरणा से वाणिज्यिक क्रांति को और अधिक बल मिला।

(6) इस प्रकार वास्कोडिगामा और कोलंबस ने जिस सामुद्रिक यात्रा की नवीन प्रवृत्ति का विकास किया वह आगे भी जारी रही और इसके कारण यूरोपीय देश वैसे समृद्ध देशों के संपर्क में आये जहाँ से व्यापार कर वे अधिक लाभ अर्जित कर सकते थे। ऐसे देशों में भारत, चीन, जापान, इंडोनेशिया व अमेरिका आदि प्रमुख देश थे।

उपर्युक्त सभी कारकों का साझा परिणाम एक क्रांति के रूप में सामने आया, जिसे वाणिज्यिक क्रांति के नाम से जानते हैं। इस क्रांति के फलस्वरूप यूरोपीय अर्थव्यवस्था विश्वव्यापी हो गई और इसने पूँजीवाद के उदय का मार्ग भी प्रशस्त कर दिया।

4.3.3 वाणिज्यिक क्रांति : प्रभाव/परिणाम (Mercantile Reolution : Impacts/Results)

यूरोप के इतिहास में 1500 से 1700 तक का समय वाणिज्यिक क्रांति का पूर्ण विकसित युग कहा जाता है। यह क्रांति यूरोपीय इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण क्रांति थी, जिसका पूरी विश्व–अर्थव्यवस्था पर काफी गहरा व व्यापक प्रभाव पड़ा। इसके कारण न सिर्फ उत्पादन–प्रणाली में परिवर्तन आया बल्कि उत्पादन के संगठन को भी इसने

बदल कर रख दिया। इस क्रांति ने उस नवीन यूरोप के उद्‌भव का मार्ग प्रशस्त किया जिसके बल पर यूरोप में पुनर्जागरण, धर्म सुधार आंदोलन, भौगोलिक खोजों, राष्ट्रीय राज्यों का उदय व वाणिज्यवाद जैसी प्रक्रिया का उदय संभव हो पाया। इस वाणिज्यिक क्रांति के प्रभाव/परिणाम का विवरण निम्न प्रकार है :–

(1) इस क्रांति ने इटली के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर दिया। अब भूमध्यसागरीय व्यापार विश्व व्यापार में बदल गया। आर्थिक गतिविधियों भूमध्यसागर से अटलांटिक महासागर की ओर स्थानांतरित हो गई। इसने पश्चिमी यूरोपीय देशों के महत्त्व को बढ़ा दिया।

(2) परंपरागत व्यापारिक केंद्रों के स्थान पर नवीन केंद्रों का विकास इस क्रांति का एक महत्त्वपूर्ण परिणाम हुआ। इसके उदाहरण के रूप में इटली के कई प्रमुख नगर – वेनिस, पीसा आदि पतन की ओर अग्रसर हो गये वहीं दूसरी ओर लिस्बन, लिवरपूल, एमस्टर्डम आदि नगर वाणिज्यिक गतिविधियों के बड़े केन्द्रों के रूप में उभर कर सामने आये।

(3) वाणिज्यिक क्रांति के फलस्वरूप नये व्यापारिक संबंधों का जन्म हुआ। इसने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में व्यापारिक सामग्रियों की मात्रा ओर उसकी विविधता में खूब वृद्धि कर दी। अब अनेक नयी वस्तुएँ व्यापार में जुड़ गई। उदारणार्थ – अमेरिका से आलू, तम्बाकू और मक्का, वेस्टइंडीज से शराब, दक्षिणी अमेरिका से नारियल, कुनैन व चॉकलेट, अफ्रीका से हाथी दांत, शुतुरमुर्ग के पंख और दास तथा एशिया से गरम मसाले व कपड़े यूरोपीय व्यापार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे।

(4) वाणिज्यिक क्रांति ने यूरोपीय देशों में स्वर्ण जैसी बहुमूल्य धातु के संग्रह को बढ़ावा दिया। अमेरिका से बड़ी मात्रा में सोना तथा मैक्सिको, बोलीविया या पेरू से बड़ी मात्रा में चांदी का प्रवाह यूरोप में होने लगा। इसी प्रकार एशिया व अफ्रीका से भी सोना–चांदी यूरोप में आने लगे। इस प्रकार एकदम–से यूरोप में बुलियन का अत्यधिक संग्रह हो गया, जिसके कारण यूरोपीय मुद्रा स्वर्ण आधारित हो गयी।

(5) वाणिज्यिक क्रांति ने यूरोप में बैंकिंग प्रणाली के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। इस क्रम में फ्लोरेंस स्थित मेडसी कम्पनी ने सर्वप्रथम बैंकिंग व्यवस्था की नींव डाली, जिसकी शाखाएँ सम्पूर्ण इटली में फैली हुई थीं। इटली से आगे यह व्यवस्था 15 वीं सदी तक दक्षिणी जर्मनी व फ्रांस तक फैल गयी थी। बैंकिंग विकास के इस क्रम में उत्तरी यूरोप की सबसे महत्त्वपूर्ण बैंकिंग फर्म आइसबर्ग स्थित फुजर्स थी, जिससे ऋण व मध्यस्थता प्राप्त करने में स्पेन के सम्राट चार्ल्स पंचम व पोप का नाम भी शामिल था। इन निजी फर्मों के बैंकों के बाद यूरोप में सरकारी बैंकों के स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस प्रकार पहला सरकारी बैंक 1668 ई. में Bank of Sweden खुला, परंतु इस श्रृंखला में सबसे महत्त्वपूर्ण बैंक था – 1694 ई. का Bank of England.

(6) वाणिज्यिक क्रांति के फलस्वरूप यूरोप का सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण हो गया। इस प्रणाली में पूँजी ने श्रम पर अपना नियंत्रण स्थापित करना शुरू कर दिया जिसका आगे चलकर यूरोपीय शासन प्रणाली पर निर्णयात्मक प्रभाव पड़ा।

(7) वाणिज्यिक क्रांति ने यूरोप में चार्टर कंपनियों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। इस दौरान व्यापारियों में आपसी सहयोग पर आधारित संयुक्त पूँजी उद्यम (Joint Stock Venture) का विकास हुआ।

इस प्रकार वाणिज्यिक क्रांति के फलस्वरूप क्षेत्र विशेष और एक निश्चित अवधि के लिए व्यापारिक एकाधिकार प्राप्त कंपनियों का विकास होने लगा। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी (1600 ई.), डच ईस्ट इंडिया कंपनी (1602), फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी (1664 ई.) इसी प्रकार की चार्टर कंपनियाँ थीं।

4.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

4.4.1 प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली : पृष्ठभूमि (Early Colonial System : Background)

पुनर्जागरण, धर्म–सुधार आंदोलन व वाणिज्यिक क्रांति के फलस्वरूप 16 वीं सदी में यूरोप में चिंतन व साहस की भावना से युक्त जन–जागरण के युगा का सूत्रपात हुआ। इसने यूरोप का राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक जागरण का मार्ग प्रशस्त किया। इस जागरण से यूरोप के नेतृत्व में विश्व भर में आधुनिक युग की शुरूआत हुई। इसने यूरोप को कृषि आधारित सामंतवादी व्यवस्था से बाहर निकालकर पूँजीवादी व्यवस्था में परिवर्तित कर दिया। जिज्ञासा की जिस भावना ने यूरोप में पुनर्जागरण काल के व्यक्तियों को साहित्य, विज्ञान, कला व धर्म के क्षेत्रों में नए–नए विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया था, उसी जिज्ञासा की भावना ने अन्य व्यक्तियों को नए देश खोजने के लिए प्रोत्साहित किया। इसी भावना के कारण 16 वीं सदी में साहसपूर्ण सामुद्रिक यात्राओं का दौर शुरू हुआ, जिसे वाणिज्यिक क्रांति के नाम से जानते है। इन साहसी यात्राओं का प्रमुख उद्देश्य था – पूर्व के देशों के साथ व्यापार करके लाभ कमाना। इस प्रकार यूरोप का व्यापार अब विश्वव्यापी हो गया। इसी दौरान यूरोप में उग्र राष्ट्रवाद की भावना भी बलवती हो गयी थी। इस भावना ने अपने मातृदेश में उद्योग–धंधों के विकास के लिए कच्चा माल प्राप्त करने और बने–बनाये माल को बेचने के लिए उनका ध्यान आकर्षित किया। अपनी इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यूरोपीय देश इन भागों पर अपना आर्थिक एवं राजनीतिक आधिपतय स्थापित करने का प्रयास करने लगे। 16 वीं सदी में यूरोपीय देशों के बीच उपनिवेश की स्थापना व अपने–अपने साम्राज्य की स्थापनाको लेकर हौड़ मच गयी।

इसी प्रक्रिया को प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली के नाम से जाना जाता है। उपनिवेशों की स्थापना के फलस्वरूप यूरोपीय देशों में स्वर्ण जैसी बहुमूल्य धातुओं का आगमन शुरू हो गया। अतः समस्त यूरोप में अधिक स्वर्ण, अधिक समृद्धि, अधिक कीर्ति की प्रवृत्ति ने प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली को और भी अधिक बढ़ावा दिया।

कच्चे माल की प्राप्ति, तैयार माल की खपत, समृद्धि की लालसा जैसी भावना ने यूरोपीय देशों को उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद की नीतियों पर आगे बढ़ने पर प्रेरित किया। इन्हीं नीतियों ने 16 वीं सदी में प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली को बढ़ावा दिया। यूरोपीय देशों में अतिरिक्त पूँजी, औद्योगिक क्रांति, उग्र राष्ट्रवाद की भावना, यातायात व संचार के साधनों का विकास, ईसाई धर्म प्रचारकों का समर्थन, एशिया व अफ्रीका में अनुकूल परिस्थितियाँ जैसी सहायक दशाओं ने प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार 16 वीं सदी के प्रारंभ में ही यूरोप के देशों ने एशिया, अफ्रीका व अमेरिका में अपने उपनिवेश स्थापित करने प्रारंभ कर दिये थे। इन यूरोपीय देशों में उपनिवेश स्थापना के मामले में इंग्लैंड सबसे आगे रहा जहाँ सबसे पहले कृषि व औद्योगिक क्रांति हुई थी। इंग्लैंड के अलावा फ्रांस, पूर्तगाल, हॉलैंड, जर्मनी तथा रूस भी प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली की प्रक्रिया में शामिल रहे। इंग्लैंड ने दुनिया भर में अपने उपनिवेश स्थापित किये, किंतु इनमें सर्वप्रमुख उसका उपनिवेश भारत ही रहा। लगभग 200 वर्षों से अधिक समय तक भारत इंग्लैंड का उपनिवेश रहा। भारत की संपदा व बाजार की ताकत के बल पर ही इंग्लैंड ने अपने यहाँ उद्योग–धंधों का विकास किया था। इसलिए दादाभाई नौरोजी ने भारत से इंग्लैंड को धन निष्कासन को अनिष्टों का अनिष्ट (Evils of Evil) की संज्ञा दी थी।

4.4.2 प्रारंभिक औपनिवेश प्रणाली : उद्देश्य व प्रक्रिया (Early Colonial System : Motives and Process)

भौगोलिक खोजों ने वाणिज्यिक क्रांति को सफल रूप देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन भौगोलिक खोजों ने यूरोपीय व्यापार को सामुद्रिक यात्रा के द्वारा विश्वव्यापी बना दिया। नये देशों की खोज ने यूरोपीय देशों में स्वर्ण जैसी बहुमूल्य धातु के संग्रह की प्रतिस्पर्धा आरंभ की। इसके साथ ही उपनिवेश की स्थापना का दौर आरंभ हुआ। स्पेन, पुर्तगाल, डच, फ्रांस एवं इंग्लैंड आदि यूरोपीय देशों ने सुदूर देशों में उपनिवेश स्थापित किए। उपनिवेश स्थापना की इस प्रक्रिया का मुख्य आधार वाणिज्यिक क्रांति था। इस प्रकार की नीति का अनुसरण यूरोप में सामान्यतः 1500 से 1750 ई. के बीच किया गया। अतः व्यापार व वाणिज्य की प्रक्रिया ने इस दौरान प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली को जन्म दिया। आगे चलकर उन्नीसवीं शताब्दी में इस औपनिवेशिक प्रणाली ने नया रूप धारण कर लिया जिसे साम्राज्यवाद के नाम से जाना जाता है।

प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली की प्रक्रिया में धर्म प्रचार की प्रक्रिया ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। पादरी लोगों को नए उपनिवेश की स्थापना से धर्म प्रचार का नया क्षेत्र मिल जाता था। इस प्रकार ईसाई पादरियों के लिए साम्राज्य विस्तार धर्म प्रसार का एक अच्छा साधन बन जाता था। यूरोपीय लोगों ने एशिया व अफ्रीका के लोगों के मन में यह बैठा दिया था कि यूरोपीय साम्राज्य उनके लिए वरदान हैं। वे उन्हें सभ्य और श्रेष्ठ बनाएँगे। अतः प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली की यह भी एक प्रक्रिया थी जब अंग्रेजों ने अपने उपनिवेश के संभ्रांत लोगों को शिक्षा व विकास के नाम पर अपने वश में कर लिया। उन्होंने यातायात व संचार के साधनों के विकास का लोभ देकर आसानी से लोगों का विश्वास जीत लिया जिससे उपनिवेश स्थापना की प्रक्रिया में आसानी हुई।

इस प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली के विकसित होने के उद्देश्य या कारणों का विवरण निम्न प्रकार है –

(1) यूरोप के महत्वाकांक्षाी शासकों के द्वारा स्वर्ण जैसी कीमती धातुओं के संग्रह की प्रवृत्ति वाणिज्यवाद की नीति के तहत बढ़ी। उनकी इस स्पर्धा, हौड़ ने समस्त यूरोप में अधिक स्वर्ण, अधिक समृद्धि अधिक कीर्ति का नारा बुलंद कर दिया। अतः संग्रह की इस नीति के उद्देश्य से यूरोपीय देश उपनिवेश की स्थापना में लग गये।

(2) वाणिज्यिक क्रांति ने यूरोप में व्यापारिक समृद्धि लाई। व्यापारिक समृद्धि के फलस्वरूप यूरोपीय देशों में कई उद्योगों की स्थापना हुई। इन उद्योगों के लिए आवश्यक कच्चे माल की कमी थी। अतः कच्चे माल निरंतर प्राप्त होते रहे इस उद्देश्य से यूरोपीय देश उपनिवेशों की स्थापना के लिए प्रेरित हुए। अतः कच्चे माल की प्राप्ति की आवश्यकता ने प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली को बढ़ावा दिया।

(3) यूरोपीय देशों में उद्योगों की स्थापना एवं कच्चे माल की उपलब्धता से औद्योगिक उत्पादन में तेजी आई। अब निर्मित वस्तुओं को बेचने के लिए उन्हें बाजार की आवश्यकता महसूस हुई। अतः निर्मित माल की खपत के उद्देश्य ने भी यूरोपीय देशों को उपनिवेश की स्थापना के लिए प्रेरित किया। इससे प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली की प्रक्रिया को बल मिला।

(4) भौगोलिक खोजों के फलस्वरूप प्रारंभिक उपनिवेश पुर्तगाल एवं स्पेन द्वारा स्थापित किये गये थ। इससे इनको खूब लाभ की प्राप्ति हुई। अतः इनकी समृद्धि को देखते हुए लाभ कमाने की लालसा में अन्य यूरोपीय देश भी उपनिवेश स्थापना की हौड़ में शामिल हो गये।

(5) वाणिज्यिक क्रांति के फलस्वरूप यूरोपीय अर्थव्यवस्था का प्रसार होने लगा। इसने यूरोप में नव–धनाढ्य वर्ग को जन्म दिया और इसने विलासिता संबंधी वस्तुओं की माँग बढ़ा दी। इस कारण से भी प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली को बल मिला।

(6) औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप यूरोप में बड़े–बड़े पूँजीपतियों का एक वर्ग तैयार हो गया। इनके पास खूब अतिरिक्त पूँजी बढ़ने लगे। इस अतिरिक्त पूँजी को निवेश करने की आवश्यकता ने इन्हें उपनिवेश की स्थापना के लिए प्रेरित किया।

4.4.3 प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली : प्रभाव / परिणाम (Early Colonial System : Consequences)

वाणिज्यिक क्रांति के फलस्वरूप भौगोलिक खोजों का एक दौर चला जिसने यूरोपीय व्यापार को विश्वव्यापी बना दिया। इस लाभकारी व्यापार में समृद्धि की लालसा में यूरोपीय देश उपनिवेश की स्थापना के हौड़ में लग गये। प्रारंभिक उपनिवेश पुर्तगाल एवं स्पेन द्वारा स्थापित किये गये थे। इसके बाद इस प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली की प्रक्रिया में इंग्लैंड, फ्रांस, बेल्जियम, हॉलैंड, जर्मनी, इटली आदि यूरोपीय देश भी शामिल हो गये। इसके फलस्वरूप जो उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद की नीति इन देशों के द्वारा अपनायी गयी इसका एशिया, अफ्रीका व यूरोप सहित अनेक देशों पर दूरगामी प्रभाव पड़े। इनका विवरण निम्न प्रकार है –

1. प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रक्रिया ने यूरोप में ओद्योगिक क्रांति को जन्म दिया। इस औद्योगिक क्रांति की शुरूआत इंग्लैंड में हुई थी, जो आगे चलकर समस्त यूरोप में फैल गया। अब ये सभी अपने–अपने देशों के कारखानों में बहुत अधिक माल बनाने लगे। निर्मित माल को अपने उपनिवेशों में बेचकर अत्यधिक लाभ कमाने लगे। इन्हीं उपनिवेशों से ये सस्ते दामों पर कच्चा माल खरीदने लगे जिससे सभी यूरोपीय देश व्यापार के कारण अधिक धनवान हो गए। दूसरी ओर यूरोपीय देशों में अधिक से अधिक उपनिवेश प्राप्त करने की होड़ लग गई। अधिक उपनिवेश प्राप्त करने की इच्छा ने इन देशों को अपनी–अपनी सेनाओं को अधिक शक्तिशाली बनाने की प्रक्रिया में लगा दिया। इनका आपसी द्वेष बढ़ना स्वाभाविक था। ये गुटों में बंटने लगे। इनकी आपसी शत्रुता समय के साथ इस हद तक बढ़ी कि इसने प्रथम विश्व युद्ध (1914–18) जैसे विनाशकारी परिणाम को जन्म दिया।
2. यूरोपीय देशों ने जिन देशों में अपने उपनिवेश स्थापित किये वहाँ इनका विनाशकारी प्रभाव के साथ–साथ कुछ सकारात्मक प्रभाव भी पड़ा। इन्होंने अपने अधीनस्थ उपनिवेशों में पश्चिमी शिक्षा लागू की। इससे यहाँ के लोगों को दूसरे देशों की राजनैतिक प्रणालियों के अध्ययन का अवसर मिला। फलतः इन देशों में राष्ट्री जन–जागरण के भावना का विकास हुआ। यूरोपीय देशों के पूँजीपतियों के द्वारा उपनिवेशों में नए उद्योग स्थापित किए गए जिससे इन लोगों को रोजगार प्रापत करने के नए अवसर प्राप्त हुए। अपने–अपने उपनिवेश में व्यापार को बढ़ाने के लिए यातायात व संचार के साधनों का भी विकास किया गया। सड़कें बनवाई तथा रेल की पटरियाँ बिछवाई जिससे इन उपनिवेशों में यातायात के साधनों का बहुत विकास हुआ।

3. यूरोपीय देशों की उपनिवेश स्थापना का मुख्य उद्देश्य व्यापार को खूब लाभ कमाने की लालसा व अपने देश की शक्ति को बढ़ाने पर आधारित था। इसके लिए इन्होंने अपने स्वयं के देशों के उद्योगों के लिए सस्ते दामों में कच्चा माल खरीदना आरंभ कद दिया और अपने देशों में निर्मिम माल अधिक दामों पर बेचना आरंभ कर दिया। इसके साथ ही उन्होंने उपनिवेशों के निजी उद्योगों में बने हुए माल को बेचने के लिए अनेक प्रतिबंध लगा दिए। इससे उपनिवेशों के लघु उद्योगों व हस्तशिल्प उद्योगों को धक्का लगा और वे धीरे–धीरे नष्ट होने के कगार पर चले गये। भारत में सदियों से चले आ रहे हैं – हस्तशिल्प उद्योगों पर इसका विनाशकारी प्रभाव पड़ा। लाखों लोग रोजगार से वंचित हो गये।

4. यद्यपि भारत पर अंग्रेजों के आधिपत्य के कई सकारात्मक प्रभाव पड़े। उन्होंने भारत में यातायात एवं संचार के साधनों के विकास के कार्य किए। आधुनिक न्याय प्रणाली, आधुनिक शिक्षा प्रणाली, सामाजिक कुप्रथाओं को दूर करने जैसे उनके प्रयासों के माध्यम से भारतीयों में राष्ट्रीय जागृति आयी। परंतु इन्होंने जो कुछ भी किया यह सब अपनी स्वार्थ–पूर्ति के लिए किया। भारत को इसकी बहुत बड़ी कीमत तब भी और अब तक चुकाने पड़ रहे हैं। भारत अभी तक बाँटो और राज करो के दुष्प्रभाव से बाहर नहीं निकल पा रहा है। शासन–प्रशासन में अभी भी अंग्रेजीयत की मानसिकता किसी–न–किसी रूप में कायम है। जिसके अंतर्गत मुट्ठी भर लोग एक बहुत बड़ी आबादी को अपने से हीन मानते हैं।

5. प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली ने भारत की ग्रामीण आत्मनिर्भरता को नष्ट कर दिया। इसने गाँवों की स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था को छिन्न–भिन्न करके रख दिया। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व गाँवों में किसानों के अतिरिक्त अन्य उद्योग–धंधों वाले लोग भी रहते थे। ये सभी लोग इकट्ठे मिलकर ग्रामीण आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते थे। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से गाँव स्वावलंबी थे। राजस्व अथवा लगान की अदायगी फसलों के रूप से की जाती थी। लेकिन उपनिवेश की स्थापना के बाद अब अंग्रेजों ने लगान संबंधी नई नीतियाँ लागू करके किसानों को फसल बेचने के लिए विवश कर दिया। इन्होंने खेती के तौर–तरीके भी बदल दिये। अंग्रेजों ने किसानों का शोषण करना शुरू कर दिया। कई बार किसानों को भूमि गिरवी रखने अथवा बेचने भी पड़ जाते थे। किसानों को भूमि से बेदखल भी कर दिया जाता था। गाँवों में बाहर से बहुत सी निर्मित वस्तुएँ पहुँचने लगी जिससे स्थानीय दस्तकारों के उद्योग नष्ट होने लगे। इस प्रकार आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बहुत बड़ा धक्का लगा।

6. प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली का भयंकर दुष्परिणाम था – भारतीय धन अथवा संपदा का निष्कासन। भारत से संपत्ति का एक बहुत बड़ा भाग निरंतर इंग्लैंड जाता रहा जिसके बदले में भारत को कोई लाभ प्राप्ति नहीं होता था। इसका खुलासा सबसे पहले दादाभाई नौरोजी ने धन के निष्कासन से संबंधित अपनी किताब 'पावर्टी एंड

अन–ब्रिटिश रूल इन इंडिया' (Poverty and Un-British Rule in India) में किया। एक अनुमान के अनुसार केवल 1758 से 1765 ई. तक लगभग 60 लाख पौंड की संपदा इंग्लैंड भेजी गई। कई तरीकों से भारतीय धन इंग्लैंड जाती रही और भारत में धन–संपति का निरंतर अभाव होता रहा और समय बीतने के साथ भारत जो 'सोने की चिड़िया' कहलाता था, निर्धन देश में रूपांतरित हो गया।

7. अंग्रेजों ने भारत में प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली की प्रक्रिया के दौरान अंग्रेजी भाषा की शिक्षा प्राप्त क्लर्कों जो थोड़े वेतन पर कार्य कर सकें की प्राप्ति के लिए 1835 ई. में पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली लागू की। अतः इससे स्पष्ट है कि अंग्रेजों की आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य भारतीयों का मानसिक व नैतिक विकास करना नहीं था। यद्यपि कुछ उच्च एवं मध्य वर्गीय भारतीयों ने पश्चिमी शिक्षा प्राप्त करके भारत के ब्रिटिश शासन के विरूद्ध आवाज उठाई, लेकिन पश्चिमी शिक्षा ने भारत की सभ्यता व संस्कृति को गहरा आघात पहुँचाया। इस आघात की भरपाई हम अभी तक नहीं कर पा ररहे हैं।

8. प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली का एक घातक दुष्परिणाम बड़ी संख्या में ईसाई धर्म प्रचारकों का भारत में आना भी था। इन्हें ब्रिटिश भारतीय सरकार का पूर्ण सहयोग प्राप्त था। हम आज भी इस धर्मातरण के खतरों का सामना कर रहे हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली की प्रक्रिया के आर्थिक शोषण का प्रभाव तीसरा दुनिया के देश गरीबों व भूखमरी के रूप में अभी भी झेल रहे हैं। इस प्रक्रिया ने भारत जैसे समृद्ध राष्ट्र की जड़ों को भी खोखला कर दिया तथा आपसी फूट व तनाव के बीज बोकर इस विशाल राज्य को दो भागों में विभाजित कर दिया।

4.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress)

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)

(i) यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति .... सदी में आयी थी।

(ii) वाणिज्यिक क्रांति से पूर्व भूमध्यसागरीय व्यापार पर .... का कब्जा था।

(iii) किसी शक्तिशाली देश द्वारा दूसरे निर्बल और गरीब देशों को अपने अधीन लेकर उनसे आर्थिक लाभ उठाने की प्रवृत्ति.................. कहलाती है।

(iv) प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली का मुख्य आधार .... था।

(v) ट्रिपल 'जी' नीति (Gold-Glory-God) का संबंध ....से है।

(vi) वाणिज्यिक क्रांति के कारण आर्थिक गतिविधियां भू–मध्यसागर से .... की ओर स्थानांतरित हो गयी।

(vii) यूरोप के................. देश में सर्वप्रथम प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली की प्रक्रिया की शुरूआत की थी।

(viii) उपनिवेशवाद की नीति का अनुसरण यूरोप में सामान्यतः .... से .... ई. के बीच किया गया।

(ix) 1498 ई. में पुर्तगाली नाविक .... भारत के पश्चिमी तट पर स्थित कालीकट के स्थान पर पहुँचा और यूरोप से भारत आने के लिए नए समुद्री मार्ग का पता लगाया।

(x) अंग्रेजों द्वारा भारत से इंग्लैंड को धन–निष्कासन सिद्धांत का खुलासा .... ने किया था।

(ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False based Questions)

(i) 16वीं सदी के प्रारंभ में यूरोप के देशों में अमेरिका ने अपने उपनिवेश स्थापित करने आरंभ कर दिए थे। ( )

(ii) वाणिज्यिक क्रांति के फलस्वरूप आर्थिक परिवर्तनों के साथ–साथ बौद्धिक, राजनीतिक और सामाजिक विचारधारा में भी परिवर्तन आया जो कालांतर में यूरोपीय संस्कृति का हिस्सा बन गया। ( )

(iii) वाणिज्यिक क्रांति से पूर्व भूमध्यसागरीय व्यापार पर इंग्लैंउ का एकाधिकार था। ( )

(iv) यूरोपीय शक्तियों में सबसे बड़ी साम्राज्यवादी शक्ति फ्रांस थी जिसने एशिया के अधिकतर भागों पर अपना अधिकार स्थापित किया। ( )

(v) यूरोपीय देशों ने कच्चे माल की प्राप्ति व निर्मित माल की खपत के लिए प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली की प्रक्रिया की होड़ में शामिल हुए। ( )

(vi) प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली ने भारत में धर्मोतरण की समस्या को जन्म दिया जिसका दुष्परिणाम आज भी देखा जा रहा है। ( )

(vii) वाणिज्यिक क्रांति ने सामंतवादी उत्पादन प्रणाली को पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली में परिवर्तित कर दिया। ( )

(viii) पुनर्जागरण व धर्मसुधार आंदोलन के कारण यूरोप में बुलियन का संग्रह होने लगा। अमेरिका से बड़ी मात्रा में सोना तथा मैक्सिको से बड़ी मात्रा में चांदी यूरोप में आने लगी। ( )

(ix) यूरोप के इतिहास में 1500 से 1750 तक का समय 'वाणिज्यिक क्रांति' का पूर्ण विकसित युग कहा जाता है। ( )

(x) यूरोप में बैंकिग प्रणाली का विकास व चार्टर कंपनियों का उदय वाणिज्यिक क्रांति का परिणाम था। (   )

4.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary)

- सोलहवीं सदी में पुनर्जागरण एवं धर्मसुधार आंदोलन ने यूरोप में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक जागरण का सूत्रपात किया।
- इस जागरण के परिणामस्वरूप यूरोप के नेतृत्व में विश्व भर में आधुनिक युग की शुरूआत हुई।
- यूरोप के इतिहास में 1500 से 1700 तक का समय वाणिज्यिक क्रांति का पूर्ण विकसित युग कहा जाता है।
- वाणिज्यिक क्रांति यूरोपीय इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण क्रांति थी, जिसका पूरी विश्व अर्थव्यवस्था पर काफी गहरा व व्यापक प्रभाव पड़ा। इस क्रांति के कारण न सिर्फ उत्पादन की प्रणाली में परिवर्तन आया बल्कि उत्पादन के संगठन में भी परिवर्तन आया। इस क्रांति ने उस नये यूरोप की नींव रखी जिसकी बदौलत यूरोप में पुनर्जागरण धर्म सुधार आंदोलन, भौगोलिक खोजों, राष्ट्रीय राज्यों का उदय व वाणिज्यवाद जैसी प्रक्रिया का उदय संभव हो पाया।
- वाणिज्यिक क्रांति के फलस्वरूप हुए परिवर्तन :–
    - भौगोलिक खोजों के कारण सामुद्रिक व्यापार में वृद्धि हुई।
    - यूरोप में बुलियन का आगमन होने लगा।
    - यूरोप में नगरीकरण की प्रक्रिया आरंभ हुई।
    - आर्थिक गतिविधि का केंद्र भू–मध्यसागर से अंटलांटिक महासागर की ओर स्थानांतरित हो गयीं।
    - संयुक्त पूँजी उद्यम का विकास हुआ।
    - यूरोप में बैंकिंग प्रणाली का विकास हुआ।
    - यूरोप में चार्टर कंपनियों का उदय हुआ।
    - अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में व्यापारिक सामग्रियों की मात्रा और विविधता में अप्रत्याशित वृद्धि हुई।
- वाणिज्यिक क्रांति के दौरान फ्लोरेंस स्थित भेडसी कंपनी ने बैंकिंग व्यवस्था की नींव डाली, जिसकी शाखाएँ संपूर्ण इटली में फैली हुई थी।
- बैंकिंग विकास के क्रम में 1668 ई. का Bank of Sweden प्रथम सरकारी बैंक था।
- सरकारी बैंकों की स्थापना के क्रम में सबसे महत्त्वपूर्ण बैंक था – Bank of England (1694)

- वाणिज्यिक क्रांति के कारण सामंतवादी मैनर प्रणाली और गिल्ड प्रणाली के स्थान पर उत्पादन की एक नयी प्रणाली का विकास हुआ। उत्पादन की यह प्रणाली एक संक्रमणकालीन प्रणाली थी जो आगे चलकर पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली में रूपांतरित हो गई।
- वाणिज्यिक क्रांति ने व्यापार के परंपरागत केंद्रों के स्थान पर नये केंद्रों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।
- प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली की प्रक्रिया वाणिज्यिक क्रांति के दौर में यूरोपीय देशों द्वारा अपनाई गई वाणिज्यिवादी नीति का परिणाम था।
- इस प्रक्रिया का आरंभ प्रायः 16वीं सदी से माना जाता है।
- औपनिवेशिकरण की इस प्रक्रिया में सर्वप्रथम अमेरिकी महादेश का और फिर एशिया और अफ्रीका का भी औपनिवेशीकरण हुआ।
- प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली के दौरान 16 वीं सदी में यूरोप द्वारा उपनिवेश की स्थापना में जो नीति अपनाई गई उसे उपनिवेशवाद के नाम से जाना जाता है तथा कालांतर में यही उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद की नीति का रूप ले लिया।
- जब एक देश किसी दूसरे देश के आर्थिक संसाधनों का दोहन अपने मातृदेश के हित में करता है उस नीति को उपनिवेशवाद की संज्ञा दी गयी थी।
- जबकि साम्राज्यवाद से तात्पर्य है – किसी देश द्वारा किसी दूसरे देश या बहुत सारे देशों के आर्थिक संसाधनों के दोहन के साथ–साथ उन देशों पर राजनीतिक नियंत्रण भी स्थापित करने का प्रयास करना।
- एशिया, अफ्रीका तथा अमेरिकी महाद्वीप पर साम्राज्यवादी नियंत्रण स्थापित करने तथा उनको यूरोपीय बनाने का पहला चरण 16वीं सदी में आरंभ हुआ था।
- उपनिवेश की स्थापना का आरंभ पुर्तगाल और स्पेन द्वारा किया गया।
- यूरोपीय शक्तियों में सबसे बड़ी साम्राज्यवादी शक्ति इंग्लैंड थीं जिसने एशिया के अधिकतर भागों पर अपना अधिकार स्थापित किया।
- 1498 ई. में पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा भारत के पश्चिमी तट पर स्थित कालीकट के स्थान पर पहुँचा ओर यूरोप से भारत आने के लिए नए समुद्री मार्ग का पता लगाया।
- इस प्रकार स्पेन, पुर्तगाल, डच, फ्रांस, इंग्लैंड आदि यूरोपीय देशों ने सुदूर देशों में उपनिवेश स्थापित किए।
- उपनिवेशों की स्थापना के कारण
  - अपने–अपने उपनिवेशों से स्वर्ण जैसे बहुमूल्य धातु के संग्रह की प्रतिस्पर्धा का होना।

- अपने–अपने मातृदेश में औद्योगिक विकास के लिए कच्चे माल की प्राप्ति।
- निर्मित माल की खपत के लिए बाजार की उपलब्धता।
- व्यापार से प्राप्त आशातीत समृद्धि को देखते हुए उपनिवेश स्थापित करने की ओर अग्रसर होना।

- प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली की प्रक्रिया के दौरान अधिक शक्तिशाली देशों ने साम्राज्यवाद को इस रूप से प्रस्तुत किया जैसे कि वह आवश्यक और स्वाभाविक घटना हो।
- इस प्रणाली के विकास में यूरोपीय देशों को औद्योगिक क्रांति के कारण उत्पन्न माँगों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- यातायात और संचार के साधनों ने इस प्रक्रिया को और आसान बना दिया।
- यूरोपीय देशों में राष्ट्रवाद की भावना ने भी प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली को बल प्रदान किया।
- यूरोपीय देशों में अधिक उपनिवेश प्राप्त करने की इच्छा के कारण इन देशों ने अपनी–अपनी सेनाओं को अधिक शक्तिशाली बनाना आरंभ कर दिया।
- इस भावना के कारण सभी यूरोपीय देशों में आपसी द्वेष बढ़ गया और वे एक दूसरे के विरूद्ध दो गुटों में बंट गए। उनकी शत्रुता कालांतर में इस प्रकार बढ़े कि इसका अत्यंत विनाशकारी रूप प्रथम विश्व युद्ध (1914–18 ई.) के रूप में सामने आया।
- औपनिवेशिक प्रणाली के अंतर्गत दादाभाई नौरोजी ने अंग्रेजों द्वारा भारत की संपदा को लूटकर इंग्लैंड ले जाने को धन के निष्कासन सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत किया।
- सबसे पहले दादाभाई नौरोजी ने धन के निष्कासन से संबंधित अपनी पुस्तक पावर्टी एंड अन–ब्रिटिश रूल इन इंडिया (Poverty and Un-British Rule in India में अपने विचारों को रखा।
- औपनिवेशिक प्रणाली का भारत पर विनाशकारी प्रभाव :–
  - आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का नष्ट होना।
  - प्राचीन काल से चली आ रही हस्तशिल्प उद्योगों का पतन।
  - भारतीय संपदा का निष्कासन।
  - उद्योगों का पतन।
  - पश्चिमी शिक्षा का लागू होना।
  - निर्यात की अपेक्षा आयात पर दबाव।
  - भारतीय कृषि एवं किसानों पर दुष्प्रभाव।

- ईसाई धर्म का प्रचार।

- दादा भाई नौरोजी ने धन–निष्कासन को सभी बुराईयों की बुराई (Evils of Evils) कहा है।
- रमेश चन्द्र दत्त, महादेव गोविंद रानाडे तथा गोपाल कृष्ण गोखले जैसे राष्ट्रवादी विचारकों ने भी धन–निष्कासन के इस प्रक्रिया के ऊपर प्रकाश डाला है।
- रमेशचंद्र दत्त भारत के प्रसिद्ध प्रशासक, आर्थिक इतिहासज्ञ, लेखक तथा रामायण व महाभारत के अनुवादक थे। भारतीय राष्ट्रवाद के पुरोधाओं में से एक रमेशचंद्र दत्त का आर्थिक विचारों के इतिहास में प्रमुख स्थान है।
- रमेशचंद्र दत्त की प्रसिद्ध पुस्तक का नाम है – इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया (Economics History of India)
- जब किसी शक्तिशाली या विकसित देश द्वारा अल्प विकसित देशों में पूँजी का निवेश किया जाता है तो इस प्रक्रिया को उपनिवेशवाद कहते हैं।
- उपनिवेश द्वारा जिस देश का शोषण होता है उसे औपनिवेशिक कहते हैं।

4.7 संकेत–सूचक (Key Words)

- व्यापार – उत्पादों के खरीद–बिक्री से संबंधित।
- वाणिज्य – वाणिज्य के अंतर्गत व्यापार को बढ़ाने, उसको सफल बनाने के समस्त संसाधनों, तकनीकों के प्रबंधन से संबंधित गतिविधियों को शामिल किया जाता है।
- पढ़नोपरांत – पढ़ने के बाद।
- बुलियन (Bullion) – सोना, चांदी जैसे बहुमूल्य धातुओं से संबंधित।
- बुलियनवाद – सोने, चाँदी जैसी बहुमूल्य धातु के संग्रह की प्रवृत्ति।
- भूमध्य सागर (Mediterranean Sea) – एक अंतरमहाद्वीपीय समुद्र जो पश्चिम में अटलांटिक महासागर से पूर्व में एशिया तक फैला है और यूरोप को अफ्रीका से अलग करता है।
- अटलांटिक (Atlantic) – क्षेत्रफल और विस्तार में दुनिया का दूसरे स्थान का महासागर है। अंटलांटिक/अंध महासागर इस विशाल जलभूमि का नाम है जो यूरोप व अफ्रीका महाद्वीपों को नई दुनिया के महाद्वीपों से पृथक करती है।
- नई दुनिया (New World) – पृथ्वी के पश्चिमी गौलार्ध का क्षेत्र जिसमें उत्तर व पश्चिमी अमेरिका और उनके पास स्थित कैटिलियांई सागर के द्वीप आते हैं।

- कोलंबस ने 1492 ई. में नई दुनिया अर्थात् अमेरिका व उसके आस–पास के क्षेत्र की खोज की थी। तब से यूरोपियों द्वारा इसे नई दुनिया के रूप में जाना जाता है।
- पाश्चात्य (Western) – पश्चिम से संबंधित। अर्थात् यूरोपीय जगत से संबंधित। औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश सरकार द्वारा अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए अपनायी गयी शिक्षा, शासन प्रणाली आदि को पाश्चात्य से संबोधित किया।

4.8 स्वं–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test (SAT)

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Based Questions)

(i) यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति .... सदी में आयी थी।

(क) 16 वीं (ख) 17 वीं (ग) 18 वीं (घ) 19 वीं

(ii) वाणिज्यिक क्रांति से पूर्व भूमध्यसागरीय व्यापार पर .... का अधिकार था।

(क) इंग्लैंड (ख) फ्रांस (ग) स्पेन (घ) इटली

(iii) वाणिज्यिक क्रांति के फलस्वरूप आर्थिक गतिविधियाँ भूमध्यसागर से .... की ओर स्थानांतरित हो गयीं।

(क) लाल सागर (ख) हिन्द महासागर

(ग) अटलांटिक महासागर (घ) आर्कटिक महासागर

(iv) वाणिज्यिक क्रांति के दौरान यूरोप के .... देश में सर्वप्रथम बैंकिंग प्रणाली का विकास हुआ।

(क) इंग्लैंड (ख) फ्रांस (ग) इटली (घ) स्पेन

(v) बैंकिंग विकास के क्रम में प्रथम सरकारी बैंक .... था।

(क) Bank of Sweden (1668)

(ख) Bank of America

(ग) Bank of England

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(vi) वाणिज्यिक क्रांति से संबंध में सत्य कथन है।

(क) यूरोप में बुलियन का संग्रह होने लगा।

(ख) यूरोप में चार्टर कंपनियों का उदय हुआ।

(ग) अंतरराष्ट्रीय व्यापार में व्यापारिक सामग्रियों की मात्रा और उसकी विविधता में अप्रत्याशित वृद्धि हुई।

(घ) उपर्युक्त सभी

(vii) भौगोलिक खोजों के परिणामस्वरूप प्रारंभिक उपनिवेश .... ने स्थापित किये।

(क) पुर्तगाल (ख) इंग्लैंड

(ग) फ्रांस (घ) जर्मनी

(viii) पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा .... ई. में भारत के पश्चिमी तट पर स्थित कालीकट के स्थान पर पहुँचा और यूरोप से भारत आने के लिए नए समुद्री मार्ग का पता लगाया।

(क) 1600 ई. (ख) 1602 ई.

(ग) 1498 ई. (घ) 1674 ई.

(ix) यूरोपीय शक्तियों में सबसे बड़ी साम्राज्यवादी शक्ति .... थी जिससे एशिया के अधिकतर भागों पर अपना अधिकार स्थापित किया।

(क) इंग्लैंड (ख) फ्रांस

(ग) पुर्तगाल (घ) स्पेन

(x) प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली ने भारत के .... उद्योग को लगभग पूरी तरह नष्ट कर दिया था।

(क) सीमेंट (ख) जलयान

(ग) सूती वस्त्र (घ) तंबाकू

(ख) निबंधात्मक / दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer based Questions)

(i) वाणिज्यिक क्रांति की पृष्ठभूमि का विस्तार से वर्णन करें।

(Describe the background of Mercantile Revolution in details.)

(ii) वाणिज्यिक क्रांति के उद्भव से संबंधित महत्त्वपूर्ण कारकों की चर्चा करें।

(Discuss the factors leading to Mercantile Revolution.)

(iii) वाणिज्यिक क्रांति के परिणामों को विस्तार से लिखें।

(Write down the consequences of Mercantile Revolution in details.)

(iv) प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली के उद्देश्य व प्रक्रिया का वर्णन करें।

(Describe the Motives and process of Early Colonial System.)

(v) प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली के परिणामों की चर्चा करें।

(Describe the Consequences of Early Colonial System.)

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer based Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (Write Short Notes on the following)

(i) वाणिज्यिक क्रांति (Mercantile Revolution)

(ii) प्रारंभिक औपनिवेशिक प्रणाली (Early Colonial System)

(iii) बुलियनवाद (Bullianism)

(iv) ट्रिपल 'जी' नीति (Tripe 'G' Policy)

(v) भौगोलिक खोज (Geographical Discovery)

(vi) वास्कोडिगामा (Vascodigama)

(vii) उपनिवेशवाद (Colonialism)

(viii) साम्राज्यवाद (Imperialism)

(ix) उग्र राष्ट्रवाद (Ultra Nationalism)

(x) धन–निष्कासन का सिद्धांत (Wealth-drain theory)

4.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check Your Progress)

4.5 (क) उत्तर :–

(i) 16 वीं सदी (ii) इटली (iii) उपनिवेशवाद (iv) वाणिज्यिक क्रांति

(v) उपनिवेश की स्थापना (vi) अटलांटिक महासागर (vii) पुर्तगाल एवं स्पेन (viii) 1500 से 1750 ई. (ix) वास्कोडिगामा (x) दादाभाई नौरोजी

4.5 (ख) उत्तर :–

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य

(v) सत्य (vi) सत्य (vii) सत्य (viii) असत्य

(ix) सत्य (x) सत्य

4.5 (क) उत्तर :–

(i) क (ii) घ (iii) ग (iv) ग

(v) क (vi) घ (vii) क (viii) ग

(ix) क (x) ग

4.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

- विश्व का इतिहास : कुमार नलिन
  द्वितीय संस्करण
  MC Gram Hill प्रकाशन
- आधुनिक विश्व : डॉ. गोपाल प्रशाद
  बी.ए. तृतीय वर्ष : छठा सेमेस्टर
  Luxmi Publishing House
  Railway Road, Rohtak
- सामाजिक विज्ञान इतिहास : भारत एवं विश्व कक्षा 10 के लिए पाठ्यपुस्तक
  हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड
  संस्करण : प्रथम – 2022

Unit -(इकाई) -III

B.A HISTORY PART- III^rd YEAR SEMESTER-V	
COURSE CODE: HIST 302 **LESSON NO. 05**	**AUTOR – MOHAN SINGH BALODA**
वैज्ञानिक क्रांति (Scientific Revolution) **गौरवपूर्ण क्रांति (Glorious Revolution)**	

अध्याय सरंचना (Lesson Structure)

5.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objective)

5.2 परिचय (Introduction)

5.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of Text)

5.3.1 वैज्ञानिक क्रांति : पृष्ठभूमि (Scientific Revolution : Background)

5.3.2 वैज्ञानिक क्रांतियाँ : कृषि– क्रांति तथा औद्योगिक क्रांति (Scientific Revolutions : Agricultural Revolution and Industrial Revolution)

5.3.3 वैज्ञानिक क्रांति के प्रभाव/परिणाम (Scientific Revolution : Impact/Result)

5.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

5.4.1 गौरवपूर्ण क्रांति : पृष्ठभूमि (Glorious Revolution : Background)

5.4.2 गौरवपूर्ण क्रांति के कारण (Causes of the Glorious Revolutions)

5.4.3 गौरवपूर्ण क्रांति : महत्त्व तथा प्रभाव (Glorious Revolution : Significance and Impact)

5.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

5.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

5.7 संकेत–सूचक (Key-words)

5.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test SAT)

5.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check your Progress)

5.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

5.1 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययनोपरांत विद्यार्थी योग्य होंगे :–

- 18वीं, 19वीं सदी में आविष्कारों व खोजों के फलस्वरूप दुनिया भर में हुए वैज्ञानिक क्रांति के कारण जीवन पद्धति और विचार में परिवर्तन को विद्यार्थी समझ सकेंगे।
- वैज्ञानिक क्रांति के फलस्वरूप हुए कृषि क्रांति व औद्योगिक क्रांति का शिक्षार्थी वर्णन कर सकेंगे।
- विद्यार्थी वैज्ञानिक क्रांति के प्रभाव/परिणाम की व्याख्या कर सकेंगे।
- शिक्षार्थी इंग्लैंड में हुई 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति के स्वरूप को समझ सकेंगे तथा इनकी व्याख्या करने में समर्थ हो सकेंगे।
- विद्यार्थी 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति के कारणों को बता सकेंगे।
- गौरवपूर्ण क्रांति की पृष्ठभूमि/घटनाक्रम का विद्यार्थी जिक्र कर सकेंगे।
- गौरवपूर्ण क्रांति का महत्त्व तथा प्रभाव को विद्यार्थी बता सकेंगे।

5.2 परिचय (Introduction)

15वीं सदी से यूरोप में जो नई व्यवस्था अस्तित्व में आ रही थी, उसे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के नाम से जाना जाता है। इस व्यवस्था के अंतर्गत अधिक लाभ कमाने के लिए कम लागत पर अधिक माल तैयार करने की भूख ने इंग्लैंड तथा पश्चिमी यूरोप के अन्य देशों में वैज्ञानिक खोजों व आविष्कारों को बढ़ावा दिया। 17वीं शताब्दी के अंत तक इंग्लैंड तथा पश्चिमी यूरोप के अन्य देशों में कृषि के तौर–तरीके प्राचीन ढ़ंग पर ही आधारित थे। परंतु अब जब इंग्लैंड में 1750 ई. में वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरूप औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ हो चुका था। नये–नये यत्र, उपकरण बनने शुरू हो गये। इससे कृषि क्रांति का नया दौर इंग्लैंड में शुरू हुआ। औद्योगिक क्रांति मशीनी युग का प्रारंभिक दौर था। 1750 के बाद तीव्र गति से नए–नए आविष्कार होने लगे। इन आविष्कारों के फलस्वरूप यूरोपीय समाज में एक वैज्ञानिक क्रांति का दौर चला। इसने लोगों के जीवन शैली में बहुत तेजी से परिवर्तन लाया।

18वीं सदी में इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के लिए परिस्थितियाँ बहुत अनुकूल थीं। इस क्रांति ने इंग्लैंड व यूरोप सहित दुनिया भर में जीवन पद्धति और विचार में परिवर्तन कर दिया।

जेम्स हारग्रीब्ज व आर्कराइट के द्वारा सूत कातने के मशीन के आविष्कार के फलस्वरूप कपड़ा उद्योग में क्रांति आ गई। 1769 ई. में जेम्स वाट के द्वारा भाप से जलने वाला इंजन का आविष्कार किया गया। इससे यातायात व्यवस्था में व्यापक सुधार हुआ। जेम्स वाट के इस आविष्कार ने उत्पादन के क्षेत्र में क्रांति ला दी।

19वीं शताब्दी में रेलमार्ग के विकास हो जाने पर यातायात व्यवस्था और भी सुगम हो गया। ?

इस प्रकार कपड़े के उद्योग में नवीन आविष्कार, भाप शक्ति का प्रयोग, लोहे तथा कोयले के उद्योग में क्रांति, यातायात व संचार के साधनों का विकास, कृषि में मशीनों का प्रयोग जैसे वैज्ञानिक आविष्कारों ने इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति को जन्म दिया।

इसके साथ ही इंग्लैंड की भौगोलिक एवं प्राकृतिक विशेषताएँ, राजनीतिक स्वतंत्रता का वातावरण, यूरोप की सबसे बड़ी औपनिवेशिक शक्ति, उच्च कोटि की जल सेना, व्यापारिक तरक्की, वैज्ञानिक उन्नति आदि ने क्रांति को लाने में भरपूर योगदान दिया। इंग्लैंड में हुए इस औद्योगिक क्रांति का प्रभाव यूरोप के अन्य देशों – बेल्जियम, फ्रांस, जर्मनी, इटली, रूस, हालैंड, ऑस्ट्रिया, स्पेन, स्वीडन, स्विट्जरलैंड आदि देशों पर भी पड़ा। यहाँ भी वैज्ञानिक क्रांति के फलस्वरूप औद्योगिक विकास का दौर आरंभ हो गया। इसका सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक जन–जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

इस वैज्ञानिक क्रांति ने कृषि क्रांति को भी जन्म दिया। कृषि क्रांति सर्वप्रथम इंग्लैंड में तथा उसके पश्चात् फ्रांस, जर्मनी, डेनमार्क, हालैंड, बेल्जियम, इटली, स्पेन आदि पश्चिमी देशों में आई।

खेती में नवीन उपकरणों के आविष्कारों के फलस्वरूप पुरानी कृषि व्यवस्था के स्थान पर अब नवीन कृषि व्यवस्था का दौर आरंभ हो गया। दोषपूर्ण प्राचीन कृषि व्यवस्था, कृषि–उत्पादन के नवीन ढ़ंगों का प्रचार, बढ़ती जनसंख्या, बढ़ते मूल्य, व्यापार व कारोबार में अत्यधिक वृद्धि जैसी परिस्थितियों ने कृषि के क्षेत्र में वैज्ञानिक तौर–तरीकों के प्रयोग को प्रोत्साहित किया। जिसके फलस्वरूप इंग्लैंड में कृषि–क्रांति का प्रारंभ 1700 ई. के लगभग हुआ और इसके विकास की प्रक्रिया 18वीं शताब्दी के अंत तक चलती रही। वैज्ञानिक क्रांति से उत्पन्न यह कृषि–क्रांति आधुनिक यूरोप एवं विश्व के इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना थी। इससे कृषि में पूँजीवादी व्यवस्था का प्रचलन तेजी से बढ़ा। कृषि के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन आया। कृषकों के जीवन–स्तर में सुधार हुआ। उत्पादन में बढ़ोतरी हुई तथा भूमि की माँग एवं मूल्य में वृद्धि हुई। कृषि क्रांति ने विभिन्न यूरोपीय देशों में औद्योगिक क्रांति को भी बढ़ावा दिया। इसका नकारात्मक प्रभाव भी वहाँ के समाज पर देखने को मिलता है। कृषि क्रांति के कारण इंग्लैंड में छोटे

किसानों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया तथा गाँवों के काफी लोगों को बेरोजगारी एवं निर्धनता का सामना करना पड़ा।

1688–89 के दौरान इंग्लैंड में वहाँ के राजा जेम्स द्वितीय के शासनकाल में हुई थी। वह कैथोलिक मत का कट्टर अनुयायी था। इसने संसद की परवाह न करते हुए कई कानून रद्द कर दिये तथा निरकुंश शासन स्थापित करने के प्रयत्न किये। समयानुरूप कदम उठाने की दूरदर्शिता का जेम्स द्वितीय में अभाव था। उसने अपनी चाहत के अनुरूप कैथोलिक मत पर लगे प्रतिबंध को हटा दिया। इससे देश की प्रोटेस्टेंट जनता जेम्स द्वितीय के विरूद्ध हो गई। जेम्स की नीतियों से जनता तंग हो चुकी थी। इस परिस्थिति से विवश होकर देश के दोनों राजनीतिक लों के नेताओं ने जेम्स की प्रोस्टेंट विचारों वाली पुत्री मेरी तथा उसके पति विलियम को राजगद्दी पर बैठाने का निर्णय किया। देशवासियों के प्रबल विरोध के सामने जेम्स द्वितीय का एक नहीं चला। उसे झुकना पड़ा। वह चुपचाप सिंहासन त्याग कर भाग गया। ऐसे में बिना किसी लड़ाई के शांतिपूर्ण तरीके से सत्ता परिवर्तन हो गया। कोई भी रक्तपात नहीं हुआ।

इस प्रकार 1688 ई. में इंग्लैंड में क्रांति हुई। इस क्रांति को गौरपूर्ण क्रांति अथवा रक्तहीन क्रांति कहा जाता है। इस क्रांति का परिणाम यह हुआ कि इंग्लैंड में सदा के लिए निरकुंश शासन की समाप्ति हो गई और इसके स्थान पर संसद की सर्वोच्चता को वरीयता मिली। अब सम्राट नाम मात्र का अर्थात् औपचारिक प्रधान रह गया तथा वास्तविक शक्तियाँ संसद द्वारा संचालित होने लगा।

इस गौरवपूर्ण क्रांति के अनेक कारण थे, जिसका हम आगे विस्तार से अध्ययन करेंगे। इस प्रकार क्रांति ने न केवल इंग्लैंड के बल्कि विश्व के राजनैतिक इतिहास में एक नवीन युग का आरंभ कर दिया। इसने राजा के निरंकुशता पर आधारित दैवीय अधिकारों को समाप्त करके इसके स्थान पर कानून का शासन, व्यक्तिगत स्वतंत्रता व सबसे बढ़कर संसद की सर्वोच्चता को स्थापित कर दिया। कुछ विद्वानों द्वारा 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति की आलोचना भी की गयी है। वे इसे एक महत्त्वपूर्ण घटना के रूप में मानने से इंकार करते हैं। विद्वानों के एक वर्ग का कहना है कि यह जन–सामान्य की महान् क्रांति होने की अपेक्षा कुछ धनी जमींदारों द्वारा शासन–प्रबंध पर अपने प्रभुत्व को स्थापित करने का एक प्रयास था। निश्चित रूप से इस क्रांति के माध्यम से कुछ धनी टोरी तथा बिग नेताओं को शासन–प्रबंध में प्रभुत्व प्राप्त हुआ। जन–सामान्य को प्रत्यक्ष रूप से इससे कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। ऐसा भी नहीं है कि इस के द्वारा इंग्लैंड में भ्रष्ट व्यवस्था की चुनाव प्रणाली में कोई परिवर्तन हो गया और यहाँ पर प्रजातंत्र की स्थापना हो गयी। इसके अतिरिक्त इस क्रांति के कारण स्काटलैंड के अल्पसंख्यक तथा आयरलैंड के बहुसंख्यक कैथोलिक समुदायों के लिए मुसीबतों तथा दुखों के रास्ते खोल दिये।

यद्यपि 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति की इन रूपों में आलोचना की जाती है लेकिन फिर भी यह एक सच्चाई है कि इंग्लैंड के इतिहास में यह एक अति महत्त्वपूर्ण घटना थी। इसने इंग्लैंड में निरकुंश शासन की समाप्ति करके संवैधानिक सरकार की स्थापना कर दी। अतः यह क्रांति संवैधानिक विकास की दृष्टि से इंग्लैंड के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ।

5.3. अध्याय के मुख्य बिंदु (Main body of the Text)

5.3.1 वैज्ञानिक क्रांति : पृष्ठभूमि (Scietific Revolution: Background)

16वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान यूरोप में खोजों और आविष्कारों के कारण जीवन के विविधि क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इस अवधि के दौरान वैज्ञानिक विचारें में आमूल–चूल परिवर्तन हुए। इस वैज्ञानिक क्रांति ने ही अनुकूल परिस्थितियों के कारण इंग्लैंड में सर्वप्रथम औद्योगिक क्रांति तथा कृषि क्रांति को जन्म दिया।

हम जानते है कि जिज्ञासा की जिस भावना से पुनर्जागरण काल के दौरान यूरोप में मनुष्यों ने साहित्य, विज्ञान, कला व धर्म के क्षेत्रों में एक से बढ़कर एक नवीन विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित हुए थे, उसी जिज्ञासा की भावना ने अन्य व्यक्तियों को नए देश खोजने के लिए प्रोत्साहित किया था।

1492 से 1520 ई. के दौरान महान खोज यात्राओं का सिलसिला आरंभ हुआ। बार्थोलोम्यू डियाज, क्रिस्टोफर कोलम्बस, वास्कोडिगामा से लेकर सर फ्रांसिस ड्रैक तक ने समुद्री यात्राओं के द्वारा नये स्थानों की देशों की खोज की। इन भौगोलिक खोजों की प्रक्रिया ने इंग्लैंड व अन्य यूरोपीय देशों को व्यापार व उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया के लिए प्रेरित किया। इस दौरान 15वीं सदी से यूरोप में जो नई व्यवस्था उभर रही थीं, उसे पूँजीवाद कहा जाता है। इसके अंतर्गत जिन उपकरणों और साधनों से वस्तुओं का उत्पादन होता है उन पर व्यक्तिगत स्वामित्व होता है और उत्पादन लाभ कमाने के लिए कम लागत पर अधिक माल तैयार करने की इच्छा–आकांक्षा ने क्रांति को जन्म दिया। इस क्रांति को किसी ने औद्योगिक क्रांति तो किसी ने वैज्ञानिक क्रांति/तकनीकी क्रांति का नाम दिया। इस वैज्ञानिक क्रांति/तकनीकी क्रांति ने इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति व कृषि क्रांति को बढ़ावा दिया।

वैज्ञानिक क्रांति की प्रक्रिया पश्चिमी यूरोप मं उस समय प्रारंभ हुई जब उत्पादन में आधुनिक उपकरणों एवं औजारों का प्रयोग आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम इंग्लैंड में इन आधुनिक उपकरणों व वैज्ञानिक आविष्कारों तथा तकनीकी ज्ञान का प्रयोग उद्योग व कृषि में क्रांति लाने में किया गया था। इससे न केवल इंग्लैंड व यूरोप में बल्कि दुनिया के अन्य देशों में भी जीवन के विविध क्षेत्रों में पड़ा। इस काल में आधुनिक मशीनों तथा यन्त्रों का आविष्कार हुआ, जिससे वस्तुओं के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई।

1750 ई. के बाद बहुत तेजी से नए—नए आविष्कार किए गए और इनका स्वरूप ऐसा था, कि इनके कारण लोगों के जीवन शैली में बहुत तेजी से परिवर्तन आया। अब वैज्ञानिक क्रांति के कारण 18वीं सदी में घरेलु पद्धति पुरानी पड़ गई। इसके स्थान पर नवीन व्यवस्था अस्तित्व में आने लगी, जिसको कारखाना पद्धति कहा जाता है। इस प्रकार वैज्ञानिक क्रांति के कारण घरेलु उत्पादन प्रणाली का स्थान कारखाना पद्धति ने ले लिया। 18वीं सदी में इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के लिए परिस्थितयाँ बहुत अनुकूल थीं। पूँजीवादी प्रवृत्ति ने अत्यधिक लाभ कमाने की आकांक्षा को जन्म दिया। इसके लिए अत्यधिक उत्पादन, कच्चे माल की आवश्यकता, यातायात और संचार के साधनों के विकास की आवश्यकता ने बड़ी तेजी से वैज्ञानिक खोजों के लिए लोगों को प्रेरित किया। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप अब पूँजी की वृद्धि हुई तब प्रश्न उठा कि इस पूँजी का उपयोग कहाँ और किस रूप में करके अधिक से अधिक लाभ कमाया जाए। इस प्रवृत्ति ने एशिया और पिछड़े देशों में साम्राज्य स्थापित करने को बढ़ावा दिया। इस साम्राज्यवादी प्रवृत्ति ने वैज्ञानिक क्रांति को और अधिक बढ़ावा दिया। एशिया और यूरोप के देशों से कच्चे माल को लाकर इंग्लैंड में कपड़ा उद्योग में क्रांति लाने के लिए मशीन का आविष्कार किया गया। इसके अलावा खेती के नए उपकरणों, जैसे जमीन तोड़ने के लिए इस्पात का हल और हेंगी, बीज बोने एवं नाली खोदने की मशीन निर्मित की गई और कुदाली का स्थान घोड़े से खींची जाने वाली मशीन ने ले लिया। फसल काटने और मड़ाई करने के लिए भी मशीनों का आविष्कार किया गया। इन आविष्कारों ने कृषि क्रांति को जन्म दिया। इस प्रकार औद्योगिक क्रांति व कृषि क्रांति ने इंग्लैंड और उसके बाद यूरोप के अन्य देशों के लोगों को खोजन व आविष्कार की प्रवृत्ति को बड़ी तेजी से बढ़ाया। इसने वैज्ञानिक क्रांति को जन्म दिया और इस क्रांति का प्रभाव इंग्लैंड व यूरोप समेत विश्व के अन्य देशों पर भी जीवन के विविध क्षेत्रों पर व्यापक रूप से पड़ा।

5.3.2 वैज्ञानिक क्रांति : कृषि क्रांति तथा औद्योगिक क्रांति (Scientific Revolutions: Agricultural Revolution and Industrial Revolution)

वैज्ञानिक खोजों व आविष्कारों के फलस्वरूप जो क्रांति हुई इसने सर्वप्रथम इंग्लैंड़ में कृषि क्रांति व औद्योगिक क्रांति को जन्म दिया। एक और जहाँ वैज्ञानिक क्रांति के कारण कृषि क्रांति तथा औद्योगिक क्रांति आई वहीं दूसरी ओर कृषि तथा औद्योगिक क्रांति ने भी वैज्ञानिक क्रांति को गतिमान किया। 18वीं शताब्दी के अंत और 19वीं शताब्दी के शुरू में इंग्लैंड में, कृषि के क्षेत्र में अनेक तकनीकी परिवर्तन हुए। खेतों की बाड़वन्दी करने, फसलों को बदल—बदल कर बोने, भूमि को उपजाऊ बनाने, कृषि यंत्रों में परिवर्तन करने तथा पशुओं की नस्ल सुधारने पर बल दिया गया। जिससे कृषि उत्पादन बढ़े। कृषि के क्षेत्र में प्रभावी परिवर्तनों व सुधारों को एक साथ कृषि क्रांति का नाम दिया गया। सर्वप्रथम वैज्ञानिक समाजवाद का प्रवर्तक कार्ल मार्क्स ने अपनी पुस्तक दास

कैपिटल में कृषि क्रांति शब्द का प्रयोग किया था। यह क्रांति सर्वप्रथम इंग्लैंड में आई। इसके बाद कृषि क्रांति का विस्तार फ्रांस, डेनमार्क, ऑस्ट्रिया, स्वीडन, इटली, स्पेन, पुर्तगाल, रूस आदि देशों में हुआ।

इंग्लैंड में खेती पर बड़े–बड़े जमींदारों एवं कृषकों का अधिकार था। वे वैज्ञानिक क्रांति के फलस्वरूप हुए परिवर्तनों को स्वीकार करने को तैयार थे। उनके पास पर्याप्त पूँजी भी थी। अतः उन्होंने नये–नये तरीकों से कृषि प्रारंभ किये ताकि अधिक से अधिक लाभ अर्जित किया जा सके। फलतः कृषि के क्षेत्र में वैज्ञानिक परिवर्तन आने लगे। कृषि से जुड़े जमींदारों और व्यापारियों ने क्रांति लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस परिस्थिति में लोग ब्रिटेन में महत्त्वपूर्ण खोजों व आविष्कारों की ओर प्रेरित हुए। इसके फलस्वरूप इंग्लैंड में कृषि क्रांति से जुड़े महत्त्वपूर्ण परिवर्तन निम्न प्रकार थे –

(i) रॉबर्ट वेस्टर्न द्वारा नई जड़ वाली फसलों की खेती की प्रणाली की खोज की गयी। उसने अपनी भूमि पर अनेक परीक्षण करके 1645 ई. में डिस्कोर्स ऑन, हस्बैडरी (Discourse on Husbandry) नामक पुस्तक प्रकाशित की।

(ii) जेथ्रो टुल द्वारा ड्रिल मशीनों का आविष्कार किया गया। उसके इस आविष्कार ने इंग्लैंड में वैज्ञानिक कृषि को बढ़ावा दिया। इस कारण जेथ्रोटुल को इंग्लैंड में कृषि के महान् सुधारक के रूप में जाना जाता है।

(iii) अंग्रेज विचारक चार्ल्स विस्काऊंट टाऊन शैड (1674 – 1738) द्वारा बदल–बदल कर फसल उगाने की तकनीक ने भूमि की उत्पादन शक्ति को बढ़ाने में सहायक हुई। इसके अलावा उसने चूने–मिट्टी की खाद का प्रयोग करने की विधि से रेतीली तथा दलदली भूमि को भी उपजाऊ बनाने संभव हो गया। इसके वैज्ञानिक विधि ने कृषि के क्षेत्र में क्रांति ला दिया।

(iv) वाणिज्यिक क्रांति के फलस्वरूप कृषि उत्पादन में रॉबर्ट बेकवैल, चार्ल्स कोलिंग के पशुओं की नकल में सुधार की प्रक्रिया ने भी इंग्लैंड में कृषि क्रांति में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

(v) आर्थर यंग की बाड़बन्दी की प्रक्रिया ने यूरोप की छोटे–छोटे टुकड़ों में बिखरी पड़ी भूमि को वैज्ञानिक ढ़ंग से कृषि करने के लायक बनाने पर जोर दिया।

(vi) वैज्ञानिक खोजों व आविष्कारों ने वैज्ञानिक तरीकों से खेती करने के लिए इंग्लैंड में आदर्श फार्म स्थापित करने को बढ़ावा दिया।

(vii) अब कृषि क्रांति के फलस्वरूप इंग्लैंड बंजर एवं बेकार भूमि को कृषि योग्य बनाने की प्रक्रिया की शुरूआत कर दिए।

इस प्रकार उपर्युक्त वैज्ञानिक तरीकों व आविष्कारों ने फलस्वरूप इंग्लैंड के कृषि में व्यापक परिवर्तन आये। इसके कुछ समय बाद इसका फैलाव पश्चिमी यूरोप के अन्य देशों, फ्रांस, जर्मनी, डेनमार्क, बेल्जियम, हॉलैंड, इटली, स्पेन, रूस आदि में होने शुरू हो गये।

इस कृषि क्रांति के मुख्य कारण इस प्रकार थे –

(i) सामंतवादी प्रथा से पूँजीवादी प्रथा में संक्रमण ने इंग्लैंड व यूरोप के अन्य देशों में अधिक लाभ अर्जित करने की प्रवृत्ति ने कृषि में वैज्ञानिक तरीकों के प्रयोग को बढ़ावा दिया। इससे कृषि क्रांति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

(ii) 16 वीं से 18वीं शताब्दियों में व्यापार व वाणिज्य का विकास जौरों पर था। वाणिज्यिक क्रांति के फलस्वरूप कृषि उत्पादन बढ़ने लगे। उस समय यूरोपीय ऊन की माँग बढ़ रही थी। अतः अधिक से अधिक लाभ कमाने के लिए इंग्लैंड में भेड़ों के पालन का व्यवसाय जोर पकड़ने लगा। इस व्यवस्था में बड़े–बड़े जमींदार भी कूद पड़े। इससे लघु उद्योग के विकास को बल मिला तथा पशुओं के चारों के लिए फसल उगाने को भी बल मिला। इससे कृषि क्रांति को बढ़ावा मिला।

(iii) नवीन औजार तथा कृषि उत्पादनों के वैज्ञानिक तरीकों के प्रचार ने इंग्लैंड व उसके बाद शेष यूरोप के देशों में कृषि क्रांति को जन्म दिया।

(iv) बड़े–बड़े भूमिपतियों के अधिक लाभ कमाने की प्रवृत्ति ने उन्हें कृषि के क्षेत्र में वैज्ञानिक तरीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

(v) 18वीं शताब्दी में यूरोप की बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति ने भी कृषि क्षेत्र में सुधार के लिए प्रेरित किया। इससे वैज्ञानिक आविष्कारों व तरीकों के प्रयोग को बल दिया।

(vi) 18वीं शताब्दी में अचानक खाद्यान्न वस्तुओं के मूल्य में हुई वृद्धि ने भी लाभ कमाने की प्रवृत्ति के कारण कृषि क्रांति को जन्म दिया। इसने वैज्ञानिक यंत्रों व तरीकों के प्रयोग द्वारा कम–से–कम लागत पर अधिक मुनाफों के लिए प्रेरित किया। इससे कृषि क्रांति को बल मिला।

(vii) 17 वीं तथा 18वीं शताब्दी में यूरोप ने धनी व्यापारियों ने अधिक लाभ कमाने के लिए अपनी अतिरिक्त पूँजी कृषि में लगानी शुरू कर दी। इसके लिए उन्होंने नये–नये ढ़ंग से कृषि करना आरंभ किया और कृषि क्रांति लाने में ग्रामीण जमींदारों एवं कृषकों का मार्गदर्शन किया। इस प्रकार पश्चिमी यूरोप में कृषि क्रांति प्रारंभ हो गई और बाद में इसका विस्तार शेष यूरोप में भी हो गया।

(viii) 18 वीं शताब्दी में इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति आई और यह क्रांति समय के साथ यूरोप के अन्य देशों में भी फैल गई। उद्योगों के लिए कच्चे माल कृषि से ही प्राप्त किया जा सकता है। अतः इसने कृषि में वैज्ञानिक तरीकों के प्रयोग को बढ़ावा दिया। दूसरी ओर कृषि के यंत्र बनाने में लोहे एवं इस्पात का प्रयोग बढ़ा। इससे कृषि और उद्योग विकास के लिए परस्पर जुड़ गये। इस कारण औद्योगिक क्रांति ने कृषि क्रांति के विकास में महत्वपूर्ण भुमिका निभाई।

कृषि क्रांति की तरह औद्योगिक क्रांति की भी शुरूआत लगभग 1750 ई. में इंग्लैंड में ही हुआ था। इस समय इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति के लिए परिस्थितियाँ बहुत अनुकूल थीं। वैज्ञानिक क्रांति के कारण 18वीं शताब्दी में कपड़ा उद्योग में अनेक तकनीकी परिवर्तन आए। इस दौरान कपड़ा उद्योग में मशीनों से उत्पादन शुरू हुआ। इन परिवर्तनों से इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति का जन्म हुआ।

हारग्रीब्ज ने एक मशीन का आविष्कार किया जिससे तेजी से सूत कातना संभव हो गया। आर्कराइट ने इस मशीन में कुछ ऐसे परिवर्तन किए जिससे इसे पानी की शक्ति से चलाना संभव हो गया।

कुछ समय बाद क्रांप्टन ने ऐसी मशीन का आविष्कार किया, जिससे हारग्रीब्ज और आर्कराइट दोनों मशीनों के लाभ मिलने लगा।

1785 ई. में कार्टराइट ने शक्ति से चलने वाले करघे का आविष्कार किया।

इसके बाद कपड़ों की रंगाई, छपाई तथा सफेद करने की क्रिया इत्यादि के आधुनिक तरीकों की खोज की गई। 18 वीं शताब्दी के अंतिम दशक में बेल ने सिलेण्डर प्रिटिंग नामक एक मशीन बनाई। इसके द्वारा सूती और ऊनी कपड़ों पर बढ़िया प्रकार की छपाई की जा सकती थी। इस प्रकार वैज्ञानिक खोजों व आविष्कारों द्वारा कपड़ा उद्योग में क्रांति आई। इससे इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति आई। इस औद्योगिक क्रांति वैज्ञानिक क्रांति को और आगे बढ़ाया। 18 वीं शताब्दी के अंत में वाष्प शक्ति के प्रयोग से औद्योगिक क्षेत्र में अनेक तकनीकी परिवर्तन हुए। 1769 ई. में जेम्स वाट ने भाप के इंजन का आविष्कार करके उत्पादन के क्षेत्र में और भी क्रांति ला दी।

इसका प्रयोग वस्त्र उद्योगों के साथ–साथ लोहे के कारखानों में भी किया जाने लगा। फिशर नामक इतिहासकार के अनुसार, "भाप इंजन ने मनुष्य को खानों का साम्राज्य प्रदान किया तथा इसकी प्राप्ति से अनेक पदार्थ प्राप्त हुए, अधिक शक्ति, अधिक मशीनें, अधिक प्रकाश तथा अधिक गर्मी हाथ आई, अधिकतर लोगों का जीवन स्तर ऊँचा और आरामदायक हो गया था।" इससे आगे बढ़कर 1870 ई. में बिजली पैदा करने वाले जेनरेटर का आविष्कार कर लिया गया। विज्ञान के इस आविष्कार से औद्योगिक क्षेत्र में महान क्रांति आ गई। थॉमस एडीसन ने बिजली की रोशनी का आविष्कार करके मानव जगत का बहुत बड़ा उपकार किया था। 1815 ई. में

हेम्फ्री डेवी (Hamphry Davy) ने सेफ्टी लैम्प का आविष्कार किया, जिससे खानों में काम करने वाले मजदूरों का जीवन सुरक्षित हो गया। इस आविष्कार ने कोयला उद्योग में महान क्रांति ला दी।

1709 ई. में अब्राहीम डर्बी ने जले हुए कोयले से लोहा पिघलाने की विधि का आविष्कार किया। इसके बाद कोक की तेज ऊष्मा से लौह अयस्क के पिघलाने एवं साफ करने का काम आसान हो गया।

1784 ई. में हेनरी कोर्ट ने एक ऐसी विधि का आविष्कार किया, जिसके द्वारा अधिक शुद्ध और अच्छा लोहा बनना संभव हो गया। इससे लोहा उत्पादन के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए और उत्तम किस्म के लोहे से कई प्रकार की नवीन मशीनें बनाने में आसानी हो गई। आगे चलकर क्रमशः इंग्लैंड में इस्पात का भी उत्पादन शुरू हुआ। 1854 ई. में बेसेमर ने लोहे को शुद्ध करके सस्ता इस्पात बनाने की विधि की खोज की। इससे लौह उद्योग में क्रांति आई।

18 वीं एवं 19 वीं शताब्दियों में यातायात एवं संचार के साधनों का बहुत विकास हुआ जिससे औद्योगिक क्रांति को बल मिला। इस क्षेत्र में विज्ञान के आविष्कारों व तकनीकों का प्रयोग करते हुए सड़के, नहरें, भाप से चलने वाले इंजन युक्त रेलें, डाक एवं तार आदि विकसित किये गये। रेलों, पानी के जहाजों तथा हवाई जहाजों के आविष्कार से डाक प्रणाली में बहुत सुधार हुआ।

इस प्रकार इंग्लैंड के बाद यूरोप के अन्य देशों – बेल्जियम, फ्रांस, जर्मनी, इटली, रूस, स्वीडन, स्विटजरलैंड, ऑस्ट्रिया, स्पने आदि देशों में भी औद्योगिक क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन आए। इस औद्योगिक क्रांति/तकनीकी क्रांति के मुख्य कारण इस प्रकार थे –

(i) 18 वीं शताब्दी में इंग्लैंड की तेजी से बढ़ती जनसंख्या के फलस्वरूप वस्तुओं की माँग एवं कीमतों में वृद्धि हो गई। इसने उद्योग के आव"यकता को जन्म दिया। जिसके फलस्वरूप लोग वैज्ञानिक खोजों व आविष्कार की ओर बढ़े, इससे इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति आई।

(ii) इंग्लैंड में हुए कृषि क्रांति ने भी औद्योगिक क्रांति के लिए स्थान बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। खेती के नवीन उपकरणों, मशीनों का आविष्कार उद्योग के विकास द्वारा ही संभव हुआ।

(iii) 18 वीं व 19 वीं शताब्दी में इंग्लैंड का समुद्री व्यापार पर एकाधिकार हो गया था। एशिया व अफ्रीका में उसके साम्राज्य स्थापना व अपने बने–बनाये माल को खपाने की प्रवृत्ति बढ़ रही थी। इस प्रकार 18 वीं और 19 वीं शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि ने औद्योगिक क्रांति को बढ़ावा दिया।

(iv) संवैधानिक सरकार की स्थापना के कारण इस दौरान इंग्लैंड को राजनीतिक स्थिरता एवं शांति से व्यापार और उद्योगों का विकास करने का अवसर मिल गया। यह राजनीतिक स्थिरता एवं शांति का वातावरण 1688 ई. की शानदार क्रांति के द्वारा संभव हुआ।

(v) इंग्लैंड 18 वीं शताब्दी में कृषि दासता व श्रेणी व्यवस्था पर आधारित सामंतवादी व्यवस्था से बाहर निकल चुका था। वहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आधारित पूँजीवादी व्यवस्था का विकास हो रहा था। इस व्यवस्था में व्यक्ति अपनी इच्छानुसार कोई भी व्यवसाय अथवा उद्योग स्थापित कर सकते थे। अतः व्यक्तिगत स्वतंत्रता के कारण इंग्लैंड के पूँजीपतियों ने नये–नये आधुनिक उद्योगों की स्थापना का जोखिम उठाने के लिए आगे बढ़े। उनकी इस भावना ने वैज्ञानिक क्रांति आधारित औद्योगिक क्रांति को जन्म दिया।

(vi) 18 वीं शताब्दी में इंग्लैंड यूरोप की सबसे बड़ी औपनिवेशिक शक्ति था। इस समय तक उसने यूरोप, एशिया और अफ्रीका के विभिन्न देशों में अपना एक विस्तृत औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित कर लिया था। ये उपनिवेश इंग्लैंड को कच्चा माल एवं विस्तृत बाजार उपलब्ध कराते थे। इस अनुकूल परिस्थिति ने इंग्लैंड में वैज्ञानिक खोजों व आविष्कारों पर आधारित औद्योगिक क्रांति को जन्म दिया।

(vii) औद्योगिक विकास के लिए पूँजी की पर्याप्त उपलब्धता एक महत्त्वपूर्ण शर्त होती है। 18 वीं शताब्दी में इंग्लैंड की परिस्थितयाँ पंजी संग्रह तथा उसके उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए अनुकूल थी। इसके अतिरिक्त अपने औपनिवेशिक क्षेत्रों से भी लूट द्वारा इंग्लैंड को औद्योगिक विकास के लिए पर्याप्त पूँजी प्राप्त हो रही थी। इस कारण इंग्लैंड को औद्योगिक क्रांति की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा मिली।

(viii) इंग्लैंड की भौगोलिक एवं प्राकृतिक स्थिति ऐसी थी कि वह शेष विश्व के अलग रहा तथा दूसरी ओर वह समुद्री मार्ग के द्वारा दुनिया के निकट संपर्क में भी बना रहा। इसने इंग्लैंड को वाणिज्यिक व व्यापारिक विकास के लिए प्रेरित किया, जिसके फलस्वरूप यहाँ औद्योगिक क्रांति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

इसके अलावा श्रम की उपलब्धता, बैंकों की स्थापना, संयुक्त पूँजी कम्पनियों की स्थापना, व्यापारियों की उद्योगों व वैज्ञानिक अनुसंधानों में पूँजी लगाने की तत्परता आदि ने इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति को जन्म दिया।

5.3.3 वैज्ञानिक क्रांति के प्रभाव/परिणाम (Impact of Scientific Revolution)

18 वीं शताब्दी में वैज्ञानिक खोजों व अनुसंधानों के फलस्वरूप इंग्लैंड में औद्योगिक व कृषि क्रांति आयी। इसके बाद यूरोप के अन्य देशों में भी इसका प्रसार हुआ। इस क्रांति ने यूरोपीय समाज के स्वरूप को पूरी तरह से बदल कर रख दिया। विश्व के इतिहास में वैज्ञानिक क्रांति का जितना प्रभाव मानव समाज के विविध क्षेत्रों पर पड़ा,

ऐसा प्रभाव अन्य किसी भी घटना का नहीं पड़ा। इसलिए विद्वानों ने इससे उत्पन्न परिवर्तन को 'एक शक्तिशाली एवं शांतिमय परिवर्तन' कहा है। इस क्रांति के प्रमुख प्रभाव इस प्रकार थे –

(1) आर्थिक क्षेत्र पर प्रभाव – इस क्रांति ने यूरोपीय समाज व विश्व के आर्थिक क्षेत्र में अच्छे व बुरे दोनों ही प्रकार के परिवर्तन लाये। औद्योगिक क्रांति से पूर्व ग्रामों तथा नगरों में शिल्पकार वस्तुओं का निर्माण करते थे। इनकी पूरी दुनिया में बहुत माँग थी। परंतु औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप अब वस्तुएँ मशीनों से बनने लगी। बड़े–बड़े कारखानों की स्थापना होने लगी। कारखानों में बनी वस्तुएँ हस्तकला से निर्मित वस्तुओं की तुलना अधिक सस्ती, टिकाऊ तथा मजबूत होती थी। इसके फलस्वरूप हस्तकला आधारित कुटीर उद्योगों का पतन होने लगा तथा बेकारी की समस्या उत्पन्न हुई। कारखानों में एक मशीन कई–कई मजदूरों का कार्य कर देती थी। इस प्रकार औद्योगिक क्रांति का कुटीर उद्योग के पतन तथा बेकारी की समस्या के रूप में नकारात्मक प्रभाव पड़ा। इसके साथ ही इस क्रांति ने आर्थिक साम्राज्यवाद की नीति को बढ़ावा दिया। इस नीति के फलस्वरूप यूरोप के अनेक देशों में एशिया तथा यूरोप के देशों को उपनिवेश बनाकर उसका खूब शोषण किया। साम्राज्यवाद की नीति ने इन देशों के बीच ईर्ष्या तथा संघर्ष की भावना को जन्म दिया, जिसका दुष्परिणाम अंततः 1914 के प्रथम विश्व युद्ध के रूप में आया। यह औद्योगिक क्रांति का बहुत ही विनाशकारी प्रभाव था।

निःसंदेह इन दुष्परिणामों के बीच इस क्रांति के अच्छे परिणाम – राष्ट्रीय आय में वृद्धि, यातायात तथा संचार के साधनों का विकास, व्यापार तथा कृषि में उन्नति के रूप में देखने को मिलते हैं।

(2) सामाजिक रूप में क्रांति का प्रभाव – सामाजिक क्षेत्र में भी इस क्रांति का दोनों ही रूप अच्छे या बुरे मिले–जुले प्रभाव देखने को मिलते हैं। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप जीवन संबंधी सुख सुविधाओं में वृद्धि हुई। शहरों व नगरों में स्वतंत्र व खुशहाल जीवन का विकास हुआ। चिकित्सीय सुविधाओं में वृद्धि हुई। इसका परिणाम जनसंख्या में वृद्धि व औद्योगिक नगरों के विकास के रूप में सामने आया। इस प्रकार क्रांति के फलस्वरूप धनी लोगों के साथ–साथ जन–सामान्य लोगों के जीवन स्तर भी ऊँचा हो गया। लेकिन इसका सबसे बड़ा दुष्परिणाम समाज का विभाजन–पूँजीपतियों तथा मजदूरों के रूप में हो गया। पूँजीपतियों ने उत्पादन के सभी साधनों पर अपना स्वामित्व स्थापित कर लिया और व्यक्तिगत स्वार्थ व लाभ के लिए मजदूरों का खूब शोषण करने लगे। इसके कारण श्रमिक संघ अस्तित्व में आये। रॉबर्ट ओवन के प्रयासों से 1834 ई. में ग्रेट नेशनल कन्सोविडेटेड ट्रेड यूनियन की स्थापना की गई। मजदूरों को कारखाना मालिकों के शोषण से बचाने के लिए संघ संघर्ष करते थे। इससे मजदूरों की दुर्दशा में कमी आई। इतना ही नहीं औद्योगिक क्रांति के कारण स्त्रियों तथा बच्चों का बहुत शोषण होने लगा। पूँजीपति अधिक लाभ कमाने के लिए पुरूषों की अपेक्षा कम वेतन पर स्त्रियों तथा बच्चों को कारखानों में कार्य पर लगाते थे।

(3) क्रांति का राजनीतिक प्रभाव – वैज्ञानिक खोजों व आविष्कारों के फलस्वरूप औद्योगिक क्षेत्र में इंग्लैंड में सर्वाधिक तकनीकी परिवर्तन हुए। इंग्लैंड में मशीनों से निर्मित वस्तुएँ दुनिया के हर देश में बेचे जा रहे थे। इससे इंग्लैंड की आय में वृद्धि हुए और इंग्लैंड तेजी से भारत, अफ्रीका तथा अमेरिका में अपने उपनिवेश बनाने की ओर अग्रसर हुआ। इस प्रकार इंग्लैंड राजनीतिक तथा आर्थिक दृष्टि से एक शक्तिशाली राष्ट्र में बदल गया। इस क्रांति ने इंग्लैंड में संसदीय सुधार संबंधी कानून का मार्ग प्रशस्त किया।

जनसंख्या वृद्धि के साथ नवीन नगरों का उत्थान हुआ और संसद में इनके प्रतिनिधित्व का माँग जोर पकड़ने लगा। इसके फलस्वरूप ब्रिटिश संसद को 1832 ई. में सुधार एक्ट पारित करना पड़ा।

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप यूरोप में राजनीतिक आर्थिक तथा सामाजिक क्षेत्र में अनेक समस्याओं को जन्म दिया। समस्याओं के समाधान की आवश्यकता ने विचारकों को नवीन सिद्धांत प्रस्तुत करने के लिए बाध्य किया। इसी का परिणाम था कि इंग्लैंड में रॉबर्ट ओवन ने समाजवाद का सिद्धांत प्रस्तुत किया। फ्रांस में इस सिद्धांत का प्रचार सेंट साइमन तथा लुई ब्लांक ने किया था। 19 वीं सदी में कार्ल मार्क्स ने इस सिद्धात का बहुत ही जोरदार तरीके से प्रचार किया। इन्होंने जनकल्याणकारी लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना तथा मजदूरी की एकजुटता पर बल दिया।

इस क्रांति के फलस्वरूप एक और जहाँ सड़कों, नहरों, रेलों तथा टेलीग्राफ के प्रचलने से दुनिया सिमटने लगी तथा राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय एकता स्थापित हो गयी तो वहीं दूसरी ओर साम्राज्यवादी प्रवृत्ति की होड़ ने सैनिक शक्ति के विकास तथा बिना हथियारों के संग्रह को बढ़ावा दिया। इसका बड़ा ही त्रासद रूप 1914 ई. के प्रथम विश्वयुद्ध तथा 1939 ई. के दूसरे विश्वयुद्ध मानव के समक्ष प्रकट हुआ।

(4) इस क्रांति के फलस्वरूप विज्ञान तथा तकनीक का भी बहुत विकास हुआ। वैज्ञानिक क्रांति ने लोगों के सोचने के ढंग को बदल दिया। उनके जीवन शैली में काफी बदलाव आ गया। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप यूरोप में यातायात व संचार के साधनों का पर्याप्त विकास हुआ। लोगों का बौद्धिक स्तर बढ़ने लगा। उनमें अंधविश्वास समाप्त होने लगे। पुनर्जागरण के विद्वानों ने भी अन्धविश्वासों पर प्रहार किया। इससे समाज में आधुनिक विचार विकसित होने लगे।

औद्योगिक क्रांति ने लोगों के दृष्टिकोण को पूरी तरह से बदल दिया था। अब लोग अधिक–से–अधिक धन कमाकर आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहते थे। इस प्रकार इस क्रांति ने लोगों को भौतिकवादी बना दिया। इस दौरान अनेक चिंतकों तथा विद्वानों ने समाज की समस्याओं – मजदूरों की दुर्दशा, स्त्रियों एवं बच्चों की स्थिति, कारखानों

की गंदगी एवं भौतिकवादी दृष्टिकोण पर अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए। इससे साहित्य के विकास को बल मिला।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरणों से यह निष्कर्ष निकलता है कि वैज्ञानिक क्रांति के फलस्वरूप हुए औद्योगिक क्रांति का विश्व पर कुछ अच्छे तथा कुछ बुरे प्रभाव पड़े। इससे जहाँ लोगों का जीवन स्तर ऊँचा उठा, सुधारों का एक क्रम आरंभ हुआ, दुनिया के देशों का आपसी संपर्क बढ़ा तो वहीं दूसरी ओर इस क्रांति ने मजदूरों, स्त्रियों एवं बच्चों के शोषण को भी बढ़ावा दिया तथा आगे विश्व को दो विनाशकारी विश्वयुद्ध झेलने के लिए मजबूर कर दिया था।

5.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of the Text)

5.4.1 गौरवपूर्ण क्रांति : पृष्ठभूमि (Glorious Revolution : Background)

गौरवपूर्ण क्रांति 1688 ई. में इंग्लैंड में हुई। यह एक ऐसी क्रांति थी, जिसमें कोई रक्तपात या दंगाा–फसाद नहीं हुई। बहुत ही शांतिपूर्ण तरीकें से शासन–व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ तथा निरकुंश शासन की सदा के लिए समाप्ति हो गई। इसके फलस्वरूप इंग्लैंड में संसद की सर्वोच्चता स्थापित हो गई। इस कारण इस क्रांति को रक्तहीन क्रांति कहा जाता है। इस क्रांति के फलस्वरूप इंग्लैंड में शासन व्यवस्था में गौरवपूर्ण व्यवस्था अस्तित्व में आई। इसलिए इसे गौरवपूर्ण क्रांति भी कहा जाता है। अब इसके बाद शासन व्यवस्था में सम्राट सिर्फ नाममात्र का ही शासक रह गया और राज्य की सभी शक्तियों का प्रयोग संसद द्वारा किया जाने लगा।

कैथोलिक मत का कट्टर अनुयायी जेम्स द्वितीय 1685 ई. में इंग्लैंड का राजा बना था। वह एक अदूरदर्शी एवं अयोग्य शासक था। उसका वास्तविक नाम ड्यूक ऑफ यार्क था। वह अपने भाई चार्ल्स द्वितीय (1660–1685 ई.) की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठते ही उसने कैथोलिक मतों की तरफदारी करना आरंभ कर दिया। उसने कैथोलिक मत के लोगों पर लगे प्रतिबंध को समाप्त कर दिये तथा उच्च पदों में उनको स्थापित करने की प्रक्रिया आरंभ कर दी। उसकी इस नीति से प्रोटेस्टेंट मत के लोग उसके विरूद्ध हो गई। उसने संसद की अवहेलना करना प्रारंभ कर दिया। संसद की परवाह न करते हुए उसने कई कानून रद्द कर दिये तथा निरकुंश शासन स्थापित करने के प्रयत्न किये। उसकी नीतियों से इंग्लैंड की दोनो राजनीतिक पार्टियाँ – टोरी तथा विग तंग आ चुकी थी। इन दोनों दलों के नेताओं ने इंग्लैंड को इस अवस्था से बाहर निकालने के लिए अवसर तलाशने आरंभ कर दिये। उसी समय देश के मुख्य नेताओं ने जेम्स के अत्याचारी शासन से मुक्ति प्राप्त करने के लिए जेम्स की बड़ी पुत्री मेरी तथा उसके पति विलियम को इंग्लैंड का सम्राट बनने के लिए आमंत्रित किया। इस आमंत्रण को टोरी तथा विग पार्टियों के नेताओं ने एक अवसर के रूप में स्वीकार करते हुये उस पर अपने हस्ताक्षर

किये। इस हस्ताक्षर के माध्यम से विलियम को देशवासियों द्वारा पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाया गया। एक नाविक राजदूत एडमिरल हर्बर के द्वारा इसे हालैंड भेजा गया और उसने विलियम के समक्ष यह पत्र प्रस्तुत किया गया। विलियम ने इसे स्वीकार कर लिया। विलियम के लिए भी यह एक अच्छा अवसर था जब वह इंग्लैंड का सम्राट बन कर इंग्लैंड फ्रांस का गठबंधन समाप्त कर सकता था तथा दोनों देशों (इंग्लैंड तथा हॉलैंड) के साधनों का प्रयोग करके लुई चौरहवें की आक्रमणकारी नीतियों से देश को सुरक्षित कर सकता था।

इन्हीं नीतियों के तहत विलियम अपने कुछ साथियों तथा 15 हजार सैनिकों के साथ 5 नवंबर, 1688 ई. को इंग्लैड की टॉरबे नामक बंदरगाह पर पहुँचा। इंग्लैंड के लोगों ने उसका जमकर स्वागत किया। लोगों में परिवर्तन को लेकर पूर्ण उत्साह था। किसी ने भी जेम्स का साथ न दिया। इस परिस्थिति में जब सभी उसके विरूद्ध हो गये तो विवश होकर वह अपनी पत्नी तथा पुत्र के साथ देश छोड़कर फ्रांस भाग गया। वहीं 1710 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

इस प्रकार बिना किसी युद्ध व रक्तपात के एक अभूतपूर्व घटना घटित हुई तथा इंग्लैंड में एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक परिवर्तन हो गया। जेम्स के शासन का अंत हो जाने पर संसद का एक विशेष अधिवेशन बुलाया गया और एक प्रस्ताव पारित किया तथा जिसे अधिकारों का बिल (Bill of Rights) के नाम से जाना जाता है। इसके फलस्वरूप सम्राट की शक्तियाँ सीमित हो गई तथा संसद की सर्वोच्चता स्थापित हो गई। 1688 ई. के इस आमूल–चूल परिवर्तन को इतिहास में गौरवपूर्ण क्रांति के नाम से जाना जाता है।

5.4.2 गौरवपूर्ण क्रांति के कारण (Causes of the Glorious Revolutions)

1685 ई. मे चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के बाद जेम्स द्वितीय इंग्लैंड का राजा बना। संसद ने राजा का शानदार स्वागत किया। लोगों ने राजा से बहुत उम्मीदें लगा रखे थे। संसद ने राजा को जीवन भर के लिये भारी धनराशि की स्वीकृति भी दे दी थी। लेकिन कैथोलिक मत के कट्टर अनुयायी के रूप में उसकी अयोग्यता एवं अदूरदर्शिता नीति से शीघ्र ही लोग असंतुष्ट हो गये तथा केवल तीन वर्ष के पश्चात् ही लोगों द्वारा उसके प्रबल विरोध के कारण राजगद्दी छोड़कर देश से भाग जाना पड़ा। इस प्रकार 1688 ई. में यह क्रांति मुख्य रूप से उसके व्यक्तिगत स्वभाव की हठधर्मिता एवं अनुचित कार्यों का ही परिणाम था। इसके अतिरिक्त इस गौरवपूर्ण क्रांति के पीछे कई कारण रहे, जिसका विवरण निम्न प्रकार है –

(i) जेम्स द्वितीय के स्वभावगत दोष :– ईमानदार एवं पश्चिमी शासक होने के बावजूद उसमें दूरदर्शितापूर्ण नीति का अभाव था। उसमें व्यावहारिक बुद्धि का अभाव था तथा वह स्थिति को जांचने परखने की योग्यता नहीं रखता था। राजा के दैवी अधिकार की विचारधारा को वह खूब महत्त्व देता था। जिद्दी व हठी स्वभाव तथा प्रबल अहंकार के

कारण वह एक के बाद एक भूल करता गया। इस कारण इंग्लैंउ की जनता उसके खिलाफ हो गयी। जिसके फलस्वरूप उसे देश छोड़कर भागना पड़ा और देश में गौरवपूर्ण क्रांति का जन्म हुआ। कार्टक तथा मीर्यज के शब्दों में, "जेम्स द्वितीय जिद्दी, प्रतिशोधी तथा अयोग्य व्यक्ति था, जिसने केवल तीन वर्षों में वह सिंहासन खो दिया जिसे उसके भाई चार्ल्स ने राजनैतिक सूझ–बूझ से स्थिर एवं शक्तिशाली बनाया था।"

(ii) कैथोलिक विरोधियों की नीति का समाप्तिकरण – जेम्स द्वितीय कैथोलिक मत का कट्टर अनुयायी था। वह पोप का प्रबल समर्थन था। अपनी नीतियों के द्वारा उसने कैथोलिक मत को फिर से स्थापित करने का दृढ़ निश्चय कर रखा था। उसने कैथोलिक मत पर लगे प्रतिबंध को हटा दिये तथा उन्हें उच्च पदों पर नियुक्त करना आरंभ कर दिया। इससे प्रोटेस्टेंट लोग जेम्स के विरूद्ध हो गये। उसने संसद की परवाह न करते हुए कई कानून रद्द कर दिये तथा निरकुंश शासन स्थापित करने के प्रयत्न किये। उसने विशेष तौर पर सेना तथा प्रिवी कौंसिल में अनेक खाली स्थानों पर कैथोलिक लोगों को नियुक्त किया। फलतः संसद जेम्स के खिलाफ हो गई। अतः यह भी एक महत्त्वपूर्ण कारण बना गौरवपूर्ण क्रांति का।

(iii) जेम्स की विरोधियों के प्रति दमनकारी नीति – विरोधियों के प्रति जेम्स की अत्यधिक कठोर नीति ने भी उसे देश की जनता में अप्रिय कर दिया। उसके प्रति विद्रोह करने वाले ड्यूक ऑफ आरगिल तथा ड्यूक ऑफ मोनमांऊथ दोनों को मृत्यु–दण्ड के द्वारा समाप्त कर दिया गया। उसने अपने विद्रोहियों के समर्थकों को मृत्यु–दण्ड व देश–निकाला के द्वारा पूरी तरह से अपने रास्ते से हटाने का कठोर से कठोर नियम बना रखा था। परिणामतः देश के अधिकांश लोग उसके विरूद्ध हो गये और जनता की इस भावना ने क्रांति को जन्म देने में सहायक हुआ।

(iv) शाही अधिकारों का गलत प्रयोग – जब जेम्स को संसद द्वारा पारित एक्ट को रद्द करने में संसद का सहयोग प्राप्त नहीं हुआ तो उसने संसद की परवाह किये बिना अपने अधिकारों का मनमाना प्रयोग करने की योजना बनाई उसने राजा के दैवीय अधिकार की विचारधारा को सामने रखते हुये यह घोषणाकिया कि वह किसी भी कानून को रोक सकता है अथवा स्थगित कर सकता है। इस प्रकार उसके कानूनों के उल्लंघन की नीति ने देश में निरकुंश शासन स्थापित कर दिया। जिससे जनता उसके खिलाफ हो गई।

(v) स्थायी सेना में वृद्धि – जेम्स ने अपने शासन–काल के आरंभ में हुए विद्रोहों का कठोरतापूर्वक दमन के लिए एकदम से स्थायी सेना की संख्या 6 हजार से बढ़ाकर 30 हजार कर दी थी। उसने लंदन के निकट काफी संख्सा में सैनिकों को तैनात कर दिये ताकि जनता उसके खिलाफ कुछ भी बोलने की हिम्मत न कर सके। उसके इस प्रकार की कार्यवाही से जनता भड़क गई और उनके मन में यह विश्वास हो गया कि सम्राट लोगों की स्वतंत्रता को समाप्त करने पर तुला है। इस कारण जनता ने क्रांति को अपना समर्थन दिया।

(vi) कोर्ट ऑफ हाई कमिशन को फिर से अस्तित्व में लाना – 1641 ई. में इंग्लैंड की संसद ने जिस अदालत को समाप्त कर दिया था, उसे जेम्स ने गैर–कानूनी तरीके से फिर से स्थापित कर दिया। उसने इसका नाम बदल कर 'धार्मिक कमीशन की अदालत' (Court of Ecclesiastical) कर दिया था। इसका उद्देश्य चर्च पर उसका अपना प्रभुत्व स्थापित करना था। उसके इस कदम ने भी लोगों को क्रांति के लिए उकसाया।

(vii) फ्रांस से मित्रता की नीति – फ्रांस का सम्राट लुई–चौदहवाँ (Louis XIV) कैथोलिक मत का कट्टर अनुयायी था, जो जेम्स का चचेरा भाई था। जेम्स उससे प्रभावित था। वह स्वंय भी कैथोलिक मत का कट्टर अनुयायी था। फ्रांस में उसके द्वारा प्रोटैस्टेंटों को धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार से वंचित कर दिया गया था। इस कारण इंग्लैंड की प्रोटैस्टेंट जनता फ्रांस उसे उसकी मित्रता से सशंकित थे। फलतः इंग्लैंड के लोग जेम्स को भी लुई चौदहवें की तरह देश का विरोधी समझने लगे और क्रांति के लिए तैयार हो गये।

(viii) धार्मिक स्वतंत्रता की घोषणा – जेम्स की धार्मिक स्वतंत्रता की घोषणा की नीति पूरी तरह से कैथोलिकों को आगे बढ़ाने उन्हें स्वतंतत्रा देने व प्रोटेस्टेंटों को अवरूद्ध करने पर आधारित थी। इस कारण देश की जनता खासकर प्रोटेस्टेंट जनता उसके खिलाफ हो गई।

इस प्रकार 1688 ई. की इंग्लैंड की गौरवपूर्ण क्रांति के कई कारण थे। उपर्युक्त कारणों के अलावा जेम्स की स्कॉटलैंड तथा आयरलैंड के कैथोलिक को विशेष सुविधा वाली नीति ने भी इस क्रांति को बढ़ावा दिया। जेम्स के धार्मिक स्वतंत्रता की घोषणा के आदेश को जिन पादरियों ने मानने से इंकार कर दिया उसमें सात पर मुकद्दमा चलाना और उनका अदालत द्वारा निर्दोष मानकर रिहा करना भी क्रांति को आगे बढ़ाने में सहायक हुआ। परंतु क्रांति का तात्कालिक कारण बना जेम्स के पुत्र का जन्म।

इंग्लैंड के लोग कुछ समय और जेम्स की नीतियों को सहन कर लेते परंतु जेम्स के घर उत्तराधिकारी के रूप में पुत्र जन्म से लोग संशकित हो गये। कहीं आगे फिर हमें इन्हीं नीतियों के अंतर्गत शासित न होना पड़े।

5.4.3 गौरवपूर्ण क्रांति : महत्त्व तथा प्रभाव (Glorious Revolutions : Significance and Impact)

1688 ई. की क्रांति का न केवल इंग्लैंड, बल्कि विश्व इतिहास में एक नये युग के सृजन के रूप में साबित हुआ। इसने ब्रिटेन के सम्राट की शक्तियों एवं अधिकारों को सीमित कर दिया। राजा के दैवीय अधिकार के सिद्धांतों को समाप्त करके संसद की सर्वोच्चता को स्थापित कर दिया। इस क्रांति के महत्त्व को निम्न बिंदुओं द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं –

(i) इस क्रांति ने ब्रिटेन के स्टूअर्ट राजाओं द्वारा अपनाये गये राजपद के दैवी अधिकारों के सिद्धांत का अंत कर दिया। इसके स्थान पर अब यह मान्यता स्थापित हुई कि राजपद का आधार सम्राट का शाही परिवार में जन्म लेना नहीं अपितु इसका वास्तविक स्रोत जनता तथा देश की संसद है।

(ii) 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति के फलस्वरूप सम्राट की निरकुंश राजतंत्र का अंत भी हो गया। जेम्स के गद्दी पर से हटने के बाद बिल ऑफ राइट्स व कई अन्य एक्टों द्वारा विलियम तथा मेरी पर अनेकों प्रतिबंध लगा दिये। सम्राट के अधिकार को सीमित करके निरकुंश राजतंत्र का इस प्रकार अंत कर दिया गया।

(iii) 1688 ई. की क्रांति के फलस्वरूप बहुत दिनों से चले आ रहे संवैधानिक संघर्ष को समाप्त कर दिया। जेम्स द्वितीय फ्रांस भाग गया। उसके स्थान पर शासन में आये मेरी तथा विलियम पर संसद द्वारा अनेकों प्रतिबंध लगा दिये। अब संसद के बिना राजा किसी कानून को न तो स्थगित कर सकता था तथा न ही लागू होने से रोक सकता था। इस प्रकार इस क्रांति के द्वारा संसद की सर्वोच्चता की स्थापना हुई जो विश्व के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुआ।

(iv) इस क्रांति के द्वारा जहाँ एक तरफ कानून का शासन स्थापित हुआ वहीं दूसरी ओर इसने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सुरक्षित कर दिया। देश की न्यायपालिका की सर्वोच्चता तथा स्वतंत्रता स्थापित हो गई। कानून की दृष्टि से सभी लोगों को समान समझा जाने लगा। नागरिक स्वतंत्र रूप से अपने विचार रख सकते थे। प्रैस पर लगे सभी प्रतिबंध हटा दिये गये तथा प्रशासन एवं सम्राट की आलोचना करना अब कोई अपराध नहीं था।

(v) 1688 ई. की क्रांति ने इंग्लैंड में स्टूअर्ट शासकों का काफी लंबे समय से परेशान कर रहें धार्मिक प्रश्न का भी निपटारा कर दिया। क्रांति के बाद कानून में साफ तौर से यह उल्लिखत कर दिया गया कि किसी भी कैथोलिक धर्मावलंबी को इंग्लैंड की गद्दी पर बैठने का अधिकार नहीं होगा। संसद द्वारा कानून पास करने यह प्रावधान कर दिया गया कि कैथोलिक लोगों को छोड़कर शेष सभी लोगों को पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता होगी।

(vi) 1688 ई. की क्रांति के द्वारा इंग्लैंड की विदेशी नीति में भारी परिवर्तन आया। क्रांति के बाद संसद और सम्राट के विरोध का अंत हो गया। इसके फलस्वरूप इंग्लैंड में अब राष्ट्रीय एकता तथा शांति की स्थापना हो गई। परिणामतः विदेश नीति राष्ट्र–हित के अनुरूप संचालित होने लगी। जेम्स द्वितीय के काल में इंग्लैंड व फ्रांस की जो मित्रता थी उसका अब विलियम के शासन बनने से अंत हो गया। इस प्रकार इंग्लैंड फ्रांस की बढ़ती शक्ति को रोकने तथा विदेशी क्षेत्र में अपने आपको प्रतिष्ठित करने में सफल हो सका।

इस प्रकार 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति का विश्व इतिहास में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा।

कुछ विद्वान व इतिहासकार इस क्रांति के महत्त्वपूर्ण होने को लेकर प्रश्न भी उठाते हैं। वे कहते हैं कि इस क्रांति में जन सामान्य की भागीदारी की अपेक्षा धनी जमींदारों व प्रभावशाली वर्गों का अधिक रहा। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस क्रांति ने इंग्लैंड का शासन–प्रबंध कुछ धनी टोरी तथा विग नेताओं के हाथ में सौंप दिया। इससे साधारण जनता को इतना कुछ प्राप्त नहीं हुआ। इससे न तो जन–साधारण को वोट देने का अधिकार ही मिला और न ही पुरानी भ्रष्ट चुनाव प्रणाली में कोई प्रभावी परिवर्तन हुआ। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि इस क्रांति के कारण इंग्लैंड में लोकतंत्र की स्थापना नहीं हुई। इसके अतिरिक्त इस क्रांति के कारण स्कॉटलैंड के अल्पसंख्यक तथा आयरलैंड के बहुसंख्यक कैथोलिक लोगों के लिए मुसीबतों तथा दुखों का दरवाजा खोल दिया। परंतु इन आलोचनाओं के बावजूद इस सच्चाई से नहीं मुकरा जा सकता कि 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति इंग्लैंड के इतिहास में एक अति महत्त्वपूर्ण घटना थी। इसने इंग्लैंड में निरकुंश शासन का अंत कर दिया और संवैधानिक सरकार की स्थापना का मार्ग प्रशस्त कर दिया। अतः यह क्रांति इंग्लैंड के संवैधानिक विकास के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुआ।

5.5 प्रगति समीक्षा (Check your Progress)

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)

(i) .... ने वैज्ञानिक क्रांति को जन्म दिया।

(ii) औद्योगिक क्रांति व कृषि क्रांति .... का परिणाम था।

(iii) औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम .... स्थान पर हुई थी।

(iv) इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ लगभग .... में हो चुका था।

(v) 18 वीं सदी में घरेलु पद्धति के स्थान पर जो एक नई व्यवस्था अस्तित्व में आ रही थी उसे ....कहा जाता है।

(vi) 18 वीं सदी में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप कृषि क्षेत्र में बाड़ा आंदोलन .... देश में आरंभ हो गया था।

(vii) 1785 ई. में .... ने शक्ति से चलने वाले करघे का आविष्कार किया।

(viii) 1793 ई. में .... अमेरिकी ने कपास ओटंने की मशीन का आविष्कार किया।

(ix) सन् 1814 में .... ने भाप के इंजन का आविष्कार किया।

(x) इंग्लैंड की गौरवपूर्ण क्रांति .... ई. में हुई थी।

(ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न (True-False based Questions)

(i) वैज्ञानिक क्रांति के फलस्वरूप सर्वप्रथम कृषि व औद्योगिक क्रांति इंग्लैंड में शुरू हुई। ( )

(ii) बदल–बदल कर फसल उगाने की वैज्ञानिक पद्धति जिसने कृषि क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान दिया, वह एक फ्रांसीसी विचारक चार्ल्स विस्काऊंट टाऊनशैंड का देन था। ( )

(iii) वैज्ञानिक तरीकों से कृषि करने के लिए क्रांतिकारी विचारक आर्थट यंग के प्रयासों से इंग्लैंड की सरकार ने अनेक बाड़बन्दी अधिनियम पास किए। ( )

(iv) कृषि क्रांति शब्द का प्रयोग, सर्वप्रथम लेनिन ने अपनी पुस्तक दास कैपिटल में किया था। ( )

(v) वैज्ञानिक क्रांति के फलस्वरूप औद्योगिक क्रांति के दौरान सर्वप्रथम इंग्लैंड में जॉन मेटकाफ ने लुक (तारकोल) तथा छोटे पत्थरों से पक्की सड़क बनाने की विधि का ईजाद किया। ( )

(vi) इंग्लैंड के बाद औद्योगिक क्रांति का प्रकार सर्वप्रथम फ्रांस व जर्मनी में हुआ था। ( )

(vii) वैज्ञानिक, खोजों व आविष्कारों के फलस्वरूप जो औद्योगिक क्रांति हुई इसने कुटीर उद्योगों का पतन करके बेकारी की समस्या को जन्म दिया। ( )

(viii) औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप मजदूरों को शोषण से बचाने के लिए मजदूर संघ की स्थापना का प्रथम प्रयास रॉबर्ट ओवन द्वारा किया गया था। ( )

(ix) 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति के समय इंग्लैंड का सम्राट चार्ल्स द्वितीय था। ( )

(x) 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति को रक्तहीन क्रांति के नाम से भी जाना जाता है। ( )

5.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary)

- वैज्ञानिक खोजों व आविष्कारों के फलस्वरूप तकनीकी परिवर्तन की प्रक्रिया पश्चिमी यूरोप में उस समय शुरू हुई जब उत्पादन में आधुनिक उपकरणों एवं औजारों का प्रयोग आरम्भ हुआ।
- प्रसिद्ध इतिहासकार ऑरनाल्ड टायनबी (Arnold Toynbee) ने 1884 में प्रकाशित अपनी पुस्तक लेक्चर्स ऑफ द इण्डस्ट्रियल रिवोल्यूशन (Lecturers on the Industrial Revolution) में तकनीकी परिवर्तनों को औद्योगिक क्रांति की संज्ञा दी है।
- औद्योगिक क्रांति की शुरूआत सबसे पहले इंग्लैंड में हुई।

- इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ लगभग 1750 ई. में हो चुका था।
- औद्योगिक क्रांति ने दुनिया भर में जीवन पद्धति व विचार में परिवर्तन कर दिया।
- औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप घरेलू पद्धति का स्थान कारखाना पद्धति ने ले लिया।
- औद्योगिक क्रांति के दौरान वस्तुओं के उत्पादन में मनुष्यों और जानवरों द्वारा किये जाने वाले कार्य का कुछ भाग मशीनों द्वारा होने लगा। अतः औद्योगिक क्रांति मशीनी युग का प्रारंभिक दौर था।
- 18 वीं सदी में इंग्लैंड ने औद्योगिक क्रांति के लिए परिस्थितियाँ बहुत अनुकूल थीं।
- इंग्लैंड के पास लोहा और कोयला जैसे प्राकृतिक संसाधन काफी मात्रा में मौजूद थे, जो उद्योगों के विकास के लिए आवश्यक थे।
- औद्योगिक क्रांति के दौरान हुए आविष्कार –

आविष्कार	आविष्कार	वर्ष
तेज चलने वाला शटल	जॉन	1733 ई.
स्पिनिंग जेनी	जेम्स हारग्रीब्ज	1765 ई.
स्पिनिंग जेनी (पानी की शक्ति से चालित)	रिचर्ड आर्कराईट	1767 ई.
स्पिनिंग म्यूल	क्राम्पटन	1776 ई.
घोड़ा द्वारा चलाए जाने वाले करघा	कार्टराइट	1776 ई.
कपास ओटने की मशीन	एली हिव्टनी	1793 ई.
भाप से चलने वाले इंजन	जॉर्ज स्कीफेंसन	1814 ई.
सेफ्टी लैम्प	हम्फ्री डेवी	1815 ई.

- औद्योगिक क्रांति के दौरान वस्तुओं के उत्पादन में मनुष्यों ओर जानवरों द्वारा किये जाने वाले कार्य का कुछ भाग मशीनों द्वारा होने लगा। अतः औद्योगिक क्रांति मशीनी युग का प्रारंभिक दौर था।

- 18 वीं सदी में इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के लिए परिस्थितियाँ बहुत अनुकूल थी।
- इंग्लैंड के पास लोहा और कोयला जैसे प्राकृतिक संसाधन काफी मात्रा में मौजूद थे, जो उद्योगों के विकास के लिए आवश्यक थे।
- औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप कपड़ा उद्योग, कोयला उद्योग, लौह उद्योग के क्षेत्र में वैज्ञानिक खोजों एवं आविष्कारों के कारण क्रांतिकारी परिवर्तन आये।
- अठारहवीं एवं उन्नीसवीं शताब्दियों में क्रांति के दौरान यातायात एवं संचार के साधनों का बहुत विकास हुआ।
- यूरोप में उपयुक्त प्रकार की सड़कों का निर्माण सर्वप्रथम फ्रांस में कोल्बर्ट द्वारा किया गया था।
- आधुनिक पक्की सड़कों के निर्माण का श्रेय इंग्लैंड के आविष्कारों को जाता है।
- जॉन मेटकाफ (John Metcalt, 1717-1810) ने सर्वप्रथम लुक (तारकोल) तथा छोटे पत्थरों से पक्की सड़क बनाने की विधि का ईजाद किया।
- अधिक टिकाऊ और उपयोगी पक्की सड़कों के बनाने की तकनीक का विकास स्कॉटलैंड के मैकडम (John L. Mac. Adam) तथा थॉमस टेलफोर्ड (Thoimas Teltord) ने किया था।
- 1830 ई. में मैनचेस्टर से लिवरपुल तक पहली रेल पटरी बिछाई गयी थी।
- 1837 ई. में मोर्स (Morse) ने तार का और 1876 ई. में बेल (Bell) ने दूरभाष (Telephone) का आविष्कार किया।
- इंग्लैंड के पश्चात् औद्योगिक क्रांति का फैलाव यूरोप के अन्य देशों – बेल्जियम, फ्रांस, जर्मनी, इटली, रूस आदि देशों में हुआ।
- औद्योगिक क्रांति ने विश्व के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा बौद्धिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। इससे दुनिया पर जहाँ कुछ अच्छे प्रभाव पड़े, वहीं पर कुछ बुरे प्रभाव भी देखने को मिलते हैं।
- क्रांति ने कुटीन उद्योग का पतन कर दिया। जिसके फलस्वरूप बेकारी की समस्या उत्पन्न हो गई।
- औद्योगिक क्रांति ने यूरोपीय राष्ट्रों के बीच एशिया और अमेरिका तथा अफ्रीका में आर्थिक साम्राज्यवाद की नीति के तहत अपने–अपने उपनिवेश स्थापित करने की होड़ मचा दी। इस कारण इन देशों के बीच ईर्ष्या तथा संघर्ष की भावना उत्पन्न हो गई। 1914 ई. का प्रथम विश्व युद्ध इसी ईर्ष्या का परिणाम था।
- औद्योगिक क्रांति ने समाज को पूँजीपतियों व मजदूरों में बाँट दिया। एक तरफ जहाँ जीवन स्तर में उन्नति हुई तो दूसरी ओर मजदूरों स्त्रियों तथा बच्चों के शोषण के युग का भी आरंभ हो गया।
- औद्योगिक क्रांति की तरह कृषि क्रांति भी सर्वप्रथम इंग्लैंड में आई।

- वैज्ञानिक खोजों व आविष्कारों के फलस्वरूप अठारहवीं शताब्दी के अंत में खेतों की बाड़बन्दी करने, फसलों को बदल–बदल कर बोने, भूमि को उपजाऊ बनाने, कृषि यंत्रों में परिवर्तन करने तथा पशुओं की नस्ल को सुधारने पर बल दिया गया। फलतः कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि हुई। कृषि क्षेत्र इन तकनीकों को प्रयोग के फलस्वरूप हुए सुधारों व परिवर्तनों को समग्र रूप से कृषि क्रांति का नाम दिया गया।
- कृषि क्रांति शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तक कार्ल मार्क्स ने अपनी पुस्तक 'दास कैपिटल' में किया।
- इंग्लैंड के बाद कृषि क्रांति का प्रसार यूरोप के अन्य देशों – फ्रांस, जर्मनी, डेनमार्क, बेल्जियम, हॉलैंड, इटली, स्पेन, रूस आदि देशों में हुआ।
- इंग्लैंड में हुई 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति को रक्तहीन क्रांति के नाम से जाना जाता है।
- गौरवपूर्ण क्रांति के समय इंग्लैंड का सम्राट जेम्स द्वितीय था।
- जेम्स द्वितीय कैथोलिक मत का कट्टर अनुयायी था।
- 1673 ई. में इंग्लैंड की संसद ने टेस्ट एक्ट पास किया था जिसके अनुसार कोई भी कैथोलिक मत का अनुयायी सरकारी पदवी प्राप्त नहीं कर सकता था।
- जेम्स ने एक कैथोलिक विरोधी एक्ट को रद्द करने का निश्चय किया। परंतु संसद ने जेम्स का विरोध किया जिससे क्रोधित होकर जेम्स ने संसद भंग कर दी।
- जेम्स ने स्कॉटलैंड तथा आयरलैंड के कैथोलिकों को विशेष सुविधायें प्रदान की थी।
- गौरवपूर्ण क्रांति का तात्कालिक कारण जेम्स के पुत्र का जन्म को माना जाता है।
- जेम्स के समय इंग्लैंड की दो प्रमुख पार्टियां – टोरी तथा विग थी।
- गौरवपूर्ण क्रांति के परिणामस्वरूप मेरी तथा विलियम को इंग्लैंड की गद्दी संयुक्त रूप से प्राप्त हुई।
- क्रांति के बाद सम्राट की शक्तियों को सीमित करने के लिए इंग्लैंड की संसद के एक विशेष अधिवेशन में एक महत्त्वपूर्ण बिल पारित किया गया जो बिल ऑफ राइट्स (Bill of Rights) के नाम से प्रसिद्ध है।
- Bill of Rights, 1689 को इंग्लैंड के इतिहास में एक महान् चार्टर माना जाता है जिसकी तुलना 'मैइनाकार्टा' से की जाती है।
- Bill of Rights को इंग्लैंड के नागरिकों की स्वतंत्रता का एक महत्त्वपूर्ण प्रलेख समझा जाता है।
- 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति को प्रसिद्ध इतिहासकार मेरियट तथा एक्टन (Marriott and Acton) ने प्रतिक्रियावादी क्रांति के नाम से संबोधित किया है जिसने प्राचीन संस्थाओं को सुरक्षित कर दिया।

- मैकाले (Macculay) ने 1688 ई. की क्रांति के स्वरूप पर विचार करते हुए कहा कि यह एक 'उदार आन्दोलन' था। जिसने देशवासियों की अत्याचारी स्टूअर्ट सम्राटों की निरंकुशता से रक्षा की थी।
- इतिहासकार ट्रेविलियन (Trevelyam) ने इस क्रांति का 'गौरवपूर्ण क्राति' का नाम दिया है। इसके पीछे इनका तर्क यह था कि यह एक बिना रक्तपात, गृहयुद्ध के शांतिपूर्ण बदलाव वाला आंदोलन था तथा यह क्रांति देश के लोगों की इच्छाओं तथा आशाओं पर आधारित थी।
- बर्क (Burke) ने इस क्रांति पर विचार करते हुए कहा कि यह घटना हिंसक क्रांति नहीं लाई अपितु इसने इसे टाल दिया।
- 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति ने ब्रिटेन के स्टूअर्ट राजाओं द्वारा अपनाये गये राजपद के दैवी अधिकारों के सिद्धांत का अंत कर दिया।
- इस क्रांति के द्वारा इंग्लैंड में संसद की सर्वोच्चता की स्थापना हुई।
- 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति के प्रमुख कारण थे – जेम्स द्वितीय के व्यक्तिगत दोष, शाही अधिकारों का दुरूपयोग, विरोधियों के प्रति कठोर नीति, कैथोलिक विरोधी टेस्ट एक्ट को रद्द करने के यत्न, स्थायी सेना में बढ़ोतरी, सरकारी पदों पर कैथोलिकों की नियुक्ति, फ्रांस के साथ जेम्स की दोस्ती, चर्च पर प्रभुत्व स्थापना की जेम्स की नीति, स्कॉटलैंड तथा आयरलैंड के प्रति जेम्स की नीति, धार्मिक स्वतंत्रता की घोषणा, सात पादरियों पर मुकदमा आदि।
- क्रांति का प्रभाव तथा महत्त्व थे – राजा के दैवीय अधिकारों के सिद्धांत का अंत, सम्राट का निरंकुशता का अंत, राजतंत्र का स्थायी होना, संसद की सर्वोच्चता की स्थापना, विधि का शासन तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता, विदेशी नीति में परिवर्तन, धार्मिक प्रश्न का निपटारा आदि।
- ट्रेविलियन ने 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति के संबंध में कहा कि – 1688 ई. की क्रांति ने राज को कमजोर कर दिया परंतु ताज अथवा राजा की संस्था को मजबूत कर दिया।

5.7 संकेत–सूचक (Key Words)

- क्रांति – आमूल–मूल परितर्वन, बड़ा भारी बदलाव व्यापक परिवर्तन
- अध्ययनोपरांत – अध्ययन के बाद
- कैथोलिक – ईसाईयों की एक शाखा जो रोम के वैटिकन नगर के पोप को अलग, धर्माध्यक्ष मानते हैं।
- प्रोटेस्टेट – ईसाई धर्म की दूसरी मुख्य शाखा जिसके अनुयायी पोप के धार्मिक नेतृत्व को नहीं मानते।

- निरंकुश – जिस पर कोई प्रतिबंध न हो (बिना किसी रोक या बंधन के स्वच्छंद/मनमाना आचरण।
- तकनीक – नवीन वस्तुओं का उत्पादन।
- खोज – पहले से मौजूद का पता लगाना।
- आविष्कार – प्रयोग करके कुछ नया बनाने को।
- बाड़बन्दी – घेरा।
- सामंतवादी प्रथा – मध्ययुगीन युग में इंग्लैंड व यूरोप में फैली प्रथा जिनमें शीर्ष पर राजा होता था तथा उसके अधीनस्थ अन्य शासक वर्ग होते थे। इसमें सबसे निम्न स्तर पर किसान या दास होते थे।
- उपनिवेश – किसी पूर्ण प्रभुसत्ता संपन्न राज्य/देश द्वारा किसी और देश को अपना अधीनस्थ बना लेना।
- मैग्नाकार्टा (Magna Carta) – मानवाधिकार से संबंधित इंग्लैंड के इतिहास में उदारवाद की उत्पत्ति एवं विकास में 1215 ई. के मैग्नाकार्टा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका संबंध राजा जॉन से है।

5.8 स्वं–मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self Assessment Test (SAT)

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Based Questions)

(i) कृषि क्रांति सर्वप्रथम .... देश में आई।

(क) फ्रांस (ख) इंग्लैंड (ग) स्पेन (घ) चीन

(ii) औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम .... देश में आई।

(क) इंग्लैंड (ख) फ्रांस (ग) बेल्जियम (घ) अमेरिका

(iii) औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम .... उद्योग से आरंभ हुई।

(क) कपड़े का उद्योग (ख) लोहे तथा कोयले का उद्योग

(ग) चमड़े का उद्योग (घ) चीनी का उद्योग

(iv) भाप इंजन सबसे पहले .... ने तैयार किया।

(क) जेम्सवाट (ख) हेनरी कोर्ट (ग) न्यूकॉमन (घ) अब्राहम डर्बी

(v) इंग्लैंड के पश्चात् औद्योगिक क्रांति का प्रसार .... देश में हुआ।

(क) फ्रांस (ख) बेल्जियम (ग) हॉलैंड (घ) स्पेन

(vi) ड्रिल का आविष्कार .... ने किया।

(क) टाऊनशैड (ख) चॉर्ल्स कोलिंग

(ग) जेर्यो टुल (घ) रॉबर्ट नेक्वेल

(vii) कृषि क्रांति शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम .... द्वारा किया गया।

(क) आर्थक यंग (ख) कार्ल मॉर्क्स

(ग) रोबर्ट बेस्टर्न (घ) जार्ज तृतीय

(viii) कृषि क्रांति से पूर्व यूरोपीय देशों में कृषि में क्या दोष थे/था।

(क) खेतों के बिखरे तथा छोटे होना

(ख) खेती के ढंग एवं औजार प्राचीन ढंग के होना

(ग) पशुओं की नस्ल में कोई सुधार न होना

(घ) ये सभी

(ix) कृषि क्रांति का पैगम्बर किसे माना जाता है ?

(क) कार्ल मार्क्स (ख) टाऊनशैंड

(ग) एडम स्मिथ (घ) आर्थर यंग

(x) बदल–बदल कर फसलें उगाने की विधि में महत्त्वपूर्ण योगदान .... ने दिया।

(क) चार्ल्स कोलिंग (ख) जार्ज तृतीय

(ग) ड्यूक ऑफ बैंडफोर्ड (घ) टाऊनशैंड

(ख) निबंधात्मक/दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Essay/Long Answer based Questions)

1. वैज्ञानिक क्रांति की पृष्ठभूमि का वर्णन करें।

   (Explain the background of Scientific Revolution)

2. वैज्ञानिक क्रांति से उत्पन्न कृषि क्रांति तथा औद्योगिक क्रांति का वर्णन करें।

   (Explain Agricultural and Industrial Revolution producing through Scientific Revolution)

3. वैज्ञानिक क्रांति के प्रभाव/परिणाम को बताये।

   (Point out the impact of Scientific Revolution.)

4. गौरवपूर्ण क्रांति के कारण व महत्व को बताये।

   (Point out the causes and impact of Glorious Revolution.)

(ग) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer based Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (Write Short Notes on the following)

(i) कृषि क्रांति (Agricultural Revolution)

(ii) औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution)

(iii) गौरवपूर्ण क्रांति (Glorious Revolution)

(iv) स्पिनिंग जैनी (Spinning Jenny)

(v) आर्थर यंग (Arther Young)

(vi) गौरवपूर्ण क्रांति का स्वरूप (Nature of Glorious Revolution)

(vii) कॉटन जिन (Cotton Gin)

(viii) गौरवपूर्ण क्रांति की घटनाएँ (Events of Glorious Revolution)

(ix) जैम्स द्वितीय (James II)

(x) कैथोलिक व प्रोटैस्टेंट (Catholic & Protestant)

5.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check Your Progress)

5.5 (क) उत्तर :–

(i) वैज्ञानिक खोजों एवं आविष्कारों (ii) वैज्ञानिक क्रांति (iii) इंग्लैंड (iv) 1750 ई.

(v) कारखाना पद्धति (vi) इंग्लैंड (vii) कार्टराइट (viii) एली ह्विटनी

(ix) जॉर्ज स्टीफेंसन (x) 1688 ई.

5.5 (ख) उत्तर :–

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) असत्य

(v) सत्य (vi) असत्य (vii) सत्य (viii) सत्य

(ix) असत्य (x) सत्य

5.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ (References)

- आधुनिक विश्व का इतिहास
  डॉ. ए. सी. अरोड़ा व
  डॉ. आर. एस. अरोड़ा 2007
  Pardeep Publications, Jalandhar
- आधुनिक विश्व : डॉ. गोपाल प्रशाद
  New Edition
  Luxmi Publishing House
  Railway Road Rohtak
- संक्षिप्त इतिहास (NCERT सार)
  बर्णवाल महेश कुमार
  Cosmos Publication
  Mukherjee Nagar, Delhi – 110009

B.A. IIIrd Year SEMESTER-Vth	
Course Code : HIST 302	**Author : डॉक्टर सुखवीर सिंह**
LESSON-6	**Updated : Mohan Singh Baloda**
कृषि एवं औधोगिक क्रांति (Agricultural and Industrial Revolution)	

अध्याय –संरचना (Learning Objectives)

6.1 अधिगम उद्धे"य (Lesson Structure)

6.2 परिचय (Introduction)

6.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main Body of the Text)

6.3.1 कृषि क्रांति के उदय के कारण (Reasons for the rise of the Agricultural Revolution)

6.3.2 इंग्लैंड में कृषि क्रांति (Agricultural Revolution in England)

6.3.3 प"चमी यूरोप मे कृषि क्रांति का प्रसार

6.3.4 कृषि क्रांति का प्रभाव (Impact of Agricultural Revolution)

6.4 विषय–वस्तु का पुनः प्रस्तुतिकरण (Further Main Body of the Text)

6.4.1 ओधोगिक क्रांति (Industrial Revolution)

6.4.2 ओधोगिक क्रांति के उदय के कारण (Reasons for the Rise of the Industrial Revolution)

6.4.3 इंग्लैंड में ओधोगिक क्रांति का प्रसार (Spread of Industrial Revolution in England)

6.4.4 प"चमी यूरोप में औधोगिक क्रांति का प्रसार

6.4.5 औधोगिक क्रांति के प्रभाव (Impact of Industrial Revolution)

6.5 प्रगति –समीक्षा (Check Your Progress)

6.6 सारां"ा (Summary)

6.7 संकेतक शब्द (Keywords)

6.8 स्वंय –मूल्यांकन परीक्षा (Self Assessment Test)

6.9 प्रगति –समीक्षा हेंतु प्र"नोतर (Answers to Check Your Progress)

6.10 संदर्भ/सहायक अध्ययन सामग्री (Refrences/Suggested Readings)

6.1 अधिगम उद्दे"य :– अध्याय 'कृषि –क्रांति एवं औधोगिक क्रांति' मे हम युरोप में 18वीं शताब्दी से कृषि और व्यावसायिक उत्पादन के क्षेत्र में तकनीक के प्रयोग की शुरूआत और व्यावसायिक उत्पादन के औधोगिक उत्पादन में परिवर्तन की गहन समीक्षा करेंगें । इस अध्याय के अध्ययन के उद्धे"य निम्नलिखित हैः–

- यूरोप मे कृषि क्षेत्र की स्थिति
- 18वीं संदी में कृषि क्षेत्र मे तकनीक का बढता प्रयोग
- इग्लैड मे कृषि क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तनो का अध्ययन
- औधोगिक क्रांति का उद्भव
- औधोगिक क्रांति के उदय के लिए उतरदायी कारण
- इग्लैड में औधोगिक क्रांति क उदय
- यूरोप में औधोगिक क्रांति का प्रसार
- औधोगिक क्रांति के प्रभावों का अध्ययन करना
- यूरोप मे कृषि–क्रांति एवं औधोगिक क्रांति का महत्व जानना

परिचय :– पुनर्जागरण आंदोलन के प"चात् यूरोप में सकारात्मक वातावरण बन गया था। धर्म सुधार आंदोलन ने भी लोगों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाने मे सहायता दी। व्यापार और वाणिजय में हुई प्रगति

कं फलस्वरूप इग्लैड, यूरोप मे सर्वाधिक समृद्ध राष्ट्र बन गया था। 1588 ई0 मे स्पेनि”ा आर्मेडा की पराजय के प”चात् वि”व के सभी महासागरों ब्रिटि”ा जल–सेना को सर्वश्रेष्ठता प्रमाणित हो गई थी। 18वीं शताब्दी के उतरार्ध में इग्लैंड के कृषि के क्षेत्र में तकनीक का प्रयोग प्रांरभ हुआ। नगरों की समृद्धता का लाभ कृषि–क्षेत्र को मिला और इन नगरों के समृद्ध व्यापारियों और कुलीनो ने कृषि –क्षेत्र में निवे”ा करना शुरू कर दिया। कृषि –क्षेत्र मे व्यापक परिवर्तनों का दौर प्रांरभ हुआ। इन परिवर्तनों को क्राति का नाम इसलिए दिया गया क्योकि ये परिवर्तन अभूत पूर्व थे और इनका प्रभाव व्यापक था।

18वीं सदी से ईग्लैंड की जनसंख्या मे काफी वृद्धि हो रही थी। अतः उत्पादन मे वृद्धि बढती हुई जनसंख्या की आव”यक्ताओं की पूर्ति के लिए भी आव”यक थी। कृषि–कांति के फलस्वरूप कृषि के ढंगो में बडा बदलाव हुआ। कृषि यंत्रों का प्रयोग बड गया। कृषि क्रांति के शीघ्र ए”चातृ औधौगिक क्रांति के लिए माहौल बन गया। 19वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही नए आविष्कारों के कारण उत्पादन के तौर तरीकों मे व्यापक बदलाव शुरू हो गया। कृषि क्र्रांति की तरह औधौगिक क्रांति भी इग्लैड मे हुई और धीरे–धीरे पूरे पि”चमी यूरोप में फैल गई। ईग्लैंड में इन क्र्रांतियों क प्ररंभ होने क लिए आव”यक ढांचा तैयार हो गया था। इग्लैड में हुए इन परिवर्तनों के लिए जरूरी सभी सुविधाएं जैसे पूंजी की उपलब्धता, कच्चे माल की सुलभता, परिवहन के साधन, तकनीकी जानकारी का प्रश्रय आदि सभी उपलब्ध थे। ईग्लैंड मे अन्य यूरोपीय दे”ाों की अपेक्षा वैचारिक स्वतंत्रता भी थी। इस प्रकार कृषि और उधोग के क्षेत्र में अभूतपूर्व पनिर्वनत हुए। ये परिवर्तन बहुत तेजी से हुए थे। इसलिए इन्हों क्र्रांति का नाम दिया गया। कृषि और अधोग दौनो की ही क्षेत्रो में परिवर्तनों का आधार नए और बडें आविष्कार थे। इन आविष्कारों के फलस्वरूप ही कृषि क्रांति औधौगिक क्रांति के लिए मार्ग प्र”ास्त हुआ था।

6.3 विशय – वस्तु के मुख्य बिन्दु

अध्याय के इस भाग में कृषि–क्र्रांति से संबंधित सभी पक्षों का विस्तृत अध्ययन करेंगें। इसमे हम कृषि –क्र्रांति के उदय के कारणो, कृषि –क्र्रांति एवं ईग्लैंड, पि”चमी यूरोप में कृषि –क्र्रांति के प्रभावों का विस्तृत अध्ययन करेंगें। ब्रिटेन में 18वीं सदी की शुरूआत मे परमरागत कृषि –प्रणाली थी। इग्लैंड अभी कृषि प्रधान दे”ा था। दे”ा मे कृषि के प्राचीन एवं मध्यकालीन ढंग प्रचलित थे। दे”ा की 80 प्रति”ात जनसंख्या ग्रामों में निवास करती थी और कृषि कार्य से जुडी थी। कई शताब्दियों से कृषि के तरीको मे कोई वि”ोष परिवर्तन नहीं हुआ था। कृषि मुख्यत जीवन निर्वाह

तक ही सीमित थी। इस कृषि व्यवस्था को निर्वाह कृषि कहा जाता था। अभी व्यावसायिक कृषि की शुरूआत नही हुई थी।

कृषि क्रांति शब्द का प्रथम बार प्रयोग कार्ल मार्क्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक दास के पिटल मे किया। इस क्रांति के परिणामस्वरूप इग्लैड मे कृषि क्षेत्र में उत्पादन काफी बढ गया और आर्थिक और सामाजिक जीवन पर कृषि क्राति के महत्वपूर्ण प्रभाव पडे।

6.3.1 कृषि क्रांति के उदय के कारण :—

कृषि —क्रांति का उदय ईग्लैंड में हुआ। ईग्लैंड में कृषि —क्रांति के प्रसार के प"चात् शीघ्र ही यह क्रांति फ्रांस, जर्मनी, बेल्जियम, हालैंड, डेनमार्क, इटली और स्पेन आदि दे"ाो मे फैल गई। कृषि —क्रांति के उदय का मुख्य कारण परम्परागत कृषि —प्रणाली की कमियां थी। परंतु कुछ अन्य कारण भी थे जो कृषि —क्रांति के उदय के लिए उतरदायी कारणों का विस्तृत अध्ययन करते हैः—

(i) परम्परागत कृषि —प्रणाली की कमियां :— 18वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक इग्लैंड और यूरोप की कृषि —प्रणाली मध्यकालीन सामंतीय पद्धति पर आधारित थी।यद्यपि सामंतवाद का पतन हो गया था। परंतु कृषि का परम्परागत ढंग अभी वही था। यूरोप के कुछ अन्य दे"ाों मं तो सामंतवाद अभी भी जीवित था। खेती—बाढी के ढंग प्राचीन और एक जैसे थे। कृषि.क्षेत्र मे नए प्रयोग परीक्षण और सुधार पर बहुत अधिक घ्यान नहीं दिया गया था। यद्यपि इग्लैंड की 80 प्रति"ात जनसंख्या गांवों में रहती थी और इनका मुख्य व्यवसाय कृषि था। परंतु यह क्षेत्र उपेक्षित था। इस समय गांवों में तीन प्रकार की भूमि होती थी —कृषि—भूमि, चारागाह भूमि और बंजर भूमि। कृषि योग्य भूमि का बहुत बडा हिस्सा अभी भी सामंतो के अधीन होता था जो अपनी भूमि को का"तकारो में कुछ नि"िचत शर्तों पर बोट देते थे। इस व्यवस्था में न तो सामंत और न ही कृषक कृषि विकास में रूचि लेते थे। इस प्रकार कृषि प्रणाली परम्परागत पद्धति पर आधारित थी औेर इसमें अभी प्रयोगो और विकास का दौर प्रारंभ नहीं हुआ था।

कृषकों के पास व्यक्तिगत भूमि बहुत कम थी। उनके खत बहुत छोटे—छोटे थे जो एक स्थान पर न होकर बिखरे हुए होते थे। कृषकों के खेती करने के साधन और उनके कृषि औजार प्राचीन ढंग के थे। उनके हलों में लोहे का फाल भी नहीं लगा होता था । वे अच्छे बीजों और खाद का प्रयोग भी नहीं कर रहे थे।

इग्लैंड के प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक सर आर्थर यंग ने फ्रांसीसी कृषि व्यवस्था को 10 वी शताब्दी के स्तर का बताया था। यही अवस्था अन्य यूरोपीय दे"ाों की कृषि की भी थी। इग्लैंड और अन्य यूरोपीय दे"ाो में उस समय कुल कृषि योग्य भूमि के एक तिहाई क्षेत्र को खाली छोडने की परम्परा थी। कई क्षेत्रों में तो कृषि क्षेत्र का आधा भाग खाली छोडा जाता था। ताकि भूमि की उर्वरता शक्ति कायम रहें । इस युग में कृषि विकास में सहायक प"ाुओं की नस्लों को सुधारने की और भी कोई ध्यान नहीं दिया गया था। इग्लैड और अन्य यूरोपीय दे"ाों में कृषि योग्य भूमि के प्रसार की और भी ध्यान नहीं दिया गया जबकि बहुत सारी बजंर भूमि ऐसी उपलब्ध थी। जिसे कृषि –योग्य भूमि बनाया जा सकता था।

(ii) जनसंख्या वृद्धि :– 18वीं शताब्दी में ईग्लैंड की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई। इसी समय अन्य यूरोपीय दे"ाों के जनसंख्या थी तेजी से बढ रही थी। इग्लैंड की जनसंख्या 18वी शताब्दी के प्रारंभ में 50 लाख थी जो इस शताब्दी के अंत तक 90 लाख हो गई थी। इस बढती हुई जनंसंख्या के लिए खाद्य उत्पादन मे वृद्धि करना आव"यक हो गया था। खाद्य उत्पादन में वृद्धि कृषि क्षेत्र में परिवर्तनों के बिना संभव नहीं थी। अंतः अब कृषि क्षेत्र में विकास आव"यक हो गया था।

(iii) व्यापार और वाण्जियिक विकास का योगदान :– यूरोपीय व्यापार और वाणिज्य में 16वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। वि"ाेषकर ईग्लैंड का व्यापारिक विकास बहुत तेजी से हुआ। इग्लैंड के वि"व के विभिन्न भागों में व्यापार में काफी वृद्धि हो रही थी। इस व्यापारिक समृद्धि का लाभ कृषि क्षेत्र को भी प्राप्त हुआ। व्यापारियों ने अतिरिक्त पूंजी का कृषि क्षेत्र मे निवे"ा करना प्रारंभ कर दिया जिससे कृषि का विकास हुआ। इस सयम यूरोपीय उन की विदे"ाों में बहुंत मांग थी। कृषकों ने मुनाफा कमाने के लिए भेड 'पालन पर जोर दिया जिससे कृषि क्षेत्राों को भी गति मिली और कृषकों की आय में वृद्धि हुई।

(iv) कृषि –उत्पादन के नए ढंगों का प्रचार :– इस समय इग्लैंड मे कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए नए ढंगों का प्रचार प्रारंभ हो चुका था। ईग्लैंड मे 1700ई0 तक ग्रामीण अर्थवयवस्था में सुधार और कृषि पद्धिति के विकास को प्रेरित करने के लिए लगभग 100 पुस्तके प्रका"ात हुई। इन पुस्तकों में कृषि के नए ढंगो को अपनाने के लिए कृषकों को प्रेरित किया गया। उन्हें बताया गया की वे अच्छी खाद का अधिक से अधिक प्रयोग करें। कृषकों

को सलाह दी गई कि वे खाली छोडी गई भूमि में शलगम या त्रिपती घास बोएं ओर बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाए।

इस क्षेत्र में कृषकों को प्रेरणा देने वाली सबसे महतवपूर्ण पुस्तक राबर्ट वेस्टर्न की प्रसिद्ध रचना 'डिसकोर्स ऑन हस्बैंडरी' (Discourse of Husbandry)थी। राबर्ट वेस्टर्न ने शलगम और त्रिपती घास जेसी जड वाली फसलों को उगाने का महत्व कृषकों को समझाया। इस रचना का प्रका"ान 1645 ई मे हुआ था। इस कार्य को आगे बढाने का वास्तिविक श्रेय प्रसिद्ध वेज्ञानिक सर आर्थर यंग ने ईग्लैंड के अतिरिक्त आयरलैंड फ्रांस और इटली आदि दे"ाों की यात्रा कर कृषि के नए ढंगों से संबंधित कई पुस्तकों की रचना की। 1780 इ0 के प"चात् वह एन्नल्स ऑफ एग्रीकल्चर का सम्पादक बन जिसके 45 संस्करण प्रका"ात हुए। उसकी कई पुस्तकों का अन्य यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ। सर आर्थर यंग से प्रभावित होकर यूरोपीय दे"ाों के कृषकों ने कृषि के नए ढंग अपना लिए और कृषि क्षेत्र को समृद्ध करने का कार्य किया।

(v) मूल्य वृद्धि :–

यूरोप मे 18वीं शताब्दी से अनाज और अन्य खाद्यानों के मूल्यों में वृद्धि होने लगी। थी जिससे कृषि क्षेत्र को प्रेरणा मिली और कृषक अधिक उत्पादन के लिए प्रेरित हुए। पुनर्जागरण और धर्म सुधार आंदोलन के कारण लोगों का दृष्टिकोण पहले ही परिवर्तित हो चुका था। अब लोगों का ध्यान अध्यात्मिक जीवन में डूबे रहने की बजाय भौतिक सुख–सुविधाओं में वृद्धि की और था। कृषकों ने भी अपने जीवन को सुखी बनाने की और ध्यान देना शुरू किया और उत्पादन बढाकर लाभ कमाने की और ध्यान दिया। वे व्यापरियों के दृष्टिकोण और उनके जीवन स्तर को देखकर प्रभावित हुए। इससे पूर्व उनका दृष्टिकोण सिर्फ जीवन –निर्वाह तक सीमित था। मूल्यों में वृद्धि से अधिक उत्पादन कर लाभ कमाने की भावना संचार कृषि –विकास की दि"ाा में महतवपूर्ण कदम थां

(vi) कुलीनों का योगदान :– इग्लैंड मे ंकुछ बडे कुलीनों ने कृषि –विकास और उत्पादन बढाने के लिए नए–नए तरीके अपनाए थे। कुलीनों शहरों में निवास करते थे परंतु ग्रामीण क्षेत्राों में इनके बडे–बडें कृषि फार्म थे। इन कुलीनों ने अपनी अतिरिक्त पूंजी को कृषि क्षेत्र में लगाना शुरू कर दिया और अपने कृषि फार्मो की बाडबंदी और कृषकों को नए कृषि यंत्र उपलब्ध करवाने पर ध्यान दिया। इनका उद्धे"य कृषि क्षेत्र में अतिरिक्त पूंजी का निवे"ा

कर लाभ अर्जित करना था। इन बडें कुलीनों में ड्यूक आफ बेडफोर्ड, कॉक आर्फ नारपोंक, कॉक आफ होलक हम आदि बडे कुलीन शामिल थे।

(vii) आविष्ककारों का योगदान :–

इग्लैंड में 18वी सदी में कई महत्वपूर्ण आविष्कार हुए जिन्होनें कृषि क्षेत्र मे उत्पादकता को बढाने मे अपना योगदान दिया। इनमें 1733 इ0 में जॉन के द्वारा फलाईंग शटल का आविष्कार और 1764 ई में जेम्स हारग्रीव्ज द्वारा स्पिनिंग जैनी का आविष्कार मुख्य थे। इनसे कपडा उघोग के लिए मार्ग प्र"ास्त हुआ ओर कपास की मांग बढने लगी जिसके लिए उत्पादन बढाना अव"यक हो गया। आधुनिक कृषि –यंत्रों का भी विकास होने लगा। लोहे के कृषि –यंत्रों ने कृषि –क्रांति मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार ईग्लैड में नए आवष्किारों ने कृषि –क्षेत्र मे विकास और प्रसार में अपना योगदान दिया।

6.3.2 इग्लैंड मे कृषि क्रांति (Agricultural Revolution in England)

कृषि –क्रंाति का प्रांरभ इग्लैंड मे हुआ। इग्लैंड मे कई परिस्थितियों ने कृषि –क्रंाति के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार कर दिया था। कृषि –क्रंाति मे बडे कुलीनों, बडे व्यापारियों और स्वतंत्र कृषकों की रूचि बढ गई और इस क्षेत्र मे व्यापक परिवर्तन होने लगे। आइए हम उस दौर में इग्लैंड मे हुए कृषि –विकास और परिवर्तनों का विस्तृत अध्ययन करते है:–

(i) नई जडवाली फसलों पर जोर :– इग्लैंड और अन्य यूरोपीय दे"ाो में प्रचलित परम्परा के अनुसार भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने क लिए प्रत्येक वर्ष भूमि का एक तिहाई भाग खाली छोडा जाता था। 17वीं शताब्दी की दूसरी चौथाई में फलैडर्स के रहने वाले राबर्ट वेस्टर्न ने खाली छोडी जाने वाली भूमि में शलगम आदि जड वाली फसले उगाने के लिए कृषको का प्रेरित किया। राबर्ट वेस्टर्न ने 1645 ई में अपनी रचना ' Discourse on Husbandry' प्रका"ित की जिसमे उसने कृषकों को शलगम और तीन पती वाली घास लगाने का आहवाहन् किया। उसने कहा कि भूमि को खाली छोडने की अव"यकता नहीं हे। उसने इनज डे वाली फसलों को भूमि के उर्वरा –"ाक्ति बढाने वाला बताया। उसने बताया कि ये फसले प"ाुओं के लिए चारा प्रदान करेंगी। जिससे प"ाु–धन के संवर्घन में मदद मिलेगी।

(ii) ड्रिल म"ीन का प्रयोग :– जेथ्रोटुल नामक अंग्रेज कृषक ने 1701 इ0 मे ड्रील म"ीन का आविष्कार किया जो कृषि क्षेत्र के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण सिंद्व हुईे । जैथ्रोटुल बर्क"ाायर का रहने वाला

था। और उसने कानून की डिग्री भी प्राप्त कर रखी थी। कुछ व्यक्तिगत कारणों से उसने कृषि पर ही ध्यान केन्द्रित करने का फैसला किया। वह एक सम्पन्न परिवार से संबंध रखता था। जैथ्रोटुल की ड्रिल म"ीन बीज बोने मे काम आती थी। और यह बीजों को उचित ढंग से मिट्टी से भी ढकती थी। यह नालियां बनाने का कार्य भी करती थी।

इस म"ीन से समय और परिश्रम की बचत भी होती थी। जेथ्रोटुलने खाद और कृषि सिंचाई के लिए नालियों के भी प्रयोग किए। उसके इन प्रयोगों पर आधारित रचना 'The Horse Hoeing Husbandry' 1773 ई में प्रका"ित हुई। जैथ्रोटुल के विचारों ओर प्रयोगों को उसकी मृत्यु के बाद मान्यता मिली क्योंकि लोग उस समय इतने समझदार नहीं थे। उसके विचार ओर प्रयोगों ाक प्रसार ईग्लैड के अलावा यूरोप के अन्य दे"ाों में भी खूब हुआ।

(iii) बदल–बदल का फसल बोना :– चार्ल्स विस्काउंट टाउनसैंड इग्लैंड का एक राजनीतिज्ञ था। वह ईग्लैंड का विदे"ा मंत्री रह चुका था। परंतु प्रधानमंत्री राबर्ट वॉलपोल से मतभेद के चलते उसने त्यागपत्र दे दिया था। टाउनसैंड ने नारफोफ नामक स्थान पर अपने कृषि फार्म पर कृषि क्षेत्र मे प्रयोग प्रारंभ किए। उसने 1730 ई0 से शलगम की फसल उगाने और चार सूत्रीय फसल चक्र का प्रयोग शुरू कर दिया। यह विधि इग्लैंड मे बहुत लोकप्रिय हुई। उसने शलगम, गेहूॅं, जो, और तीन पतियों वाली घास को बदल बदल कर उगाना प्रारंभ किया। इस पद्ध तिमे खेतों को खाली छोडने की आव"यकता नही थी। उसके प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति मे भी वृद्धि हुई। कृषि के लिए आव"यक प"ाुओं के लिए चारे की समस्या भी हल हो गई। टाउनसैंड के शलगम पर अत्यधिक जोर देने के कारण वह इग्लैंड मे टर्निप टाउनसैंड के नाम से प्रसिद्ध हुआ। टाउनसैंड ने बंजर भूमि को उपजाउ बनाने के लिए चूना –मिट्टी की खाद के प्रयोग पर बल दिया। जिससे बंजर और दलदली भूमि को उपजाउ बनाया गया। उसके प्रयासों और प्रोत्साहन से 1800 इ तक इग्लेंड मे कृषि की स्थिति मे महत्वपूर्ण परिवर्तन आया।

(iv) खेतों की बाडबदी :– इन दि"ाा मे सबसे महत्वपूर्ण कार्य करने का श्रेय सर आर्थर यंग को है। उसने कृषि विकास पर कई पुस्तके लिखी। उसने 'एनल्स आफ एग्रीकल्चर' नामक प्रसिद्ध पत्रिका का सम्पादन किया । सर आर्थर यंग को 1793 ई मे कृषि बोर्ड का सचिव बना गया। उस समय वह इग्लैंड में खेतों की बाडबंदी का आंदोलन चला रहे थे। सर आर्थर यंग का उद्धे"य

इग्लैंड की समस्त कृषि भूमि की बाडबंदी करना था ताकि जंगली प"ाुओं से कृषि की सुरक्षा सुनि"चत की जा सके। उनके प्रयासों से इग्लैंड की संसंद् ने 1760 इ0 से 1845 इ0 तक लगभग 4000 बाडबंदी अधिनियम पारित किए। सर आर्थर यंग छोटे कृषकों के हितों के संरक्षक भी थें। उन्होनें ऐसे बाडबंदी अधिनियमों की खुलेआम आलोचना की जो छोटे कृषकों के हितों की अनदेखी कर रहे थे।

(v) बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाने पर जोर :– इग्लैंड और समस्त यूरोप मे कृषि –क्रांति के उदय से पूर्व बहुत सारी भूमि बंजर पडी हुई थी। कृषि –क्षेत्र में विकास और प्रौत्साहन योजनाओं से प्रेरित होकर कृषकों ने अब बंजर और दलदली भूमि को कृषि योग्य बनाने पर ध्यान केन्द्रित किया। इसके लिए अब साधन भी उपलब्ध थे। सरकार द्वारा भी इस क्षेत्र मे व्यापक कार्य किया गया। बंजर ओर दलदली भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिए चूना– मिट्टी का प्रयोग बडे पेमाने पर हुआ। इस प्रकार अब खाली पडी ज्यादातार भूमि को तकनीक के प्रयोग से कृषि –योग्य बनाया गया।

(vi) आद"ी खेती :– इग्लैंड मे इस समय बडे स्तर पर आद"ी खेती प्रांरभ हुई। इन खेतों की बाडबंदी करके वेज्ञानिक और आधुनिक तरीके से खेती की जाती थी। इन खेतों पर जुताई एव बुआई आधुनिक कृषि यंत्रों से की जाती थी। यहॉ अच्छे बिजों और खादों का प्रयोग किया जाता था। कॉक आफ होल्कहम (1754 –1842) ने एक बहुत बडे कृषि फार्म पर इस विधि से कृषि करके 10 गुणा ज्यादा उत्पादन प्राप्त किया। उसकी सफलता से प्रभावित होकर इग्लैंड के अन्य कुलीनों ने कृषि यंत्र में अपना भाग्य आजमाया। इग्लैंड के सम्राट जार्ज तृतीय (1760 – 1820 ई0) ने विंडस मे एक आद"ी कृषि फार्म की स्थापना की। उसके कृषि और कृषक प्रेम के कारण जार्ज तृतीय को कृषक राजा कहा जाता हैं।इस परम्परा को आगे बढाते हुए जॉन सिकंलेयर ने स्कॉटलैंड मे एक लाख एकड भूमि पर आद"ी कृषि –फार्म स्थापित किया। इससे कृषि–विकास को प्रोत्साहन मिला।

(vii) प"ाुओं की नस्ल में सुधार :– कृषि और प"ाुपालन का क्षेत्र अभिन्न रूप से एक दूसरे से जुडे हुए है। इग्लैंड मे भेड, बैल और घोडो कृषि क्षेत्र से अभिन्न रूप से जुडे थे। सर्दियों के दिनों में चारों की समस्या से काफी संख्या मे प"ाु मरते थे। जड वाली फसलो के प्रयोग से प"ाुओं के लिए चारे की समस्या हल हो गई। अब प"ाुओं की नस्ल सुधारने का कार्य प्रारंभ हुआ। इस दि"ाा मे राबर्ट बैंकवेल ने महत्वपूर्ण कार्य किया। उसने न्यूलीसेस्टर नामक भेडों की एक नई नस्ल का विकास किया। जिसका बजन 60 पोंड था। भेडों की नस्ल सुधारने में उसने उल्लेखनीय कार्य किया।

इससे उन के उत्पादन मे वृद्धि हुई। बैकवाल से प्रभावित होकर चार्ल्स कोलिंग ने बैलों की नस्ल सुधार पर कार्य किया।

6.3.3 प"िचमी यूरोप मे कृषि–क्रांति का प्रसार

कृषि–क्रांति का उदय इंग्लैंड में हुआ था। जल्दी ही कृषि–क्रांति का प्रभाव प"िचमी यूरोप के अन्य दे"ाो में भी हुआ। जहां इंग्लैंड में कृषि–क्रांति के फलस्वरूप छोटे कृषकों को भूमि से बेदखल किया जा रहा था, वहा प"िचमी यूरोप के दे"ाों में छोटे कृषको को भूमि संबंधी सुधार प्राप्त हुए।

(i) फ्रांस :– 1789 ई0 में फ्रांस में एक बहुत बडी क्रांति हुई। फ्रांस में हुई इस क्र्रांति के फलस्वरूप सामंतों और कुलीनों के वि"ोषाधिकार समाप्त कर दिय गए। फ्रांस में क्र्रांति के प"चात कृषि क्षेत्र में तेजी से सुधार प्रारंभ हुए। फ्रासं मे भी 18वी शताब्दी से जनसंख्या तेजी से बढी और इसका भरण–पोषण करने के लिए कृषि क्षेत्र में उत्पादन बढाना अनिवार्य हो गया था। फ्रांस में भी बडे व्यापारियों ने कृषि –भूमि में निवे"ा प्रांरंभ कर रखा था। फ्रांस में भी 18वी शताब्दी के उतरार्ध से कृषि क्षेत्र में कुछ प्रयोग प्रारंभ हो गए थे। फ्रासं में 1840 –1890 ई के मध्य लगभग 27 मिलियन कृषि योग्य भूमि जोडी गई जो पहले बेकर पडी थी। फ्रांस मे ंभी इग्लैंड की तरह आधनिक कृषि–यत्रों और औजारों का प्रयोग होने लगा। कृषि विकास के लिए उन्नत बिजों और खाद का प्रयोग होने लगा। इस प्रकार इग्लैंड में कृषि–क्रांति का प्रभाव फ्रांस मे भी महसूस किया गया और फ्र्रांस में कृषि उत्पादन बढने लगा।

(ii) जर्मनी :– एि"ाया और आस–पास के जर्मन राज्यों की कृषि प्रणाली इग्लैंड से मिलती जुलती थी। जर्मनी में विभिन्न जर्मन राज्यों की सरकारो द्वारा कृषि क्षेत्र में विकास के लिए 1771 ई – 1870 ई0 के मध्य कई कृषि सुधार संबंधी कानून बनाए गए। इनके द्वारा जर्मनी में खेतों की चकबंदी और बाड बंदी की गई । चरागाहों की भूमि को छोटे–छोटे कृषको में बांट दिय गया। सैक्सनी, एि"ाया और ब्रांडेनब्र्ग में नई नस्लों की भेडे पाली गई। धीरे–धीरे जर्मनी के सभी राज्यों में भेड पालन को बढावा दिया गया। जर्मनी ने उन के उत्पादन में श्रेष्ठता हासिल कर ली। जर्मनी के सभी राज्यों क द्वारा वेज्ञानिक कृषि को बढावा दिया गया। और उन्नत बीजों का प्रयोग किया गया।

(iii) बेल्जियम :– बेल्जियम मे सामंतवाद का पूरी तरह खात्मा 1815 ई तक हुआ। यहां कृषको के पास छोटे छोटे खेत थे। परंतु 1815 ई के प"चात बेल्जियम मे कृषि क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन हुए। यहा बडे पैमाने पर नई कृषि योंग्य भूमि जोडी गई जो पहले बेकर पडी हुई थी। यहा ब्रिटेन की पद्धति

पर तेजी से कृषि सुधार अपनाने पर जोर दिया गया और उत्पादन बढाने और प"ाुओं की नस्ल सुधारने पर तेजी से कार्य हुआ जिसके परिणामस्वरूप बेल्जियम भी कृषि क्षेत्र में आगे निकल गया।

(iv) हालैंड :– हालैंड में भी कृषकों के पास जुताई के लिए छोटेःछोटे खेत

(v) डेनमार्क :– जब डेनमार्क में सामंतवादी प्रणाली का अंत हुआ तो कृषि क्षेत्र में व्यापक सुधारों का मार्ग प्र"ास्त हो गया। कृषकों को सामंतवादी व्यवस्था के पतन के बाद काफी भूमि मिली और कुछ उन्होनें अपने प्रयासों से खरीद ली। कृषको ने आधुनिक तकनीक अपनाकर कृषि क्षेत्र कृषि क्षेत्र में व्यापक सुधार किए। अच्छे बिजों और खाद के प्रयोग पर ध्यान दिया गया। यहॉ पर भी शलगम और तीन पतियों वाली घास पर्यापत मात्रा में उगाई गई। डेनमार्क ने प"ाुपालन के विकास और सुधार पर काफी ध्यान दिया गया जिससे यहा गाय, सुअर, और मुर्गी पालन पर काफी ध्यान दिया गया। प"ाुपालन के विकास से यहॉ डेयरी, मांस और अंडो के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई और डेनमार्क अन्य यूरोपीय दे"ाों को इन उत्पादों का निर्यात करने लगा।

(vi) इटली :–इटली में 1789 इ0 हुई फ्रांस की क्रांति के बाद कइ परिवर्तन हुए। इटली में दास –प्रथा और सामंतवाद समाप्त कर दिया गया। इससे यहॉ कृषको को स्वतंत्र वातावरण मिला। सार्डीनिया में कृषि.क्षेत्र में काफी सुधार हुए। यहॉ के बडे जमींदारों ने भी कृषि विकास के लिए बडा योगदान दिया। इटली में पीडमांट–सार्डीनिया के प्रधानमंत्री कावर ने खुद एक बहुत बडे कृषि फार्म की स्थापना की। यहॉ कृषि के आधुनिक तरीको को अपनाया गया। इटली में ईग्लैंड की तर्ज पर कृषि प्रणाली का विकास हुआ। इटली में गेहु और सन की फसलों पर वि"ोष जोर दिया गया। जल्दी ही इटली रे"ाम और अंगूर के उत्पादन में काफी आगे निकल गया।

(vii) स्पेन :– स्पने एक पठारी क्षेत्र हैं । यहॉ की अधिकतर भूमि पहाडी थी परंतु यहॉ चरागाह भूमि काफी ज्यादा थी। स्पेन मे भेड पालन उधोग पहले से ही काफी विकसीत था। स्पेन की उन का बडे पैमाने पर निर्यात होता था। इग्लैंड में कृषि–क्रांति के प्रभाव के कारण यहॉ भी कृषि क्षेत्र में परिवर्तन हुआ। अब यहॉ गेहु, चावल, रे"ाम और अंगूर की कृषि में नए प्रयोग प्रारंभ हुए यद्यपि यहा इतना विकास नहीं हो पाया जितना अन्य प"िचमी दे"ाों मे ंहुआ। स्पेन में सही मायने में कृषि–क्रांति 20 वी शताब्दी मे ही आई।

(viii) रूस :–रूस में परम्परागत कृषि प्रणाली प्रचलित थी। यहॉ कृषि भूमि सामंतो के अधीन थी। यहॉ कृषको दासों से कृषि करवाई जाती थीं । रूस में भी कुल कृषि योग्य भूमि के दो–तिहाई हिस्से पर ही प्रतिवर्ष कृषि होती थी बाकी एक –तिहाई हिस्सा खाली छोडा जाता था। रूस मे 1861 –

1865 ई0 के मध्य कृषक दास प्रथा को समाप्त कर दिया गया। सामंतो से भूमि कर एकत्रित करने का अधिकार छीन लीया गया। रूस में धीरे–धीरे धनाढ्य कृषक वर्ग का उदय हुआ।इन्होनं छोटे कृषको भूमि खरीद ली। रूस में 19वीं शताब्दी के उतरार्घ से कृषि –क्षेत्र मे विकास प्रारंभ हुआ। जल्दी ही रूस में उन्नत बीजों, खाद और आधुनिक कृषि–यंत्रों का प्रयोग संभव हुआ। जल्दी ही रूस कृषि क्षेत्र में विकास के पथ पर आगे बढ गया।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुचे है कि इग्लैंड में हुई कृषि–क्रांति का धीरे–धीरे पूरो यूरोप में प्रभाव हुआ पंरतु अलग –अलग दे"ाों में परिवर्तन उन दे"ाों की स्थानीय परिस्थितियों से प्रभावीत हुए

6.3.4 कृषि–क्रांति का प्रभाव :– इग्लैंड में 18वीं एव अन्य यूरोपीय दे"ाो में 18वीं एव 19वीं सदी में हुई कृषि–क्रांति उन व्यापक परिवर्तनों को इंगित करती है। जो इन दे"ाों में कृषि –क्षेत्र में दिखाई दिए। इस दौर में कई प्रकार के परिवर्तन स्पष्ट नजर आए जिन्होंने कृषि उत्पादन में वृद्धि की। इस युग में इन दे"ाों में खेतों की बांडबंदी, चकबंदी एव आद"ीं खेती जैसे बडे प्रयोग हुए। इसके अतिरिक्त फसल–चक्र, अच्छे बीजो और खाद का प्रयोग, प"ाुओं की नस्ल सुधार पर जोर, बंजर एवं दलदली भूमि को कृषि योग्य बनाना और लोहे के आधुनिक कृषि यंत्रो का कृषि क्षेत्र मे व्यापक प्रयोग भी इस दौर में दिखाई दिया। इग्लैंड और अन्य पि"चमी दे"ाो में हुई कृषि–क्रांति के प्रभावों का हम निम्न बिदुंवार विस्तृत अध्ययन करेंगे।

(i) कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि :– कृषि–क्रांति का सबसे बडा प्रभाव यह हुआ कि इससे इंग्लैंड और अन्य यूरोपीय दे"ाों में कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इस कृषि उत्पादन से इग्लैंड और यूरोप की बढती हुई जनसंख्या की जरूरते पूरी हुई। इग्लैंड मे अपनाए गए आधुनिक तरीकों से प्रति एकड उत्पादन काफी बढ गया। इग्लैंड मे 1760 इ0 में इतना खाद्यान उत्पादन हुआ की यह इग्लैंड की जनसंख्या की जरूरतों से ज्यादा था। अंतः इग्लैंड ने अब खाद्यान का निर्यात प्रारंभ कर दिया। फ्रांस में 1789 इ0 की क्रांति का मुख्य कारण आर्थिक संकट था जिससे लोगों को खाद्यान और रोटी की समस्या हो गई थी। परंतु फ्रांस मे कृषि क्रांति के प"चात अतिरिक्त खाद्यान उत्पादन होने लगा । इसी प्रकार पि"चमी यूरोप के अन्य दे"ाों मे भी कृषि –क्रांति के फलस्वरूप खाद्यान उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई।

(ii) इग्लैंड मे छोटे कृषकों को हानि :– इग्लैंड मे कृषि क्रांति के फलस्वरूप छोटे कृषक भूमिहीन हो गए। इन छोटे कृषकों के पास कृषि –भूमि बहुत कम होती थी। इन कृषकों के पास साधनों का भी

अथाव था। वे कृषि के लिए आधुनिक कृषि –यंत्रों को खरीदने में अश्रम थे। दूसरी ओर बडे बडे लोगों की इग्लैंड में कृषि क्षेत्र में रूचि लगातार बढ रही थी। क्योकि व्यापारी और धनाढय वर्ग अपनी अतिरिक्त पूंजी इस क्षेत्र मे निवे"ा करने का इच्छुक था। प्रभाव"ाली लोगों ने धन के बल पर इन छोटे कृषकों की भूमि खरीद ली और ये भूमिहीन हो गए। छोटे कृषक इग्लेंड में इस समय पूरी तरह असहाय नजर आ रहे थे। उनकी विव"ाताओं का प्रभाव"ाली लोगो ने पूरा फायदा उठाया और लोग आखिर में इग्लैंड के शहरों में जाकर कारखाने के श्रमिक बन कर गुजर बसर करने लगे।

(iii) कृषि– भूमि की मांग एवं मूल्यों मे वृद्धि :– कृषि–क्रांति के फलस्वरूप यह क्षेत्र आकर्षण का केन्द्र बन गया था। बड़े–बड़े कुलीन परिवार और बड़े व्यापारी कृषि–क्षेत्र की ओर आकर्षित हुए। भूमि का स्वामित्व इस समय सामाजिक प्रतिष्ठा एवं आर्थिक सम्पन्नता का प्रतीक बन गया था। इंग्लैंड मे संसद का सदस्य बनने और वोट का अधिकार पाने के लिए भी नि"चत भूमि का स्वामी होना आव"यक था। इन सब का परिणाम यह हुआ कि भूमि की माँग लगातार बढ़ने लगी। बढ़ती माँग के बीच भूमि के मूल्यों में भी बेतहा"ाा वृद्धि हो रही थी।

(iv) प"चमी यूरोपीय दे"ाों में कृषक–वर्ग को लाभः– इंग्लैंड को छोड़कर अन्य प"चमी यूरोप के दे"ाों में छोटे कृषकों को कृषि–क्रांति का फायदा पहुँचा। कृषकों की द"ाा में सुधार हुआ। फ्रांस, बेल्जियम, जर्मन–राज्यों, हालैंड, डेनमार्क, इटली आदि दे"ाों में कृषि–क्रांति का व्यापक असर हुआ था। यहाँ की सरकारों ने भी कृषक–हित में नीतियां बनाईं। इन दे"ाों में छोटे कृषकों को भूमि का मालिकाना हक दिया गया और उनकी कृषि–क्रांति के प्रभाव के फलस्वरूप उनकी आर्थिक अवस्था में काफी सुधार हुआ। इन कृषकों को इन दे"ाों की सरकारों द्वारा सभी प्रकार के अन्य अधिकार भी दिए गए।

(v) जनसंख्या में वृद्धिः– कृषि–क्रांति के फलस्वरूप इंग्लैंड और अन्य यूरोपीय दे"ाों में कृषि–उत्पादन में व्यापक वृद्धि हुई। अब लोगों को जीवन–निर्वाह की चिंता नही रही जबकि इससे पूर्व कृषि सिर्फ जन–निर्वाह तक सीमित होती थी। अब अतिरिक्त उत्पादन के कारण यूरोप के बाजार खाद्यान्न–उत्पादों से पटे रहते थे। भरपूर मात्रा में खाद्यान्न–उपलब्धता के कारण जीवन प्रत्या"ाा में वृद्धि हुई और मृत्यु–दर में कमी आई। सौभाग्य से इस दौर में प्राकृतिक आपदाओं में भी कमी आई जिससे यूरोप की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई।

(vi) प"ाुओं की नस्लों में सुधारः– कृषि और प"ाुपालन प्राचीन युग से ही एक–दूसरे से जुड़े हुए और एक–दूसरे पर आधारित हैं। कृषि–क्रांति के कारण कृषि–क्षेत्र में जो नए प्रयोग हुए उनके कारण प"ाुओं के लिए भी चारा उपलब्ध होने लगा। इससे पूर्व प"ाुओं के लिए सर्दी के मौसम में चारे की विकट समस्या आती थीं। त्रिपत्ती घास के उगाए जाने से अब प"ाुओं की यह समस्या समाप्त हो गई। कृषि–पालन में सुधार के लिए राबर्ट बैकवेल ने भेड़ों की न्सल सुधारने पर सफल प्रयोग किए। इससे भेड़–पालन व्यवसाय को नई गति मिली। अच्छी नस्ल की भेड़ों के विकास से पर्याप्त ऊन मिलने लगी। इस दौर में बैलों की नस्ल सुधारने पर भी काफी प्रयोग हुए जिससे कृषि और प"ाु–पालन क्षेत्र में काफी विकास हुआ।

(vii) ग्राम –समुदाय की आत्मनिर्भरता का अंत :– मध्ययुग के अंत और आधुनिक युग के प्रारंभ में युरोपीय ग्रामीण जीवन आत्मनिर्भर समुदाय के रूप में स्थापित था। अब ग्रामीण जीवन क्षेत्रो में ग्राम समुदाय की बजाय शहरों की अर्थव्यवस्था का प्रभाव हो गया। ग्रामीण कृषि अर्थव्यवस्था के स्थान पर अब बडे–बडे कृषि फार्म बन गए थे। जिनका ग्राम्य जीवन से कोई संबंध नहीं था। ये फार्म नगरों के बडे बडे प्रभाव"ााली लोगों के थे। इस प्रभाव"ााली व्यापारियों और कुलीनों ने ग्रामीण परिवे"ा पर गहरे प्रभाव डाले।

(viii) कृषि–क्षेत्रो में पूंजीवाद का प्रभाव :– इग्लैंड मे ंबडे कुलीनों और घनाढय व्यापारियों ने कृषि –क्षेत्र मे व्यापक पूंजी –निवे"ा किया। इन लोगों के पास कृषि क्षेत्र के अलावा अभी कोई अन्य क्षेत्र अतिरिक्त पूंजी के निवे"ा के लिए उपलब्ध नहीं था। इसलिए इस युग में कृषि क्षेत्र मं व्यापक पूंजी निवे"ा हुआ इसका प्रयोग बाडबंदी और आधुनिक कृषि–यंत्रों की खरीद कप हुआ बाद में छोटे कृषकों की भूमि खरीदने के लिए इस पूंजी का प्रयोग हुआ जिसके कारण छोटे कृषक भूमि हीन हो गए।

(ix) बेरोजगारी और निर्धनता में वृद्धि :– इग्लैंड और यूरोप के दे"ाो मे ंकृषि क्रांति के व्यापक और सकारात्मक प्रभाव पडे। परंतु इग्लैंड में कृषि क्रांति के फलस्वरूप बेरोजगारी मे भी वृद्धि हुई। इग्लैंड मे कृषि क्षेत्र में व्यापक पूंजी निवे"ा के कारण धिरे–धिरे निवे"ा के कारण धीरे–धीरे निम्न कृषक वर्ग को परम्परागत कृषि व्यवसाय को छोडना पडा। बडे कुलीनों और कृषि भूमि के भूखे धनाढय लागों ने निम्न कृषि वर्ग की जमीनों को खरीदकर उन्हे भूमिहिन कर दिया। कुछ समय के प"चात् ये भूमिहिन कृषक अपने परम्परागत व्यवसाय को छोडकर नगरों की ओर चले गए और वहा कारखानो में श्रमिक बन गए जहां उनकी द"ाा और भी खराब हुई। कृषि क्षेत्र में म"ाीनों के व्यापक

प्रयोग के कारण कृषि श्रमिकों की मांग भी काफी कम हो गई थी। यही प्रभाव अन्य यूरोपीय दें"ाों मे भी देखा गया जहॉ कृषि क्षेत्र में धनाढय लोगों का नियंत्रण बढने लगा था।

(x) ओद्योगिक क्रांति के मार्ग प्र"ास्त होना :– कृषि –क्रांति ने ओद्योगिक क्रांति के लिए मार्ग प्र"ास्त कर दिया। कृषि –क्राति के फलस्वरूप पर्याप्त मात्राा मे उत्पादन होने लगा। अब कच्चे माल की उपलबध्ता ने उधोगों के लिए संभावनाए उत्पन्न कर दी। सबसे ज्यादा कच्चा माल कपडा उधोग के क्षेत्र में उपलब्ध था इसलिए इग्लैंड में कपडा उधोग का विकास प्रारंभ हुआ। इग्लैंड मे इस समय श्रमिकों की भी पर्याप्त उपलब्धता थी क्योंकि बडी मात्रा में श्रमिकों की भी पर्याप्ता उपलब्धता थी क्योंकि बडी मात्राा मे भूमिहीन श्रमिक काम की तला"ा में नगरों में आ गए थें कृषि क्षेत्र में नए नए कृषि यंत्रों और औजारों का प्रयोग बढ गया था। इसके कारण कृषि यंत्र बनाने वाले उद्योग का भी मार्ग प्र"ास्त हो गया। इस प्रकार हम देखते है कि कृषि क्रांति के इग्लैंड और यूरोप में राजनैतिक सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र मे व्यापक प्रभाव हुए। कृषि क्रांति के ज्यादातर प्रभाव सकारात्मक थे और इसने मानवीय सभ्यता को संबल प्रदान किया परंतु कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखे गए।

6.4 विषय –वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण :– अध्याय के इस भाग मे हम यूरोप में 18वीं और 19वीं शताब्दियों में ओद्योगिक क्षेत्र में हुए बडे परिवर्तनों और आविष्कारों का गहन अध्ययन करेंगें। इग्लैंड और यूरोप में हुए अन्य थे परिवर्तन इतने बडे और प्रभाव"ाली थे कि इन परिवर्तनों के लिए क्रांति शब्द का प्रयोग किया जाता है। यद्यपि इन बडे परिवर्तनों का समय नि"िचत करना कठिन कार्य है। परंतु सामान्यत : इन परिवर्तनों का समय 18वी शताब्दी के उतरार्ध से 19वीं शताब्दी के अंत तक स्वीकार किया जाता है।

6.4.1 ओद्योगिक कांति :– इग्लैंड तथा अन्य यूरोपीय दे"ाों में हुए ओद्योगिक परिवर्तनों के कांति शब्द का प्रयोग प्रसिद्ध इतिहासकार आर्नोल्ड टायन्वी ने अपनी पुस्तक (The Industrial Reolution) शब्द का सामान्य रूप से किया जाने लगा। प्राचीन काल से 18वीं सदी तक मनुष्य का जीवन मुख्यत कृषि और प"ुपालन से जुडा हुआ था। इसमे परिवर्तनों की गति बहुत धीमी थी। लगभग पूरी दुनिया में मनुष्य की स्थिति एक जैसी थी। कुछ स्थलों पर मनुष्य "िाकार से भी अपना जीवन–निर्वाह कर रहा था। आदिम समाजों मे मनुष्य की स्थिति ऐसी ही जीवन पद्धति पर आधारित थी इग्लैंड और यूरोप मे 18वीं सदी के मध्य से मनुष्य के जीवन मे बडे परिवर्तन प्रारंभ हो गए। शुरू में इन परिवर्तनों ने कृषि

और प"ुपालन के क्षेत्र को प्रभावित किया और बाद में सभी क्षेत्रो को प्रभावित करना आंरभ कर दिया। ऐसे वैज्ञानिक आविष्कार हुए जिन्होनें मनुष्य के जीवन की दि"ाा ही बदल दी। ये परिवर्तन पुनर्जागरण आंदोलन से प्रभावित और प्रेरित थे। इन परिवर्तनों और आविष्कारों से उत्पादन प्रणाली पूरी तरह बदल गई। प्रसिद्ध इतिहासकार हेज भी इस बात को मानते है ओद्योगिक विकास का क्रम 15वी शताब्दी से शुरू हुंआ था और अब भी जारी हे। इसलिए वे इसे क्रांति नहीं मानते क्योकि इसमे पांच शताब्दियों का समय लगा।

दूसरी और क्र्रांति शब्द के समर्थकों का विचार है कि यद्यपि ओद्योगिक परिवर्तन आने मे बहुत समय लगा, तथापि इन परिवर्तनो ने मानव जीवन को इतना जल्दी ओर इतना अधिक प्रभावित किया कि इन परिवर्तनो को क्रांति की संज्ञा देना अनुचित नही है। इन परिवर्तनों के आने का क्रम यद्यपि क्र्रातिकारी नहीं लगता, परंतु इनका प्रभाव अव"य ही क्र्रातिकारी था। मध्यकाल से आधुनिक युग की प्रगति में इन ओद्योगिक परिवर्तनों का मुख्य योगदान है। आर्नोल्ड टायन्वी के कथनानुसार "ओद्योगिक क्रांति का सारां"ा उत्पादन और धन का वितरण करने संबंधी मध्यकालीन व्यवस्था के स्थान पर अधिक से अधिकतर उत्पादन करने मे प्रतिस्पर्धा थी।"

6.4.2 ओद्योगिक क्रांति के उदय के कारण :–

ईंग्लैंड तथा अन्य यूरोपीय दे"ाो मे ओद्योगिक क्रांति के उदय के बहुत से कारण थे। आइए हम इन कारणों की विस्तृत समीक्षा करते है।

(i) कृषि –क्रांति :– इग्लैंड तथा अन्य प"िचमी दे"ाों में हुई कृषि–क्रांति ने मूलतः ओद्योगिक क्रांति के लिए वातावरण तैयार किया। इग्लैड तथा अन्य प"िचमी यूरोप के दे"ाों में हुआ तकनीकी विकास जो कृषि –क्रांति से जुडा हुआ था वह निरंतर आगे बढता चला गया। कृषि –क्र्रांति के फलस्वरूप उत्पादन मे भी वृद्धि हो रही थी। जिसके लिए कुछ आधारभूत उधोग पनपने लगे। इग्लैड में कृषि–क्र्रांति के कारण भूमिहीन हुए कृषक इन उधोगो मे श्रमिकों के रूप में कार्य करने के लिए उपलबध हो गए। प्रांरभिक ओद्योगिक क्रांति कृषि और उससे जुडे उधोगों से संबंधित थे।

(ii) अंराष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि :– 17वीं सदी से यूरोप और वि"व के मध्य अंतराष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई। यह भोगोलिक खोजों के फलस्वरूप बढे अंराष्ट्रीय सम्पर्को का परिणाम था। इस युग में सामुद्रिक व्यापार में

काफी वृद्धि हुई। इग्लैंड, फ्रासं, स्पेन,पुर्तगाल, नीदरलैंड और बेलिजियम जैसे दे"ाों के लोग इस कार्य में लगातार आगे बढ रहे थे। इस युग मे जहाज निर्माण अद्योग भी विकसीत हुआ। इग्लैंड का 1600ई के बाद एि"ाया, अफ्रीका और अमेरीकी महाद्वीपों से व्यापार लगातार बढता गया। इस अंतराष्ट्रीय व्यापार के विकास के कारण कच्चा माल और तैयार माल का परिवहन करना आसान हो गया। अतः अब व्यापार की वस्तुओं मे भी वृद्धि होनी शुरू हो गई। लंदन एक बडे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का केन्द्र बनता जा रहा था।

अब उत्पादन ईकाईयो की स्थापना पर जोर दिया जाने लगा। जहॉ –जहॉ जिस प्रकार का कच्चा माल ज्यादा उपलब्ध था, वहां उसी पर आधारित उत्पादन इकाईया स्थापित होने लगी। उदाहरण के लिए टिन से संबंधिति इकाईया कार्निवाल मे सीसे से संबंधित स्टैफोर्ड"ाायर में कोयले से संबधित यार्क"ाायर और साउथवेल्स और ब्रिस्टल में समद्री जहाज बनाने की उत्पादन इकाइया स्थापित हो गइ। लंदन में कार्नमिल, शराब–खाने और चर्म शोधन एवं फै"ान से संबंधित उत्पादन केन्दों की स्थापना हुई। इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि ने ओद्योगिक उत्पादन के लिय वातावरण तैयार कर लिया।

(iii) बढती जनसंख्या :–

इस दौर मे इग्लैड और यूरोप की जनसंख्या मे तेजी से वृद्धि हो रही थी। 1750 ई0 के द"ाक में इग्लैंड की जनसंख्या 7 प्रति"ात की वृद्धि दर से बढ रही थी। यह वृद्धि दर आगे भी लगातार बढती गई। इग्लैड के साथ–साथ यूरोप के पि"चमी दे"ाो में भी जनसंख्या में इसी प्रकार की वृद्धि दर दर्ज की गई। बढती जनंसख्या ने ओद्योगिक विकास के लिए आव"यक श्रम–"ाक्ति को आसानी से उपलब्ध करवा दिया। श्रम शक्ति की उपलब्धता ने इग्लैंड मे कच्चे माल पर आधारित बहुत सी उत्पादन इकाईयों की स्थापना मे मदद प्रदान की।

(iv) इग्लैंड मे उपयुक्त वातावरण का होना :–

इग्लैंड में 1688 ई में गौरवपूर्ण क्रांति हुई। इस क्रांति से यह सदा के लिए सुनि"चत हो गया कि इग्लैंड में सवैधानिक राजतंत्र जारी रहेगा और ससद् की सर्वोच्चता को चुनौती नही दी हा सकती। यह क्रांति बिना रक्त–पात के हुई थी। और इसके प"चात् भी

इग्लैंड में धार्मिक स्वतंत्रता भी थी। इग्लैंड के प्रधानमंत्री वालपोल की कु"ाल कार्य प्रणाली से दे"ा के राजनीतिक और वितीय स्थायित्व मे वृद्धि हुई । ऐसे वातावरण मं उद्योग और व्यापार को पनपने का पर्याप्त अवसर उपलब्ध हो गया। इग्लैंड में वेचारिक स्वतंत्रता और विज्ञान पर आधारित शोधों के लिए भी उपयुक्त वातावरण होने के कारण ओद्योगिक विकास का मार्ग खुला।

(v) पर्याप्त पूंजी की सुलभताः— ओद्योगों के पन्पने के लिए प्र्यापत पूंजी की उपलब्धता आव"यक होती है। इग्लैंड में वाणिज्यवाद के विकास के फलस्वरूप व्यापारिक समृद्धि में काफी वृद्धि हुई थी। इस समय तक इग्लैंड वि"व के प्रत्यंके महाद्वीप में सथित अपने उपनिवे"ाों से भी प्र्यापत मात्रा में व्यापारिक लााभ अर्जित कर रहा था। कुछ अन्य दे"ाों के उपर उसने व्यापारिक एकाधिकार स्थापित कर लिया। वि"व व्यापार का एक बहुत बडा हिस्सा अब ईग्लैंड के व्यापारियो के हाथो मे थां अतः इग्लैंड ने उद्योगो की स्थापना के लिए आव"यक पूंजी काफी मात्रा में जमा हों चुकी थी।

(vi) इग्लैंड की भोगोलिक स्थिति :— इग्लैंड की भोगोलिक स्थिति वि"व मे अत्यंत वि"ाष्ट थी। वह एक ओर तो यूरोपीय महाद्वीप से अलग था दूसरी और 1588ई के बाद वि"व के समुद्रों पर उसका एकाअधिकार हो गया था। यूरोप से अलग —थलग होने के कारण वह यूरोपीय महाद्वीप मे होने वाले युद्धों से अप्रभावित रहता था जिससे उसकी मुख्य भूमि पर शांति एवं स्थ्रिाता बनी रही। इसके अतिरिक्त चारों और समुद्र से घिरा होने के कारण ईग्लैड के पास उत्कर्ष्ट बनदरगाह थी जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और ओद्योगिक क्रांति के लिए आव"यक थी। यहा की नम और शीत जलवायु कपडा उद्योग के लिए अनुकूल थी इग्लैंड मे खनीज प्रदार्थो के लिए प्र्यापत उपलब्धता थी। यहॉ लोहे और कोयले की काफी खाद्धाने थी जो ओद्योगिक विकास के लिए आव"यक थी। इस प्रकार ईग्लैंड की वि"ाष्ट भोगोलिका वि"ाषताओं ने ओद्योगिक क्रांति के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान किया।

(vii) बेंको की स्थापना :— ईग्लैंड मे 1694 ई0 में बैंक आफ इग्लेंड की स्थापना हो गई थी। इसके प"चात् यहा अन्य बैंकों की भी स्थापना हुई । धीरे—धीरे इग्लैड के सभी बडे नगरो मे बैंक स्थापित हो गए। बैंक ऑफ इग्लैड मे सकंट के समय अेग्रेज व्यापारियों को पूंजी उपलब्ध कराई। इग्लैंड में बैंकिग व्यवसाय का काफी प्रसार हुआ। इग्लैड मे

1850ई तक यह सैक्टर काफी उन्ति कर चुका था। इग्लैंड में ओद्योगिक इकाईयों की स्थापना हुई बैकिग क्षेत्र का काफी महत्वपूर्ण योगदान रहा जिससे ओद्योगिक क्रांति को बल मिला।

(viii) सयुक्त पूंजी कंपनियों की स्थापना :– इंग्लैंड के ओद्योगिक विकास मे सयुक्त पूंजी कंपनियों ने भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। सयुक्त पूंजी कंपनियों ने बडी परियोजनाए कार्यान्विति करने वाली कंपनियों के लिए पूंजी उपलब्ध करवाई। इग्लैड के लोगों ने इन संयुक्त पूंजी कपंनियों में काफी पैसा लगाया था। इनमे शेयरधारकों को उनके निवे"ा के अनुरूप लाभांस दिया जाता था।बडे ओद्योगो की स्थापना में इन संयुक्त पूंजी कंपनियों की बहुंत महत्वपूर्ण भूमिका थी।

(ix) उपनिवे"ाो की भूमिका :– इग्लैड 18वी शताब्दी के मध्य तक वि"व की सबसे बडी ओपनिवे"ाक शक्ति बन गया था। वि"व के प्रत्यके महाद्वीप मे उसके उपनिवे"ा स्थापित हो चुके थे। इग्लैड अब कच्चे माल की उपलबघ्ता के लिए सिर्फ अपने संसाधनों पर निर्भर नही था। उसके अधिकार मे वि"व के कई दे"ाो के संसाधन आ चुके थे। तेयार माल के लिय बाजारों की कोई कमी नही थीं। समुंद्री परिवहन की सुलभता और इस क्षेत्र पर उसके नियंत्रण के कारण इग्लैंड मे ओद्योगिक विकास को गति मिली और वहा वे"िवक ओद्योगिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया।

(x) वेज्ञानिक आविष्कार :– ओद्योगिक क्रांति के लिए वास्तविक कार्य वेज्ञानिक आविष्कारों ने किया। इग्लैंड मे उपयुक्त वातावरण और वेचारिक स्वतंत्रता के कारण इस दौर मे ऐसे आविष्कार हुए जिन्होनें मानवीय सभ्यता की दि"ाा ही बदल दी। भांप के ईजन के आविष्कार ने ओद्योगिक विकास को चार–चॉद लगा दिए। समुद्री जहाजों को अब भाप इंजन से चलाया जाने लगा। रेलवे का विकास हुआ और परिवहन साधनों का विकास ओद्योगिक क्रांति के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इस प्रकार इंग्लैंड और अन्य यूरोपीय दे"ाों में ऐसी परिस्थितियां बन गई जिससे ओद्योगिक क्रांति आई और मनुष्य के जीवन में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए।

6.4.3 इंग्लैंड में ओद्योगिक क्रांति का प्रसार (Spread of the Industrial Revolution in England) :–

जैसा कि इस अध्याय में हम पहले चर्चा कर चुके हैं कि ओद्योगिक क्रांति का उदय इंग्लैंड में हुआ। जिस समय पूरा यूरोप फ्रांस की 1789 ई0 की क्रांति की समानता, स्वतंत्रता और बंधुता के

नारों से गुंज रहा था। ईंग्लैंड महत्त्वपूर्ण आर्थिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा था। यद्यपि क्रांति का प्रभाव इंग्लैंड पर भी हुआ परंतु यूरोप की मुख्य भूमि से अलग होने के कारण इंग्लैंड फ्रांस की क्रांति की उथल–पूथल से बचा रहा। इंग्लैंड में ऐसी अनेक परिस्थितियां विद्यमान थी जिनके कारण ओद्योगिक क्रांति इंग्लैंड से ही प्रारंभ हुई। इंग्लैंड में 1760 ई0 से लेकर 1820 ई0 तक बहुत ही महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए जिन्होंने मानवीय जीवन को व्यापक दृष्टि से प्रभावित किया। इस दौर में इंग्लैंड में बहुत बड़े आविष्कार हुए जिन्होने ओद्योगिक क्रांति के लिए अहम भूमिका निभाई। अब परंपरागत हस्त कुटीर उद्योगों का स्थान कारखानों ने ले लिया। पूंजीपतियों ने बड़े पैमाने पर ओद्योगिक विकास के लिए पूंजी निवे"ा किया। इस युग में यातायात और परिवहन के साधनों का तेजी से विकास हुआ। इंग्लैंड में हुए इन परिवर्तनों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है :–

(i) कपड़ा उद्योग का विकास :– ओद्योगिक क्रांति का प्रारम्भ कपड़ा उद्योग से हुआ था। यद्यपि कपड़ा पहले भी बनता था परंतु यह हथकरघो पर बनता था और कई सदियों से इसमें कोई उन्नति नहीं हुई थी। यह कार्य सुत कातने और कपड़ा बुनने की प्राचीन पद्धति से होता था। सुत कातने के लिए चरखे का प्रयोग होता था। ओद्योगिक क्रांति की शुरूआत कपड़ा बनाने के तरीकों में क्रांतिकारी परिवर्तनों से हुई। जेम्स हारग्रीटज ने 1767 ई0 में स्पीनिंग जैनी का आविष्कार किया। जिससे एक साथ दस धागे बनाये जा सकते थे। रिचर्ड आर्कराईट ने 1769 ई0 में वाटर फ्रेम नामक एक म"ाीन बनाई जो पानी से चलती थी और इससे ज्यादा मजबूत धागा बनाया जा सकता था। सैम्युल क्राम्पटन ने 1779 ई0 में म्यूल नामक म"ाीन बनाई। यह म"ाीन भी पानी से चलने वाली थी। आगे चलकर इस क्षेत्र में और प्रगति हुई और 1785 ई0 में एडमंड कार्टराईट ने पावर लूम नामक म"ाीन बनाई। यह कताई और बुनाई दोनों कार्य कर सकती थी। और पानी से चलती थी। पावर लूम के बनने के बाद कपड़ा उद्योग में बहुत महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया। कपास से बिनौले अलग करने की एक म"ाीन इसी समय 1793 ई0 में अमेरिका के विटने ने बनाई जो तेजी से बिनौले कपास से अलग कर देती थी। इस म"ाीन नें कपड़ा उद्योग में क्रांति ला दी। इसके अतिरिक्त रंगाई, छपाई और कपड़े को सफेद करने की प्रकिया में भी बड़े सुधार कार्य हुए। इस प्रकार इन आविष्कारों ने ब्रिटेन में कपड़ा उद्योग में क्रांति ला दी।

(ii) भाप–"ाक्ति का प्रयोग :–18वीं सदी के उतरार्ध से इग्लैंड मे प्रत्येक क्षेत्र मे परिवर्तन हो रहे थे। ये परिवर्तन सामान्य नहीं थें। अब पानी की बजाय भाप की शक्ति से चलने वाले इंजन और म"ाीनें बनने लगी। सूत कातने और बुनने वाली पानी से चलित म"ाने ज्यादा कारगार साबित नहीं हो रही

थी। म"ीनों को ज्यादा तेज गति से चलने के लिए ज्यादा कारगार तरीके की आव"यकता थी। थामस न्यकामैन नामक व्यक्ति ने यद्यपि 1705 इ0 में ही वाष्प शक्ति से चलने वाला ईजन बना दिया था परंतु यह ज्यादा कारगार साबित नहीं हो पाया था। जैम्स वाट ने 1769 ई में इस पर नए सिरे से कार्य करके इस उपयोगी और व्यावहारिक बना दिया अब कपडा उद्योग की पानी से चलने वाली म"ीनों को भाप –"ाक्ति से चलाया जाने लगा जिससे कपडा उद्योग ही नहीं अपितु अन्य उद्योग और कार्यो में भाप शक्ति इंजनों का प्रयोग होने लगा।

(iii) लोह और कोयल उद्योग मे क्रांति :– अभी तक ईग्लैंड और अन्य दे"ाों म लोहे का पिद्यलाने के लिए लकडी के कोयले का प्रयोग होता था। पंरतु लोहे की मांग बढने के कारण लकडी के कोयले की कमी हो गई और इसकी कीमतें भी बहुत बढ गई। इससे उद्योगिक क्षेत्र के विकास के लिए नए प्रयोग प्रांरभ हुए। इग्लैंड अब्राहम डर्बी ने 1709 ई0 में जले हुए कोयले से लोहा पिद्यलाने का सफल प्रयोग किया। जॉन स्मीटन ने 1760 ई0 में अब्राहम डर्बी के प्रयोग को और परिष्कृत किया। हेनरी कोर्ट ने 1784 ई0 मे लोहे को पिद्यलाकार तैयार करने की नई विधि खोज निकाली। हम्फ्री डैवी ने 1815 ई0 मे सेफटी लैम्प का आविष्कार किए जिससे लोहे और कोयले की खानों में श्रमिकों का कार्य आसान हो गया। बेसेमर ने 1854 इ0 में लोहे से इस्पात बनाने की विधि का आविष्कार किया। से सभी प्रयोग और आविष्कार लोहे और कोयले उद्योग में क्रांति के वाहक बनें।

(iv) बिजली का आविष्कार :– पानी और भाप की शक्ति के प्रयोग के बाद उद्यागों में कार्य करने के लिए प्राकृतिक गैस और पेट्रोल म"ीनों का भी उपयोग होने लगा। इग्लैड में 1870 ई0 में बिजली उत्पन्न करने वाले जेनरेटर का आविष्कार हो गया। इससे ओद्यागिक क्षेत्र में क्रांति आ गई। अब उन दे"ाों मे उद्योग स्थापित होने लगे जहा कोयला उपलब्ध नहीं था। थामस एडीसन ने बल्ब का आविष्कार किया जो अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ और रो"ानी के लिए यह उद्योग मे और घरों में प्रयुक्त होने लगा परंतु यह बिजली से चलित बल्ब अभी सामान्य लागों की पहुच से दूर था।

(v) यातायात एवं संचार के साधनो में क्रांति :– अब मनुष्य के दुनिया बदलने जा रही थी। यह आधुनिक युग का प्रांरभ था । जॉन मैटकाफॅ ने तारकोल तथा पत्थर की छोटी गिट्टियों के प्रयोग से पक्की सडक बनाने की पद्धति की शुरूआत कर दी। इस कार्य में स्काटलैंड के मैक एडम थॉमस टेलफोर्ड ने और सुधार किया और सडक बनाने की आधुनिक विधि का आविष्कार किया। इसके प"चात् इग्लैंड के सभी मुख्य नगरों को पक्की सडकों से जोडा गया। फ्रांस, स्वीडन और पौलैड में भी इसी पद्धति पर कार्य हुआ । इग्लैंड में नहरे बनाने का कार्य भी गति पकडने लगा।

1772 ई में मानचैस्टर से लिवर पूल तक नहर का निर्माण हुआ। इन नहरों का परिवहन के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। फ्रांस मे भी नहरों का विकास हुआ। 1814 ई0 मे जार्ज स्टीफेन्सन ने भाप से चलने वाले रेलवे ईंजन का आविष्कार किया। इस ईंजन का 1830 ई0 मानचैस्टर से लिवरपूल तक रेलवे लाईन विछाकर परीक्षण किया गया ये ईंजन 12 मील प्रतिधंअें की रफतार से चल सकता था। इस प्रकार रेल का आविष्कार मानव सभ्यता के विकास में एक मील का पत्थर था।

(vi) डाक एवं तार :– इग्लैंड में डाक व्यवस्था पहले से प्रचलीत थी। रालैंड हिल ने इग्लेंड में डाक –व्यवस्था को आधुनिक रूप दिया। उसने 1840 इ0 में पेनी पोस्टेज सिस्टम की व्यवस्था तैयार की। परिवहन के साधनों के विकास से यह प्रणाली और भी प्रगति करने लगी। 1837 ई में मोर्स ने तार का आवष्किार किया जिससे संदे"ाो को एक स्थान से दूसरे स्थान पर तेजी से पहुचाया जा सकता था। बेल ने 1876 ई0 में टेलीफौन का आविष्कार किया। इन आविष्कारों से दुनिया ही बदल गई।

इस प्रकार हम देखते है कि 18वी सदी से इग्लैंड में आधुनिक (आविष्कारों के कारण) परिवर्तनों का दौर तेजी से प्रांरभ हो गया। देखते–देखते मनुष्य के जीवन में तेजी से परिर्वतन होने लगे। ये परिवर्तन अभूतपूर्व थे जिन्होने सब कुछ बदल दिया और कृषि – क्रांति के बाद ओद्योगिक क्रांति का दौर आया जिसने इग्लेंड मे ंही नही अपितु सभी महाद्वीपो में मानवीय जीवन को प्रभावित किया। ये परिवर्तन तीव्र गति से हो रहे थे, इसलिए इन्हे ओद्येगिक क्रांति का नाम दिया।

6.4.4 प"िचमी यूरोप में औद्योगिक क्रांति का प्रसार :–

"औद्योगिक क्रांति का उदय इग्लैंड में हुआ था। अब यूरोप के अन्य दे"ाो ने भी इन परिवर्तनों का अनुसरण किया। बेल्जियम , फ्रांस और जर्मन–राज्यों ने शीघ्र ही इग्लैंड की औद्योगिक क्रांति से प्रेरणा लेकर इस दि"ाा में आगे बढने का नि"चय किया। एच. हर्डर के शब्दों में , "प"िचमी यूरोप वि"व के अन्य दे"ाों से तकनीकि दृष्टि से सदैव श्रेष्ठ रहा है।" प"िचमी यूरोप के अन्य दे"ाों में वैज्ञानिक सिंद्धातों और विचारों का पहले ही प्रसार हो चुका था। इसलिए इन दे"ाों में औद्योगिक क्रांति का प्रसार बहुत बडी बाधा नहीं थीं

(i) बेल्जियम :– इग्लैंड से बेल्जियम घनिष्ठ से रूप से जुडा हुआ था। बेल्जियम 1830 ई0 मे नीदरलैंड से स्वतंत्र हुआ था। बेल्जियम मे औद्योगिक विकास का प्रांरभ स्वतंत्रता से पूर्व ही हो चुका था। स्वतंत्रता के प"चात् बेल्जियम के लोगों ने इग्लैड से निकटता का लाभ

उठाया और इग्लैंड से म"ाीनों का आयात किया। धीरे–धीरे मे म"ाीने यहीं बनने लगी। यहॉ कारखाने की स्थापना होने लगी। यहॉ 1834 ई में इग्लैड के सहयोग से रेलवे का विकास भी प्रारंभ हो गया। बेल्जियम 1870 ई तक यूरोप में इग्लैेड के प"चात् दूसरे नंबर का औद्योगिक दे"ा बन गया।

(ii) जर्मन – राज्यों में औद्योगिक क्रांति :– जर्मनी मे राजनीतिक एकीकरण 1870 ई0 मे सम्पन्न हुआ थां। इससे पूर्व यहा एर्"ाया और कई अन्य छोटी बडी रियासते थी। इसके बाबजूद एर्"ाया एक प्रगतिर्"ाल रियासत थी और यहॉ खनीज प्रदार्थो की भी कमी नहीं थी। यहॉ 1802 ई0 के बाद सडको का प्रांरभ हो गया था। एर्"ाया ने भी 1840 ई0 के प"चात् राईन नदी का यातायात के लिए प्रयोग होने लगा। एर्"ाया ने भी 1840 ई0 के बाद रेलवे के विकास पर ध्यान केन्द्रित किया। जर्मनी 1870 ई0 में संयुक्त हो गया और इसके प"चात् यहॉ तेजी से औद्योगिक विकास का मार्ग अपनाया गया और जल्दी ही जर्मनी एक बडा औद्योगिक राष्ट्र बन गया।

(iii) फ्रांस :– बेल्जियम के बाद औद्योगिक क्रांति का सबसे ज्यादा प्रभाव फ्रांस पर पडा। यद्यपि फ्रासं में औद्योगिक विकास का सबसे इग्लैंड से कॉफी बाद में हुआ। फ्रासं में औद्योगिक विकास में देरी का मुख्य कारण उसका कई वर्षो तक क्रांति में उलझे रहना था। नेपौलियन बोनापार्ट ने इस दि"ाा में कुछ कार्य किए परतु फ्रांस में औद्योगिक क्रांति ने गति नेपालियन युग के बाद गति पकडी। फ्रासं में 1815 ई0 के प"चात् कोयले और लोहे के उत्पादन में काफी वृद्धि दर्ज की गई। यहॉ सडको और नहरों का भी विकास तेंजी से हुआ। 1842 ई0 में फ्रांस में रेलवे का विस्तार प्रारंभ हो गया था। फ्रासं में औद्योगिक क्रांति का प्रसार नेपोलियन तृतीय (1848 – 1870 ई0) के युग में बहुत तीव्रता से हुआ। और फ्रासं यूरोप का तीसरा बडा औद्योगिक राष्ट्र बन गया।

(iv) इटली :–इटली भी जर्मनी की तरह कई रियासतो मे बंटा हुआ था। इसलिए इटली मे कृषि और औद्योगिक क्रांति का प्रसार देरी से हुआ। इटली का 1870 ई0 मे एकीकरण हो गया। इटली के एकीकरण के प"चात् यहॉ तेजी से औद्योगिक विकास हुआ। इटली में 1900 ई0 तक कपडा, धातु और अन्य उद्योग तेजी से विकसीत हो चुके थे। इटली मे जल विद्युत परियोजनाओं का भी बडी तेज गति से विकास हुआ।

(v) रूस में औद्योगिक क्रांति :– रूसी समाज एक परम्परागत समाज था। पूर्वी यूरोपीय दे"ा और रूस औद्योगिक क्रांति के प्रभावों से काफी समय तक अछुते रहे। रूस मे जार"ाही और सामंतवादी प्रणाली का प्रभाव काफी ज्यादा था। यहॉ अभी आधुनिक ि"ाक्षा का प्रसार भी नही हुआ था। रूस क्षेत्रफल की दृष्टि से यूरोप का सबसे बडा दे"ा था और यहॉ खनिज संसाधन भी काफी उपलब्ध थे। रूस में 1806 ई0 मे केन्द्रिय बैंक की स्थापना हो गई थी। रूस मे औद्योगिक विकास 1890 इ0 के प"चात् प्रारंभ हुआ और इसके बाद यहा तेजी से औद्योगिकरण हुआ।

(vi) पूर्वी यूरोपीय दे"ाों मे औद्योगिक क्रांति :– 1850 ई0 के प"चात् हालैंड, आस्ट्रिया, नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड आदि दे"ाो में भी औद्योगिक परिवर्तन हुए। परंतु इन दे"ाो में औद्योगिक विकास की गति धीमी रही पोलैड मे 1870 ई0 के प"चात् औद्योगिक क्रांति का प्रसार हुआ इस प्रकार हम देखते है कि इग्लैंड के प"चात् यूरोप के अन्य दे"ाों मे भी औद्योगिक क्रांति का प्रसार हो गया। यद्यपि अलग–अलग दे"ाो में इसका समय और प्रभाव अलग –अलग रहा।

6.4.5 औद्योगिक क्रांति के प्रभाव :–

औद्योगिक क्रांति इग्लैंड और यूरोप के ही नहीं अपितु संपूर्ण वि"व के इतिहास में अंत्यंत युग परिवर्तनकारी घटना थी। इसने मानव –सभ्यता के सफर को तेजी से प्रभावित किया। प्रसिद्ध इतिहासकार रेम्जे म्यूर ने इसे एक शक्ति"ाली और शांत परिवर्तन कहा हे। मानव सभ्यता के विकास के क्रम में मानवीय जीवन पर इतना अधिक गहरा प्रभाव किसी और घटना ने नही डाला। जितना कि औद्योगिक क्रांति ने औद्योगिक क्रांति में राजनैतिक, आर्थिक , सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया।

(क) आर्थिक क्षेत्र मे प्रभाव :–

(i) लधु –उद्यागों का बर्बाद होना :– औद्योगिक क्रांति के प्रसार से पूर्व इग्लैंड और अन्य यूरोपीय दे"ाो के नगरों और ग्रामीण क्षेत्र मे व्यापार और वाण्जिय मे वृद्धि के फलस्वरूप बहुत से लधु–उद्योग विकसीत हो गए थें। औद्योगिक क्रांति के प्रसार से यें बर्वाद हो गए क्योकि कारखानों में बनी वस्तुए सुंदर, सस्ती और मजबूत होती थी। लधु–उद्योग और छोटे व्यवसाय औद्योगिक क्रांति का सामना नहीं कर सके और बर्बाद हो गए।

(ii) बेकारी और बेरोजगारी की समस्या :– ग्रामीण क्षेत्रो में औद्योगिक क्रांति के प्रभाव के फलस्वरूप बेकारी और बेराजगारी की समस्या उत्पन्न हो गई। लधु –उद्योगों के बर्बाद होने से बहुत से कारीगर बेकार हो गए और ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी की समस्या आ खडी हुई। अंततः ये लोग शहरों और औद्योगिक केन्द्रों की ओर रूख करने लगे और कारखानों में श्रमिक बनकार गुजारा करने लगे जहॉ उनकी स्थिति बहुत खराब थी।

(iii) कारखानों की स्थापना और श्रमिक –वर्ग का उदय :– औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप इग्लैंड में कई नए नगर अस्तित्व में आए जो अलग–अलग उद्योगों के केन्द्र के रूप में उभरे। सबसे पहले कपडा उद्योग के कारखानें स्थापित हुए। बाद लोहे और कोयले पर आधारित उद्योग पनपने लग। इसके बाद अन्य उद्योगों से संबंधित कारखाने स्थापित हो गए। इन कारखानों में कार्य करने के लिए बडी संख्या में श्रमिक भर्ती किए गए। इग्लैंड के प"चात् अन्य यूरोपीय दे"ाों मे भी औद्योगिक क्रांति के प्रसार के फलस्वरूप कारखाने स्थापित हुए और यूरोपीय समाज में श्रमिकों का एक नया वर्ग अस्त्तिव में आया जो कारखानों में बडे पैमाने पर कार्य कर रहा था।

(iv) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का विकास :– औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप इग्लैड सबसे बडा औद्योगिक दे"ा बन गया। जल्दी ही यूरोप के अन्य राष्ट्रों में औद्योगिक क्रांति आई। औद्योगिक क्रांति के प्रभाव से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अत्यधिक वृद्धि हुई। आयात और निर्यात बढने से इग्लैंड की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में विकास और वृद्धि से राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई।

(v) यातायात और संचार के साधनों मे वृद्धि :– औद्योगिक क्रांति से पूर्व समुद्री परिवहन से ही व्यापार होता था। समुद्रों मे जहाज कई –कई महीनों की लम्बी यात्राएं करके अपने गंतवय पर पहुचते थे। अब तकनीक मे विकास के फलस्वरूप सडको का विकास हुआ और परिवहन के साधनो में वृद्धि हुई। जहाजों मे ईंजन का प्रयोग होने से समुद्रों मे यात्राएं करना आसान हो गया। रेलवे का 1852 ई0 के प"चात् तेजी से इग्लैंड और अन्य दे"ाों में विकास हुआ। नहरों का निर्माण कर इन्हें भी परिवहन के लिए प्रयोग किया गया।

(vi) आर्थिक निर्भरता के युग का जन्म :– औद्योगिक क्रांति से पूर्व व्यापार की वस्तुएं बहुत सीमित होती थी। ग्रामीण क्षेत्राों की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर व्यवस्था होती थी। औद्योगिक क्रांति से कारखानों में तैयार सामान दूर–दूर तक पहुचाया जाने लगा। इससे लधु उद्योगों

का अंत हो गया क्योकि कारखानो मे तैयार सामान सस्ता, सुन्दर ओर मजबूत होता था। धीरे–धीरे लोग इस सामान पर निर्भर हो गए। इस प्रकार अब आर्थिक निर्भरता के युग का जन्म हुआ ओर बाजारीकरण का विकास हुआं

(vii) पूंजीवाद का उदय :– औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप उद्योगपतियों को काफी लाभ होने लगा । धीरे–धीरे उनके पास अतिरिक्त पूंजी एकत्रीत होने लगी। उनका सामान दूर–दूर तक उपनिवे"ाो मे पहुचने लगा। अतिरिक्त पूंजी होने से पूंजीवाद के युग की शुरूआत हुई।

(viii) आर्थिक साम्राज्यवाद का प्रांरभ :–सबसे पहले औद्योगिक क्रांति का उदय ईग्लैंड में हुआ इग्लैंड ने धीरे–धीरे कच्चे माल की प्राप्ति और तैयार माल के लिए बाजारों के रूप में उपनिवे"ाों का खूब दोहन किया। औद्योगिक राष्ट्र बनने और माल की खपत के लिए अब अतिरिक्त बाजारों की आव"यक्ता महसूस होने लगी। इससे अब आर्थिक साम्राज्यवाद के युग का प्रारंभ हुआ। धीरे–धीरे अन्य प"िचमी यूरोपीय दे"ा सयुक्त राज्य अमेरीका और जापान भी इस दौड मे शामिल हो गए। इसका परिणाम यह हुआ कि अब सभी औद्योगिक राष्ट्र उपनिवे"ाों की स्थापना के लिए प्रयासरत हो गए।

(ख) सामाजिक जीवन पर प्रभाव :–

औद्योगिक क्रांति ने मानवीय जीवन के प्रत्येक पहल को प्रभावित किया। सामाजिक जीवन पर तो औद्योगिक क्रांति ने सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव डाले। कुछ सकारात्मक प्रभाव रहे तो कुछ नकारात्मक प्रभाव भी रें।

(i) युरोपीय जनसंख्या में वृद्धि :– सामाजिक क्षेत्र मे औद्योगिक क्रांति का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव यह रहा कि यूरोपीय जनसंख्या मे वृद्धि दर्ज की गई। इस क्र्रांति के कारण सुख–सुविधाओं में वृद्धि हुई। कृषि –क्र्रांति के फलस्वरूप खाद्यान्न का संकट पहले ही दूर हो चुका था। इस काल में जीवन प्रत्या"ाा में वृद्धि हुई अकाल, महामारी मे कमी आई। यूरोपीय महाद्वीप की जनसंख्या 1750 इ0 में 140 मिलियन थी जो 1800 ई0 में बढकर 187 मिलियन हुई और 1900ई0 तक 600 मिलियन हो गई।

(ii) औद्योगिक नगरो का उदय :– औद्योगिक क्रांति के प्रभाव के फलस्वरूप इग्लैंड और अन्य प"िचमी यूरोप के दे"ाों में नए औद्योगिक नगरों का उदय हुआ। ये नगर लोहे और कोयले

के भंडारों के आस–'पास अस्तित्व में आए। इग्लैड मे मानचैस्टर, लंका"ाायर, और लिवरपूल जैसे बडे औद्योगिक नगर अस्तित्व में आए। इसी प्रकार यूरोप मे भी कई बडे औद्योगिक नगरो का उदय हुआ। इन नगरो मे बडी संख्या में अन्य गतिविधियां भी शुरू हो गई। ग्रामीण क्षेत्राो से बडी संख्या में लोग इन नगरों मे बस गए। इन नगरों में जनसंख्या का एक बडा वर्ग श्रमिकों ओर कारीगरों का था।

(iii) श्रमिक–वर्ग की शक्ति का उदय :– औद्योगिक क्रांति के कारण यूरोपीय समाज में पूंजीपति और श्रमिक वर्गो का उदय हुआ। पूंजीपति वर्ग अल्संख्यक था तो श्रमिक वर्ग बहुसंख्यक वर्ग था। औद्योगिक क्रांति के प्रसार के साथ पूंजीपति वर्ग ने ज्यादा लाभ अर्जित करने के उद्धे"य से श्रमिकों को शोषण प्रारंभ कर दिया। श्रमिकों की द"ाा खराब हो गई। सरकार ने इस दि"ाा में कार्य कियां अंततः श्रमिकों की स्थिति से तंग आकर श्रमिक आंदोलन भी प्रारंभ हुए। बडे–बडें श्रमिकों संधों का उदय हुआ औ श्रमिका वर्ग की शक्ति का उदय हुआ।

(iv) जीवन–स्तर में सुधार :–औद्योगिक क्रांति का सामाजिक जीवन में एक बडा प्रभाव यह हुआ कि जीवन –स्तर में सुधार प्रारंभ हो गया । नगरों में सुख –सुविधाओं में वृद्धि से लोग उच्च स्तर का जीवन व्यतीन करने लगे। लोगों का आकर्षण भौतिक जीवन के प्रति बढ गया। ग्रामीण क्षेत्रों में भी कारखानों मे तैयार उत्पाद पहुँचने लग। लोगो के मनोरंजन के साधनों में वृद्धि हुई।

(v) महिलाओं एव बच्चों का शोषण :– पूंजीपतियों की बढती लालसा के कारण छोटे उद्योगों में कम वेतन पर महिलाओं और बच्चों को कार्य पर रखा जाने लगा। पूंजीपतियों ने ज्यादा से ज्यादा मुनाफाखौरी के लिए महिलाओं और बच्चों का शोषण किया। इग्लैंड में 1830–1840 इ0 के मध्य महिलाओं और 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों का बहुत शोषण हुआ। इसके बाद सरकार की और से इस संबंध में कानून बनाए गए।

(vi) सामाजिक संपर्को मे वृद्धि :– औद्योगिक क्रांति के प्रसार के फलस्वरूप यातायात एवं संचार के साधनों मे वृद्धि हुई । यातायात एवं संचार सुविधाओं मे वृद्धि से सामाजिक संपर्को में वृद्धि हुई। इस दि"ाा में रेलवे के विकास ने काफी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(vii) दृष्टिकोण में परिवर्तन :– औद्योगिक क्रांति के व्यापक प्रसार से दुनिया बदलने लगी। औद्योगिक नगरों का उदय, यातायात एवं संचार–साधनों में हुई प्रगति और जीवन–स्तर मे

ंवृद्धि ने लोगों का दृष्टिकोण परिवर्तित कर दिया। अब लोगों की दुनिया अपने आस–पास तक सिमटी हुई नही थी। अपितु उनका दृष्टिकोण काफी व्यापक हो गया और इसने कला और संस्कृति को प्रभावित किया।

(ग) राजनैतिक क्षेत्र मे प्रभाव :–औद्योगिक क्रांति ने ईग्लैंड और अन्य यूरोपीय दे"ाो में राजनैतिक को भी प्रभावित किया जिसका वर्णन इस प्रकार हैं:–

(i) इग्लैंड की प्रतिष्ठा और प्रभाव मे वृद्धि :– औद्योगिक क्रांति का उदय इग्लैंड में हुआ था। इसका सबसे अधिक लाभ इग्लैंड को ही प्राप्त हुआ। इग्लैंड वि"व का शक्ति"ााली औद्योगिक दे"ा बन गया और उसकी अर्थव्यवस्था भी काफी मजबूत हो गई। इग्लैड की इसी बढती शक्ति और मजबूत अर्थव्यवस्था के बल पर उसका पूरे वि"व पर एकाधिकार स्थापित हो गया था उसके उपनिवे"ाों मे भी काफी वृद्धि हुई। इससे इग्लैंड की दुनिया में प्रतिष्ठा और प्रभाव बढे

(ii) श्रमिक वर्ग क राजनीतिक शक्ति के रूप में उदय :– औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप इग्लैंड और अन्य दे"ाों में श्रमिक वर्ग एक प्रभाव"ााली एवं एकजुट वर्ग के रूप मे स्थापित हो गया। यद्यपि मजदूरों का बडा तबका निर्धन और कम पढा–लिखा था और शोषित भी था। परंतु धीरे–धीरे पूंजीपतियों के शोषण के विरूद्ध वे एकत्रित हो गए और उनमे जागृति आई। विभिन्न दे"ाो मे श्रमिक संघ बनने लगे। कई दे"ाो मे श्रमिकों की समस्याओं और उनके निदान के लिए कार्य करने के लिए राजनैतिक दल आगे आए। मजदूरो को मध्यम वर्ग का समर्थन भी मिल गया। इग्लैंड मे लैबर पार्टी की स्थापना हुई और इसे र्प्यापत राजनैतिक समर्थन मिला। अन्य दे"ाों मे भी श्रमिको के हित के लिए राजनैतिक दलों की स्थापना हुई।

(iii) समाजवादी विचारधारा का उदय :– औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप पूंजीपति वर्ग एक शक्ति"ााली वर्ग के रूप में उभरा। ज्यादा से ज्यादा लाभ अर्जित करना ही उनका उद्दे"य था। अपने उद्दे"यों की पूर्ति के लिए पूंजीपतियों ने श्रमिकों का जमकर शोषण किया। श्रमिकों की विव"ाता का उन्होंनें पूरा फायदा उठाया। श्रमिकों के शोषण को देखकर राजनीतिक विचारकों और अन्य लोगों ने अपनी रचनाओं में श्रमिक शोषण के विरूद्ध आवाज उठाई। बुद्धिजीवियों ने भी श्रमिकों के शोषण को पमुखता से अपनी रचनाओं का विषय बनाया। राबर्ट ओवन लंई ब्लाक, संट साईमन, फेडरिक एंग्लस और कार्ल मार्क्स

आदि समाजवादी विचारकों ने समाजवादी विचारधारा को जन्म दिया और इस विचारधारा पर आधारित राजनैतिक दलों की कई दे"ाों मे स्थापना हुई।

(iv) सामाजिक वर्ग –विभाजन :– पूंजीवादी औद्योगिक क्रांति ने सामाजिक वर्ग विभाजन को बढावा दिया पूंजीपतियों और श्रमिकों के हित एक –दूसरे से बिल्कुल मेल नहीं खाते थे। ये दोनों वर्ग एक –दूसरे के विरोधी थे। पूंजीपतियों का उद्दे"य कम से कम लागत रख कर ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाना था। ऐसा वे श्रमिकों का शोषण करके ही सकते थे। मजदूरों को उनकी मेहनत के अनुसार पारिश्रमिक नही दिया जाता था। कार्य करने के स्थानों अत्यधिक गंदगी रहती थी। उनके लिए आवासों की भी समुचित व्यवस्था नहीं होती थी। इस प्रकार औद्योगिक क्रांति ने समाज में सामाजिक वर्ग विभाजन कर सामाजिक मतभेदों को बढानें का कार्य किया।

(v) राष्ट्रीय एकता की भावना में वृद्धि :– औद्योगिक क्रांति के प्रसार के कारण यातायात एवं संचार के सांधनों मे वृद्धि हुईं दे"ा के दुर्गम स्थानों तक पहुॅचना अब आसान हो गया। इससे पूर्व दे"ा के दुर्गम क्षेत्र मुख्य भू–भागो से कटे रहते थें। आवागमन के सांधनों में वृद्धि और सडक और रेल परिवहन के विकास ने राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत बनाया।

(vi) विना"ाकारी हथियारों की दौड प्रारंभ होनाः– ओद्यागिक क्रांति ने सैन्य के क्षेत्र मे आधुनिकीकरण को बल दिया। ओद्यागिक क्रांति के फलस्वरूप हुई तकनीकी क्रांति का प्रयोग अब सेनाओं के आधुनिकीकरण पर किया जाने लगा। सैन्य क्षेत्र में नए हथियारों के उत्पादन पर बल दिया जाने लगा। आधुनिक हथियारों पर निवे"ा किया जाने लगा। इग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि दे"ाो ने विना"ाकारी हथियारो का जखीरा बढानें पर तेजी से काम करना शुरू कर दिया।

(vii) उद्योगपतियों का राजनीति में प्रभाव बढना :– ओद्यागिक क्रांति के परिणामस्वरूप उद्योगपति काफी शक्ति"ााली हो गए। कई बडें उद्योगपतियों की राजनीतिक क्षेत्र में रूचि बढ गई। इनके पास साधनों की कोई कमी नहीं होती थी। बडी संख्या में उद्योगपतियों सांसद बने और इन्होनें सरकार की नीतियों को अपने हितों के संवर्घन के लिए प्रभावित करना शुरू कर दिया।

(घ) बौद्धिक एवं सांस्कृतिक जीवन मे प्रभाव :– ओद्यागिक क्रांति ने इग्लैड और अन्य पि"चमी दे"ाो के बौद्धिक एवं सांस्कृतिक जीवन को भी प्रभावित किया।

(i) अंधवि"वासों एवं आडम्बरों का अंतः– ओद्यागिक क्रांति ने लोगो के दृष्टिकोण मे सकारात्मक परिवर्तन किया। यह परिवर्तन शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्राों में दिखाई दे रहा था। यातायात एवं संचार के साधनों के विकास, तार एवं टेलीफोन का विकास और अन्य तकनीकी परिवर्तनों ने समाज मे ंपहले से मौजूद अंधवि"वासों एवं आंडम्बरों का अंतः कर दिया।

(ii) भौतिकवादी दृष्टिकोण का विकास :– यूरोप में जीवन में धर्म को बडा प्रभाव था। कैथोलिक मत तो भौतिक साधनों के संचय को धर्म के विरूद्ध मानता था। ओद्यागिक क्रांति के फलस्वरूप जीवन में कई बडे परिवर्तन हुए लोगो के जीवन स्तर में सुधार हुआ। पहले से स्थापित परम्पराओं के स्थान पर नए विचारों का प्रसार किया। अब लोगों का दृष्टिकोण बदला भौतिक जीवन की सुख–सुविधाओं मे वृद्धि की और ध्यान दिया जाने लगां

(iii) साहित्य मे वृद्धि :– ओद्यागिक क्रांति ने सुख –सुविघाओं मे वृद्धि की वही आर्थिक असमानताओं में भी वृद्धि हुइ। समाज के प्रबृद्ध लोगों ने अपनी रचनाओं में इन समस्याओं को प्रमुख स्थान देना शुरू किया। श्रमिक वर्ग की द"ाा, महिलाओं और बच्चों की दुर्द"ाा, ओद्यागिक नगरों की समस्याएं और कारखानों की जिंदगी साहित्यकारों की रचनाओं के मुख्य विषय बन गए। पूंजीपतियों के भोग विलासपूर्ण जीवन की भी रचनाओं मे स्थान दिया गया।

(iv) विज्ञान और तकनीक का विकास :– ओद्यागिक क्रांति के फलस्वरूप तकनीक में विकास और नए प्रयोगों मे वृद्धि हुई। बडी बडी प्रयोग"ाालाएं स्थापित हुई ओर विज्ञान के विकास और तकनीक में वृद्धि पर जोर दिया जाने लगा। इस प्रकार ओद्यागिक क्रांति का व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव पडा। यह एक नए युग का प्रारंभ था। इग्लैंड की शक्ति और प्रतिष्ठा काफी बढ गई और यूरोप के अन्य दे"ाों ने भी ओद्यागिक क्रांति का अनुसरण किया। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में इस क्रांति के प्रसार से नई दि"ाा मिलीं।

6.5 प्रगति–समीक्षा

(अ) रिक्त स्थान भरे :–

(i) फलाईग शटल का आविष्कार ………….. ने किया?

(ii) स्पिनिंग जैनी का आविष्कार………………. ने किया ?

(iii) पावरलूम का आविष्कार ………………. ने किया?

(iv) रेलवे ईंजन का आविष्कार ……………. ने किया?

(v) टेलीफोन का आाविष्कार……………. ने किया?

(vi) टेलीग्राम (तार) का आविष्कार……….. ने किया?

(vii) स्टीम (भाप) ईजन का आविष्कार……………. ने किया?

(viii) वाटर फ्रेम का आविष्कार……………… ने किया?

(ix) दूरबीन का आविष्कार ……………… ने किया?

(x) शेफटी लैम्प का आविष्कार……………….. ने किया?

(ब) उचित मिलान करें :–

(i)	कॉटन जिन	इग्लैंड
(ii)	ओद्यागिक क्रांति का उदय	जॉन मैटकॉफ
(iii)	म्यूल	रोलैंड हिल
(iv)	आधुनिक –डाक– प्रणाली	एली विहट्ने
(v)	सडक निर्माण तकनीक	सैम्युअल क्राम्पटन

(स) बहुविकल्पीय प्र”न।

(i) कृषि –क्रांति और औद्योगिक क्रांति का उदय हुआ?

(क) फ्रासं (ख) इग्लैंड (ग) स्पेन (घ) जर्मनी

(ii) इग्लैंड में कृषक राजा कहा जाता है?

(क) जार्ज प्रथम (ख) जार्ज तृती (ग) चार्ल्स प्रथम (घ) हेनरी सप्तम्

(iii) कृषि –क्रांति का पैगम्बर कहा जाता है?

(क) राबर्ट वेस्टर्न (ख) जेथ्रो टुलर (ग) अर्त्थर यंग (घ) टाउनसैंड

(iv) 'डिसकोर्स ऑन हसबेंडरी' 1645 ई0 में किसके द्वारा प्रका"ात की गई?

(क) आर्थर यंग (ख) टाउनसैंड (ग) राबर्ट वेस्टर्न (घ) ब्लैकवैल

(v) प"ाुओं की नस्ल सुधारनें का मुख्य कार्य किया ?

(क) जेथ्रोटुल (ख) बैकवैल (ग) टाउनसैं (घ) राबर्ट वेस्टर्न

(vi) फलाईंग शटल का आविष्कार किया?

(क) जॉन एडम्स (ख) जॉन के (ग) जैम्स हारग्रीव्ज (घ) आर्कराइट

(vii) सेफटी लैम्प का आविष्कार किया?

(क) हम्फ्री डेवी (ख) जॉन के (ग) मोर्स (घ) बैल

(viii) रेलवे ईंजन का आविष्कार किया?

(क) मोर्स

(ख) हम्फ्री डेवी

(ग) जॉन के

(घ) जार्ज स्टीफनसन

(ix) टेलीग्राफ (तार) का आविष्कार किया?

(क) हम्फ्री डेवी

(ख) मोर्स

(ग) जॉन के

(घ) रिचर्ड आर्कराइट

(x) पवर लूम का आविष्कार किया?

(क) मोर्स

(ख) एडमंड हेनरी

(ग) एडमंड कार्ट राईट

(घ) जॉन के

6.6 सारां"ा :– कृषि –क्रांति और ओद्योगिक क्रांति आधुनिक युग के प्रांरभ की मुख्य घटनाएं है। इस अध्याय मे हमने इग्लैंड में कृषि –क्रांति और औद्योगिक क्रांति के प्रांरभ और यूरोपीय महाद्वीप मे इसके प्रसार पर विस्तृत अध्ययन एव समीक्षा की है। इन क्रांतियों के उदय के फलस्वरूप मनुष्य के जीवन में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन आए जो इससे पहले अतीत में आए परिवर्तनों से कही अधिक

प्रभावकारी सिंद्ध हुए। कृषि –क्रांति के उदय से पूर्व यूरोप मे प्राचीन पद्धति पर कृषि होती थी और अकाल और महामारी मानवीय जीवन के लिए बडे संकट थे। कृषि –क्रांति ने उत्पादन में वृद्धि की और मानवीय जीवन मे समृद्धता आइ। खाद्यान का अतिरिक्त उत्पादन हाने लगा। इग्लैंड के प"चात् शीघ्र ही यूरापीय दे"ाों में कृषि क्रांति की लहर आई। यद्यपि पूर्वी यूरोप में कृषि क्रांति का प्रभाव काफी बाद में हुआ। कृषि –क्रांति ने मानवीय जीवन को संबल प्रदान किया।

इग्लैंड में 18वी सदी के उतरार्ध से औद्योगिक क्रांति का जन्म हुआ जिसने कृषि–क्रांति से आगे बढकर उद्योग, परिवहन, वेज्ञानिक और तकनीकि क्षेत्र में अनेक सफलताएं प्राप्त की। आर्नोल्ड टॉयन्वी ने इन बडे परिवर्तनों को औद्योगिक क्रांति की संज्ञा दी है।कुछ विद्वान् इन परिवर्तनों को क्र्ांति की संज्ञा देने पर एतराज करते है। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप इग्लैंड में कपडा उद्योग, लोहा एवं कोयला उद्योग,यातायात एवं संचार के साधनों का विकास और कृषि क्षेत्र के लिए बडी–बडी म"ाीनों का कार्य काफी तेजी से हुआ। अब यूरोप में कृषि और उद्योग के क्षेत्र आधारभूत परिवर्तन हो रहे थे। जिससे इग्लैड एक शक्ति"ााली राष्ट्र के रूप मे उभरा। उसने अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया। कृषि और औद्योगिक क्रांति ने इग्लैंड में जीवन –स्तर मे वृद्धि की और राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सास्कृतिक सभी क्षेत्र प्रभावित हुए। इन क्रांतियो ने भौतिक जीवन की महता को बढाया और मध्यकालीन संकीर्ण सोच को समाप्त कर दिया। इग्लैंड की प्रगति को देखकर अन्य यूरोपीय राष्ट्र भी तेजी से इस पथ पर आगे बढे और यूरोप आधुनिकता के मार्ग पर अग्रसर हो गया। यह कृषि –क्रांति और औद्योगिक क्रांति की सफलता थी कि इग्लैड ने लगभग 250 वर्षा तक वि"व की राजनीति पर एकछत्र शासन किया। द्वितीय वि"व युद्ध तक पूरी दुनिया का नेतृत्व ब्रिटेन ने ही किया। ब्रिटेन की सफलता का आधार से क्रांतियां ही थी।

4.7 संकेतक शब्द :–

(i) स्पिनिंग जैनी

(ii) वाटर फ्रेम

(iii) म्यूल

(iv) पवरलूम

(v) कॉटन जिन

(vi) सैफटी लैम्प

(vii) न्यूली सेस्टर

(viii) टर्निप टाउनसैंड

(ix) आर्थर यंग

(x) जेथ्रा टुल

4.8 प्रगति –समीक्षा हेतू प्र”नोत्तर :–

उतर :–

(अ) (i) जॉन के (ii) जेम्स हारग्रीव्ज (iii) एडमंड कार्टराइट (iv) जार्ज स्टीफैनसन

(v) ग्राहम बेल (vi) जेम्स वॉट (vii) मोर्स (viii) रिचर्ड आर्कराइट

(ix) गैलीलियो (x) हम्फ्री डेवी।

(ब) उतर :–

(i)	कॉटन जिन	एली व्हिट्ने
(ii)	ओद्यागिक क्रांति का उदय	इग्लैंड
(iii)	म्यूल	सैम्युअल क्राम्पटन
(iv)	आधुनिक –डाक– प्रणाली	रालैंड हिल
(v)	सडक निर्माण तकनीक	जॉन मैटकॉफ

(स)

(i) ख (ii) ख (iii) ग (iv) ग

(v) ख (vi) ख (vii) क (viii) घ

(ix) ख (x) ग

4.9 स्वंय– मूल्यांकन परीक्षा।

निबंधात्मक प्र”न :–

(i) इग्लैंड मे कृषि कांति की मुख्य वि"ोषताओं ओर प्रभावों का उल्लेख कीजिए?

(ii) कृषि –क्रांति से आप क्या समझते है। इग्लैड में कृषि –क्रांति के लिए उतरदायी स्थितियों का मॅूल्याकंन कीजिए?

(iii) प"िचमी यूरोप में कृषि –क्रांति के विस्तार का वर्णन कीजिए ? इस क्रांति के इग्लैंड और यूरोप पर क्या प्रभाव पडे?

(iv) औद्योगिक क्रांति से आप क्या समझते है? इग्लैड में औद्योगिक क्रांति के उदय के कारणो पर विस्तृत निबंध लिखे?

(v) इग्लैंड में औद्योगिक क्रांति की उत्पति और प्रसार का उल्लेख करें?

(vi) इग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के प्रभावों की समीक्षा कीजिए?

(vii) औद्योगिक क्रांति क्या है ? औद्योगिक क्रांति का उदय इग्लैड में ही क्यों हुआ?

(viii) औद्योगिक क्रांति के उदय के कारणों और प्रभावों की समीक्षा करें?

4.10 संदर्भ /सहायक अध्ययन सामग्री

1. वि"व इतिहास (1500–1950), जैन और माथुर, जैन प्रका"ान मंदिर, जयपुर ,1999
2. वि"व का इतिहास, भाग – 1 (1500–1870), अविना"ा चन्द्र अरोडा, आर.एस. अरोडा, प्रदीप पब्लिके"ास, 1995.
3. आधुनिक वि"व – एक आयाम, राय और शेखर, सेट्रल पब्लि"िांग हाउस, इलाहाबाद, 2006
4. डॉ0 गोपाल प्रसाद, आधुनिक वि"व, लक्ष्मी पब्लि"िांग हाउस, 2017
5. आधुनिक वि"व का इतिहास, लाल बहादुर वर्मा, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदे"ाालय, दिल्ली वि"वविद्यालय, प्रथम संस्करण, 2013
6. यूरोप का आधुनिक इतिहास (1789–1974), सत्यकेतु विद्यालंकार, श्री सरस्वती संदन, नई दिल्ली, 2016.

Unit -(इकाई) -IV

SUBJECT : HISTORY (SEM-V) B.A. II YEAR	
Course Code : HIST-302	AUTHOR & UPDATED:
LESSON : 7	MS. JYOTI

Maps : Important Centres of Renaissance and Reformation

मानचित्र : पुर्नजागरण और धर्म सुधार आन्दोलन के महत्वपूर्ण केन्द्र

अध्याय सरंचना (**Lesson structure**)

7.1 अधिगम उद्देश्य (**Learning objectives**)

7.2 परिचय (**Introduction**)

7.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (**Main body of text**)

7.3.1 पुर्नजागरण का अर्थ (**Meaning of Renaissance and its causes**)

7.3.2 धर्म–सुधार आन्दोलन व कारण (**Reformation and its causes**)

अध्याय का आगे का मुख्य भाग (**further main body of text**)

7.4 इटली में पुर्नजारण का आरंभ (**beginning of Renaissance in italy**)

7.4.1 पुर्नजागरण की विशेषताएं (**Characterstices of Renaissance**)

7.4.2 पुर्नजागरण के परिणाम (**Result of Renaissance**)

7.5 यूरोप के अन्य देशो में पुर्नजागरण (**Renaissance in Europe others countries**)

7.6 छात्र–क्रियाकलाप (**Student activity) (Map**)

7.7 धर्म सुधार आन्दोलन प्रगति (**Refonmation progress**)

7.7.2 धर्म सुधार आन्दोलन के परिणाम और महत्व (**Result and Importance of Reformation**)

7.7.1 छात्र–क्रियाकलाप (**Student Activity**) (**Map**)

7.8 प्रगति समीक्षा (**Check your progress**)

7.9 सारांश (**Summary**)

7.10 संकेत सूचक (**Keywords**)

7.11 स्वः मूल्यांकन के लिए परीक्षा (**Self-Assesment Test**)

7.12 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोतर (**Answer to check your progress**)

7.13 सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ एवं सहायक पुस्तके (**Reference/Suggested Reading books**)

7.1 अधिगम उद्देश्य (Learning objective)

जब आप इस अध्याय को समझ पाएंगे तो आप इस योग्य हो जाएंगेः–

- पुर्नजागरण युरोप में कैसे फैला, इस बारें मे जान पाएंगे।
- पुर्नजागरण के समय युरोप की भौगोलिक स्थिति से पाठको को परिचित कराना।
- पुर्नजागरण काल में युरोप की सामाजिक स्थिति पर चर्चा करना।
- धर्म–सुधार आन्दोलन का युरोप पर प्रभाव की चर्चा करना।
- धर्म–सुधार आन्दोलन युरोप में कैसे फैला इस बारे में पाठक विस्तार से पढ पाएंगे।
- युरोप की आधुनिकरण पर चर्चा करना।

7.2 **Introduction (परिचय)** – पुर्नजागरण एक ऐसा बौद्धिक एवं कलात्मक आन्दोलन था जिसका परिचय विकास 14वीं से 16 शताब्दी के दौरान हुआ इस आन्दोलन के कारण युरोप का मध्यकाल से आधुनिक युग में सक्रंमण (Transition) हुआ। पुर्नजागरण को दो रूपो में देखा जा सकता है प्रथम यह प्राचीन (Classical) ज्ञान पर आधारित पुनरूत्थान का युग था और इसका विकास पारम्परिक तरीको से हुआ। दूसरे, पुर्नजागरण काल में नवीन विचारो का युग था जिसमे बहुत अधिक नये ज्ञान का जन्म हुआ और जो आगे चलकर आधुनिक विचारधारा का आधार बना तथा जिसका प्रसार छापेखाने जैसे नये

माध्यम से हुआ। इतिहासकारो का मत हैं कि पुर्नजागरण ने कला, साहित्य, शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान दर्शनशास्त्र तथा धर्म के क्षेत्रो में उपलब्धियों को नूतन एवं प्रभावशाली स्तर की चरमसीमा तक पहुँचाया। पुर्नजागरण ने आधुनिक सस्कृंति को जन्म दिया जिसमें आशावादिता, धर्म निरपेक्षता, व्यक्तिवाद तथा मानवतावाद जैसे आदर्श थे। पुर्नजागरण आन्दोलन का उदय इटली में हुआ और इसके पश्चात् इसका प्रसार फ्रांस, स्पेन, ब्रिटेन, जर्मनी इत्यादि देशो में हुआ।

पुर्नजागरण ने धर्म के क्षेत्र में सुधार को बढ़ावा दिया। चर्च मे फैली बुराईयो को धर्म–सुधार आन्दोलन ने दूर किया। धर्म–सुधार का अर्थ कैथोलिक धर्म में प्रचलित विशेष बुराईयो मे सुधार करना था। इस आन्दोलन की शुरूआत जर्मनी में मार्टिन लूथर द्वारा तत्कालीन कैथोलिक पोपतन्त तथा चर्च व्यवस्था में प्रचलित बुराईयो पर वैचारिक विरोध से हुई। अतिशीघ्र यह आन्दोलन युरोप के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, तथा सांस्कृतिक जीवन पर व्यापक प्रभाव बड़े। 14वीं, 15वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षो में वाईकिलफ तथा जॉन हस्स जैसे विचारको ने चर्च की बुराईयो को दूर करने के प्रयास किए, लेकिन धार्मिक क्रान्ति लाने में मार्टिन लूथर ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अध्याय के मुख्य बिन्दु (Main body of text) 7.3

<u>पुर्नजागरण का अर्थ</u> – 7.3.1

पुर्नजागरण 14वीं शताब्दी में इटली से शुरू होकर धीरे–धीरे 17वीं शताब्दी तक पश्चिमी युरोप में फैल गया। रेनेसां अर्थात् पुर्नजागरण फ्रेंच भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ पुनर्जन्म, नवजीवन अथवा फिर से जगाना है। इतावली विद्वान वैसारी ने इस शब्द का प्रयोग इटली में भवन निर्माण कला और मूर्तिकला के विषय में किया। पुर्नजागरण की प्रमुख विशेषताएँ थी– प्राचीन यूनानी व रोमन साहित्य का अध्ययन, मानववाद, यूनानी कला और पुनर्सृजन प्राकृतिक विज्ञान का विकास, राष्ट्रीय साहित्य तथा लोक भाषाओं का विकास आदि। इस काल को प्रतिभाओं ने मानव स्वतंत्रता, प्रयोगवाद तर्क व बुद्धि, धर्म–निरेपेक्षता आदि पर विशेष बल दिया।

<u>पुनर्जागरण के कारण अथवा उतरदायी शक्तियाँ</u>

सामान्यतया पुर्नजागरण का काल 14वीं सदी के मध्य से 17वीं सदी के मध्य तक स्वीकार किया जाता है, परंतु युरोप में पुर्नजागरण को लाने वाले तत्व बहुत पहले से काम कर रहे थे। पुर्नजागरण के लिए उतरदायी कारणों तथा शक्तियों का वर्णन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है–

(1) <u>धर्मयुद्धो का प्रभावः</u>–

ईशाइयो के पवित्र तीर्थ स्थान जरूसलम को लेकर ईसाइयो और मुसलमानो के बीच 1095 से 1278 तक आठ धर्म युद्ध लड़े गए। इन युद्धों को क्रूसेड अर्थात् धर्म युद्धो के नाम से जाना जाता है। इन युद्धों ने युरोपीय समाज पर बहुत प्रभाव डाले। इन युद्धों में भाग लेने के लिए सामंतों की जरूरत थी। धर्म युद्ध ने व्यापार और वाणिज्य को प्रभावित किया। इस समय शिक्षा और साहित्य के सुप्रसिद्ध केन्द्र थे, जहाँ अनेक विद्वान, साहित्यकार चित्रकार

वैज्ञानिक, दार्शनिक आदि निवास करते थे। तीसरा धर्म युद्ध युरोप के एकाकीपन व संकीर्णता को तोड़ा तथा यात्राओं व भौगोलिक खोजो को बढ़ावा दिया।

(2) नगरों एवं व्यापार वाणिज्य का विकासः–

मध्यकाल में युरोप में कई नगरों का पुनरत्थान और अनेक नये नगरो का उदय हुआ। इटली के नगरों में ही पुर्नजागरण की स्थापना हुई। इन नगरों में समृद्धशाली व्यापारी वर्ग निवास करता था। जिसने अनेक विद्वानो, चित्रकारों, कलाकारों आदि का सरंक्षण दिया। शहर और नगरों में स्वतंत्र विकास पर बल दिया। इस दौरान विभिन्न देशों, धर्मों आदान–प्रदान होता था।

(3) छापेखाने का आविष्कार–

पुनर्जागरण में छापेखाने के आविष्कार ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सर्वप्रथम जॉन गुर्टनवर्ग ने जर्मनी में छापेखाने का आविष्कार किया। 1477 में विलियम कैस्टन ने इंग्लैण्ड के वेस्टमनिस्टर नामक नगर में छापखाना स्थापित किया। इसके पश्चात् भारी संख्या इटली, जर्मनी, स्पेन, फ्रांस आदि के छापखाने स्थापित हुए। इससे भारी संख्या में पुस्तके प्रकाशित हुई।

(4) **मंगोल साम्राज्य की स्थापना–**

तेहरवीं शताब्दी में मध्य एशिया के सुप्रसिद्ध विजेता चंगेज खाँ की मृत्यु के पश्चात् उतराधिकारी कबुलाई खाँ तथा विशाल खाँ ने शक्तिशाली राज्य की स्थापना की। अनेक विद्वान धर्म प्रचार व्यापारी, मणितज्ञ आदि मंगोल दरबार में आश्रय पाने लगे। मंगोल साम्राज्य की स्थापना से पुनर्जागरण को बल दिया।

(5) **कागज का मुद्रण कला–**

कागज व मुद्रण कला के बिना पुनर्जागरण के विकास की कल्पना नही की जा सकती थी। सबसे पहले कागज व मुद्रण का प्रयोग चीन में हुआ। युरोपवासियों को इसकी जानकारी चीन व अरब देशों से हुई। इसके बाद 1477 ई. में एक छापखाना स्थापित किया। इसके बाद इटली, स्पेन, फ्रांस देशों में छापखाने स्थापित हुए।

इटली का पुर्नजागरण का आरंभ– (7.4)

(1) **रोम नगर का महत्व–**

इटली रोमन साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण व समृद्धशाली नगर था। यहां के शासकों द्वारा स्थापित प्राचीन इमारते अभी भी इटली की शोभा बढ़ा रही थी। यहां के ईसाई मठों और विहारो में साहित्यिक सामग्री भरी पड़ी थी। जिन्होने अनेक विद्वानों और कलाकारों को नये सिरे से अध्ययन को प्रेरित किया।

(2) **इटली का व्यापारिक महत्व–**

इटली एक समृद्धशाली देश था। इसकी समृद्धि का मुख्य कारण पूर्वी व्यापार था। 14वीं शताब्दी में इटली का पूर्वी देशों में व्यापार बढ़ा, जिससे अनेक राज्य धनी बन गए। इस वर्ग ने अनेक चित्रकारों, कलाकारों को सरंक्षण दिया। इसी परिवार के फ्लोरेस नाम व्यक्ति 10,000 दुर्लभ, तन्त्रों का संग्रण किया।

(3) <u>कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों का आविष्कार</u>–

1453 ई. में कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों का अधिकार हो गया, जिसके परिणामस्वरूप हजारों युनानी विद्वान, कलाकार, व्यापारी इत्यादि इटली में आकर बस गए, कुस्तुनतुनिया से आये विद्वानो में से अनेक इटली के स्कूल एवं विश्वविधालयों के शिक्षक के पद पर नियुक्त हुए। इन्होंने अपने नवीन विचारों से इटली में पुनर्जागरण के उदय में अहम योगदान दिया।

(4) चर्च पर राजसता का हावी होना (Domination of state Power over the Church)

चर्च और राजसता के आपसी टकराव धर्म सुधार आन्दोलन की उत्पति के मुख्य कारणों में से एक था। क्योंकि कई शासक सभी मामलो में अपना पूरा नियंत्रण रखते है। वस्तुतः इन देशों में रोमन व प्रोस्टेण्ट दोनों ही राजा की शक्ति बढ़ाने के एक साधन के रूप में काम करने लगे थे। वे अपने राज्य में पूजा की अल्पसंख्या की स्थिति में रोक लगा सकते थे। राजाओं का`अब पादरों की नियुक्ति जैसे धार्मिक अधिकार मिल गए हो।

(5) <u>सामाजिक सेवाओं में राज्य की बढ़ती भूमिका</u> (Incresing Responsibility of state Regarding social Services)

प्रोटेस्टेण्ट देशों के शासकों ने चर्च की जमीन और धार्मिक इतिहास की प्राप्त नही किए वरन् मध्यकाल में चर्च द्वारा किए गए कार्य अपने हाथ में से लिए। इंग्लैण्ड में एलिजाबेथ के समय गरीबी संबंधी नियम बने जिससे जरूरतमंद लोगों की सहायता की जाने लगी। यह 18वीं शताब्दी में महान् क्रांतियों द्वारा जनता की सता आने के बाद हुआ।

(6) <u>कुलीन सामंतो पर प्रभाव</u> (Effects on Feudal Aristocracy)

धर्म–सुधार आन्दोलन के द्वारा पनपे धार्मिक संघर्षों ने राजा तथा सामन्तों के बीच संघर्षों को जन्म दिया इससे सामन्त समृद्धिशाली व शक्तिशाली बने। फ्रांस को पहले नुकसान हुआ परन्तु बाद में 1789 ई. की क्रांति तक उनकी सता व विशेषाधिकार बरकरार रहे। शक्तिशाली सामन्त ही बच पाए शेष समाप्त हो गए।

7.5 इटली में पुनर्जागरण का विकास (Development of Renaissance in Italy)

5.1.1 दांते एलीघेरी (Dante Alighieri, 1265-1321)–दांते इटली का महान

कवि था। उसका जन्म 1265 ई. में फ्लोरेंस में हुआ था। वह एक धार्मिक प्रवृति का

व्यक्ति था, लेकिन वह पादरियों के पाखण्डी एवं विलासी जीवन का कट्टर विरोधी था। उसने अनेक पुस्तकों की रचना की, जिनमें उसकी धर्म के प्रति श्रद्धा और पोप के प्रति घृणा के भाव को देखने को मिलते हैं। उसकी सबसे प्रसिद्ध कृति डिवाइन कॉमेडी (Divine Comedy) में नर्क और स्वर्ग की कल्पना की गई है। इस पुस्तक के तीन भाग हैं– नर्क, आत्मशुद्धि और स्वर्ग। दांते ने अपनी पुस्तक के प्रारंभ में मिलने वाले दुःखों का उल्लेख किया है, जबकि अन्त में पश्चाताप करके आत्मा की शुद्धि तथा स्वर्ग की प्राप्ति का वर्णन किया है। इस पुस्तक का उद्देश्य मनुष्य को नैतिक एवं सदाचारी जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करना था। हालाँकि दांते पाप और प्रायश्चित की मसीही धारणाओं के भार से दबे रहे। उसने अनेक प्रेमगीत राष्ट्रीयता की भावना देखने को मिलती है। इस प्रकार दांते ने अपनी रचनाओं द्वारा इटली के साहित्यकारों को एक प्रेरणा दी, जिसके परिणामस्वरूप, विशेषकर साहित्यिक क्षेत्र में एक नये युग की शुरूआत हुई।

5.1.2 **फ्रांसिस्को पैट्रार्क (Francisco Petrarch 1307-74)–** पैट्रार्क भी पुनर्जागरण काल का एक महान विद्वान था। उसका जन्म 1307 में फ्लोरेंस मे हुआ था। उसने कुछ समय तक चर्च में नौकरी की। इसके पश्चात् उसने अपना अधिकतर समय लातीनी भाषा के ग्रन्थों के अध्ययन में बिताया। उसने इतावली भाषा में अनेक ग्रंथों की रचना की। इसके, उसने कई यूरोपीय देशों की यात्रा की, जहाँ उसकी भेंट अनेक विद्वानो से हुई। उसने मीलान, वेनिस तथा रोम में रहकर साहित्य लेखन में रूचि ली। उसने सुप्रसिद्ध रोमन जनरल सिपियों अफ्रीकन्स् (Scipio Africans) पर एक महाकाव्य की रचना की। इसके अलावा, उसने जुलियस सीजर पोप–पद की रोम से एविग्नन में परिवर्तन नामक रचनाएँ भी लिखी, जो बहुत लोकप्रिय हुई। वह लातीनी भाषा को यूनानी भाषा से श्रेष्ठ मानता था। उसने फ्लोरेंस में मानवतावाद का बढ़–चढ़ कर प्रसार किया। उसने अपनी रचनाओं में ऐसी दुनियावी चीजों के बारें में लिखा, जिन्हें सुनने में लोगों की अधिक रूचि थी। उसने मानव प्रेम और प्रकृति के बारें में लिखा। उसने व्यक्तिवाद का प्रचार किया, जो पुनर्जागरण का महत्वपूर्ण अंग था। साहित्यिक क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों के लिए पोप ने उसे भारी धनराशि उपहारस्वरूप दी। पेरिस विश्वविधालय और रोमवासियों ने उसे कई बार सम्मानित

किया। उसे मानवतावाद अर्थात् 'पुनर्जागरण' का पिता कहा जाता है। उसने इटली को दुनिया का सबसे सुन्दर देश बताया। इसके अलावा, पैट्रार्क ने यूरोप में मानवतावादी विचारों का प्रचार किया। रेनान के अनुसार, पैट्रार्क प्रथम आधुनिक मनुष्य था।

5.1.3 **जियोवान्नी बोकासियों (Giovanni Boccaceio, 1313-1375)–** आधुनिक इतावली गद्य के जनक जियोवान्नी बोकासियों का जन्म 1313 ई. में हुआ था। वह पैट्रार्क का शिष्य थाा। उसने डेकामेरान (Decameron), जीनियोलाजी ऑफ द गॉड्स आदि पुस्तक की रचना की। डेकामेरान उसकी सबसे प्रसिद्ध रचना थी, जिसमें 100 कहानियों का एक संग्रह है। इतावली भाषा में रचित इस पुस्तक में बीकासियों ने प्रेम को मुख्य विषय बनाया है। उसने इटली के नैतिक पतन का उल्लेख किया। उससे प्रेरित होकर ब्रिटेन के प्रसिद्ध साहित्यकार चौसर ने कैण्टरबरी टेल्ज (Canterburry Tales) नामक पुस्तक की रचना की। पुनर्जागरण में बोकासियों के साहित्यिक योगदान के कारण ही उसे इतावली गद्य का पिता कहा जाता है।

5.1.4 **मैक्याविली (Machiavili, 1469-1527)–** निकोलस मैक्याविली का जन्म 1469 में फ्लोरेंस मे हुआ था। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा भी इसी नगर में हुई। उसने कई वर्षो तक सेकरेट्री के तौर पर नौकरी की। उसने अपना अधिकतर समय यूनानी और लातीनी साहित्य के अध्ययन में बिताया। वह भी मानवतावादी विचारक था। उसने चर्च की बुराइयों को उजागर किया। उसने द प्रिंस (The Prince) नामक पुस्तक की रचना की, जिसमें उसने धर्म को राजनीति से अलग किया। उसने राज्य और शासको के लिए शासन संबंधी नियमों का भी उल्लेख किया। उसके द्वारा बताए गए नियमों पर चलकर यूरोप के अनेक देशों मे राष्ट्रीय राज्य स्थापित हुए। मैक्याविली को **'पुनर्जागरण का वास्तविक प्रतिनिधि'** माना जाता है।

5.2.1.1 **लियोनार्दो द विन्सी (Leonardo da Vinci, 1452-1519)–** लियोनार्दो दा विन्सी का जन्म 1452 में फ्लोरेंस के निकट विन्सी नामक स्थान पर हुआ था। उन्हें बचपन से ही चित्रकला और संगीतकला में बहुत रूचि थी। उन्होंने इटली के प्रसिद्ध चित्रकार वैरेग्न्नियों (Varrangnio) से चित्रकला की शिक्षा प्राप्त की। अतिशीघ्र ही उन्होंने अपनी चित्रकला से अपने गुरू को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने मानव शरीर का गहनता से अध्ययन किया और उसे अपनी चित्रकला की विषय–वस्तु बनाया। उन्होने अपनी चित्रकला को वैज्ञानिक रूप प्रदान किया। उन्होंने मोनालिसा (Mona Lisa), दि लास्ट सपर (The Last Supper), दी वर्जिन आफ रॉक्स (The Virgin of Rocks) नामक चित्र बनाए। उन्होंने इन चित्रों में रक्त संचार और प्रकाश तरंगों के संचरण के विषय में भी बहुत रोचक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इसके अलावा, उन्होंने बन्दूक और हवाई जहाज के डिजाइन तैयार किए तथा

अपनी कलाकृतियों द्वारा स्थानीय नहरों आदि में सुधार लाने का प्रयास किया। उन्होंने मोनालिसा (Mona Lisa) नाम चित्र में मुस्करानी हुई एक साधारण स्त्री का चित्र बनाया। यह चित्र शताब्दियों से दशकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। इसके अलावा, दी लास्ट सपर (The Last Supper) नाम चित्र मीलान नगर की दीवार पर बनाया गया था। ज्यामितिक विन्यास पर आधारित यह चित्र चित्रकला का सर्वोतम उदाहरण माना जाता है। इस चित्र में ईसा मसीह को अपनी मृत्यु से पहले अपने अनुयायियों के साथ अन्तिम समय भोजन करते हुए दिखाया गया है। इसमें ईसा मसीह के चेहरे पर सन्तोष और उनके अनुयायियों के चेहरों में बेचैनी और निराशा दिखाई गई है।

लियोनार्दो द विन्सी केवल एक चित्रकार ही नहीं, बल्कि एक मूर्तिकार तथा वैज्ञानिक भी थे। उन्होंने इटली में कई नगरों तथा दुर्गों का निर्माण कराया। मीलान में उनके द्वारा बनाए गए दुर्ग कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इसके अलावा, उन्हें संगीत का भी बहुत शौक था। वे अपने अन्तिम समय में फ्रांस में रहे। उन्होंने सम्राट फ्रासिंस के दरबार में रहकर अनेक चित्र बनाए। इस प्रकार विन्सी ने फ्रांस की चित्रकला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

5.2.1.2 माइकंल एंजेलो (Michael Angelo 1475-1564)– माईकल एंजेलो पुनर्जागरण का एक महान चित्रकार, शिल्पकार, वास्तुकार, इंजीनियर तथा उच्चकोटि के कवि थे। वे उच्चकोटि के मानवतावादी थे। वे मनुष्य को सुष्टि का सबसे सुन्दर प्राणी मानते थे। उन्होंने रोम के सिस्ताईन गिरिजाघर की छत पर 145 मुहराकशी चित्र बनाया। यह चित्र कला की दृष्टि से सर्वोतम माना जाता है। उन्होंने 1541 में इसी चर्च की दीवार पर लास्ट जजमेंट नाम चित्र बनाया। यह चित्र कला की दृष्टि से सर्वोतम माना जाता है

5.2.1.3 सांजियो राफेल (Sanzio Rapheal, 1483-1520)– सांजियों राफेल का जन्म 1483 में इटली में हुआ था। वह भी पुनर्जागरण का उच्चकोटि का चित्रकार था। उसकी चित्रकला पर माइकल एंजेलो और लियोनार्दो द विन्सी का प्रभाव देखने को मिलता है। उसके चित्र सजीवता तथा सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध माने जाते हैं। उसने अपने चित्रों में विभिन्न रंगों का प्रयोग बहुत कुशलता से किया। उसने अनेक चित्रों का निर्माण किया, जिनमें ईसा मसीह की माता 'मेडोना का चित्र' कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके अलावा, उसने दीवारों पर भी अनेक चित्र बनाए। उसके चित्रों में विंसी से अधिक प्रतिकात्मक पक्ष देखने को मिलते हैं। उसने 'डिस्प्यूटा' (Disputa) नामक चित्र में 'पृथ्वी के चर्च' और 'स्वर्ग के चर्च' के बीच द्वन्द्वात्मक संबंधों को प्रतीक द्वारा प्रस्तुत किया। इस चित्र में सांसारिक वातावरण में बहुत से आचार्य और धर्मवेता युखारिस्त (Eucharist) के आशय को लेकर विवाद कर रहे हैं, जबकि ऊपर बादलों में संत और त्रित्व (Trimity) पवित्र रहस्य के अधिकार के साथ

विश्राम कर रहे हैं। इसी प्रकार का प्रतिकात्मक रूप उसकी 'स्कूल ऑफ एथेन्स' नाम कृति में भी देखने को मिलता है। इसमें प्लेटो और अरस्तु के दर्शन के बीच संघर्ष का प्रतिकात्मक चित्रण हैं। इसमें प्लेटो के विचारों के आध्यात्मिक आधार पर बल देने के लिए उसे (प्लेटो को) आकाश की ओर संकेत करते हुए दिखाया गया है, जबकि अरस्तु के भौतिकवादी विचारों को दर्शाने के लिए राफेल ने इस चित्र में अरस्तु को पृथ्वी की और संकेत करते हुए दिखाया गया है।

5.2.1.4 तीतियन (Titian 1477-1576)– तीतियन का जन्म 1477 में हुआ था। वे वेनिस का बहुत बड़ा चित्रकार था। उसने पोपों, पादरियों, सामन्तों तथा धनाढ्य महिलाओं के चित्र बनाए। उसके चित्रों मे मानवता, नारी सौन्दर्य तथा धर्मनिरपेक्षता देखने को मिलती है। उसने वेनिस के एक चर्च में 'एजेम्पशन ऑफ दि वर्जिन' (Assumption of the virgin) नामक चित्र बनाए, जो कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उसे स्पेन के शासकों चार्ल्स पंचम् तथा फिलिप द्वितीय ने संरक्षण दिया। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि तीतियन ने भी पुनर्जागरण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

5.3 स्थापत्य कला (Architecture)– पुनर्जागरण से पहले तक उतरी यूरोप में स्थापत्य कला में गॉथिक शैली प्रचलित थी। लेकिन इटली में इस कला शैली को नहीं अपनाया गया। इसके स्थान पर यहाँ रोमानिस्क (Romanseque) शैली को थोड़े बहुत परिवर्तनों सहित अपनाया। चौदहवीं शताब्दी में इटली के वास्तुकारों ने पुरातन स्थापत्य कला के अवशेषों का गहनता से अध्ययन किया। इसके पश्चात् उन्होनें एक सरल एवं संतुलित नयी स्थापत्य शैली को जन्म दिया। इस शैली की अभिव्यक्ति फ्लोरेंस निवासी फिलिप्पो ब्रूनेलेशी (Filippo Brunelleschi, 1377-1446) ने की। उसने अपने प्राचीन भवनों की अनेक शैलियों को अपने भवनों में अपनाया। उसने अपने सभी भवन सुनियोजित योजना के आधार पर बनाए, जिनके प्रत्येक भाग में अनुपात और स्तम्भों का विशेष ध्यान रखा जाता था। उसके द्वारा बनाए गए भवनों में फ्लोरेंस का कैथेड्रल (धर्मपीठ) नामक भवन सर्वश्रेष्ठ हैं। पुनर्जागरण स्थापत्य कला में काल्पनिक ऊँचे गोथिकों की जगह प्राचीन यूनानी मन्दिरों की सीधी एवं समतल रेखा अथवा रोमन गुम्बद के रमणीय घुमावदार वक्रों का निर्माण किया जाने लगा। इसके अलावा, नुकीले आधारों के स्थान पर वृताकार मेहराब बनाए जाने लगे। इस युग में अधिकतर धार्मिक इमारतें अर्थात् चर्च ही बनाए गए थे, जो जीवन की खुशी, मानवता तथा धर्म निरपेक्षता के आदर्शों को व्यक्त करते थे। पुनर्जागरण की स्थापत्य कला शैली पर प्लेटोवाद का भी प्रभाव पड़ा। मनीषा मिश्रा के अनुसार : ''नवं प्लेटोवाद से प्रभावित होकर इतावली वास्तुकार इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मनुष्य में आदर्श अनुपात, ब्रह्माण्ड के समवन्य को प्रदर्शित करता है और

इसलिए मनुष्य के शरीर के विभिन्न भागों की तरह भवनों के विभिन्न भागों को भी एक–दूसरे से तथा सम्पूर्ण भवन से जोड़ना चाहिए।''

पुनर्जागरण स्थापत्य कला के आधार पर अनेक भवन बनाए गए, जिनमें रोम सेंट पीटर का चर्च कला की दृष्टि से सर्वोत्तम माना जाता है। इसका निर्माण ब्रामन्ते (Bramante), राफेल (Raphel), माइकल एंजेलो तथा पल्लाडियो (Palladio) की देखरेख में हुआ। इसके अलावा, पल्लाडियों ने फोर बुक्स ऑफ आर्किटेक्चर (Four Books of Architecture) की रचना की। इस पुस्तक का अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया। इसने इतावली और यूरोपीय स्थापत्य कला की बारीक शैली को बहुत प्रभावित किया।

मूर्तिकला (Sculpture)– मध्यकाल में मूर्तिकला स्वतन्त्र कला नहीं थी, बल्कि यह स्थापत्य कला की एक सहायक कला थी। पुनर्जागरण काल में मूर्तिकला स्थापत्य कला से मुक्त होनी शुरू हुई और धीरे–धीरे एक स्वतन्त्र कला के रूप में स्थापित हो गई। इस काल में धार्मिक और गैर–धार्मिक दोनों प्रकार की मूर्तियाँ बनाई गई। इतावली पुनर्जागरण युग का सबसे प्रथम प्रसिद्ध मूर्तिकार दोनातेल्लों (Donatello 1386-1466) था। उसने मानव शरीर रचना का बहुत सूक्ष्मता से अध्ययन किया। उसकी सबसे प्रसिद्ध मूर्ति डेविड की है। यह एक नग्न मर्ति है, जिसमें डेविड को अपनी विजय के पश्चात् कत्ल किए गए गोलियाथ (Goliath) के शरीर पर खड़े हुए दिखाया गया है। यह मूर्ति कई वर्षों तक मर्तिकारों की प्रेरणा की स्त्रोत बनी रही। इसके अलावा, दोनातेल्लो ने एक कंदोतियरे (Condottiere) गट्टामिलाता (Gattaeltata) की काँसे की मर्तियाँ भी बनाई।

इतावली पुनर्जागरण का सर्वश्रेष्ठ मूर्तिकार माइकल एंजेलो था। उसने दि पीटा (The Pita) नामक मूर्ति बनाई। इसमें उसने मृक ईसा मसीह के शरीर और बाँयी भुजा को काफी लम्बा दिखाया है। इसके अलावा, उसकी कृतियों में शरीर विकार के साथ–साथ भ्रम निवारण, त्रासदी आदि विषयों का ज्यादा प्रयोग तथा दार्शनिक विचारों की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। उसने ज्यादातर मूर्तिया मकबरों को सजाने के लिए बनाई। ऐसी मूर्तियों में पोप जूलियस द्वितीय की कब्र पर बनायी गई मूर्तिया बाउंड स्लेब तथा मासेस अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। उसने फ्लोरेंस के मेडिचि परिवार की कब्रों पर भी अनेक मूर्तियाँ बनाई। इनमें से ज्यादातर मूर्तियाँ दुख और निराशा जैसे भावों को दर्शाती हैं। ये मूर्तियां डान (Daun) तथा सनसेट (Sunset) के नाम से जानी जाती हैं। डान एक महिला की मूर्ति है, जिसे ऐसे मुड़ते तथा सिर उठाते हुए दिखाया गया है जैसे–किसी को नींद से उठने और दुःख भोगने के लिए बुलाया गया हो। सनसेट एक शक्तिशाली मानव की मूर्ति है, जो बहुत–सी मानव विपतियों से घिरा

हुआ नजर आता है। ऐसा लगता है कि उसकी ये मूर्तियां फ्लोरेंस के गणतन्त्र पर आई विपतियों का प्रतीक है या फिर कलाकार की अपनी पराजयों तथा निराशा की अभिव्यक्ति है।

लोरंजो गिबर्ती (Lorenzo Ghiberti, 1378-1455) भी इतावली पुनर्जागरण युग का प्रसिद्ध मूर्तिकार था। उसने फ्लोरेंस के बपतिस्मा कक्ष (Baptistry) के उतरी एवं पूर्वी काँसे के दरवाजे पर बहुत सुन्दर मूर्तियाँ बनाई। उतरी दरवाजे पर उसके द्वारा बनाई गई मूर्ति 'दि सेक्रीफाइस ऑफ आइसेक', जिसकी बली चढ़ाने वाला थी, को नग्न दिखाया गया है। पूर्वी दरवाजे पर बनी मूर्ति गेट्स ऑफ पैराडाइज भी बहुत भव्य, शानदार और कला की दृष्टि से सर्वोतम है।

इसके अलावा, ल्यूका देल्ला राब्बिया (Luca Della Robbia) भी इटली का प्रसिद्ध मूर्तिकार था। उसने चमकीली पक्की मिटटी के मूर्तिकारों के लिए एक स्कूल की स्थापना की। इस प्रकार पुनर्जागरण काल में इटली में मूर्तिकार का बहुत विकास हुआ।

5.4 विज्ञान (Science)– पुनर्जागरण काल में इटली में विज्ञान का भी बहुत विकास हुआ जिसका वर्णन इस प्रकार है–

5.4.1 खगोलशास्त्र (Astrology)– खगोलशास्त्र का विकास पुनर्जागरण की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इस काल में सूर्य केन्द्रित सिद्धान्त का पुनरूत्थान हुआ। यहाँ तक कि इस सिद्धान्त को प्रमाणित भी किया गया। यह सिद्धान्त किसी एक व्यक्ति की देन नहीं, बल्कि इस सिद्धान्त में कई विद्वानों ने अपना योगदान दिया। सर्वप्रथम इस सिद्धान्त को यूनानी खगोलशास्त्र एरिस्टाकंस (Aristarchus) ने तीसरी शताब्दी ई.पू. में बताया था। इसके पश्चात् टॉलमी ने अपनी कृति अलमाजेस्ट में बताया कि पृथ्वी ब्रह्माण्ड का केन्द्र है। यह सिद्धान्त पन्द्रहवीं सदी के मध्य तक मान्य रहा। इसके पश्चात् निकोलस ने टॉलमी के इस सिद्धान्त को चुनौती दी। उसने सिद्ध किया कि पृथ्वी ब्रह्माण्ड के केन्द्र में स्थित नहीं है। लियोनार्दो द विन्सी ने भी बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। उसने सूर्य के स्पष्ट परिभ्रमण को नहीं माना। तत्पश्चात् निकोलस कोपरनिकस (Nicholas Copornicus, 1473-1543) ने गणितीय आकलन के आधार पर सूर्य केन्द्रित सिद्धान्त की पुष्टि की। वह नव प्लेटोवाद से बहुत प्रभावित हुआ। उसने हिसेप्स, एरिस्टार्कस तथा अन्य विद्वानों के इस मत $\frac{1}{M}$ पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है और सूर्य के चारों ओर भी घूमती है की जानकारी सिसरो (Cicero) और प्लूटार्क (Plutorch) के ग्रन्थों से ली। अन्त मे उसने यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि ब्रह्माण्ड का केन्द्र सूर्य है, न कि पृथ्वी। पृथ्वी अपनी धूरी पर घूमती है और 24 घण्टों में एक चक्कर पूरा करती है। यह सिद्धान्त उन्होनें खगोलीय प्रेक्षण के आधार पर नहीं, बल्कि

गणितीय आकलन के आधार पर दिया है। उन्होनें बताया कि ब्रह्माण्ड की सीमा निश्चित नहीं है और पृथ्वी इसका बहुत छोटा भाग है। कापरनिकस ने 1543 में ऑन दि रिवोल्यूशंस ऑफ दि हेवनली स्फेयर्स (On the Revolutions of the Heavenly Spheres) नामक पुस्तक प्रकाशित की।

गैलिलियो गैलिलि (Galileo Galilei, 1564-1642) ने भी सूर्य–केन्द्रित का समर्थन किया। उसने दूरबीर, जिसकी वास्तविक खोज जोहांस लिप्परशे (Johannes Lippershey) ने की, की आवर्धन शक्ति के तीन गुना तक बढ़ाकर एक नई दूरबीन बनाई। इसके द्वारा आकाश का अवलोकन किया जा सकता हैं। गैलिलियों ने इस दूरबीन की सहायता से बृहस्पति और शनि ग्रहों का पता लगाया। इसके अलावा, उसने बताया कि चन्द्रमा गोलाकार नहीं है। उसमें पर्वत और समुन्द्र हैं, उसने बताया कि बृहस्पति की परिक्रमा तीन चन्द्र अर्थात् नक्षत्र करते हैं। गैलिलियों ने यह भी सिद्ध हैं, कि आकाश गंगा हमारे सौर परिवार से स्वतंत्र खगोलीय पिण्डों का एक समूह है। उसने अटल सितारों की लम्बी दूरियों का भी पता लगाया।

5.4.2 भौतिक विज्ञान (Physics)–लियोनार्दो द विन्सी और गालिलेई पुनर्जागरण के दो महान भौतिकशास्त्री थे। लियोनार्दो द विन्सी ने गतिकी के विषय में यह सिद्ध किया कि प्रत्येक भार सबसे छोटे मार्ग से होकर केन्द्र की दिशा में गिरता है। उसके दस निष्कर्ष में गुरूत्वाकर्षण के सिद्धान्त के तत्व निहित थे। इसके अलावा, उसने पानी में गोता लगाने वाले जहाज, एक भाप के इंजन, हथियार युक्त लड़ाकू गाड़ी, संगमरमर काटने की आरी का भी आविष्कार किया।

गैलिलियो गैलिलि ने गतिकी का सिद्धान्त दिया। उसने इस सिद्धान्त कि कोई भी वस्तु अपने वनज के आनुपातिक गति से नीचे गिरती हैं, को अस्वीकार कर दिया। उसके अनुसार भिन्न–भिन्न ऊँचाईयों से गिराई गई वस्तुएँ उस गति दर से गिरेंगी, जो गिरने में लगने वाले समय के वर्ग फल के साथ बढ़ जाता है। इसके अलावा, उसने बताया कि सभी दृश्य और अदृश्य वस्तुओं में वनज होता है।

5.4.3 चिकित्सा शास्त्र (Medical Science)– पुनर्जागरण काल में चिकित्सा के क्षेत्र में इटली के विद्वानों ने महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की। इटली के चिकित्सकों ने मानव शरीर में खून के परिसंचरण के समन्वय में अहम् जानकारियाँ दी, जिनमें हृदय के वाल्ब, फुफ्फुसीय धमनी, अरोटा आदि की व्याख्या सम्मिलित थीं। इस क्षेत्र में गैर इतावली लोगों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। ब्रूसेल्स के एण्ड्रियाज वेसेलिअस (Adreas Vesalius 1514-1564) ने मानव शरीर का गहनता से अध्ययन किया। उसे 'आधुनिक शरीर रचना विज्ञान का जनक' माना जाता है। स्पेनवासी माइकल सर्वेतस (Michael Servetus,1511-1553) तथा

ब्रिटेन के विलियम हार्वे (William Harvey, 1578-1657) ने भी इस क्षेत्र में अहम् योगदान दिया। सर्वेतस ने अपनी पुस्तक एरर्स कंसर्निंग दि ट्रिनिटी (Errors Concerning the Trinity) में बताया कि किस तरह से खून हृदय के दाएँ कोष्ठों से निकलकर शुद्ध होने के लिए फेफड़ों तक पहुँचता है और किस तरह से हृदय में वापस लौटता है। इस प्रकार हार्वे ने 'डिसरटेशन अपान दि मूवमेंट ऑफ दि हार्ट' (Dissertation Upon the Movements of the Heart) में हृदय की गतिशीलता के विषय में जानकारी दी। उसने कहा कि शरीर एक द्रव चालित मशीन की तरह है और रहस्यमय आत्मा का कोई स्थान नहीं है। वस्तुतः हृदय का शरीर का शरीर में वही स्थान है, जो सूर्य का विश्व में है।

<u>धर्म–सुधार आन्दोल</u> (Reformation) (7.3.2)

16वीं शताब्दी में युरोप में चला प्रोटेस्टेंटवादी धर्म–सुधार आन्दोलन विश्व धार्मिक इतिहास की महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। इस धर्म–सुधार विरोधी आन्दोलन का उद्देश्य कैथोलिक चर्च में पवित्रता और ऊँचे आदर्शो को स्थापित करना था, चर्च और पोपशाही में व्याप्त दोषों को दूर कर उसके स्वरूप को पवित्र बनाना था। इस आन्दोलन से युरोप के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़े।

(A) धर्म–सुधार : अर्थ व परिभाषा (Meaning and defination)

पूर्व मध्यकाल में चर्च ने यूरोपीय समाज में महत्वपूर्ण सकारात्मक भूमिका निभाई। बर्बर जातियों को ईसाई बनाया गया तथा शान्ति व्यवस्था स्थापित की गई। धर्म समाज के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करता था।

(B) धर्म–सुधार आन्दोलन के कारण (Causes of Reformation)

1517 ई. एक जर्मन पादरी तथा धर्म विधा के प्रोफेसर मार्टिन लूथर ने बिटेनवर्ग विश्वविधालय के गिरजाधर के दरबार पर 95 बातें लिखकर कील से लगा दी।

(1) रोमन कैथोलिक चर्च में भ्रष्टाचार (Corruption in Roman Catholic Churhc)

पोप युरोप में सबसे शक्तिशाली बन चुका था। वे बड़े–बड़े भव्य महलों में ऐशो–आराम का जीवन बिताने लगे। पोप एलेकजेण्डर (1492-1503) नैतिक भ्रष्ट था। इसी प्रकार लियो दराम जुएबाज था।

पुनर्जागरण के प्रभाव (Effects of Rssance)

जागरण व पुनर्जागरण ने युरोप मे संदेह, जिज्ञासा, नवीनता की भावना को जन्म दिया। मानवतावादी इरेसमस ने अपनी पुस्तक 'मूर्खता की प्रशंसा' चर्चा के दोषों पर तीखा प्रहार किया। इसी प्रकार इंग्लैण्ड मे टॉमस मूर ने अपनी पुस्तक 'युरोपीय' में चर्च भ्रष्टाचार के खिलाफ लिखा।

(3) शिक्षा का प्रसार व मुद्रण कला (Growth of Education and Printing Press)

मध्यकाल में पेरिस, ऑक्सफोर्ड कौम्ब्रिज जैसे विश्वविधालय की स्थापना हुई। धर्म–निरपेक्षता की शिक्षा के प्रसार से युरोप के लोग ईसाई धर्म की कुरीतियों व बुराइयों को समझने लगे।

(4) चर्च और राजाओं में मतभेद (Conflicts between the church and kings)

धर्मसता के प्रतीक चर्च और राजाओ के बीच उभरे गहरे मतभेद भी सुधार आन्दोलन के प्रमुख कारणों मे से एक है। किसी भी राजा को 'विधर्मी' होने पर धर्म से बहिष्कृत करने का अधिकार भी रखता है। इनमें मामलो मे निर्णय देने का अधिकार पोप को ही था। शासक कानून, न्यायालय और करारोपण राष्ट्रीय आधार पर करना चाहते थे। राजा के उच्च अधिकारी सैनिक मध्यम वर्ग के देशकाल, व्यापारी, महाजन, अभियान कर्ताओं को अधिक–से–अधिक लाभ मिले।

पुनर्जागरण की विशेषताएँ (7.4.1)

पुनर्जागरण की मुख्य विशेषता इस प्रकार थी–

(1) <u>मानवतावाद</u>–

मनवतावाद का अर्थ होता है– मानव जीवन में विश्वास रखना, मनुष्य की समस्याओं का अध्ययन करना तथा जीवन के महत्व को स्वीकार करते हुए उसे सुधारने के साथ–साथ समृद्धशाली और उन्नति बनाने के प्रयास करना। ड्यूक ऑफ मान्दुआ ने एक शिक्षण संस्था स्थापित की, जिसमे मानवतावाद की शिक्षा दी जाती थी।

(2) यूनानी–रोमन साहित्य का पुनरूस्थान–

पुनर्जागरण की प्रथम विशेषता 'क्लासिसिज्म' थी अर्थात् इस काल में पुस्तको द्वारा जिस ज्ञान का प्रसार किया गया उसे क्लासिसिज्म कहा गया, क्योंकि यह ज्ञान प्राचीन यूनानी व रोमन संस्कृतियों पर आधारित था।

(3) **सौन्दर्य की उपासना**–

सौन्दर्य की उपासना पुनर्जागरण की एक अन्य मुख्य विशेषता थी। यह मानसिक और भौतिक दवाबों से मुक्ति थी। कला पर मानवतावादी प्रभाव देखा जा सकता है।

(4) **प्रयोग पर बल**–

प्रयोग पर बल भी पुनर्जागरण काल की महत्वपूर्ण विशेषता थी। उसे प्रयोगात्मक खोज प्रणाली का अग्रदूत माना जाता है। ज्ञान दो प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है– प्रथम वाद–विवाद द्वारा तथा द्वितीय प्रयोग द्वारा। लेकिन वाद–विवाद की अपेक्षा प्रयोगात्मक पद्धति से प्राप्त किया गया ज्ञान ज्यादा स्थाई होता है।

\# **पुनर्जागरण के परिणाम** (7.4.2)

पुनर्जागरण का युग युरोप में मध्यकाल एवं आधुनिक काल के मध्य का संक्रमण युग था। इसके परिणामस्वरूप धर्म केंद्रित एंव पारस्परिक कृषि सांमत अर्थव्यवस्था पर आधारित युरोप का मध्यकालीन ढ़ाँचा चरमरा रहा था और आधुनिक युरोप का उदय हो रहा था। इस नई व्यवस्था को प्रकाशमान करने वाले तीन प्रमुख तत्व थे– मानववाद, तर्कबुद्धि एवं वैज्ञानिक मनःस्थिति।

(1) **मानव केंद्रित चेतना का उदय**–

आधुनिक युग के विकास के साथ–साथ क्रमशः यह मानववादी चिन्तन की अति महत्वपूर्ण मूल्य रूप में स्थापित होती गई। मानव किसी पूर्व निर्धारित धार्मिक भूमिका का पालन करने वाला पात्र नहीं है, वरन् वह एक स्वतंत्र एवं चितंनशील और सहज भावनाओं से युक्त जीव है जिसे अपने वास्तविक और प्रत्यक्ष लौकिक जीवन को सुखी व आनन्द से पूर्ण बनाने के लिए प्रयासत होना चाहिए।

(2) **बुविधवाद का उदय**–

पुनर्जागरण की एक महत्वपूर्ण देन मध्ययुगीन धार्मिक अंधश्रद्धा के स्थान पर बुद्धिवाद या विवेकशील चेतना का उदय था। इस संबंध में अरस्तु के तर्कशास्त्र ने लोगों का मार्गदर्शन किया जिसके अध्ययन पर बल दिया जाने लगा। चिन्तन तर्क की प्रधानता को बढ़ावा देने में पेरिस, बोलोन, कैंब्रिज आदि विश्वविधालय ने अहम भूमिका अदा की। पेरिस विश्वविधालय के संस्थापक माने जाने वाले विद्वान आबोलार को विवेकशीलता का जनक कहा जाता है।

(3) वैज्ञानिक चेतना और उपब्धियाँ–

आधुनिक वैज्ञानिक युग की नींव काल में रख दी गई थी। बुद्धिवादी और मानवादी चेतना मानसिकता का आविर्भाव हुआ अर्थ है– सभी प्रेक्षण एवं सिद्ध होने पर ही प्राकृतिक या मानवीय जगत के किसी नियम या कार्य कारण संबंध को स्वीकार करना।

(4) नई अर्थव्यवस्था का उदय–

पुनर्जागरण ने अर्थ प्रणाली को भी प्रभावित किया। सामन्तवाद कमजोर हुआ। विकास हुआ व्यापार और वाणिज्यिक को बढ़ावा मिला। अंतर्राष्ट्रीय व्यापर भी बढ़ा।। युरोप का व्यापार व उपनिवेशों को समृद्धशाली बना दिया गयझं

इटली में पुनर्जागरण का विकास

44वीं शताब्दी में पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति दक्षिण युरोप में स्थित इटली में हुई, लेकिन शीघ्र ही इसका युरोप के विभिन्न देशों में प्रसार हुआ। इस दौरान साहित्य, भवन निर्माण कला, शिल्प कला, संगीतकला आदि का विकास हुआ।

(1) साहित्य का विकास–

पुनर्जागरण काल से पहले साहित्य लेखन लैटिन और युरोप भाषाओं मे किया जाता था, 14 व 16 शताब्दी के बीच राष्ट्रीय भाषाओं में साहित्य लेखन पर बल दिया गया। इसके साथ दर्शनशास्त्र, चिकित्साशास्त्र आदि विषयों पर भी साहित्य लिखा गया।

(2) कला का विकास–

पुनर्जागरण से पहले कला पर भी धर्म का बहुत प्रभाव पड़ा, जिसमें मौलिकता व सौन्दर्य का पूर्णतया अभाव था। इटली के कुछ कलाकार अलबर्ती, लियोनार्दो दि विन्सी ने कला वैज्ञानिक मापदण्डो को लागू किया।

(3) <u>चित्रकला</u>–

पुनर्जागरण में इटली के चित्रकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चित्रकला के क्षेत्र में यथार्थवाद व प्रतिवाद के प्रथम विकास चित्रकार फ्लोरेसवासी जोतो थे। भासासियों ने प्रकृतिवाद को अपने भितिचित्रो की विषय–वस्तु बनाया।

देशों में पुनर्जागरण (Renaissance in Europe others countries) (7.5)

युरोप के निम्न देशों में भी पुनर्जागरण का बहुत विकास हुआ। इनमें पुनर्जागरणकालीन साहित्य व दर्शनशास्त्र का महान् विद्वान डिजीडेरियम इरेस्मस था। वह होलैण्ड का निवासी था। प्रेज ऑफ फौली प्रसिद्ध है, जिसमें उसने तत्कालीन समाज तथा धर्म में प्रचलित बुराइयों की कटु अलोचना की। उसने कोलोक्वीज तथा दि हैण्डबुक ऑफ दि क्रिश्चियन नाइट मे चर्चा के ईसायत की आलोचना की। उसका उद्देश्य तर्कसंगत ईसाई सिद्धान्तो को लागू करना था।

पुनर्जागरण कालीन फ्लेमिरा ने चित्रकला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वस्तुतः फ्लैण्डर्स की चित्रकला एक समृद्धशाली शहरी समाज की उपज थी, जिसमें कला में रूचि लेने वाले महत्वाकांक्षी व्यापारियों की प्रधानता थी। यहां के चित्रकारों के जॉन वान आइक्स, हंस मेमलिंग व रोजडर वडिर प्रसिद्ध थे, जिन्होने चित्रकला के यथार्थवाद साधारण जीवन के वितरण, मानववाद आदि पर बल दिया। उन्होने अपने चित्रों मे चमकीले रंगो का प्रयोग किया।

<u>जर्मनी में पुनर्जागरण</u>–

जर्मनी पर इतालवी पुनर्जागरण का बहुत प्रभाव पड़ा। 1540 ई0 में आग्सवर्ग, न्यूरेमबर्ग, म्युनिख तथा वियना जैसे शहरों मे मानवतावादी आन्दोलन बहुत जोरो से चला। इसके अलावा जोहान रिचलिन ने मध्युगीन चर्च के राजकीय लातीनी पाठान्तर में अनेक अशुद्धियाँ उजागर की।

(1) <u>कला</u> (Art) :–

पुनर्जागरण युग में जर्मनी की कला, चित्रकला तथा उत्कीर्णन तक ही सीमित था। अज्ब्रेख्त डयूरर, इस काल का बहुत बड़ा चित्रकार था। उसने एडोरेशन ऑफ द मैगी, दि कोर एपॉस्खस तथा दि क्रूसीकाइड आदि चित्रणों का निर्माण किया। इसके अलावा, उसने 'कॉइस्ट इन दि टोम्ब' नामक आरेखित चित्र का भी चित्रांकन किया।

(2) विज्ञान (Science):–

जर्मनी में जोहान कैप्लर पुनर्जागरणकालीन ऐसे वैज्ञानिक थे। जिन्होने विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पैरासेल्सस जर्मनी का महान् चिकित्सक था। वह 1527 में वेसल विश्वविधालय में औषधि प्रोफेसर व चिकित्सक के रूप में नियुक्त हुआ।

फ्रांस में पुनर्जागरण (Renaisance in France)

(1) कला (Art):–

पुनर्जागरणकालीन फ्रांस में कला का अधिक विकास नही हुआ। मूर्तिकला और सथापत्य कला की थोड़ी बहुत उन्नति हुई। इन भवनों में फ्रांसीसी और इतावली भवन निर्माण कला शैली मिश्रित रूप देखने को मिलता है।

(2) साहित्य (Litervature):–

पुनर्जागरणकालीन फ्रांस ने साहित्य और दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में अनेक उपब्धियाँ हासिल की, फ्रैकाड्स वियेटे फ्रांस का महान् गणितज्ञ था। पेरे को फ्रांसीसी आधुनिक शल्प चिकित्सा का जनक माना जाता है।

पुनर्जागरण के महत्वपूर्ण केन्द्र

(Important Centres of Renaissance)

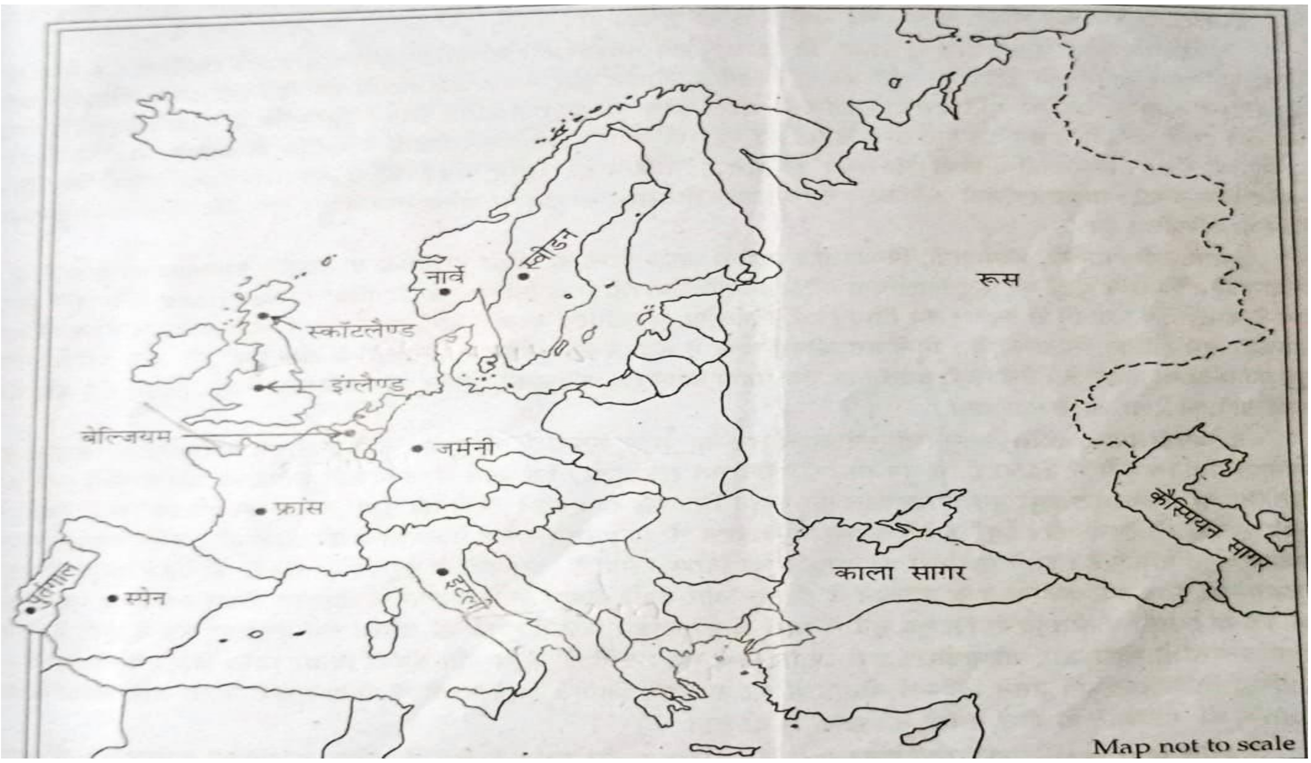

धर्म सुधार आन्दोलन की प्रगति (Development of Reformation) (7)

1517 ई. में धर्म–सुधार आन्दोलन जर्मनी मे शुरू हुआ। अतिशीघ्र ही यह आन्दोलन स्विटजरलैण्ड, फ्रांस, इग्लैण्ड तथा पश्चिमी युरोप के अनेक देशो में फैल गया।

(i) मार्टिन लूथर तथा जर्मनी में प्रोटोस्टैण्ट चर्च (Martin Luthar and protestant Church in Germany)

14वीं सदी में चर्च में व्याप्त बुराईयो का विरोध शुरू हो गया था। ज्ञान वाइक्लिफ ने कैथोलिक चर्च की बहुत सी परपंराओं व चर्चा के क्रियाकलापो का विरोध व आलोचना की। वाईक्लिफ के अग्रणीय कार्यो के कारण उसे 'द मार्निंग स्टार ऑफ रिफेमिशन' भी कहा जाता है। वाइक्लिक के विचारो का बोहोमिया के जॉन हस्स पर गहरा प्रभाव पड़ा था। इसी प्रकार सेवोनारोला ने इटली के पोप के राजसी ठाठ तथा चर्च की क्रियाकलापो की आलोचना की। मार्टिन लूथर द्वारा जर्मनी में जोरदार ढ़ंग से धर्म–सुधार आन्दोलन चलाया जिसके परिणामस्वरूप जर्मनी में प्रोटेस्टैण्ट चर्च की स्थापना हुई।

मार्टिन लूथर का प्रारम्भिक और शिक्षा (Early life and education of Martin Luthar)–

धर्म सुधार आन्दोलन को वास्तविक जनक मार्टिन लूथर का जन्म 10 नवम्बर, 1483 में जर्मनी के सैक्सनी राज्य में प्रगिया नामक स्थान पर एक निर्धन किसान परिवार में हुआ था। 1501 ई. मे उसने एरकर्ट विश्वविधालय में प्रवेश लिया। उसने धर्मशास्त्र के अध्ययन घोर परिश्रम किया। 1503 ई. में उसने 'मास्टर ऑफ फिलॉसफी' की उपाधि प्राप्त की।

(ii) लूथर की रोम यात्रा (Luther is visit to Rome) :–

1512 में लूथर ने एक श्रद्धावान के रूप में रोम की यात्रा की थी। उस समय उसके हृदय में चर्च के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान थ। अब उसका चर्च के आडंबरों से विश्वास उठ गया तथा वह आस्था व विश्वास को धार्मिक जीवन के लिए परम आवश्यक मानने लगा। साथ ही अ बवह सेंट आगस्टाइन के लेखों व बाइबिल के अध्ययन में ज्यादा समय लगाने लगा।

(iii) टेटजेल का विरोध (Protest of Tezel)–

पोप की आज्ञा से 'पाप मोचन पत्रो की बिक्री की जा रही थी। लूथर ने इन पत्रों को बेचने का विरोध किया। लूथर का मानना है कि शुद्ध हृदय से प्रायश्चित करने पर ईश्वर सबको क्षमा कर देता है। गिरजाधर के द्वार पर पोप मोचन के विरोध में 95 पत्र लिखकर टांग दिए।

(iv) प्रोटेस्टेण्ट नामकरण (Nomenclatue as Protestant)–

लूथर के मामले से निपटने के लिए डायट की समा जून, 1526 में स्पीयर में हुई। इस पर 1529 ई. में वर्म्स सभा के आदेशों को शक्ति लागू करने की बात हुई। इसलिए लूथर युनानियों को प्रोटेस्टेण्ट कहा जाता है।

(v) लूथर की शिक्षाएँ (Teachings of Luthar)–

लूथर कैथोलिक चर्च में व्याप्त विलासिता के खिलाफ था। लूथर ने निम्नलिखित बातों पर जोर दिया–

(1) लूथर ने ईसा मसीह तथा पवित्र बाइबल की सता को स्वीकार किया। दूसरी ओर रोमन पोप की दिव्यता तथा निरकुंशता को अस्वीकार कर दिया।

(2) लूथर ने अधिकतर संस्कारों को अस्वीकार कर मात्र तीन संस्कार नामकरण, प्रायश्चित तथा प्रसाद को ही मान्यता दी।

(3) लूथर ने चर्च के चमत्कारों को अस्वीकार किया।

(4) लूथर ने धर्म के आडंबर के स्थान पर साधारण भजन, प्रार्थना व उपदेश पर बल दिया।

(5) लूथर के अनुसार धर्म ग्रन्थ सबके लिए है तथा सभी को उनका ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार दे।

(6) उसके न्याय में आस्था व्यक्त की तथा कहा कि कोई व्यक्ति न्याय से ऊपर नहीं होना चाहित।

(7) रोम के चर्च के प्रभुत्व को अस्वीकार कर दिया गया तथा राष्ट्रीय चर्च की शक्ति पर जोर दिया गया।

धर्म–सुधार आन्दोलन के महत्वपूर्ण केन्द्र

(Important Centres of Reformation)

(7.7.2) धर्म सुधार आन्दोलन के परिणाम व महत्व (Effects and significance of the Reformation)

धर्म सुधार आन्दोलन को प्रथम महान् आधुनिक क्रान्ति की संज्ञा दी जा सकती है। इस धार्मिक उथल–पुथल ने सिर्फ धर्म के क्षेत्र को ही प्रभावित होती नही है वरन् समाज के सभी क्षेत्रो को बहुत प्रभावित किया। अब जबकि धर्म में ही सुधार और मूलभुत परिवर्तन आए तो इसने मानव जीवन के सभी पक्षों को अपने मे समेट लिया।

(1) ईसाई मत का विभाजन– 15वीं सदी में ईसाई धर्म दो भागों मे बँटा था। पूर्वी युरोप में रूढिवादी यूनानी चर्च था तथा शेष युरोप मे रोमन कैथोलिक चर्च था। अब धर्म सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप युरोप मे धार्मिक विविधता का प्रसार हुआ। इससे पश्चिमी युरोप की मध्यकालीन धार्मिक एकता सदैव के लिए समाप्त हो गई। फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल, इटली में रोमन कैथोलिक मत हावी रहा जबकि इंग्लेण्ड, हॉलेण्ड, जर्मनी आदि मे प्रोटेस्टेण्ट मत का प्रभाव अधिक था।

(2) धार्मिक संघर्ष (Religious Struggle/War)– प्रोटेस्टेण्ट मत के उदय के साथ ही कैथोलिको और प्रोटेस्टेण्टो के मध्य परस्पर शत्रुता उत्पन्न हो गई। प्रारम्भ से ही पोप ने लूथर व उसके सर्मथकों को शक्ति से दबाना चाहा था। परन्तु लूथर व उसके अनुयायियो का साथ जर्मनी के शासकों ने किया। प्रोटेस्टेण्टों के प्रभाव में वृद्धि से दोनों मत मे टकराव और भी बढ गया। यह धार्मिक टकराव एक धार्मिक संघर्ष में बदल गया।

(3) प्रति धर्म सुधार अथवा काउंटर रिफॉर्मेशन (Counter Reformation)– धर्म सुधार आन्दोलन तथा प्रोटेस्टेण्टो की सफलता ने यह साफ कर दिया कि रोमन कैथोलिकों चर्च के स्थायीत्व के लिए सुधार जरूरी है। अपनी सुरक्षा की दृष्टि से कैथोलिक ने भी सुधार की प्रक्रिया शुरू की जिसे काउंटर रिफॉर्मेशन कहा जाता है। इस दिशा में पोप पॉल III ने महत्वपूर्ण कार्य कर पोप प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। इस संगठन की संस्था सैनिक आधार पर थी। इसके हर एक सदस्य को कठोर अनुशासन में रहना होता था।

(v) कैथोलिक चर्च में आंतरिक असंतोष (Dissension within the catholic church)–

चर्च में आंतरिक असंतोष सबसे शक्तिशाली कारण था जिसने अततः विद्रोह का रूप ग्रहण किया एवं आंतरिक चर्च के रूप में कमजोर कर दिया। इससे सुधारों के समर्थक शक्तिशाली हुए, उनका धनाधार बढ़ा और सुधार विरोधी नैतिक रूप में कमजोर हो गए। सबसे पहले एक अंग्रेज उपदेशक जॉन वाइक्लिक ने कहा कि बाइबल सर्वोच्च धार्मिक प्रमाण है न कि पोप।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए– (Fill in the blankes)

[i] प्रोटेस्टेण्ट मत..............................का प्रवर्तक था।

[ii] कैथोलिक चर्च पर प्रहार करते हुए परंपराओं और क्रियाकलापों की आलोचना.....................ने की थी।

[iii] 16वीं सदी में वास्तुकला, शिल्पकला परिवर्तन को.........................संज्ञा दी गई।

[iv] पुनर्जागरण का सबसे पहले प्रांरभ.......................में हुआ।

[v] इटली में पुनर्जागरण लाने का श्रेय ....को जाता है।

[vi] विश्व में सर्वप्रथम छापेखाने का आविष्कार.......................ने किया।

[vii] ....800 पांडुलिपियों को लेकर इटली पहुँचा।

[viii] लियोनार्दो द विन्सी ने ....नामक चित्र में मानवादी भावनाओं का प्रकट किया।

[ix] पुनर्जागरण...............................भाषा का शब्द है।

[x] इतावली गद्य का पिता.................................था।

सत्य और असत्य पर आधारित प्रश्न–

[1] दांते ने डिवाइन कॉमेडी में स्वर्ग नरक की कल्पना की (........................)

[2] क्या पैट्रॉक धर्मसुधार काल का विद्वान था (........................)

[3] मइकल एंजेलो ने मोनालिया चित्र की रचना की (........................)

[4] न्यूटन द्वारा गुरूत्वाकर्षण सिद्धान्त को बल दिया गया (........................)

[5] मार्कोपोलो 1372 में कबुलाई खाँ के दरबार में पहुँचा (........................)

[6] चौसर द्वारा 'कैण्टरबरी टेल्ज' नामक पुस्तक लिखी गई (.........................)

[7] क्या लुई दे मोरेल स्पेन का चित्रकार था (.........................)

[8] फलेचर द्वारा दि फयेरी क्वील पुस्तक की रचना हुई (.........................)

[9] क्या पेट्रॉक को पुनर्जागरण का पिता माना जाता है (.........................)

[10] डेविड की मर्ति देनातेल्लो द्वारा बनवाई गई (.........................)

बहुविकल्पीय प्रश्न

[1] पुनर्जागरण की जन्म स्थली कहाँ है–

[A] इटली [B] फ्रांस

[C] इंग्लैण्ड [C] नीदरलैंड

[2] बीकासियो का जन्म कब हुआ

[A] 1313 [B] 1314

[C] 1315 [D] 1316

[3] मानवतावाद किसकी विशेषता है–

[A] पुनर्जागरण [B] सामन्तवाद

[C] धर्मसुधार [C] साम्यवाद

[4] रेनेसां का शाब्दिक अर्थ होता है–

[A] फिर से शुरू [B] फिर से जगाना

[C] फिर से जाना [D] फिर से सोना

[5] कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों का अधिकार हुआ–

[A] 1453 ई. में [B] 1465 ई. में

[C] 1555 ई. में [D] 1601 ई. में

[6] ऑगसबर्ग की संधि कब हुई?

[A] 1555 ई. में [B] 1556 ई. में

[C] 1560 ई. में [D] 1572 ई. में

[7] पुनर्जागरण का आरंभ किस देश में हुआ था?

[A] इंग्लैण्ड में [B] जर्मनी में

[C] इटली में [D] फ्रांस में

[8] काल्विन का जन्म किस देश में हुआ?

[A] इंग्लैण्ड में [B] जर्मनी में

[B] फ्रांस में [D] इटली में

[9] इटली के प्रसिद्ध चित्रकार थे–

[A] विंचि [B] एंजेलो

[C] रॉफेल [D] उपर्युक्त सभी

[10] जर्मनी में धर्म सुधार आन्दोलन का आरंभ करने वाला था–

[A] जिवंगली [B] काल्विन

[C] पेट्राार्क [D] मार्टिन लूथर

[11] लास्ट सफर विश्वविधालय चित्र है–

[A] माईकेल एंजेलो का [B] लियोनार्वो द विंचि का

[C] जियतो का [D] रॉफेल का

[Answers] उत्तरोतर

रिक्त स्थान

[i] मार्टिन लूथर

[ii] जॉन वाइक्लिक

[iii] रिनासिता की

[iv] इटली

[v] लियानार्डो दा विंचि

[vi] जॉन गुर्टनबर्ग

[vii] कार्डिनल वेसारियों

[viii] मोनालीसा

[ix] फ्रांसीसी भाषा का

[x] बीकासियों

सही/गलत

[i] सही

[ii] गलत

[iii] गलत

[iv] सही

[v] गलत

[vi] सही

[vii] सही

[viii] गलत

[ix] सही

[x] सही

बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) इटली [i]

(2) 1313 ई. में [ii]

(3) पुनर्जागरण [iii]

(4) फिर से जागना [iv]

(5) 1453 ई. में [v]

(6) 1555 ई. में [vi]

(7) इटली मे [vii]

(8) फ्रांस में [viii]

(9) मार्टिन लूथर [x]

(10) लियोनार्दो दा विंची [xi]

(11) उपर्युक्त सभी [ix]

प्रश्नोतरः–

(1) युरोप में पुनर्जागरण आन्दोलन के विकास का वर्णन कीजिए।

(2) पुनर्जागरण आन्दोलन पर एक निबंध लिखिए।

(3) पुनर्जागरण से आप क्या समझते है? पुनर्जागरण काल में कला, साहित्य तथा विज्ञान के विकास पर विस्तृत प्रकाश डालिए।

(4) इटली में पुनर्जागरण क्यों हुआ?

(5) पुनर्जागरण के मुख्य प्रमाणों की व्याख्या कीजिए।

(6) पुनर्जागरण के उत्थान के प्रमुख कारणों एवं प्रभावों का वर्णन कीजिए।

(7) धर्म–सुधार आन्दोलन से क्या अभिप्राय हैं? इसके कारण एवं प्रभावों का वर्णन कीजिए।

(8) धर्म–सुधार आन्दोलन पर निबंध लिखिए।

(9) धर्म–सुधार आन्दोलन के मुख्य परिणामों का वर्णन कीजिए।

(10) धर्म–सुधार आन्दोलन की प्रगति और महत्व का वर्णन कीजिए।

सन्दर्भ ग्रंथ (Reference books)

1. विश्व इतिहास (1500–1950) जैन और मायुर, जैन प्रकाशन मंदिर, जयपुर।
2. युरोप का आधुनिक इतिहास (1789–1974) सत्यकेतु विधालकार, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली 2016।
3. आधुनिक विश्व का इतिहास, लाल बहादुर वर्मा, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविधालय, प्रथम संस्करण, 2013।
4. विश्व का इतिहास भाग–1 (1500–1870) अविनाश चन्द्र अरोड़ा आर.एस. अरोड़ा, प्रदीप पब्लिकेशन, 1995
5. विश्व का इतिहास : दृष्टि पब्लिकेशन्स, ज0 मुखर्जी नगर, दिल्ली–द्वितीय संस्करण, अक्तूबर 2019।

SUBJECT: HISTORY (SEM-V) B.A. III YEAR	
Course Code: 302 (HIST)	**AUTHOR & UPDATED:**
LESSON: 8	**MS. JYOTI**

औद्योगिक क्रांति व युरोप की वाणिज्यिक शक्तियो से सम्बन्धित महत्वपूणग केन्द्र

Important Mercantile Centers, Connected with Industrial Revolution's Power of Europe

अध्याय संरचना (**Strcture of Lesson**)

8.1 अधिगम उद्देश्य (**Learning objectives**)

8.2 परिचय (**Introduction**)

8.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु (**Main body of Text**)

8.3.1 औद्योगिक क्रांति

8.3.2 युरोप में वाणिज्यवाद का विकास

8.4 पाठ के आगे का मुख्य भाग (**Further main body of Text**)

8.4.1 वाणिज्यवाद के विकास के कारण

8.4.2 वाणिज्यवाद विचारको का योगदान

8.4.3 वाणिज्यवाद शक्तियां

8.4.4 छात्र–क्रियाकलाप (**Student activity**)

8.4.5 औद्योगिक क्रांति के युरोप मे मुख्य बिन्दु

8.4.6 छात्र– क्रियाकलाप (Student activity)

8.5 प्रगति समीक्षा (Check your progress)

8.6 सारांश (Summary)

8.7 संकेत–सूचक (Keywords)

8.8 स्व–मूल्यांकन परीक्षा (Self Assessment Test)

8.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोतर (Answer to Check your progress)

8.10 संदर्भ ग्रंथ एवं सहायक अध्ययन सामग्री (References/suggested Reading)

(8.2) परिचय (Intrduction)– सोलहवी से अठारहवीं शताब्दी के बीच युरोप में हुए आर्थिक अथवा व्यापारिक परिवर्तनो वाणिज्यिक क्रांति का नाम दिया गया हैं। इस दौरान युरोप में विभिन्न प्रकार के भुगतानो में मुद्रा का प्रयोग बढ़ा वितरण व्यवस्था में भी परिवर्तन आए और स्थायी बाजारो की भी स्थापना हुई। इसके अलावा केंद्रिय एवं समुद्रपारीय व्यापार में भारी वृद्धि हुई। 16वीं सदी युरोप के एशिया और अमेरिका के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित हुए। मूल्यवान धातुओं के दोहन, मसालो की मांग, गुलामो के व्यापार, उपनिवेशो की स्थापना आदि के कारण समुद्रपारीय व्यापार में तेजी से आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। वाणिज्यिक क्रांति से पहले युरोप के उद्यमी मुख्यतः व्यक्तिगत तौर पर ही परिवार के सांझा व्यापार करते थे।

इस युग मे हमे कई प्रसिद्ध व्यापारिक घरानो की जानकारी मिलती है। 16वीं सदी कई व्यापारिक संगठनो की स्थापना हुई जिससे व्यापार के स्वरूप में परिवर्तन आया। इसी समय जहाज की कीमत और उसकी खेप में कई व्यापारियों की सांझेदारी परम्परा शुरू हुई। इस प्रकार की सांझेदारी इंग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथ के शासन काल में खुब प्रचलित हुई

'संयुक्त पूंजी कम्पनी (Joint Stock) जैसे विशाल संगठन के उदय ने व्यापार की प्रकृति मे भारी परिवर्तन किया। परिणामस्वरूप अकेले व्यक्ति को जोखिम उठाने की प्रथा का अन्त हो गया।

अब लोग अपनी छोटी रकम भी बिना किसी परेशानी के व्यापार में लगाने लगे। इससे व्यापार करना काफी सरल हो गया। संयुक्त पूंजी कम्पनियों ने युरोप को विश्व बाजार बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस प्रकार व्यापार के क्षेत्र में हुए परिवर्तनों ने युरोप के व्यापार का स्वरूप और भविष्य निर्धारित किया। इन्ही व्यापारिक परिवर्तनों को कुछ इतिहासकारों ने वाणिज्यिक क्रांति अथवा वाणिज्यिक की संज्ञा दी है।

वाणिज्यिकवाद को वाणिज्यवाद या व्यापारवाद भी कहा जाता है। यह वाणिज्यिक पूंजी युगीन आर्थिक विचारधारा थी। इस शब्द का प्रयोग लंबे समय से होता रहा है, परन्तु इसकी परिभाषा किसी ने नहीं दी। आधुनिक काल में इस

स्थानीय प्रणाली के स्थान पर बाजार प्रणाली का उदय हुआ, जिसमें उत्पादन मुख्य तौर पर लाभ कमाने के लिए किया जाने लगा। लाभ की भावना से व्यापार में वृद्धि हुई, वस्तुओं की मांग बढ़ी, जिसे पूरा करने के लिए दस्तकारी के स्थान पर बड़े–बड़े कारखानो की स्थापना हुई। पहले इग्लैंड और फिर युरोप के अन्य देशों में औद्योगिकीकरण हुआ। लेकिन औद्योगिकीकरण से पूर्व युरोप के विभिन्न देशों मे व्यापार एवं वाणिज्यिक का व्यापक विस्तार हुआ।

(8.4.1)

1.3.1 <u>पुनर्जागरण</u>– पुनर्जागरण ने वाणिज्यवाद के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 15वीं तथा 16वीं शताब्दियों में युरोप में पुनर्जागरण का आन्दोलन चला और यह एक ऐसा आन्दोलन था विज्ञान, व्यवसाय, धर्म और शासन में बड़े परिवर्तनो के लिए मार्ग तैयार किया। साथ ही मनुष्य की बौद्धिक चेतना और चिन्तन शक्ति को जरूरत करने पर बल दिया। छापेखाने के अविष्कार तथा साहित्य के विकास ने विचारो के क्षेत्र में क्रांति ला दी, जिससे युरोपीय लोगो का दृष्टिकोण पूरी तरह से बदल गया। इससे पूर्व युरोप के लोग अंधविश्वासी एवं आध्यात्मिकवादी थे। परन्तु पुनर्जागरण ने तर्कवाद, व्यक्तिवाद तथा भौतिकवाद पर बल दिया और लोगो को परलोक सुधारने की बजाय वर्तमान के लिए युरोप के लोग धन–दौलत का संग्रह करने लगे, जिससे वाणिज्यवाद को बल दिया।

1.3.2 <u>धर्म–सुधार आन्दोलन</u>– 16वीं शताब्दी में चर्च मे फैले भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए युरोपीय देशों मे धर्म–सुधार आन्दोलन चलाया। इसमें पोप की सर्वोच्चता तथा उसकी विलासता को चुनौती दी गई। अतः पोप की सत्ता का पतन हो गया और राजाओं की निरकुंशता पर बल दिया। कई राजाओ ने चर्च की सम्पति पर अधिकार कर लिया और अपने देशों में उन्होने राष्ट्रीय चर्चों की स्थापना की। परिणामस्वरूप, युरोपीय लोगों में अन्धविश्वास समाप्त हो गया और अधिक–से–अधिक धन कमाने की प्रवृत्ति ने वाणिज्यवाद को जन्म दिया।

1.3.3 <u>व्यापारी वर्ग में योगदान</u>–

11वीं सदी से ही युरोप में पुर व नगरों का उदय हो रहा था जो व्यापारिक गतिविधियों के केन्द्र बनने लगे थे। व्यापारी शहरी दस्तकारों से कुछ वस्तुएं खरीदकर अन्य स्थानों पर ले जाकर बेच रहे थे। 'व्यापारिक मेलों' का आयोजन होने लगा था। उल्लेखनीय है कि व्यापारी वर्ग अपने धन में और वृद्धि करने के लिए व्यापार में निवेश करता था तथा इससे प्राप्त लाभांश को व्यापार में निवेश कर रहा था। वह समुद्रपारीय प्रदेशों में व्यापार के लिए पहुंचने लगा था।

1.3.4 <u>राष्ट्रीय राज्यों का उत्थान</u>– मध्यकाल में सामंतवाद व्यवस्था थी। इस व्यवस्था में राज्य के विघटन होने से युरोप की शान्ति समाप्त हो चुकी थी। 14वीं शताब्दी में इग्लैंड, फ्रांस, रूस, पुर्तगाल, स्पेन आदि देशों में राष्ट्रीय राज्यों का उत्थान किया। इसके पश्चात् 16वीं से 18वीं शताब्दियों के बीच अनेक शक्तिशाली निरकुंश राज्य स्थापित हुए। इग्लैंड में हेनरी सप्तम् (1485–1509) तथा हेनरी अष्टम् (1509–1547), फ्रांस में लुई तेरहवें (1610–1643), तथा लुई चौदहवें ने शक्तिशाली राज्य स्थापित किए। राज्य को शक्तिशाली बनाने के लिए उद्योग एवं विदेशी व्यापार पर बल दिया। इग्लैंड के सम्राट हेनरी सप्तम् ने सामतों का दमन किया तथा उद्योग को बढ़ावा दिया। इस प्रकार पुर्तगाल एवं स्पेन आदि राज्यो ने भी वाणिज्यिक नीतियों पर बल दिया। अतः युरोप में राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना के परिणामस्वरूप वाणिज्यिवाद का उदय हुआ।

1.3.5 <u>मुद्रा बैंक प्रणाली</u>– मध्यकाल मे युरोपीय देशों में वस्तु–विनिमय के माध्यम से व्यापार किया जाता था। परन्तु राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना के पश्चात् शासकों ने वाणिज्य पर बल दिया। उन्होने धातु की मुद्राए जारी की। रूस तथा स्वीडन देशो ने तांबे के सिक्के चलवाएं, जबकि युरोपीय देशो ने सोने एवं चांदी की मुद्राएं प्रचलित की। युरोपीय देशो की कोशिश होती थी कि वह अधिक–से–अधिक सोना–चांदी प्राप्त करें। इसके सग्रंह की प्रवृत्ति ने वाणिज्यिवाद को जन्म दिया।

इसके अतिरिक्त, 15वीं से 18वीं शताब्दियों के बीच अनेक युरोपीय देशों में आधुनिक बैंक स्थापित किए गए जैसे– इग्लैंड बैंक, फ्रांसीसी बैंक, रॉयल बैंक, बर्लिन, इम्पीरियल बैंक ऑफ मास्को। बैंको ने व्यापारियों को आसान ब्याज पर ऋण देना प्रारम्भ किया। जिससे व्यापार तथा वाणिज्य के विकास को बल दिया। फ्लोरेन्स के मेडिसी परिवार ने एक ऐसा प्रथम बैंक स्थापित किया जिसकी शाखाएँ युरोप के सभी प्रमुख नगरों में फैली हुई थी।

8.4.2

<u>वाणिज्यिक विचारों में योगदान</u>–वाणिज्यिक के उदय में वाणिज्कवादी विचारको तथा लेखको का भी महत्वपुर्ण योगदान रहा । प्रमुख वाणिज्यवादी विचारको के नाम व उनके विचार इस प्रकार हैः–

1. **टॉमस मुन – टॉमस मुन :** इग्लैंड का प्रमुख व्यापारी तथा ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एक निदेशक था। उसने विभिन्न प्रस्तको की रचना की, जिनमे से England's treasure by Foreign Trade' महत्वपुर्ण है। उसने इस पुस्तक में वाणिज्यवाद सम्बंधी विचार प्रकट किए। इग्लैंड ने इस पुस्तक को वाणिज्यवाद की एक श्रामाणिक पाठय पुस्तक भी माने जाने लगा। उसके इन विचारो से वाणिज्यवाद को प्रोत्साहन मिला।
2. **सर विलियम पैटी –** सर विलियम पैटी का जन्म 1623 ई0 में हुआ था। वह एक जुलाहे का पुत्र था। उसने जीवन में एक के पश्चात एक जीविकोपार्जन के साधन बदले । वह फेरी वाले से एक शरीर विज्ञान एक प्रोफेसर के पद तक पहुॅचा । उसे साख्यिकी पद्धति के प्रवर्तक और राजनीतिक अर्थशास्त्री के रूप में सर्वाधिक दयाति मिली अन्य वाणिज्यवादी विचारको की भॉति वह भी वेतन को जीवन निर्वाह स्तर पर निर्धारित करने के पक्ष में था । वह ब्याज का विरोधी नही था । उसने यूरोपीय शासको को वस्तुओ का निर्यात बढाने के निर्यात शुलक घटाने का सुझाव दिया।
3. **चार्ल्स डेवानान्ट –** चार्ल्स डेवनान्ट एक अग्रेज उदार वाणिज्यवादी विचारक था । उसने कर, आयात, निर्यात, आदि विषयो पर काफी अध्ययन किया। उसने आयात पर विक्रेकपूर्ण प्रतिनंध लगाने तथा घरेलू उत्पादो की कीमतो मे कमी करने की वकालत की ताकि निर्यात को बढाया जा सके। उसका विचार था कि मुद्रा का मूल्य उसकी दुर्बलता में वीहित है। उसने अर्थव्यवस्था से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर अनेक पुस्तकों की रचना की, जिसमें 'पूर्वी भारतीय व्यापार पर निबंध' और व्यापार सन्तुलन में लोगों को लाभार्जिक बनाने वाले समभाव्य तरीकों पर निबंध आदि सम्मिलित है।

यूरोप की वाणिज्यिक शक्तियाँ

(Mercantile Powers of Europe)

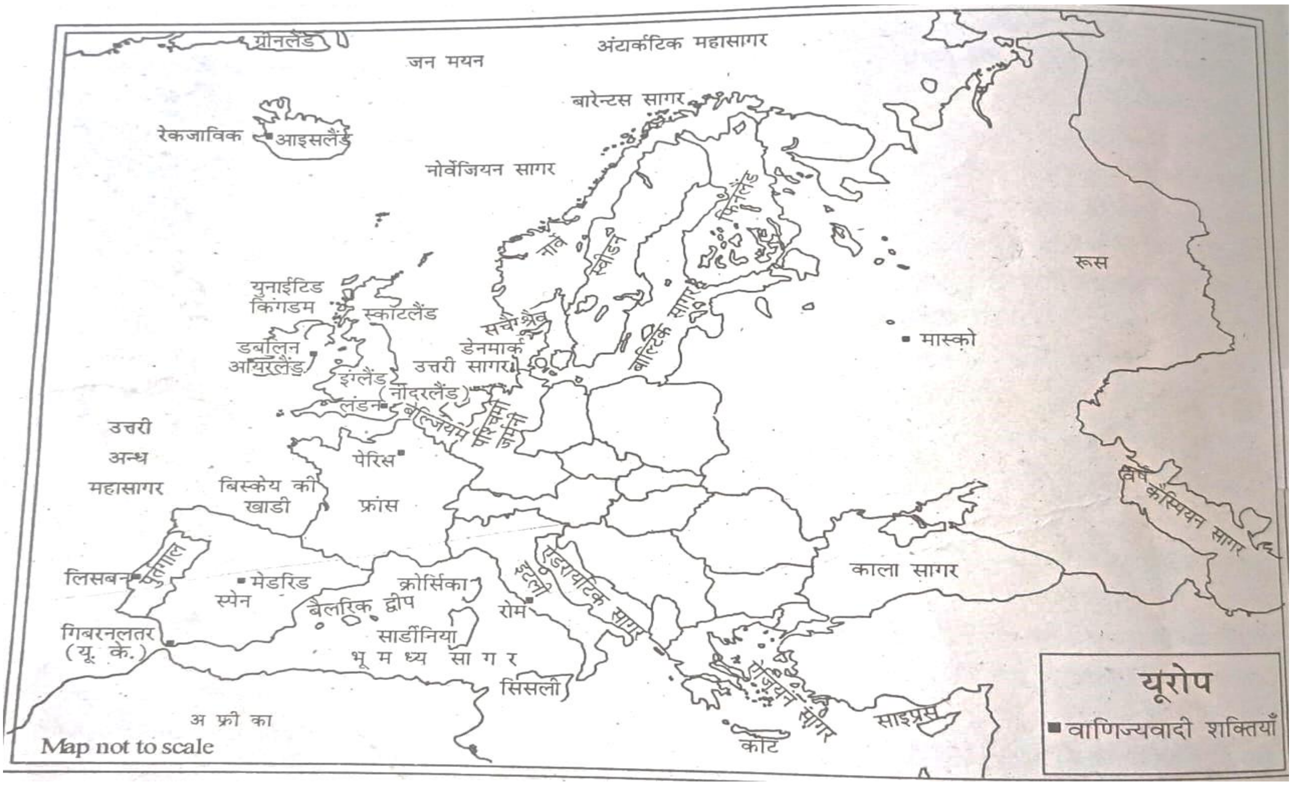

(8.3.2) <u>युरोप में वाणिज्यवाद का विकास</u>– 15वीं से 18वीं शताब्दियों के बीच युरोप के शासकों ने अपने देश में वाणिज्यवाद के सिद्धान्तों को लागू करने के प्रयास किए। इस दौरान इंग्लैंउ, नीदरलैंड, फ्रांस आदि देशों ने राष्ट्रीय आर्थिक नीति बनाने का प्रयास किया, ताकि अपने उद्योगों की रक्षा की जा सके। युरोप में वाणिज्यवाद के विकास का वर्णन इस प्रकार हैः–

1. **<u>इंग्लैंड</u>–** इंग्लैंड में ट्यूडर वंश के शासकों के काल (1485–1603) में नौ–परिवन अधिनियम पारित करके वाणिज्यिक नीतियों को व्यावहारिक रूप देने का प्रयास किया गया। विशेषकर हेनरी सप्तम् ने नाविक अधिनियमों द्वारा यह निश्चित किया है कि विदेशी व्यापार के लिए केवल अंग्रेजी जहाजों का ही प्रयोग किया जाएगा। एलिजाबेथ प्रथम के शासनकाल (1558–1603) के अन्तिम वर्षों में वाणिज्यिवाद का उदय हुआ। इस प्रणाली के अंतर्गत संयुक्त पूँजी कम्पनी का जन्म हुआ। इस काल में कृषि, उद्योग और व्यापार को काफी प्रोत्साहन दिया गया। उस समय इंग्लैंड के अनके कृषिक अपनी भूमि पर अनाज की भारी कमी पड़ गई। अतः देश को अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने के लिए ट्यूडर शासकों ने 1489 ई. और 1580 के कानून पास किए, जिनके द्वारा कृषि भूमि को चारागाहों में परिवर्तित करने की मनाही कर दी गई।

16वीं और 17वीं शताब्दियों के दौरान इंग्लैंड के व्यापार एवं वाणिज्य का भी बहुत विकास हुआ। इस काल में वाणिज्यवाद के सिद्धान्तो को अपनाया गया। इस प्रणाली के अंतर्गत संयुक्त पूँजी कम्पनियों का उदय हुआ, जिनमें दि मर्चेन्ट एडवेन्यर्स कम्पनी, दि इंग्लैंड कंपनी, दि मुस्कोवी कंपनी में स्थापित ईस्ट इण्डिया कम्पनी सबसे अधिक महत्वपूर्ण थी। हांलाकि जब कटु आलोचना की। इंग्लैंड की परम्परागत निर्यात की वस्तुओं–ऊनी कपड़े की भारत जैसे गर्म जलवायु के देश में कोई मांग नहीं थी। इसके अलावा, इंग्लैंड के व्यापार और वाणिज्य के विकास के लिए नौ परिवहन में भी सुधार किए गए। इसके लिए 1651 ई. में नौ परिवहन अधिनियम पास किया गया, जिसकी मुख्य **विशेषताएं इस प्रकार थीः–**

1. इंग्लैंड में वस्तुओं को लाने व ला जाने मे इंग्लैंड के जहाजों का प्रयोग होगा।
2. एशिया, अफ्रीका तथा अमेरिका को माल विदेशी जहाजों द्वारा भेजने पर प्रतिबन्ध होगा।

गणतंत्र काल के दौरान इंग्लैंड ने स्वीडन से दो व्यापारिक सन्धियां की जिनमें इंग्लैंड को बाल्टिक सागर में व्यापार करने का अधिकार मिल गया। 1688 से 1714 के दौरान पुर्तगाल से इंग्लैंड से प्रतिस्पर्धा चली। अतः पुर्तगाल से 1703 की 'मैथ्यून की सन्धि' की गयी। इसका उद्देश्य यह था कि फ्रांसीसी शराब ही इंग्लैंड पहुंच गए। अब उपनिवेशों के लोग अपनी सभी जरूरतों के लिए इंग्लैंड पर आश्रित हो गए। इससे इंग्लैंड के उद्योगों को खूब प्रोत्साहन मिला। इस प्रकार इंग्लैंड ने अपने उपनिवेशों का आर्थिक शोषण करके खूब धन कमाया। लेकिन अमेरिकी बस्तियों ने 1776 में इंग्लैंड ने विरूद्ध विद्रोह कर दिया।

2. **नीदरलैंड**– 1581 में नीदरलैंड के चार प्रोटेस्टेट राज्यों ने स्पेन के राजा के प्रति अपनी निष्ठा को समाप्त करके एक संघीय गणराज्य का निर्माण किया। इस गणराज्य का नाम संयुक्त राज्य नीदरलैंड रखा गया। अपने अस्तित्व के पहले 50 वर्षों में इसकी विभिन्न इकाइयां आरेज राजवंश के प्रधान को अपना मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त करती थी। क्योंकि इस वंश ने उनके मुक्ति संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके बावजूद नीदरलैंड की राजनीति मुख्यतः गणतन्त्रात्मक किस्म की बनी रही, जिस पर क्रमशः फैलते हुए एवं समृद्ध महाजनी वर्ग का अधिपत्य था। स्वतंत्रता शेयर बाजार (Stock Exchange) का सृजन भी नीदरलैंड में किया गया। नीदरलैंड के स्पेनी क्षेत्र में शीघ्र ही एम्सटरडम के स्थान पर एन्टवर्प अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का मुख्य केन्द्र बन गया। 1602 में डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई। इस दौरान, लाइडन में एक नये ऊनी वस्त्र उद्योग की स्थापना की गई। इसके अलावा जहाज निर्माण के क्षेत्र में भी नीदरलैंड ने खूब विकास किया। नीदरलैंड ने बाल्टिक क्षेत्र में अपने को काफी पहले ही स्थापित कर लिया था, जिसके कारण उसमें बनी मुद्रा था सिक्के वहां काफी मात्रा में प्रचलन में थे और उन्हे प्रायः स्थानीय मुद्रा माना जाता था। इंग्लैंड में बने कपड़े को एम्सटरडम में रंगा जाता था और उस पर सजावट करके उसे खूबसूरत रूप दिया जाता था। 16वीं से 18वीं शताब्दी के बीच नीदरलैंड ने वाणिज्यिक नीतियां अपनायी। लेकिन वाणिज्यिवादी प्रणाली के अंतर्गत जो विनिमय प्रचलन में थे, उनमें यहां कुछ भिन्नताएं थी, जिनमें से कुछ उनके स्थानीय हालातों की

वजह से थी। वित्तीय संस्था और व्यापारिक गोदाम के रूप में नीदरलैंड की रूचि अधिक–से–अधिक वस्तुओं की ब्रिकी में थी। व्यापार संतुलन मे उसकी अधिक रूचि नही थी। इस प्रकार वह व्यापारिक अल्पतंत्रो का एक शिथिल संघ ही बना रहा।

ट्यूडर शासकों के नौ परिवहन अधिनियमों में इंग्लैंड की वाणिज्यवादी नीति के दर्शन होते है। 1625 ई. के पश्चात् उसे पूरी तरह से वाणिज्यवादी नीति अपनानी शुरू कर दी। इस समय नीदरलैंड की वाणिज्यवादी नीति ने ब्रिटिश सरकारी नीति को भी प्रभावित किया। 17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ऊनी कपड़े के निर्यात का विस्तार हुआ। इसके पश्चात् आर्थिक सकंट को दौर शुरू हुआ। इंग्लैंड ने नीदरलैंड के साथ मैत्री संबंध स्थापित करने के भी प्रयास किए, लेकिन वह सफल नही हुआ। यही कारण था कि इंग्लैंड ने व्यापारिक गतिविधियों में नीदरलैंड पर इंग्लैंड की निर्भरता को कम करने के लिए नौ परिवहन अधिनियम पारित हुए। नीदरलैंड से ब्रिटेन में आयात की मात्रा 1 करोड़ 46 लाख पौंड से हटकर मात्र 36 लाख पौंड से घटकर 12.7 प्रतिशत रह गया।

नीदरलैंड के साथ इंग्लैंड के व्यापार में गिरावट के बावजूद ब्रिटेन से निर्यात होने वाली वस्तुओं के परिणाम तथा मूल्य में जो भारी वृद्धि हुई, उसका कारण अमेरिका तथा वेस्टइंडीज के साथ ब्रिटिश व्यापार में भारी वृद्धि हुई। नीदरलैंड ने भारत, ऐशिया और युरोप के अन्य देशो से व्यापार करके खूब लाभ कमाया। विदेशी से आयात किए गए कच्चे माल से नीदरलैंड के कारखानो में वस्तुएं तैयार की जाती थी, जिनका विभिन्न देशों में निर्यात किया जाता था।

3) फ्रांस– फ्रांस में हेनरी चतुर्थ (1589–1610) तथा लुई–तेरहवें के शासन काल में वाणिज्यवाद के सिद्धान्त अपनाए गए। हालांकि 1610 ई. में हेनरी की हत्या और तत्पश्चात् आंतरिक लडाई–झगड़ो तथा विदेशी युद्धो में उलझ जाने से फ्रांस के आर्थिक विकास को काफी धक्का लगा। लुई चौदहवें के समय उसके मंत्री कोलबर्ट ने 1661–1683 ई. के दौरान वाणिज्यवाद के सिद्धान्तों को कार्यरूप देने का प्रयास किया। कोलबर्ट ने फ्रांसीसी उद्योगो की रक्षा के लिए 1664 ई. आयात करों में कुछ वृद्धि कर दी और 1667 ई. में निर्मित वस्तुओ पर कर लगभग दुगुना कर दिया। इससे इंग्लैंड जर्मनी हालैण्ड के व्यापार को फ्रांसीसी व्यापार से हानि हुई। अन्य वाणिज्यिक शक्तियों ने भी फ्रांस के विरूद्ध आयात–निर्यात संबंधी नियम जारी किए। इसके बावजूद फ्रांस, वस्त्र, रेशम के फीते, दर्पण, चीनी के बर्तन आदि का निर्यात करता रहा। इसके अलावा, फ्रांस में अनेक व्यापारिक कम्पनियां बनाई गई। कालबर्ट ने फ्रांस के उद्योगो में उच्च कोटि का माल तैयार के लिए अनेक उत्पादन नियम बनाए। नियमों के पीछे अनेक उद्देश्य थे। कृषि के अलावा अन्य साधनों का विकास करना आदि। हालैण्ड फ्रांस की तुलना में बहुत छोटा था। इसके बावजूद फ्रांस ने साज सज्जा की वस्तुए, रेशमी कपड़े, रेशम के फीते, चीनी के बर्तन आदि बेचकर खूब धन कमाया। इसके अलावा, फ्रांस में सर्ज, मोजे, ऊनी वस्त्र आदि उद्योगों का विकास किया। फ्रांस में वाणिज्यवादी नीति का निर्धारण नौकरशाही ने किया, जबकि इंग्लैंड में वहां के व्यापारी और समाज के सदस्यो ने वाणिज्यवादी नीतियों को स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन 18वीं शताब्दी का फ्रांस नवीन आविष्कारों के मामले में भारी पड़ा, फिर भी उनका विकास तथा व्यापारिक इस्तेमाल, इंग्लैंड और स्कॉटलैंड में किया गया। इस प्रकार वाणिज्यवाद का विकास हुआ, लेकिन ब्रिटेन के साथ युद्ध में मिली हार तथा 1789 ई. की क्रांति से वाणिज्यवाद को काफी धक्का लगा।

4) स्पेन– स्पेन में वाणिज्यवाद के सिद्धान्तों को चार्ल्स V और उसके उत्तराधिकारी फिलिप II (1556–1598) के शासनकाल में अपनाया। स्पेन नाविसियों ने इस दौरान अपने उद्योगों के विकास के स्थान पर विदेशों से सोने–चाँदी के संग्रह पर अधिक जोर दिया। सम्राट चार्ल्स V के शासनकाल में अमेरिका से 18,000 टन चाँदी और 200 टन सोना स्पेन में आया। इस प्रकार की अपार धन सम्पति वेस्टइंडीज से स्पेन पहुंची। नीदरलैंड और इटली से भी स्पेन को काफी धन प्राप्त

हुआ। स्पेन का औपनिवेशक साम्राज्य बहुत बड़ा था। लेकिन इन उपनिवेशों के प्रति स्पेन की नीति काफी दोषूपर्ण थी। उपनिवेशों पर विभिन्न प्रकार के प्रतिबन्ध लगे हुए थे। इससे स्पेन को काफी आर्थिक हानि पहुंचती थी। इसके अलावा, उपनिवेशों से प्राप्त धन कमाकर भाग लूटपाट और विदेशी पूंजीपतियों के हाथों में चला जाता था। परिणामस्वरूप स्पेन के उद्योगों और व्यापार को काफी नुकसान होने लगा। कालांतर में स्पेन में वाणिज्यवाद पतन की ओर अग्रसर हो गया। 1598 से 1665 ई. के बच स्पेन में भयानक प्लेग, विदेशी युद्धो आदि से वहां के उद्योग एवं व्यापार पतन की ओर अग्रसर हो गए। इससे वाणिज्यवाद को भी भारी धक्का लगा।

5) <u>पुर्तगाल</u>– पुर्तगाल युरोप का एक छोटा–सा देश था। पुर्तगाल के शासकों ने व्यापार एवं वाणिज्य के विकास पर अत्यधिक बल दिया। 1498 ई. वास्कोडिगामा भारत के पश्चिमी तट पर स्थित कालीकट नामक बन्दरगाह पर पहुंचने में सफल हुआ। उसने पुर्तगालियों का भारत के व्यापार की ओर ध्यान दिलाया। 16वीं शताब्दी में पर्तुगालियों ने लंका के समुद्री तट पर स्थित अनेक क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया। इसी के साथ पुर्तगालियों ने चीन, जापान आदि देशों के साथ भी व्यापार करना शुरू कर दिया। यहां तक की पुर्तगालियों ने ब्राजील में भी उपनिवेश स्थापित कर लिए। परिणामस्वरूप, पुर्तगाल को इंग्लैंड और डजो से संघर्ष करना पड़ा। इसके अलावा, स्पेन ने उसका विरोध किया। 1580 ई. मे स्पेन ने पुर्तगाल पर अधिकार कर लिया।

व्यापारिक प्रतिस्पर्धा को लेकर पुर्तगालियों का स्पेन से संघर्ष हुआ। इसी प्रकार पूर्व में उसे डंचो और अंग्रेजो से उलझना पड़ा। पुर्तगाल की शक्ति का पतन हो गया। 1580 ई. में स्पेन ने पुर्तगाल पर अधिकार कर लिया। 1700 ई. में उसे ब्राजील में सोने एंव हीरों की खाने मिली, जिससे ब्राजील उसके लिए अति महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया। लेकिन वस्तुओं के लिए इंग्लैंड, हॉलेंड, फ्रांस आदि देशों पर ही निर्भर पड़ा। उसका औद्योगिक विकास नही हुआ। अतः धीर–धीरे पुर्तगाल व्यवहारिक रूप में ब्रिटेन का उपनिवेश बन गया।

(8.3.1) <u>औद्योगिक क्रांति</u> (Indurtrial Revalution)– अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों में इंग्लैंड तथा युरोप के अनेक देशों मे औद्योगिक क्षेत्र में अनेक तकनीकी परिवर्तन आए, जिन्हें औद्योगिक क्रांति के नाम से जाना जाता है। इस काल में अनेक आधुनिक मशीनों तथा यंत्रो का अविष्कार हुआ, जिससे वस्तुओं के उत्पादन में भारी

वृद्धि हुई। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप घरेलू उत्पादन प्रणाली के स्थान आधुनिक कारखाना पद्धति ने ले लिया। इन कारखानो मे पानी, शक्ति और तेल ऊर्जा से चलित मशीनों से वस्तुएं बनाई जाती थी। ये मशीनें अतिशीघ्रता से कपड़ा और अन्य वस्तुएं बनाती थी, जो हाथों से बनी वस्तुओं की तुलना से अधिक मजबूत, सस्ती और देखने मे अच्छी होती थी। परिणामस्वरूप, मशीनी वस्तुओं की मांग में निरंतर वृद्धि होती चली गई। अतिशीघ्र ही इंग्लैंड एक कृषि प्रधान देश के स्थान पर एक प्रमुख औद्योगिक देश बन गया। इंग्लैंड के पश्चात् युरोप के अन्य देशों मे भी इस प्रकार के औद्योगिक परिवर्तन आए। औद्योगिक क्षेत्र में हुए इन परिवर्तनो के लिए प्रसिद्ध इतिहासकार आर्नोड टायनबी ने 1884 ई. में प्रकाशित पुस्तक 'लेक्यर्स ऑन इण्डिस्ट्रियल रिविल्यूशन' में औद्योगिक क्रांति का नाम आया।

औद्योगिक क्रांति का काल इतिहास हेज का मत है कि औद्योगिक विकास का क्रम 15वीं सदी में ही शुरू हो गया था और अब भी जारी है। टॉयनवी के अनुसार इसका काल 1760–70 ई. से 1830–40 ई. में था। परंतु सर्वमान्य तथ्य यह है कि औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम इंग्लैंड में आई। इंग्लैंड में अनेक मशीनों एवं यन्त्रों का आविष्कार किया गया, जिसके फलस्वरूप साधनों मे भारी परिवर्तन आया। इसमें अनेक परिवर्तन आए, जिसके कारण इसका नाम 'क्रांति' रखा गया। उसने क्रांति शब्द का प्रयोग 1884 ई. अपनी पुस्तक 'The Industrial Revolution' में किया।

(8.4.5) 1) <u>इंग्लैंड</u>– औद्योगिक क्रांति की शुरूआत इंग्लैंड से हुई। सर्वप्रथम कपड़ा उद्योग में तकनीकी परिवर्तन हुए। इससे पहले कपड़ा चरखों और तकलियों की सहायता से हाथों से बुना जाता था। इस तरह से कपड़ा बनाने में बहुत समय बर्बाद होता था। 1773 ई. में जान के ने फ्लाईंग राटल नामक मशीन का आविष्कार किया। यह मशीन पानी से चलती थी, जिससे जल्दी कपड़ा तैयार किया जाता था। बाद में यह वाष्प इंजन से चलाई जाने लगी। 1793 ई. में कॉटन जिन नामक मशीन बनाई जो रूई से बिनौलो का अलग करती थी। इसके अलावा, थॉमस बेल ने सिलेण्डर प्रिंटिग का आविष्कार किया, जिसके द्वारा कपड़ो की छपाई की जाती थी।

18वीं शताब्दी में कोयला और लोहा उद्योग में भी परिवर्तन हुआ। न्यु कॉमन ने 'स्टीम इंजन' और जेम्स वाट ने 'नये भाप के इंजन' का आविष्कार किया, इससे लोह एवं उद्योग को काफी बल मिला। 1815 ई. सेफ्टी लैम्प का आविष्कार किया जिससे कोयलो की खानों में काम करने वाले मजदूरों का जीवन सुरक्षित हो गया। 1709 ई. अब्राहम डर्बी ने लोहे को पिघलाने का सफल परीक्षण किया। इसके अलावा, इंग्लैंड में यातायात के साधनों का भी विकास किया। जॉन मेटकाफ आदि इंजीनियरों ने पक्की सड़क बनाने की विधि का आविष्कार किया। जार्ज स्टीफन ने भाप से चलने वाली रेल इंजन का आविष्कार किया। इसके पश्चात् इंग्लैंड में रेलो का बहुत विकास हुआ। इसके अलावा, 1837 ई. में मोर्स ने तार तथा 1876 ई. में बेल ने 'दूरभाष' का आविष्कार किया।

2) <u>बेल्जियम</u>– इंग्लैंड के पश्चात् बेल्जियम में औद्योगिक क्रांति आई। हांलाकि क्रांति विकास के मामले में वह इंग्लैंड से काफी पीछे रहा, फिर भी वहां उद्योगों का बहुत विकास हुआ। बेल्जियम का औद्योगिक विकास 1830 ई. में शुरू हुआ। वहां इंग्लैंड से मशीने मंगवाई गई। 1834 ई. में सहयोग से बेल्जियम में टेलो का प्रचलन किया गया। 1837 ई. तक 160 मील रेल लाइन बिछा दी गई। 1849 ई. बेल्जियम में रेल योजना के तहत मुख्य रेलवे लाइन का कार्य पूरा कर लिया गया। 1870 ई. तक बेल्जियम एक प्रमुख औद्योगिक केन्द्र बन गया। बेल्जियम में कपड़ा, लोहा, कोयला आदि उद्योगो की स्थापना की प्रक्रिया पूरी कर ली गई। औद्योगिक क्रांति के कारण बेल्जियम ने इंग्लैंड से मशीनों का आयात करके कारखाने स्थापित करने शुरू कर दिये। वहां उनकी कुताई, बुनाई व खानो से लोहा निकलवाने मे यंत्रो का प्रयोग शुरू हुआ। कोयला उद्योग में बेल्जियम ने महत्वपूर्ण विकास किया। यहां तक कि प्रारम्भ में वह युरोप के दूसरे देश को कोयला भेजने लगे। 1850 ई. तक वह एक उद्योग प्रधान देश बन गया।

3) <u>फ्रांस</u>– फ्रांस में भी औद्योगिक विकास तेजी से हुआ। हांलाकि यहां औद्योगिक विकास इंग्लैंड की तुलना मे काफी धीमा रहा। इसका कारण यह था कि फ्रांस क्रांति में फंसा रहा और वहां के उद्योपतियों ने उद्योगों की स्थापना में साहस नहीं दिखाया। इसके अतिरिक्त फ्रांस में कच्चे माल की कमी थी। नेपोलियम बोनापट ने औद्योगिक विकास के लिए सड़क तथा

नहरो का निर्माण कराया। सर्वप्रथम नेपोलियम ने बहुत उद्योगो को बढावा दिया। वास्तविक उद्योग विकास 1815 ई. के पश्चात् ही शुरू हुआ। 1830 ई. वाष्‍ के इंजन का प्रयोग उद्योग में हुआ। 1842 ई. में रेलवे लाइन बिछाने का कार्य आंरभ हुआ, 1848 ई. तक सूती और रेशमी वस्त्र उद्योग में मशीनों का प्रयोग हुआ। 1850 ई. के पश्चात् फ्रांस में कच्चे माल की कमी के कारण उद्योग की गति धीमी पड गई। परिणामस्वरूप, सरकार को इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभाई। उसने कई बैंक स्थापित किए और गैर–सरकारी कंपनियों को उचित सहायता प्रदान की। 1870 ई. तक आते–आते फ्रांस के उद्योग ने 1836 ई. और 1867 ई. के बीच अपना उत्पादन तीन गुना बढ़ा लिया। इसी दौरान, फ्रांस के विदेशी व्यापार में भी वृद्धि हुई। 1870 ई. में फ्रांस की गणना प्रमुख औद्योगिक देशो में होने लगी।

4) जर्मनी– जर्मनी में औद्योगिक क्रांति काफी बाद में आई। इसका मुख्य कारण जर्मनी में राजनीतिक एकता का अभवा, यातायात के साधनो की कमी तथा खनीज पदार्थ एवं कच्चे माल की कमी थी। 1820 ई. के पश्चात् जर्मनी में सड़को तथा नहरो का निर्माण आरंभ किया। 1830 ई. के पश्चात् राइन नदी यातायात के लिए खोली गई। 1840 ई. में वहां पर रेलों का प्रचलन आरंभ किया। जर्मनी के एकीकरण के पश्चात् वहां औद्योगिक विकास में तेजी हुई और देखते ही देखते जर्मनी एक महान औद्योगिक केन्द्र बन गया। 1850 ई. से 1870 ई. के बीच जर्मनी ने प्रमुख नगरों को रेल मार्ग से जोड़ दिया गया। 1870 ई. तक फ्रांस ने औद्योगिक विकास की अधिकतर समस्याओं पर काबू पा लिया। इसके साथ ही कपड़ा और भारी उद्योग का मशीनीकरण किया गया। 1850–80 के बीच जर्मनी ने अपना कोयल उत्पादन भी दस गुना बढ़ा लिया। औद्योगिक प्रगति का यह सिलसिला अगली शताब्दी तक भी चलता रहा।

5) इटली– इटली में राजनीतिक एकता का अभाव रहा, जिससे काफी समय तक वहाँ औद्योगिक विकास नही हो सका। इटली का औद्योगिक विकास 1870 ई. मे देश के एकीकरण के पश्चात् ही संभव हुआ। एकीकरण के पश्चात् इटली में तेजी से धातु व रसायन उद्योग में अत्यधिक विकास हुआ। 19वीं शताब्दी तक इटली में कपड़ा, धातु, रासायनिक आदि उद्योगों की भारी पैमाने पर स्थापना हुई। अतिशीघ्र ही जल विधुत योजनाओं में वह सभी उद्योगो का मशीनीकरण किया गया। जल विद्युत परियोजनाओं के विकास पर भी बल दिया गया। इस प्रकार औद्योगिक विकास में इटली का महत्वपूर्ण विकास हुआ।

6) रूस– 1850 ई. तक रूस के अधिकतर लोग मुद्रा का प्रयोग नहीं करते थे, वह अपनी सेवाओं के बदले वस्तुएं प्राप्त करते थ। अर्थात् वस्तु विनियम से लेन–देन होता था। रूस मे औद्योगिक विकास 1860 ई. के पश्चात् आरंभ हुआ। रूस के लोगों द्वारा कृषि व्यवसाय अपनाने तथा अर्द्धदासता के परिणामस्वरूप वहाँ औद्योगिक विकास काफी धीमा पड़ा। कोयले तथा लोहे के खाने भी एक–दूसरे तथा धनी आबादी से दूर थी। नदियों मे पानी जमा रहने तथा उल्टा बहने से कोयले तथा लोहे की मास्को लाने में बहुत कठिनाई होती थी। अंतः 1861 के रूस में 1000 मील लम्बी रेलवे लाइन का निर्माण कराया गया। आगामी पचास वर्षो में 40,000 मील लम्बी रेल लाईन बिछाई गई। रूस में कोयले तथा बाकु के कुभों से पेट्रोल का उत्पादन भी बढ़कर सोलह गुना हो गया। इस दौरान, इस्पात का उत्पादन भी दस गुना बढ़ गया। 1860 में रूस ने स्टेट बैंक स्थापित किया। इस बैंक ने उद्योगों को भारी मात्रा में वन उधार दिया। परिणामस्वरूप, रूस में औद्योगिक विकास काफी तेजी से हुआ।

4. औद्योगिक क्रान्ति के प्रभाव (Effects of Industrial Revolution)

4.1 आर्थिक प्रभाव (Economic Impact)

औद्योगिक क्रान्ति ने यूरोप अथवा विश्व के आर्थिक जीवन को बहुत प्रभावित किया, जिसका वर्णन इस प्रकार है–

4.1.1 कुटीर उद्योगों का पतन (Decline of Cottage Industry)– औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप, यूरोप में कुटीर उद्योगों का पतन हुआ। क्रान्ति से पूर्व ग्रामों तथा नगरों में शिल्पकार विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण करते थे। उनके द्वारा बनाई गई वस्तुओं की विश्व में बहुत माँग थी। परन्तु औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् वस्तुएँ मशीनों से बनने लगी, जो हाथ से बनी वस्तुओं की तुलना में अधिक सस्ती, टिकाऊ तथा मजबूत होती थी। घरों में हाथों बनी वस्तुएँ मशीन से निर्मित वस्तुओ के मुकाबला नही कर सकी। अतः लोगों ने मशीनो से बना हुआ कपड़ा तथा अन्य वस्तुएँ खरीदनी आरम्भ कर दी, जिससे कुटीर उद्योगों का पतन हो गया।

4.1.2. कारखानों की स्थापना (Establishment of Factories)–औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप, यूरोप तथा एशिया के विभिन्न देशों में बड़े–बड़े कारखानों की स्थापना हुई। इग्लैण्ड, फ्रांस, बेल्जियम, इटली जैसे देशों में वस्त्र, कोयला तथा लोहे के उद्योग स्थापित हुए। इसी दौरान, विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्र में प्रगति होने से कुछ नये उद्योग भी प्रकाश में आए। आर्कराइट को फैक्टरी पद्धति का जनक माता जाता है। फैक्टरियों में वस्तुओं का निर्माण मशीनों के द्वारा किया जाता था, जो वाष्प, पेट्रोल तथा विद्युत आदि से चलती थी। इन कारखानों में स्त्री, पुरूष तथा बच्चे कार्य करते थे। इनमें बड़े पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन किया जाता था। यूरोप में सबसे पहले इग्लैण्ड में आधुनिक कारखाने स्थापित हुए और इसके पश्चात् युरोप के अन्य देशों में इसी तरह के आधुनिक उद्योग स्थापित हुए।

4.1.3 बेकारी की समस्या (Problem of Umenployment)– औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप, कुटीर उद्योग समाप्त हो गए, जिससे काफी संख्या में कारीगर बेरोजगार हो गए थे। कृषि के क्षेत्र में मशीनों के प्रयोग से हजारो कृषि मजदूर पहले ही बेकार हो चुके थे। यद्यपि इनमें से कुछ मजदूरों ने नगरों में जाकर कारखानों में कार्य करना आरम्भ किया। इसके बावजूद बेकारी की समस्या पर काबू नही पाया जा सका। कारखानों मे एक मशीन कई–कई मजदूरों का कार्य कर देती थी। दूसरी ओर, कारखाना

मालिक पुरूषों की बजाय स्त्रियों तथा बच्चों को ही काम पर लगाना पसन्द करते थे। अतः यूरोप में बेकारी की समस्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती चली गई।

4.1.4 राष्ट्रीय आय में वृद्धि (Increase in National Income)– औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप यूरोप के देशों में बड़े–बड़े मशीनी कारखानों की स्थापना हुई, जिनमें भारी मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन किया जाता था। उत्पादन में हुई इस वृद्धि से देशों की आय में भी वृद्धि हुई। तैयार माल को विभिन्न राष्ट्र, दूसरे देशों अथवा उपनिवेशों में बेचकर खूब लाभ कमाते थे। अतः वस्तुओं की मांग बढ़ने से यूरोप के लोहा, कोयला व सूती वस्त्रों के उत्पादन में 1760 ई. से 1870 ई. तक क्रमशः 37, 10 तथा 40 गुणा तक वृद्धि हुई।

4.1.5 यातायात तथा संचार के साधनों का विकास (Development of Transportation and means of communcation)– औद्योगिक क्रान्ति का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव यह पड़ा कि इस काल में विश्व के अनेक देशों में यातायात तथा संचार के साधनों का बहुत विकास हुआ। 1870–1914 ई. तक इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, रूस आदि देशों में रेलवे लाईन बिछाई गई। यूरोप के इंजीनियरों ने पर्वतों से सुरंग निकाल कर पुल बनाये और उनके ऊपर रेल लाईन बनाई। 1871 ई. में एल्पस पर्वत में से सुरंग निकाल कर फ्रांस तथा इटली को रेलवे लाईन से जोड़ दिया गया। इन रेलवे लाईनों पर 90 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से रेलगाड़ियाँ दौड़ती थीं। इसके अतिरिक्त, विभिन्न देशों में सड़कों तथा नहरों का निर्माण किया गया तथा तार प्रणाली को भी दुरूस्त किया गया। अमेरिका के हेनरी फोर्ड ने एक सस्ती कार का आविष्कार किया। इसी तरह कम्पास के आविष्कार ने समुद्री यात्रा को आसान तथा सुरक्षित बना दिया। इस प्रकार औद्योगिक विकास के फलस्वरूप यातायात के आधुनिक साधनों का विकास हुआ।

4.1.6 व्यापार तथा कृषि में उन्नति (Development in Trade & Agriculture)– औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप विश्व के अनेक देशों में वस्तुओं का उत्पादन घरों से निकलकर फैक्टरियों में आरम्भ हुआ। फैक्टरियों में वस्तुओं का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता था। अतः यूरोपीय देशों ने अपनी आवश्यकता से ज्यादा वस्तुओं का निर्माण कर एशिया तथा अफ्रीका में निर्यात करना आरम्भ कर दिया, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में उन्नति हुई। इसके अतिरिक्त, उद्योगों के विकास के लिए कच्चे माल की आवश्यकता पड़ी। अतः कच्चे माल की पूर्ति के लिए कृषि के विकास पर भी जोर दिया गया। 1788 ई. से 1803 ई. के बीच कपास का व्यापार इंग्लैंड में तीन गुना बढ़ गया। इसी प्रकार यूरोप के व्यापार में भी 1830 से 1880 ई. के बीच 800 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई।

4.1.7. आर्थिक साम्राज्यवाद (Economic imperialism)– औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप यूरोप के अनेक देशों ने आर्थिक साम्राज्यवाद की नीति को अपनाया। इंग्लैण्ड, फ्रांस आदि देशों ने अपने उद्योगों में इतना माल तैयार किया, जिसकी खपत अपने देश में सम्भव नहीं थी। अतः उन्होंने अफ्रीका, एशिया आदि में मण्डियों की तलाश करनी आरम्भ कर दी। इसी उद्देश्य के लिए इंग्लैण्ड, पुर्तगाल, हॉलैंड, फ्रांस, जैसे देशों ने एशिया, अमेरिका तथा अफ्रीका में अपने उपनिवेश बनाए। यूरोप का प्रत्येक देश उपनिवेश की दौड़ में शामिल हो गया, जिससे उनमें आपसी ईर्ष्या तथा संघर्ष की भावना उत्पन्न हो गई। 1914 ई. का प्रथम विश्व युद्ध इसी ईर्ष्या के परिणामस्वरूप हुआ।

4.2. सामाजिक प्रभाव (Social Impact)

औद्योगिक क्रान्ति के सामाजिक प्रभाव इस प्रकार थे–

4.2.1. जनसंख्या में वृद्धि (Increase in population)– औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप यूरोप की जनसंख्या में असाधारण वृद्धि हुई। औद्योगिक क्रान्ति ने मनुष्यों को हर प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की, जिससे जनसंख्या में काफी वृद्धि हुई। 19वीं शताब्दी में यूरोप की कुल जनसंख्या 17.5 करोड़ थी, जो 20वीं शताब्दी में बढ़कर 45 करोड़ हो गई। 1871–1907 ई. के बीच इंग्लैण्ड की जनसंख्या 2.5 करोड़ से बढ़कर 4 करोड़ तक पहुँच गई। इसी प्रकार जर्मनी, फ्रांस तथा इटली की भी जनसंख्या में वृद्धि हुई। इस काल में चिकित्सा विज्ञान के विकास और दवाईयों के उत्पादन से मृत्यु दर में काफी कमी आ गई। इससे भी जनसंख्या में वृद्धि हुई।

4.2.2. औद्योगिक नगरों का विकास (Growth of Industrial Towns)– औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप यूरोप में बड़े–बड़े औद्योगिक नगरों की स्थापना हुई। 19वीं शताब्दी में 1 लाख की जनसंख्या वाले नगरों की संख्या 14 थी, जो 100 वर्षों पश्चात् 140 तक पहुँच गई। इनमें से कई नगरों की जनसंख्या तो दस लाख से भी अधिक थी। उस समय इंग्लैंड में लंकाशायर, मानचेस्टर, बर्मिंघम, लीड्स आदि महत्वपूर्ण औद्योगिक नगरों का विकास हुआ। शहरों का जीवन खुशहाल तथा स्वतन्त्र होता था।

4.2.3. समाज का विभाजन (Division of Society)– औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप यूरोपीय समाज दो भागों अर्थात् वर्गों–पूँजीपतियों तथा मजदूरों में विभाजित हो गया था। उस समय औद्योगिक देशों में समाज पर पूँजीपतियों का अधिकार था। इन दोनों वर्गों के रहन–सहन, आचार–विचार तथा रूचियों में बहुत अन्तर था। पूँजीपति ज्यादा–से–ज्यादा लाभ कमाने के लिए मजदूरों का शोषण करते थे। यही कारण

था कि श्रमिकों ने पूँजीपतियों के शोषण से बचने के लिए श्रमिक संघों की स्थापना कर ली। इससे साम्यवाद को भी बल मिला। पूँजीवाद को समाप्त करने के लिए रूस और चीन जैसे देशों में साम्यवादी क्रान्तियाँ हुई।

4.2.4. मजदूरों की दुर्दशा (Miserable Condition of Labour class)– औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप कारखानों में काम करने वाले मजदूरों की स्थिति काफी दयनीय हो गई। कारखानों के मालिक अधिक लाभ कमाने के लिए मजदूरों के हितो की अवहेलना करते थे। वे उनसे कम वेतन में अधिक–से–अधिक काम लेते थे। कारखानों में मजदूरों से 14 से 16 घण्टे प्रतिदिन काम करवाया जाता था और उन्हे किसी प्रकार का अवकाश नही दिया जाता था। कारखानों में उचित रोशनी तथा हवा का प्रबन्ध भी नही होता था। मशीनों की गर्मी तथा शोर के बीच अँधेरे व बन्द कमरों में कार्य करने से मजदूरों का स्वास्थ्य खराब होने लगा। वे प्लेग, हैजा तथा तपेदिक की बीमारियों से ग्रस्त होने लगे। मजदूरों की बस्तियाँ भी बहुत गन्दी होती थी। अतः मजदूरों का जीवन अत्यन्त दयनीय हो गया।

4.2.5. मजदूर संघों की स्थापना (Establishment of Trade Unions)– उद्योगपति अधिक लाभ कमाने के लिए मजदूरों का शोषण करते थे। अतः मजदूरों ने अपन हितों की रक्षा के लिए संघ बनाने आरम्भ कर दिए। 1824–25 ई. में इंग्लैण्ड की सरकार ने मजदूरों को संघ्स बनाने की अनुमति प्रदान कर दी। राबर्ट ओवन के प्रयासों से 1834 ई. में ग्रेट नेशनल कन्सोलिडेटड ट्रेड यूनियन की स्थापना हुई। 1873 ई. तक इस संघ के सदस्यों की संख्या 10 लाख तक पहुँच गई। 1864 ई. में फ्रांस में नेपोलियन ने श्रमिक संघ बनाने की अनुमति प्रदान कर दी। 1868 ई. में जर्मनी में मजदूर संघ स्थापित हुए। ये मजदूर संघ मजदूरों के हितों के लिए संघर्ष करते थे। इनके प्रयासो से कारखाना मालिकों ने मजदूरों को सुविधाएँ देनी आरम्भ कर दी।

4.2.2.6. स्त्रियों व बच्चों का शोषण (Exploitation of women and children)– औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप, स्त्रियों तथा बच्चों का बहुत शोषण हुआ। पूँजीपति अधिक लाभ कमाने के लिए पुरूषों की अपेक्षा कम वेतन पर स्त्रियों तथा बच्चों को कारखानों में भरती करते थे। कई बार माता–पिता भी अपने बच्चों को कारखानों में कार्य करने के लिए भेजते थे। औद्योगिक क्रान्ति के आरम्भिक वर्षों में इंग्लैण्ड के कारखानों में कार्य करने वाले अधिकतर बच्चे यतीम या भीख माँगने वाले थे। 1830–40 ई. के दौरान इंग्लैंड के कारखानों में 25 प्रतिशत से 30 प्रतिशत मजदूर 18 वर्ष की आयु के थे तथा बाकि सभी बच्चे

एवं स्त्रियों थीं। बच्चों तथा स्त्रियों से 18 घण्टों तक काम लिया जाता था तथा बदले में उन्हें नाममात्र की मजदूरी दी जाती थी। अतः स्त्रियों और बच्चों की स्थिति खराब हो गई।

4.2.7. जीवन स्तर में उन्नति (Rise in standard of leaving)– औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप लोगों के जीवन स्तर में काफी उन्नति हुई। लोगों को कारखानों में कार्य करने के लिए नकद वेतन दिया जाता था, जिससे अब वे कपड़े, जूते, फर्नीचर आदि खरीद सकते थे। अतः आधुनिक उद्योगों की स्थापना से धनी लोगों के साथ–साथ जनसाधारण लोगों का जीवन स्तर भी ऊँचा हो गया।

4.3. राजनीतिक प्रभाव (Political Impact)

औद्योगिक क्रान्ति के राजनीतिक प्रभाव इस प्रकार थे–

4.3.1. इंग्लैंड का एक शक्तिशाली देश बनना (England Become a Powerful Country)– औद्योगिक क्षेत्र में इंग्लैंड में सर्वाधिक आर्थिक परिवर्तन हुए। इसलिए इंग्लैण्ड में, औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रगति यूरोप के अन्य देशों से अधिक हुई। वहां के कारखानों में निर्मित सामान विश्व के प्रत्येक देश में बेचा जाता था। इससे इंग्लैंड की आय में अत्यधिक वृद्धि हुई। इंग्लैंड ने भारत, अफ्रीका तथा अमेरिका में अपने उपनिवेश बनाये। इस प्रकार इंग्लैंड राजनीतिक तथा आर्थिक दृष्टि से एक शक्तिशाली राष्ट्र बन गया। वह यूरोप का ऐसा देश था, जिसका फ्रांस से दो दशकों से भी ज्यादा समय तक युद्ध चला। उसने फ्रांस को घुटने टेकने को मजबूर कर दिया। उसने यह सब अपने औद्योगिक विकास के बल पर किया। आर0 एम0 रेयनेर (R.M. Rayner) ने ठीक ही लिखा है, '' वे चट्टाने जिन्होंने नेपोलियन के साम्राज्य रूपी विमान को चूर–चूर किया, यार्कशायर तथा लंकाशायर की चिमनियाँ ही थी।''

4.3.2. संसदीय सुधार (Parliamentary Reforms)– औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप, इंग्लैंड की संसद में सुधार कानूनों की मांग शुरू हुई। 19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रान्ति से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई। औद्योगिक विकास के कारण नये कारण नये नगरों का उत्थान हुआ और जनसंख्या में भी वृद्धि। परन्तु अधिकतर नगरों को संसद में प्रतिनिधित्व प्राप्त नहीं था। अतः संसदीय सुधारों की माँग जोर पकड़ने लगी। लोगों की माँग को देखते हुए ब्रिटिश संसद को 1832 ई. का सुधार एक्ट पारित करना पड़ा।

4.3.3. नये राजनीतिक सिद्धान्त (New Political Theorise)– औद्योगिक क्रान्ति से यूरोप में राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक क्षेत्र में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई। इन समस्याओं के समाधान के लिए विभिन्न विचारकों ने अपने–अपने सिद्धान्त पेश किए। इनमें समाजवाद का सिद्धान्त बहुत महत्वपूर्ण

था। इंग्लैंड में इस सिद्धान्त का जन्मदाता रॉबर्ट ओवन नामक विचारक था। फ्रांस में इस सिद्धान्त का प्रचार सेंट साइमन तथा लुई ब्लॉक ने किया था। 19वीं सदी में कार्ल मार्क्स ने समाजवाद का जोर–शोर से प्रसार किया। इन्होंने पूँजीवाद सरकारों के स्थान पर प्रजाहितकारी लोकतन्त्र सरकारों तथा मजदूरों की एकता पर बल दिया।

4.3.4. विनाशकारी शस्त्रों की होड़ (Race for the Possession of Destructive Weapons)– औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप यूरोप में विभिन्न देशों में सैनिक शक्ति के विकास तथा विनाशकारी हथियारों के संग्रह पर जोर दिया था। उस समय ऐसा माना जाता था कि जिस देश के पास सबसे ज्यादा विनाशकारी शस्त्र होगें, वह देश अधिक शक्तिशाली होगा। अतः यूरोप के अनेक देशों ने अन्य देशों की अपेक्षा अच्छे तथा ज्यादा हथियार तैयार करने शुरू कर दिए। इंग्लैंड, फ्रांस तथा जर्मनी आदि देशों में जैसे–जैसे औद्योगिक विकास जोर पकड़ता गया, वैसे–वैसे ही इन देशों की सैनिक शक्ति भी बढ़ती गई। अतिशीघ्र ही विश्व में सैनिक श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए होड़ आरम्भ हो गई, जो 1914 ई. के प्रथम विश्वयुद्ध तथा 1939 ई. के दूसरे विश्व युद्ध का मुख्य कारण बने।

4.3.5. राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय एकता (National and International unity)– औद्योगिक क्रान्ति के कारण विभिन्न देशों अर्थात् विश्व मे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय एकता स्थापित हुई। सड़कों, नहरों तथा रेलों के निर्माण से एक नगर से दूसरे नगर तथा एक देश से दूसरे देश के बीच की दूरी समाप्त हो गई। यातायात के आधुनिक साधनों के प्रचलन से एक–दूसरे देश में जाना सुगम हो गया। इसके अलावा, टेलीग्राफ के प्रचलन से समस्तु दुनिया बहुत छोटी लगने लगी। अब विभिन्न देशों में दोस्ती तथा भाईचारे की भावना थी बल पकड़ने लगी।

6. मजदूर आन्दोलन (Labour Movements)– औद्योगिक क्रान्ति के कारण कारखानों में मजदूरों का बहुत शोषण हुआ। उद्योगों के मालिकों के शोषण से बचने के लिए मजदूरों ने संघ बनाने आरम्भ कर दिए थे। इन संघों के नेतृत्व में मजदूरों ने इंग्लैंड में चार्टिस्ट आन्दोलन और फ्रांस में श्रमिक आन्दोलन चलाया। जर्मनी में भी मजदूरों ने अपने अधिकारों के लिए आन्दोलन किए। समाजवाद के विचारकों, जैसे–कार्ल मार्क्स आदि ने मजदूरों की एकता पर बल दिया। उनके प्रयासों से विभिन्न देशों की राजनीतिक पार्टियो ने मजदूरों का समर्थन लेना आरम्भ कर दिया। इंग्लैण्ड में लेबर पार्टी की स्थापना की गई और धीरे–धीरे वहाँ की सता उच्च वर्ग के हाथों से निकलकर मध्यम वर्ग तथा मजदूर वर्ग के नेताओं के हाथों में आ गई।

4.5. बौद्धिक प्रभाव (Intellectual Impact)

4.5.1. अन्धविश्वासों का अन्त (End of Superstitious)– औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप यूरोप में यातायात एवं संचार के साधनों का बहुत विकास हुआ। रेल, डाक, तार तथा मोटर गाड़ियों के प्रचलन से लोगों में अंधविश्वास समाप्त होने लगे। पुनर्जागरण के विद्वानों ने भी अन्धविश्वासों पर कुठाराघात किया। अतः यूरोप के समाज में नवीन आधुनिक विचार विकसित होने लगे।

4.5.2. भौतिकवादी विचारों पर बल (Stress on Materialistic Ideas)– औद्योगिक क्रान्ति ने लोगों के दृष्टिकोण पर भी प्रभाव डाला। अब लोगों में अधिक से अधिक कार्य करके धन कमाने की इच्छा जागृत हो गई। उन्होंने रूढ़िवाद तथा अन्धविश्वासों से मुँह मोड़ लिया। पूँजीवाद एवं भौतिकवाद के दौर में लोग जीवन की सभी आवश्यकताओं को पूरा करके आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने लगे। अतः औद्योगिक क्रान्ति ने लोगों को भौतिकवादी बना दिया।

4.5.3. साहित्य का विकास (Development of Literature)– औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप साहित्य का भी बहुत विकास हुआ। औद्योगिक क्रान्ति से उत्पन्न विभिन्न सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं पर अनेक चिन्तकों तथा विद्वानों ने बहुत सारी पुस्तकें लिखीं। इनमें उन्होंने मजदूरों की दुर्दशा, स्त्रियों एवं बच्चों की स्थिति, कारखानों की गन्दगी एवं भौतिकवादी दृष्टिकोण पर अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए। वायरन ने दि एज ऑफ ब्रॉन्ज (The age of Bronze), ओलिवर स्मिथ ने दि डिस्रटेड विपेज (The Deserted Village) आदि पुस्तकों में यूरोप के तत्कालीन जीवन का वर्णन किया। इसी प्रकार के विचार अन्य विद्वानो की रचनाओं में देखने को मिले।

4.5.4. विज्ञान एवं तकनीकी का विकास (Progress of Science and Technology)– औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप, विज्ञान तथा तकनीकी का भी बहुत विकास हुआ। इस काल के वैज्ञानिकों ने अनेक खोजें की। विश्व में बड़ी–बड़ी प्रयोगशालाएँ स्थापित की गई जिनमें हजारों वैज्ञानिक विभिन्न विषयों पर खोज करते थे। अतः औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप विज्ञान एवं तकनीकी का बहुत विकास हुआ।

वाणिज्यिक शक्तियाँ– 8.4.3

1) इंग्लैंड– इंग्लैंड युरोप की एक प्रमुख शाखा वाणिज्यिक शक्ति है। वहाँ हेनरी सप्तम् तथा एलिजाबेथ के शासनकाल में वाणिज्यवादी नीति अपनाई गई। इसके बाद हेनोवर वंश के शासकों ने इस नीति को आगे बढ़ाया। इस दौरान कृषि के विकास पर ध्यान दिया गया। अनाज के उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने के लिए ट्यूडर शासकों ने 1489 ई. से 1580 ई. के

बीच कई कानून पास किए, जिसके अनुसार भूमि को चारागाहों में परिवर्तित करने की मनाही कर दी गई। स्पेन और पुर्तगाल के साथ 1654 तथा 1670 ई. में सन्धियां की गई, जिनके फलस्वरूप इन देशों के साथ इंग्लैंड के व्यापार मे वृद्धि हुई। उपनिवेशों ने निर्मित माल केवल इंग्लैंड मे ही भेजा जाता था। इस प्रकार इंग्लैंड ने आर्थिक नीति अपनायी, और उपनिवेशों का खूब आर्थिक शोषण किया।

2) हालैण्ड– 17वीं शताब्दी में हालैण्ड में व्यापार एंव वाणिज्य का बहुत विकास हुआ। उसने उत्तर सागर में मछलियों के उद्योग का बहुत विकास किया। यहाँ तक की डेनमार्क, स्वीडन तथा नोर्वे का विदेशी व्यापार भी डचो के हाथ में आ गया। डच इन देशों में अनाज, ताँबा, लकड़ी तथा जहाज बनाने के लिए कच्चा माल प्राप्त करते थे। कालान्तर में इंग्लैंड का जहाज निर्माण विश्व का प्रमुख उद्योग बन गया। युरोप की प्रमुख वाणिज्यवादी शक्तियां उससे जहाज खरीदने लगी। इसके पश्चात् डचों ने पुर्तगालियों को पराजित करके गरम मसालों के द्वीप पर अधिकार कर लिया। उन्होनें इन्डोनेशिया, लंका और भारत के अनेक स्थानो पर अपनी बस्तियाँ स्थापित कर ली। 18वीं शताब्दी के आरंभ तक हालैण्ड युरोप का एक समृद्धशाली देश बन गया।

3) **प्रशिया**– प्रशिया में 1740 से 1786 ई. के बीच सम्राट फ्रेडरिक महान ने उद्योग और व्यापार के विकास पर बल दिया। उसने वाणिज्यवादी सिद्धान्तों के अनुसार उद्योग के विकास के लिए उन्हे संरक्षण दिया गया। कुछ ही समय मे प्रशिया आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर देश बन गया। अब वह अपने उद्योगों में निर्मित वस्तुओं को निर्यात कर के लाभ कमाने लगा।

4) आस्ट्रिया– आस्ट्रिया में वाणिज्यवाद के सिद्धान्तों को 17वीं सदी के अन्त एवं 18वीं शताब्दी में लागू करने का प्रयास किया गया। आस्ट्रिया के शासकों ने देश के उद्योगो का विकास किया। उन्होने व्यापारिक संतुलन को अपने पक्ष मे करने के लिए निर्यात पर अधिक बल दिया।

5) **रूस**– रूस में भी वाणिज्यवादी सिद्धान्तो को अपनाया गया। रूस के शासक पीटर महान् ने खान, धातु और कपड़ा उद्योगों के विकास पर बल दिया। इसके विदेशी व्यापार को बढाने का प्रयास किया गया। इसके अलावा बाल्टिक सागर में जहाजो बेड़ो का निर्माण किया गया और साथ ही अनेक व्यापारिक कम्पनियाँ स्थापित की गई। इन कम्पनियों ने विदेशी व्यापार के विकास में अहम् भूमिका निभाई।

6) **स्पेन**– स्पेन में चार्ल्स पंचम् एवं उसके उत्तराधिकारी फिलिप द्वितीय ने वाणिज्यवाद के सिद्धान्तों को लागू किया। 1492 ई. में स्पेन ने अमेरिका की खोज की। इसके पश्चात् अमेरिका में उसकी रूचि निरंतर बढ़ती चली गई। उसे अमेरिका से भारी मात्रा में सोना–चाँदी मिलने लगा। चार्ल्स पंचम् ने विदेशियों को अमेरिकी उपनिवेशों में व्यापार करने की अनुमति दी। लेकिन फिलीप द्वितीय के समय में यह नीति बदल दी गई। अब सरकार की अनुमति के बिना विदेशी बन्दरगाहों एवं विदेशी जहाज द्वारा कोई सामान अमेरिका उपनिवेशों में नही लाया जा सकता था। सरकारी आदेशों का उल्लंघन करने वाले विदेशियों को कठोर दण्ड दिया जाता था।

1598 से 1665 ई. के बीच स्पेन में भयानक प्लेग, विदेशी युद्धो आदि से वहाँ का उद्योग एवं व्यापार पतन की ओर अग्रसर हो गए। इससे वाणिज्यवाद को भी भारी धक्का लगा।

औद्योगिक क्रान्ति से संबंधित प्रमुख केन्द्र

(Major Places Connected with Industrial Revolution)

वाणिज्यवाद के प्रभाव (Impact of Mercantilism)

15वीं से 18वीं शताब्दियों के दौरान यूरोप में वाणिज्यवाद का इंग्लैण्ड, नीदरलैण्ड, फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल आदि देशों में बहुत जोरों पर विकास हुआ। इस दौरान, यूरोपीय देशों ने वाणिज्यवाद के सिद्धान्तों को अपनाया और सोने–चाँदी के सग्रंह पर अत्यधिक बल दिया। लेकिन 19वीं शताब्दी में वाणिज्यवाद का पतन हो गया। वाणिज्यवाद ने यूरोप की राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक जीवन पर बहुत प्रभाव डाले। वाणिज्यवाद के मुख्य प्रभाव इस प्रकार थे–

6.1 सामन्तवाद का पतन (Decline of Feudalism)– वाणिज्यवाद के उदय से पहले सामन्तवादी व्यवस्था जोरों पर प्रचलित थी। सामन्त ने कृषक और दासों (सर्फ) का जी भरकर शोषण किया। उन्होनें ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास पर बल दिया। अतः सामन्तवादी काल में व्यापार एवं वाणिज्य का पतन हो गया। अतिशीघ्र ही राजा और पूँजीपति वर्ग से लेकर जनसाधारण जनता तक सभी सामन्तवादी व्यवस्था से परेशान हो गये। लेकिन 16वीं से 18वीं शताब्दी के बीच इंग्लैण्ड, नीदरलैण्ड, फ्रांस, पुर्तगाल आदि देशों ने वाणिज्यवाद के सिद्धान्तों को लागू किया। इन देशों ने व्यापार एवं वाणिज्य पर अधिक जोर दिया। विभिन्न राज्यों की सरकारों ने भी व्यापारियों से धन प्राप्त करने के लिए व्यापार एवं वाणिज्य को खूब प्रोत्साहन दिया। यूरोपीय समाज में व्यापारियों और उद्योगपतियों का महत्व बढ़ गया। परिणामस्वरूप, सामन्तवाद का पतन हो गया।

6.2 निरंकुश राज्यों का उदय (Rise of Absolute State)– वाणिज्यवाद के उदय के परिणामस्वरूप, यूरोप के विभिन्न देशों में निरंकुश राज्यों की स्थापना हुई। 16वीं शताब्दी में यूरोप में वाणिज्यवाद का विकास हुआ। अनेक विद्वानों तथा अर्थशास्त्रियों ने वाणिज्यवादी विचारधारा एवं आर्थिक दृष्टि से समृद्धशाली बनाने के लिए वाणिज्यवाद के सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप में अपनाना शुरू कर दिया। फ्रांस के शासक लुई XIV ने व्यापार एवं वाणिज्य के विकास के लिए अनेक नियम बनाए। इसी प्रकार इंग्लैण्ड में ट्यूडर एवं स्टुअर्ट वंशों के राजाओं ने कृषि, उद्योगों, विदेशी व्यापार तथा उपनिवेशवाद के विकास पर बल दिया। व्यापारी वर्ग ने भी शक्तिशाली निरंकुश राज्यों की स्थापना में शासकों की मदद की। अब शासकों ने स्थानीय एवं प्रान्तीय अर्थव्यवस्था के स्थान पर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को महत्व देना शुरू कर दिया। व्यापार एवं वाणिज्य के उदय से राज्यों की आय में वृद्धि होने लगी, जिसका प्रयोग राज्यों की शक्ति को बढाने में प्रयोग किया। इस प्रकार वाणिज्यवाद ने यूरोप में शक्तिशाली निरंकुश राज्य स्थापित करने में अहम भूमिका निभायी।

6.3 व्यापार एवं उद्योगों का विकास (Development of Trade and Industry)– वाणिज्यवाद के परिणामस्वरूप यूरोप में व्यापार एवं उद्योगों का बहुत विकास हुआ। यूरोपीय देशों के अनेक शासकों ने अपने देश के व्यापार को बढ़ाने के लिए वाणिज्यवाद के सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप में लागू किया। वाणिज्यवाद के काल में व्यापार के सन्तुलन पर बल दिया। यूरोपीय शासकों ने व्यापार एवं उद्योगों के विकास के लिए राष्ट्रीय नियम बनाए। इसके अलावा, नये–नये उद्योगों की स्थापना पर बल दिया। फ्रांस में

रेशम तथा अन्य कई तरह के उद्योग स्थापित किए गए। इंग्लैण्ड में भी नये–नये उद्योगों की स्थापना पर बल दिया गया।

6.4 उपनिवेशों की स्थापना पर बल (Stress on the Establishment of Colonies)– वाणिज्यवाद के परिणामस्वरूप यूरोपीय शक्तियों ने एशिया और अफ्रीका में अपने उपनिवेश स्थापित करने पर बल दिया। आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनने के लिए पुर्तगाल, स्पेन, हॉलेण्ड, इंग्लैण्ड, फ्रांस आदि देशों ने अफ्रीका, एशिया और अमेरिका में उपनिवेश बनाए। इन उपनिवेशों में अपने देश में निर्मित वस्तुओं को बेचा जाता था। इंग्लैण्ड ने अमेरिका में तेरह बस्तियाँ स्थापित की। इसी प्रकार फ्रांस ने अफ्रीका, भारत आदि देशों में अनेक बस्तियाँ स्थापित की। इसी प्रकार पुर्तगाल, हॉलैण्ड आदि देशों में अपनाई गई। परिणामस्वरूप, यूरोपीय शक्तियों के बीच उपनिवेशों की स्थापना के लिए प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई।

6.5 व्यापारिक एवं औपनिवेशिक प्रतिस्पर्धा (Commercial and Colonial Revalry)– वाणिज्यवाद के परिणामस्वरूप, यूरोप की मुख्य शक्तियों में व्यापारिक एवं औपनिवेशिक प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई। वाणिज्यवादी सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप से लागू करने के लिए स्पेन, पुर्तगाल, हालैण्ड, फ्रांस आदि देशों ने अपने देश के व्यापार को बढ़ाने के लिए अमेरिका, अफ्रीका और एशिया में उपनिवेश बनाए। पुर्तगाल ने अटलांटिक क्षेत्र में उपनिवेश बनाए। इसके अलावा, उसने गोआ, मल्लक्का, मकाओ आदि में भी अपनी बस्तियाँ स्थापित की। इसी प्रकार डचों ने एम्वोयना, जकार्ता, गोआ आदि स्थानों पर अपनी बस्तियां स्थापित की। इसके अलावा, अंग्रेजों ने सूरत, अहमदाबाद, भड़ौंच, मसौलीपट्टम, हुगली, कासिमबाजार आदि में अपने कारखाने स्थापित किए। इसी प्रकार की नीति फ्रांस ने भी अपनायी। परिणामस्वरूप, यूरोपीय शक्तियों के बीच व्यापारिक एवं औपनिवेशिक प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई। उदाहरण के लिए भारत के व्यापार पर एकाधिकार स्थापित करने के लिए फ्रांसीसियों और अंग्रेजों के बीच कर्नाटक में तीन युद्ध लड़े गए, जिनमें अंग्रेजों को सफलता मिली।

पूँजीवाद का उदय (Rise of Capitalism)– वाणिज्यवाद के परिणामस्वरूप यूरोप में पूँजीवाद का उदय हुआ। वाणिज्यवादी काल में व्यापार एवं वाणिज्य का जोरों पर विकास हुआ। यूरोप की शक्तियों ने अपने विदेशी व्यापार को बढ़ाने के लिए अमेरिका, अफ्रीका तथा एशिया में उपनिवेश बनाए। इन्होंने न केवल व्यापार से खूब धन कमाया, बल्कि उपनिवेशों का खूब आर्थिक शोषण किया। परिणामस्वरूप, यूरोप के व्यापारियों के पास भारी मात्रा में पूँजी इकट्ठी हो गयी। अब यूरोपीय पूँजीपतियों ने अधिक से अधिक धन

कमाने के लिए अपनी पूँजी का निवेश उद्योग और अन्य व्यवसायों में करना शुरू कर दिया। परिणामस्वरूप, यूरोप में पूँजीवाद का उदय हुआ।

8.5 (प्रगति समीक्षा) (Reckyour progress) (औद्योगिक क्रांति)

क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए (Fill in the blanks)

i) ....के अनुसार औद्य ोगिक क्रांति का काल 1760–70 ई. से 1830–40 ई. था।

ii) एल.सी.ए. नोल्स ने औद्योगिक क्षेत्र में बड़े परिवर्तनों को ....भागों में बांटा था।

iii) ....द्वारा बनाई गई ड्रिल मशीन ने खेतों की बुवाई आसान बना दी।

iv) 1850 ई. के बाद.........................के विकास पर बल दिया गया।

v) ....युरोप की सबसे बड़ी औपनिवेशिक शक्ति थी।

vi) 20वीं शताब्दी के आरंभ में भारत में लगभग.........................ट्रस्ट थे।

vii) 18वीं शताब्दी के अंत में इंग्लैंड में जो महामारी फैली उसे..............................नाम से जाना जाता है।

viii) सन् 1710 के बाद..........................आन्दोलन चलाया गया था।

xi) औद्योगिक क्रांति के समय लगभग..........................लोगों को दासों के रूप में बेचा गया।

x) ....के संघ अधिनियम के बाद इंग्लैंड और स्कॉटलैंड व्यापारिक इकाई बन गए थे।

ख) सत्य/असत्य (True/False)

i) औद्योगिक क्रांति की शुरूआत इंग्लैंड में हुई।

ii) 1780 के दशक में इंग्लैंड की जनसंख्या में 30% वृद्धि हुई।

iii) औद्योगिक क्रांति के समय इंग्लैंड के समाज में व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बल दिया गया था।

vi) 1800 ई. में युरोपीय महाद्वीप की जनसंख्या 18 करोड़ 80 लाख थी।

v) उपनिवेशों की स्थापना ने इंग्लैंड को बहुत नुकसान पहुंचाया था।

vi) उन्नीसवीं शताब्दी में युरोप के अनेक देशों में बैंको की स्थापना हुई थी।

vii) इंग्लैंड में सबसे पहले जूट उद्योग मे परिवर्तन हुए।

viii) इंग्लैंड में भी फ्रांस की तरह कुली वर्ग था।

ix) इंग्लैंड के पास सबसे शक्तिशाली जहाजी बेड़ा था।

x) 1700 ई. के बाद इंग्लैंड में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का उदय हुआ था।

ग) उचित मिलान (Matching Test)

i)	सूत कातने की मशीन	क) महामारी
ii)	काली मृत्यु	ख) 1830 ई.
iii)	तार यंत्र	ग) म्यूल
iv)	वाष्प के इंजन	घ) 1870 ई.
v)	लब्रयूसो	ड़) सैमुअल मौर्स
vi)	लेथ मशीन	च) लौह उद्योग
vii)	जर्मनी का एकीकरण	छ) हेनरी मान्डसले

(8.8) स्वः मूल्याकंन परीक्षा (Self Assessment Test)

घ) बहुविकल्पीय प्रश्न– (Multiple choice Question (MCQ)

i) जापान ने उद्योग मन्त्रालय की स्थापना की–

a) 1870 ई. b) 1850 ई. c) 1830 ई. d) 1820 ई.

ii) 1733 ई. में जॉन नामक बुनकर ने कौन–सी मशीन का आविष्कार किया–

a) म्यूल b) पावरलूम c) फ्लाइंग शटल d) कॉटन जिन

iii) बिजली उत्पन्न करने वाले जेनरेटर का आविष्कार किया गया–

a) 1840 ई. b) 1850 ई. c) 1860 ई. d) 1870 ई.

iv) पेनी पोस्टेज सिस्टम कब लागू किया गया?

a) 1850 ई. b) 1840 ई. c) 1860 ई. d) 1870 ई.

v) 1830 ई. में किसका प्रयोग किया गया?

a) फ्लाइंग शटल b) म्यूल c) वाष्प इंजन d) पावरलूम

vi) जर्मनी में 1862 ई. तक सड़को की लंबाई हो चुकी थी

a) 18,000 मील b) 19,000 मील c) 20,000 मील d) 21,000 मील

vii) रूस में स्टेट बैंक की स्थापना हुई–

a) 1850 ई. b) 1870 ई. c) 1860 ई. d) 1880 ई.

viii) इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, रूस आदि देशों में रेलवे लाईन बिछाई गई–

a) 1880–1900 ई. b) 1830–1850 ई.

c) 1870–1914 ई. d) 1890–1924 ई.

ix) ब्रिटिश संसद ने 1832 ई. में कौन–सा एक्ट पारित किया–

a) रोलट एक्ट b) सुधार एक्ट c) पोल एक्ट d) रॉल एक्ट

x) दि एज ऑफ ब्रॉन्ज पुस्तक के लेखक कौन है?

a) ओलिवर स्मिथ b) हेनरी कोर्ट c) वायरन d) अब्राहीम डर्बी

(8.9) प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोतर (Answer to check your progress)

Answers:-

रिक्त स्थान भरो–

i) टॉयनर्बा ii) 6 iii) जेथ्रोटुल iv) वाष्प पोत v) इंग्लैंड

vi) 40 vii) काली मृत्यु viii) बाड़ेबन्दी ix) 10 मिलियन x) 1707 ई.

सत्य/असत्य–

i) सत्य ii) असत्य iii) सत्य iv) सत्य v) असत्य vi) सत्य

vii) असत्य viii) असत्य ix) सत्य x) असत्य।

उचित मिलान

i) म्यूल ii) महामारी iii) सैमुअल मौर्स vi) 1830 ई. v) लौह उद्योग

vi) हेनरी मान्डसले vii) 1870 ई.

बहुविकल्पीय प्रश्न

i) 1870 ई. ii) फ्लाइंग शटल iii) 1870 ई. iv) 1840 ई. v) वाष्प इंजन

vi) 18,000 मील vii) 1860 ई. viii) 1870–1914 ix) सुधार एक्ट

x) वायरन

8.7 सूचक शब्द (Keywords)

i) पृथकii) धर्माधिकारी iii) दीर्धायु iv) कुटीर उद्योग v) औजार

vi) टर्नपाइक सड़क vii) सर्वप्रथम viii) हस्तशिल्प ix) संचय x) ईजाद

8.7 संकेत सूचक Keywords- (Answers)

i) अलग–अलग ii) धर्म का अधिकार iii) लंबी आयु iv) छोटे उद्योग

v) हथियार vi) अंग्रेज ट्रस्ट बनाकर सड़क निर्माण करते थे और उस पर टोल टैक्स लगाते थे इस प्रकार की सड़को को टर्नपाइक सड़के कहा जाता है। vii) सबसे पहले

viii) हाथों से बना ix) बचाना x) खोज करना।

च) लघु उतरीय प्रश्न–

i) औद्योगिक क्रांति से क्या अभिप्राय है?

ii) इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति के क्या कारण थे?

iii) लोहा एवं कोयले का विकास किस प्रकार हुआ?

iv) वस्त्र उद्योग में क्रांति पर टिप्पणी करें।

v) फ्रांस व जर्मनी में औद्योगिक क्रांति किस प्रकार आई?

vi) औद्योगिक क्रांति के क्या प्रभाव रहे?

vii) औद्योगिक क्रांति के आर्थिक प्रभाव का वर्णन करें।

छ) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

i) औद्योगिक क्रांति का विस्तार से वर्णन करे।

ii) औद्योगिक क्रांति से आपका क्या अभिप्राय है?

iii) इंग्लैण्ड में इसकी शुरूआत किस प्रकार हुई?

iv) युरोप के अन्य देशों में हुई औद्योगिक क्रांति किस प्रकार हुई?

v) इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति का विकास बहुत तेजी से हुआ। वर्णन करें।

vi) औद्योगिक क्रांति के लिए कौनसे कारक उतरदायी है?

vii) औद्योगिक क्रांति से यातायात एवं संचार साधनों के साथ–साथ लोहे व कोयले उद्योग का विकास हो पाया। विस्तार में वर्णन करें।

सन्दर्भ ग्रंथ (Reference books)

6. **विश्व इतिहास (1500–1950) जैन और मायुर, जैन प्रकाशन मंदिर, जयपुर।**
7. **युरोप का आधुनिक इतिहास (1789–1974) सत्यकेतु विधालकार, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली 2016।**
8. **आधुनिक विश्व का इतिहास, लाल बहादुर वर्मा, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविधालय, प्रथम संस्करण, 2013।**
9. **विश्व का इतिहास भाग–1 (1500–1870) अविनाश चन्द्र अरोड़ा आर.एस. अरोड़ा, प्रदीप पब्लिकेशन, 1995**
10. **विश्व का इतिहास : दृष्टि पब्लिकेशन्स, ज0 मुखर्जी नगर, दिल्ली–द्वितीय संस्करण, अक्तूबर 2019।**

NOTES

NOTES

NOTES

NOTES

NOTES

NOTES